नबी-ए-रहमत

(हज़रत मुहम्मद सल्ललल्लाहु अलैहि व सल्लम की जीवनी)

लेखकः

मौलाना अबुल हसन अली नदवी (रह0)

अनुवादकः

मुहम्मद हसन अंसारी

प्रकाशक

अकादमी ऑफ इस्लामिक रिसर्च एण्ड पब्लीकेशन्स
पोस्ट बाक्स न0 119, टैगोर मार्ग,
नदवतुल उलमा, लखनऊ 226007 (भारत)

पहला संस्करण 1983
दूसरा संस्करण 2001
तीसरा संस्करण 2003
चौथा संस्करण 2013
सीरीज़ न0 174

मूल्यः—250/=

मुद्रकः—............
स्काई लाईन प्रिंटर्स, लखनऊ

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

वमा अरसलनाका इल्ला रहमतुल लिल्आलमीन

(सूरः अंबिया–107)

दो शब्द

प्रस्तुत किताब इस्लामी दुनिया के मशहूर विद्वान, विचारक और चिंतक मौलाना अबुल हसन अली नदवी की किताब नबी–ए–रहमत का हिन्दी रूपान्तर है। हज़रत मुहम्मद साहब सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की जीवनी पर अब तक लिखी गयी मशहूर एवं प्रमाणिक किताबों में से "नबी–ए–रहमत" एक है जो बड़ी मेहनत, खोज और शोध के बाद लिखी गयी है, और जिसमें इस विषय पर इससे पहले लिखी गई सभी प्रमाणिक किताबों और प्रसिद्ध ग्रन्थों का निचोड़ आ गया है। यह किताब मूलतः अरबी में 1976 ई0 में लिखी गयी थी। अरबी में इसका नाम "अस्सीरतुन्नबीया" है। इस थोड़े समय में किताब के काहिरा (मिस्र) और बेरूत (लेबनान) आदि से 30 से अधिक संस्करण बड़ी आन–बान के साथ प्रकाशित हो चुके हैं। अब तक दुनिया की 5–6 ज़बानों में इस किताब का अनुवाद हो चुका है। लेखक को इसी किताब पर सन् 1980 ई0 में 14 वीं शताब्दी हिजरी के किंग फैसल एवार्ड से सम्मानित किया गया है।

हिन्दी अनुवाद किताब के उर्दू अनुवाद पर आधारित है। कहीं–कहीं किताब के अंग्रेज़ी अनुवाद से भी मदद ली गयी है। कोशिश यह रही है कि भाषा आसान हो तथा अनावश्यक रूप से उसे कठिन और गूढ़ न बनाया जाए। उर्दू के अनेक शब्द अब हिन्दी शब्दावली में शामिल हो चुके हैं, अतः ऐसे शब्दों की विवेचना टिप्पणी के रूप में की गई है। कहीं–कहीं ब्रेकेट में समान भावार्थ देने वाले शब्द लिखे गए हैं। क़ुर्आन की आयतों के जहां अनुवाद दिए गए हैं वहां ब्रिकेट में सूरः का नाम तथा आयत संख्या लिख दी गई है। उम्मीद है कि यह किताब हिन्दी भाषी

भाई–बहनों के लिए उतनी ही लाभदायक साबित होगी जितना इसका अरबी, अंग्रेज़ी, उर्दू संस्करण अंग्रेज़ी, उर्दू, अरबी जानने वालों के लिए उपयोगी साबित हुआ है। हज़रत मुहम्मद साहब सल्ल0 की जीवनी का अध्ययन करते समय, यह बात हमें कभी नहीं भूलना चाहिए कि यह बहरहाल उसी पैगम्बरे इस्लाम की जीवनी है जिन्हें रहमतुल–लिल आलमीन अर्थात सारे जहांनों के लिए रहमत बनाकर दुनिया के तमाम इंसानों तथा मानव जाति के समस्त वर्गों की तरफ भेजा गया है। इसलिए उसको उस वर्ग के लोगों के लिए मना नहीं किया जा सकता जिन को हालात ने इस्लाम व ईमान के माहौल में फलने–फूलने का मौका नहीं दिया। उनकी किस्मत में था कि वह गैर इस्लामी माहौल में ही पैदा हों, फलें–फूलें। सच्चाई यह है कि इन गैर मुस्लिमों का हक़ पैग़म्बर साहब सल्ल0 की जीवनी पर उन मुसलमानों से ज़रा भी कम नहीं है जो पहले से ही इस्लाम व ईमान की छाया में हैं। नदी के उस पार रहने वालों को पुल की ज़रूरत नदी के इसी ओर रहने वालों से क्यों कर कम हो सकती है?

अल्लाह इस महान जीवनी के अध्ययन से हमारे लिए सुख, खुशहाली, अमन, शान्ति, सद्भाव व हमदर्दी, रहम दिली, प्यार, अमन व सलामती के दरवाज़े खोल दे और इसे आज की सिसकती मानवता के कल्याण का माध्यम बना दे। आमीन।

मुहम्मद हसन अंसारी

अनुवादक

मेहल चौरी (चमोली)

रबीउल–अव्वल 1402 हिजरी

जनवरी 1982 ई0

विषय सूची

नक्शों की सूची

भूमिका

वह पहला मदरसा या स्कूल जहां सबसे पहले इस किताब के लेखक का दाखिला हुआ वह नबी सल्ल0 की सीरत का मदरसा है। उस मुबारक मदरसे में दाखिला उस उम्र में हुआ जिसमें बच्चे आम तौर पर मकतब–मदरसे में दाख़िल नहीं किए जाते। उनके घराने और पारिवारिक माहौल में सीरत को उस संस्कृति एवं सभ्यता में अहम तथा बुनियादी स्थान प्राप्त था, जिससे परिचित एवं सुसज्जित होना घर के बच्चों और लड़कों के लिए उन दिनों ज़रूरी समझा जाता था। उस में इस छोटे बच्चे की छोटी लाइब्रेरी का भी बड़ा योगदान रहा है। जिसमें गद्य तथा पद्य दोनों की किताबें थीं, और जो दोनों बराबर पढ़ी जाती थीं। इसके बाद उसमें सबसे बड़ा हिस्सा उनके बड़े भाई डा0 हकीम सैय्यद अब्दुल अली साहब रह0 की जतन पूर्ण दीक्षा और मार्ग दर्शन का है। इससे यह फायदा हुआ कि उसने छोटी उम्र में उर्दू में सीरत की वह बेहतरीन किताबें पढ़ लीं जिसमें अरबी भाषा के बाद सीरत का सबसे बड़ा भंडार मौजूद है, और आख़िरी दौर में उस पर सबसे बड़ा काम हुआ है।

जब अरबी ज़बान और साहित्य के प्रति कुछ लगाव पैदा हुआ तो उसने अपना पूरा ध्यान सीरत के अरबी स्रोत्र पर लगाया। उनमें सबसे ऊपर दो किताबें थीं। एक इब्ने हिशाब की किताब " अस्सीरतुन्नबवीया" दूसरी इमाम इब्नुलकयि्यम की किताब "जादुल मआद"। उसने इन किताबों को सिर्फ ज्ञान हासिल करने के लिए परम्परागत ढंग से पढ़ने पर बस नहीं किया बल्कि यह कहना सही होगा कि इन्हीं किताबों में अपने जीवन के दिन–रात गुज़ारे। यही वह समय था जब उसका दिल ईमान व यक़ीन की लज़्ज़त से आशना (परिचित) हुआ। इस नई ख़ुराक से उसके अन्दर अनुराग की भावना पैदा हुई तथा प्रेम की टहनी पुनः हरी हो उठी। इसलिए कि सीरत की प्रभावी घटनाएं प्रशिक्षण एवं पथ

प्रदर्शन के बहुत शक्तिशाली स्रोत्र तथा इंसान के दिल व दिमाग के लिए कुर्आन हकीम के बाद सबसे अधिक प्रभावशाली एवं जीवनदायनी साधन हैं। इन दोनों किताबों के बाद अरबी तथा अंग्रेज़ी में सीरत की जो पुरानी व नई किताबें उसे हासिल थीं, वह बराबर अध्ययन में रहीं। यही वजह है कि सीरत उसकी किताबों और लेखों की हमेशा बुनियाद रही है, इसी स्रोत्र से उसकी वीणा के तारों को झनकार तथा लेखनी को प्रवाह मिला और उसी के दम से उसकी सारी रचनाओं की चमक–दमक है। अपने भावों की विवेचना के लिए उसको बहुत अधिक ठोस तर्क और अलंकृत उदाहरण सीरत के शौर्य तथा पराक्रम ही से मिलते थे। सीरत ही से उसकी भावना में उफान पैदा होता था और उसकी सोई हुई क्षमताएं जाग उठती थीं। उस की कोई अहम रचना ऐसी नहीं जिस पर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बहादुरी की छाप तथा सीरत के गहन अध्ययन व मनन की कोई छाया न हो।

सीरत के विभिन्न पहलुओं, हज़रत मुहम्मद साहब सल्ल0 के अभ्युदय के गौरव तथा उसके इंसानी अक्ल को हैरान कर देने वाले असर एवं परिणामों पर लेखक के यह लेख व निबन्ध उसकी किताब "कारवाने मदीना" 8 में जमा कर दिए गए हैं।

लेखक ने इस लम्बे समय में बहुत सी किताबें लिखीं लेकिन मुख्य रूप से सीरत के विषय पर कोई किताब उसके क़लम से न निकल सकी। हालांकि उसको इस बात का अहसास था कि इस विषय पर एक ऐसी किताब की बड़ी ज़रूरत है जो एक तरफ लौकिक एवं ज्ञानात्मक शैली में लिखी गई हो, दूसरी तरफ उसकी बुनियाद सीरत के पहले और मूल स्रोत्र पर हो, और कुर्आन व हदीस (हज़रत मुहम्मद साहब के कथन व क्रियाएं) से बिल्कुल भी विचलित न हो। वह विश्व–कोष की शैली में न लिखी गई हो जिसमें सारी जानकारी बिना टीका टिप्पणी के जमा कर दी जाती हैं और हर तरह का आवश्यक व अनावश्यक ज्ञान जमा कर

देना ज़रूरी समझा जाता है। यह वह लेखन शैली है जिसके अधिकांश लेखक तथा कुछ टीकाकार भी आदी रहे हैं। यह शैली अनेक ऐसे अनावश्यक शक पैदा करती है जिन से नबी सल्ल0 की सीरत बरी व बेदाग़ है और जिसमें भटकने तथा सिर धुनने की मुसलमानों को कोई ज़रूरत नहीं। इस लिए कि शोध एवं परिमार्जन की लेखनी (आधुनिकीकरण की प्रवृत्ति तथा ORIENTALISTS 2 शंकाओं का कोई प्रभाव स्वीकार किए बिना) अपना काम कर चुकी है साथ ही दीन के उन सर्वमान्य तथ्यों के साथ उसका ताल मेल बैठता हो जिनकी रोशनी के बिना आसमानी किताबों, नबियों की सीरत, मोजज़ात (चमत्कार)☆ जो इस सिद्धान्त व यक़ीन के सर्वथा अनुकूल हो कि यह एक नबी की सीरत है जो अल्लाह पाक की तरफ से दुनिया में भेजा गया, तथा जिसको हर दम व हर पल अल्लाह की मदद व समर्थन हासिल था, न कि किसी बड़े राष्ट्रीय लीडर व धार्मिक नेता की जीवन चर्या। यह वह सीरत है जो हर इंसाफ पंसद, पढ़े–लिखे व्यक्ति चाहे वह मुसलमान हो या गैर–मुस्लिम, के सामने किसी अनुरक्षण, अपवाद तथा किसी व्याख्या का सहारा लिए बिना पेश की जा सके। इसलिए लेखक ने इस किताब में खुद उन घटनाओं तथा परिस्थितियों और सीरत के मूल व बुनियादी विषयों पर भरोसा किया है और उसको इसका मौक़ा दिया है कि वह स्वतः मुखरित हो तथा पाठकों के दिल व दिमाग में अपना रास्ता खुद बनाए। इन मुंह से बोलती सच्चाईयों तथा सजीव तथ्यों को दर्शन शास्त्र का रंग देने, घटना चक्रों की व्याख्या करने और इसके लिए शब्दों का जाल बिछाने की इसमें ज़्यादा कोशिश नहीं की गई है। सच्चाई यह है कि सीरत अपनी ख़ूबसूरती, अपनी उपयुक्ता, अपने असर व दिल में जगह करने के लिए किसी साहित्यकार की आकर्षक शैली की मुहताज नहीं। इसके लिए ज़्यादा से ज़्यादा एक लेखक को जिस चीज़ की ज़रूरत होती है वह वर्णन की सरसता, सुरुचिपूर्ण क्रमबद्धता एवं

चयन की सुन्दरता है।

☆ पश्चिम के वह विद्वान जिन्होंने इस्लामी साहित्य के अध्ययन में अपना जीवन खपा दिया है और जो अपने पांडित्य, शोधकार्य में अभिरूचि और पूरब की गहरी जानकारी के कारण पश्चिम व पूरब में बड़े आदर व सम्मान की दृष्टि से देखे जाते हैं। इनकी एक बड़ी संख्या मूलतः पादरी है और इनमें से एक बड़ी संख्या जाति और धर्म से यहूदी हैं।

☆ नबियों की वह बातें और काम जो आम तौर पर इंसानी ताक़त से परे होते हैं।

फिर इसमें अक़्ल व भावना का सामंजस्य होना चाहिए। ऐसा न हो कि लम्बी चौड़ी बहस और टीका टिप्पणी प्रेम और श्रद्धा की भावना को ठंडा कर दे, जो सीरत के सौदर्न्य का आनन्द लेने और इससे अपने अन्तःकरण की ज्योति जगाने के लिए ज़रूरी तथा इससे भरपूर लाभ उठाने एवं इसकी समस्याओं, आदेशों तथा घटना को ठीक-ठाक समझने और सही नतीजे तक पहुंचने के लिए ज़रूरी शर्त है। अगर सीरत की कोई किताब अनुराग व ईमान की इस भावना से ख़ाली है तो समझना चाहिए वह सूखी लकड़ी का एक बनावटी ढांचा है, जिसमें ज़िंदगी की गरमाहट एवं नमी की कमी है। इसी तरह यह भी ज़रूरी है कि अनुराग व ईमान की यह भावना सहज बुद्धि के सर्वथा अनुरूप एवं अनुकूल हो जिस का आधुनिक युग में विशेषकर बड़ा महत्त्व है, न वह तर्क शास्त्र के सहज एवं ठोस सिद्धान्तों के प्रतिकूल हो, न विश्वास व अनुकरण पर आधारित ऐसी श्रद्धांजलि हो जिसको सिर्फ कट्टर विद्वान स्वीकार कर सकें जिनका बाहर की दुनिया एवं आधुनिक संस्कृति से कोई संबंध नहीं। यह श्रद्धा व प्रेम निस्सन्देह एक ईश्वरीय वरदान है लेकिन यह बात हमें कभी न भूलना चाहिए कि यह बहरहाल उस नबी की सीरत है जिस को रहमतुल लिल आलमीन (सारे जहानों के लिए वरदान) बना कर दुनिया के तमाम इंसानों तथा उनके समस्त वर्गों की तरफ भेजा गया है।

इसलिए उसको उस वर्ग के लोगों के लिए रोका नहीं जा सकता जिन को हालात ने इस्लाम व ईमान के माहौल में फलने–फूलने का मौका नहीं दिया। उनकी किस्मत में था कि वह ग़ैर इस्लामी माहौल ही में पैदा हों और वहीं फलें–फूलें। फिर अल्लाह की रहमत से हज़रत मुहम्मद साहब सल्ल0 की सीरत का कोई मनमोहक, जीवन दायक, खुशबूदार झोंका उनको उस जगह से उठा कर इस्लाम की रहमत की छाया और ईमान की घेरे में पहुंचा दे। सच्चाई यह है कि इन ग़ैर मुस्लिमों का हक सीरत पर उन मुसलमानों से किसी भी तरह कम नहीं है जो पहले से ही इस्लाम व ईमान की छत्र–छाया में हैं। नदी के उस पार रहने वालों को पुल की जितनी ज़रूरत होगी उतनी पुल के इसी तरफ रहने वालों को क्यों कर नहीं हो सकती है?

सीरत लिखते समय लेखक उस माहौल और उस दौर को किसी तरह अनदेखा नहीं कर सकता जिसमें हज़रत मुहम्मद सल्ल0 की नुबूवत का सूरज पहली बार उदय हुआ। इस लिए उस दौर की दुनिया भर में अज्ञानता की पूरी तस्वीर खींचना भी ज़रूरी है जो छठी शताब्दी ईस्वी में हमें सारी दुनिया पर छाई नज़र आती हैं। इसमें यह भी दिखाना होगा कि उस समय फसाद, नैतिक पतन और इन्सान की बेचैनी किस सीमा तक पहुंच चुकी थी, उसकी नैतिक, समाजिक, आर्थिक और राजनीतिक दशा क्या थी। विनाश व फसाद के कौन–कौन से तत्व उस समय की दुनिया में काम कर रहे थे और कैसी–कैसी ज़ालिम हुकूमतें, बिगड़े हुए धर्म, उग्रवादी काल्पनिक विचारधारा, विनाशकारी आन्दोलन अपना काम कर रहे थे। जब लेखक ने अपनी पुस्तक "माज़ा ख़सिरल आलम बे इन हितातिल मुस्लिमीन"1 की भूमिका के रूप में अज्ञानता के दौर की कुछ विस्तार के साथ तस्वीर खींचने की कोशिश की तो इतनी कठिनाई का सामना करना पड़ा जो उसे आज तक याद है। उसको इसके लिए उन तमाम पश्चिमी साहित्य की समीक्षा करना पड़ी जिन में इस्लाम के आने

के समय सभ्य देशों और दुनिया के राष्ट्रों का इतिहास लिखा गया था। उसने उन तमाम बड़े–बड़े ग्रंथों से उनमें बिखरे हुए हालात को इस तरह जमा किया जैसे चींटियों के मुंह से शकर के दाने इकट्ठा किए जाएं।

यह भूमिका, जो कुछ विस्तार के साथ लिखी गई और सीरत का अध्ययन करने के लिए रौशनी का काम करती है और उसके सामने हज़रत मुहम्मद सल्ल0 के आगमन, उसके गौरव, उसकी विशालता और नुबूवत के मंसब (पदवी) की कोमलता, उसके महत्व तथा उसके असर की पूरी तस्वीर पेश करती है, और जो आधुनिक दौर में सीरत के लेखकों के लिए बहुत ज़रूरी है, और उसका काम उस समय तक अधूरा समझा जाएगा जब तक उसमें बहस व शोध की शैली में इस्लाम के शुरूआत के समय असमानता के युग का नक्शा तथा उसके फसाद व बिगाड़, नैतिक पतन, आत्मविस्मरण व आत्म हत्या की जीती जागती व चलती फिरती तस्वीर पूरी ईमानदारी के साथ बिना किसी कांट–छांट के पेश न की गई हो।

यही उस माहौल और उस शहर का नक्शा था जहां इस्लाम की पहली किरन चमकी जहां अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद साहब सल्ल0 का जन्म हुआ और हक की तरफ बुलाने वाले क़ाफिले ने पहला क़दम आगे बढ़ाया। जहां आप के जीवन के 53 वर्ष बीते और जहां 13 वर्ष इस्लाम की दावत (बुलावा) की कठिन परीक्षा की घड़ियां बीतीं। सीरत का अध्ययन करने वाले के लिए यह ज़रूरी है कि उस दौर में जो बौद्धिक व सांस्कृतिक स्तर था उसको जाने, तथा उस देश की सामूहिक, राजनीतिक एवं धार्मिक हालात उसके आर्थिक व राजनीतिक ढांचे और भौतिक तथा मानवीय शक्ति के स्वरूप से भी समझें ताकि उस देश के रहने वालों की सही मनोवृति, हालत तथा उनके मनोविज्ञान को भली भांति समझ सके और उसको उन कठिनाईयो तथा रूकावटों का पूरा अंदाज़ा हो सके जो इस्लाम के विकास की राह में बाधा डाल रहीं थीं।

☆ पुस्तक का उर्दू अनुवाद "इस्लामी दुनिया पर मुसलमानों के उरूज व ज़वाल का असर" के नाम से लखनऊ से प्रकाशित हुआ है।

यही बात बल्कि इससे कुछ अधिक ही यसरब☆ के बारे में कही जा सकती है। जहां इस्लाम मक्का से पहुंचा, जहां अल्लाह के रसूल सल्ल0 और सहाबा कराम रज़ी☆ हिजरत करके गए और जिसे इस्लाम का पहला केन्द्र होने का सौभाग्य हासिल हुआ। इसलिए कि इस की पृष्ठ भूमि को समझे बिना इस्लाम की कामयाबियों का पूरा अंदाज़ा नहीं किया जा सकता। उन हालात को जाने बिना हम समझ ही नहीं सकते कि इस्लाम ने उन लोगों को किस तरह दीक्षा दी, उन्हें कैसे नवजीवन प्रदान किया, विभिन्न समस्याओं को कैसे सुलझाया, विरोधी तत्वों को किस तरह मिलाया। इस सम्बंध में हज़रत मुहम्मद साहब सल्ल0 की नुबूवत का कारनामा क्या था? उसने टूटे हुए दिलों को जोड़ने और रूठे हुए इंसानों को मिलाने, उनकी शिक्षा–दीक्षा, और उन्हें खरा व पवित्र बनाने का काम किस तरह किया। यह बात सिर्फ उस समय समझी जा सकती है जब आदमी के सामने उस विचित्र व पेचीदा माहौल की पूरी तस्वीर हो जिसका सामना रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और मुसलमानों को करना पड़ा। बहुत सी घटनाएं और फैसले जो हदीस व सीरत के अध्ययन में आदमी की नज़र से गुज़रते हैं उस समय तक समझे नहीं जा सकते जब तक मदीना की सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक दशा, वहां की मिट्टी की विशेषता, उसके भूगोल, उसके पर्यावरण, वहां की व्यक्तिगत और क्षेत्रीय शक्तियों, उनके आपसी सम्बंधों, समझौतों और इरादों तथा हिजरत से पहले के हालात और क़ौमी व राष्ट्रीय नियम व रीति–रिवाजों का पाठक को ज्ञान न हो। यदि कोई व्यक्ति इन बातों का ज्ञान प्राप्त किए बिना सीरत की किताबों का अध्ययन करता है तो उसकी मिसाल सुरंग में चलने वाले उस यात्री की सी होगी जिस को अपने दाएं–बाएं और आदि–अंत किसी बात की ख़बर

न हो।

यही नियम समकालीन सभ्य हुकूमतों एवं पड़ोसी राज्यों पर भी लागू होता है। इस लिए पाठकों के समाने इस्लाम की दावत, उसके महत्व तथा उसके लिए की जाने वाली जोश और जोख़िम भरी कोशिशों की साफ तस्वीर, उस समय तक आ नहीं सकती जब तक पाठक को उन हुकूमतों के विस्तार, उसकी शान व शौकत तथा उनकी शक्ति का अन्दाज़ा न हो जिनको अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने इस्लाम की दावत दी और जिनके नाम फरमान जारी किए, और उनकी सभ्यता व संस्कृति, जन शक्ति, ख़ुशहाली तथा उनके राजाओं की सामन्तशाही, रोब व दबदबा एवं शान व शौकत का सही ज्ञान न हो। आज के दौर में उन क़ौमों के इतिहास तथा उनके समाज पर काफी कुछ रोशनी पड़ चुकी है और बहुत सी बातें बेनक़ाब होकर सामने आ गई जो अब तक लोगों के सामने नहीं आई थीं या साफ न हो सकी थीं। उस दौर के सीरत लिखने वालों के लिए यह ज़रूरी है कि वह अपने काम में इन सभी जानकारियों से पूरी मदद लें और इतिहास व भूगोल तथा तुलनात्मक अध्ययन के क्षेत्र में जो नई जानकारियां अब तक सामने आई है उन से पूरा–पूरा फायदा उठाएं।

लेखक को इन सारी बातों का एहसास था तथा सीरत लिखने वालों के महान कार्य, एवं विभिन्न युगों और भाषाओं में उनकी लिखी किताबों की महत्ता और उपयोगिता की पूरी मान्यता का ध्यान भी। उसने अपनी ख़ुशकिस्मती समझ कर यह कोशिश की कि वह भी नबी सल्ल0 की सीरत पर एक नई किताब लिखकर इस प्यारे व महानतम विषय के लेखकों की जगमगाती सूची में शामिल हो जाए।

लेकिन समय की कमी और निगाह की कमज़ोरी की वजह से लेखक को विस्तार और इत्मिनान के साथ इस विषय पर क़लम उठाने की हिम्मत नहीं होती थी। इसलिए कि उसको इसका ख़ूब अनुभव था

कि किसी महापुरूष की सीरत (नबी और अंतिम नबी व नबियों के सरदार हज़रत मुहम्मद सल्ल0 का मामला इससे कहीं ऊंचा और बढ़कर है) लेखकों के लिए सबसे कठिन और नाजुक विषय है। लेखक को मशहूर महापुरूषों की जीवनी तथा पहले और बाद की अनेक महान आत्माओं की जीवनचर्या और उनके कारनामे लिखने एवं बयान करने का शायद अपने बहुत से समकालीन साथियों से अधिक अवसर मिला है। उसने नौजवानी से बल्कि लड़कपन से ही, जब से क़लम पकड़ना सीखा, हक़ के अनुयायियों, उम्मत ☆ के सुधारकों तथा इस्लाम के रक्षकों के हालात पर लिखना शुरू कर दिया और अपने क़लम से सीरत व उसके अनुवादों के विषय पर कई हज़ार पन्ने रंगे और अपने नसीब को रोशन किया, और बचपन ही से उन बुजुर्गों एवं मार्ग दर्शकों के साथ ज़िंदगी गुज़ारी।

अल्लाह का शुक्र है कि इस सिलसिले में बहुत कुछ पढ़ने का मौका मिला और बहुत कुछ लिखने का भी। इन सब वजहों से उसको इस विषय की नज़ाकत तथा ज़िम्मेदारी की महत्ता का अंदाज़ा था। आम तौर पर ऐसा होता है कि किसी लेखक का कोई विशेष रूझान या पसंद, अपने नायक पर (कभी जाने और अनजाने में) असर डालती है और उस पर छा जाती है जिसके नतीजे में लेखक की रचना अपने नायक का किरदार पेश करने के बजाए खुद लेखक का चित्र पेश करती है हालांकि लेखक नायक के हालात बेलाग और निष्पक्ष होकर लिखना चाहता है लेकिन वह नायक को अपने अनुभव और पसंद की ऐनक से तथा अपने विशिष्ट पैमानों से नापने लगता है।

यह काम वही कर सकता है जिसने नायक को समझा हो, उसकी विभिन्न दशाओं को अपने सामने रख कर उसकी पूरी विवेचना पेश करे। ऐसा वास्तव में हदीस की वजह से सम्भव हो सका जिसका कोई उदाहरण दूसरे नबियों अथवा इंसानी इतिहास के अन्य महापुरूषों में कहीं नहीं मिलता। आचरण व व्यवहार, अल्लाह के रसूल सल्ल0 की दुआओं,

दिन रात के विभिन्न हिस्सों में अल्लाह की याद, आपकी इबादत इस उम्मत तथा पूरी इंसानियत के लिए आप की बेचैनी के जो विचित्र नमूने हमें आपकी दुआओं के संग्रह में नज़र आते हैं, उनका भी इस में बड़ा दख़ल है। इसी तरह आपके कथन, आचरण व व्यवहार, रात–दिन की बारीक से बारीक बातें जो आपके प्रशंसकों एवं परिवार के लोगों ने बयान की हैं, विश्व साहित्य के विशाल भण्डार ने मानव की नैतिक पराकाष्ठा और उसकी सरसता की इससे अधिक नाज़ुक, महान एवं सूक्ष्म वर्णन अब तक रिकार्ड नहीं किया। इस तरह सीरत पर कोई किताब लिखने में किसी तरह की कठिनाई या भ्रम नहीं होना चाहिए और न ही अनुमान व कल्पना के संसार में उड़ान भरने की ज़रूरत है जिसका महापुरुषों की जीवनी लिखने में आम तौर से सहारा लेना पड़ता है। रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सीरत इन सबसे अधिक पूर्ण भी है और आकर्षक भी। इसकी बुनियाद कुर्आन पाक की वह साफ आयतें, इतिहास के ठोस सबूत, आपके व्यक्तित्व, आचरण व व्यवहार, बर्ताव, आपकी आदतों व इबादतों का वह स्पष्ट एवं ठोस विवरण है जिससे अधिक की कल्पना भी नहीं की जा सकती। साथ ही वह सच्चाई से भी इतने करीब है जिससे अधिक सोचा नहीं जा सकता।

पैगम्बरे इस्लाम सल्ल० की पवित्र सीरत जो नुबूवत व इंसानियत के कमाल की चरमसीमा एवं मेराज है और दूसरे नबियों की सीरत व महापुरुषों की जीवनी में बड़ा अन्तर है। इसलिए इन सभी बातों के बावजूद हम यह मानने पर मजबूर होते हैं कि आपके जीवन एवं सदाचरण की असल तस्वीर, और आपकी सीरत व दावत तथा व्यक्तिगत व सामूहिक जीवन में जो चमत्कार नज़र आते हैं उनकी घेराबंदी व विस्तृत वर्णन, अल्लाह पाक और अल्लाह के बंदों के साथ आपका मामला, आप की सीरत व मनमोहकता, अन्दर–बाहर की परिपूर्णता, आपकी मुहब्बत व शफकत, आपकी हमदर्दी, आपकी दुआएं और अल्लाह

से विनती, मानवता और मानव जाति के भविष्य के लिए आपकी बेचैनी, आपकी अलंकृत भाषा, आप की हिकमत और कमाल की रौशन निशानियों का पूर्ण एवं विस्तृत वर्णन लगभग असम्भव है।

सीरत की किताबों ने इस सिलसिले में जो कुछ पेश किया है वह (उनकी महत्ता और उनके लिखने में की गई मेहतन को स्वीकार करते हुए) आपकी सीरत के जमाल (पराक्रम) और नुबूवत के कमाल की सिर्फ एक हलकी सी झलक है। फिर भी उनकी कोशिश तारीफ के काबिल है कि उन्होंने इतने सब्र व मेहनत तथा बड़ी लगन के साथ इन हालात का वर्णन किया। इसका बेहतरीन बदला अल्लाह पाक उन्हें देगा। नबी सल्ल0 की सीरत एक ऐसी संयुक्त, विश्व व्यापी तथा कभी न ख़त्म होने वाली दौलत है, जिससे अच्छाई के रास्ते पर चलने के लिए हर व्यक्ति, हर पीढ़ी तथा इंसानों का प्रत्येक समूह व वर्ग अपना हिस्सा हासिल कर के अपनी सोयी किस्मत को जगा सकता है।

अनुवादः– 'तुमको अल्लाह के पैगम्बर की पैरवी करनी बेहतर है, अर्थात उस व्यक्ति को जिसको अल्लाह से मिलने और क़यामत का दिन आने की उम्मीद हो और वह अल्लाह को अत्यधिक याद करता हो'। (सूरः अहज़ाब–21)

शायद कुछ इन्हीं कारणों से नबी सल्ल0 की सीरत पर कोई नई किताब लिखने की मुझे अब तक हिम्मत न हो सकी और मैं इस महान कार्य को अपनी हैसियत से बहुत ऊंचा समझता रहा। मेरे कुछ विद्वान दोस्तों ने मुझे इस बात पर तैयार करने की कोशिश भी की कि मैं अरबी भाषा में नबी सल्ल0 की सीरत पर एक ऐसी किताब तैयार करूं जिसमें नई पीढ़ी की पसंद, उसकी मनोविज्ञान तथा उसके बौद्धिक स्तर का ध्यान रखा गया हो और वह मौजूदा दौर के नए तकाज़ों व ज़रूरतों एवं छानबीन की शैली के अनुकूल हो। क्योंकि हर युग की एक विशिष्ट वर्णनशैली और भाषा होती है जिसका ध्यान रखना ज़रूरी होता है।

दवाओं और खाद्यान्नों की भी विशेष ख़ुराकें और एक ख़ास क्रम होता है जो समय के साथ बदलता रहता है लेकिन यह सब कुछ (जैसा कि ऊपर इशारा किया जा चुका है) सीरत पर अपनी इच्छाओं, उद्देश्यों एवं विचार धाराओं को थोपे बिना होना चाहिए, जो घड़ी–घड़ी बदलती रहती है, सीरत को धार्मिक घेरे, ज्ञान की कमी तथा राजनीतिक मक़सद की पूर्ति से पैदा होने वाली हर तरह की आशंका और आपत्ति से पाक व साफ होना चाहिए।

आख़िर में अल्लाह ने मुझे इस मामले में ताकत दी और मैं एकाग्रता के साथ इस काम में लीन हो गया और उठते–बैठते, सोते जागते मैं इसी धुन में जीने लगा। इसके लिए मैंने न केवल सीरत व हदीस की किताबें पढ़ना शुरू कीं बल्कि पुराने नए साहित्य में जो भी काम की चीज़ मुझे मिली उससे पूरा फ़ायदा उठाने की कोशिश की। इसके बाद मैंने इस विषय पर जो सबसे अधिक प्रमाणित किताबें लिखी गयी हैं उन पर भरोसा करते हुए इस पाक काम की शुरूआत की। इन किताबों में प्रमुख थीं। हदीस की छः प्रमाणित किताबें, सीरत इब्ने हेशाम, इमाम इब्न कय्यम की जादुलमआद और सीरत इब्ने कसीर।

मौजूदा दौर में इस विषय पर जो काम हुआ है तथा पश्चिमी भाषाओं के प्रमुख स्रोतों से भी, जिनसे सीरत के अनके पक्ष उभर कर सामने आते हैं और जिनसे उस युग की हुकूमतों तथा समाज पर रोशनी पड़ती है, लाभ उठाने की कोशिश की गयी। कोशिश यह की गई कि किताब में ज्ञान की दीक्षा के दोनों पक्षों का संतुलित समावेश हो और इनमें से कोई एक पक्ष दूसरे पर भारी न पड़े, और इसमें ऐसे बेमिसाल एवं सजीव उदाहरण अधिक से अधिक पेश किए जाएं जिनकी मिसाल किसी इंसान की सीरत, किसी महापुरूष की जीवनी, किसी पीढ़ी एवं क़ौम के इतिहास या किसी धार्मिक आंदोलन में नहीं मिलती और जिनसे नबी सल्ल0 की सीरत की पैरवी करने की भावना पढ़ने वाले में ख़ुद पैदा

होती है। कोशिश यह रही है कि यह सब बिना किसी अलंकरण या बढ़ाए–चढ़ाए बिना असली हालत में पाठकों के सामने रख दिया जाए क्योंकि कुदरती ख़ूबसूरती को किसी श्रृंगार और महकते हुए ताज़ा फूलों को किसी बनावटी खुशबू की ज़रूरत नहीं होती।

शव्वाल 1395 हिजरी से शव्वाल 1396 हिजरी तक (अक्टूबर 1975 से अक्टूबर 1976 ई0 तक) मुझे इस विषय के अलावा (कुछ बेचैनी के पलों को छोड़कर) किसी और चीज़ से सरोकार नहीं रहा। बीच में कुछ समय बीमारी और पूरब–पश्चिम के कुछ लम्बे दौरों में निकल गया। अल्लाह की मेहरबानी से शव्वाल 1396 हि0 में यह किताब पूरी हो गयी और अब पाठकों के हाथों में है।

इस मौके पर अपने उन दो विद्वान दोस्तों का शुक्रिया अदा करना ज़रूरी है जिनसे मुझे इस किताब के लिखने में बड़ी मदद मिली। एक मौलाना बुरहानुद्दीन संभली जो दारूल उलूम नदवतुल उलमा, लखनऊ में हदीस व तफ़सीर के आचार्य हैं और जिनसे हदीसों की खोज एवं चयन तथा सीरत के कुछ स्थलों के शोधकार्य में मुझे कीमती मदद मिली। अल्लाह पाक उनको इसका प्रतिफल प्रदान करे। दूसरे सैय्यद मुहीउद्दीन साहब जिन्होंने विश्वकोषों की छानबीन में मेरी बहुत मदद की। उनके इस सक्रिय सहयोग के प्रति मैं आभार व्यक्त करता हूं।

अपनी असमर्थता के कारण बहुत दिनों से लेख एवं किताबों में इमला बोलता हूं। इस लिए इस किताब में भी मुझे अपने कुछ प्यारे शगिर्दों से मदद लेनी पड़ी । ख़ासकर प्रिय मुहम्मद मआज़ इन्दौरी नदवी, प्रिय अली अहमद गुजराती नदवी और दारूल उलूम नदवतुल उलमा के उस्ताद मौलवी नूर आलम अमीनी जिन्होंने लिखने का काम किया। अल्लाह पाक उनको इसका बदला दे।

सीरत की इस किताब के लिए ख़ास तौर से नक्शे भी तैयार किए गए हैं। नक्शों से ऐसे तथ्य आसानी से समझ में आ जाते हैं जो

कभी–कभी लम्बे चौड़े बयान से भी समझ में नहीं आते हैं। यह नक़्शे ऐतिहासिक तथ्यों तथा उस युग के इतिहास के अध्ययन पर आधारित हैं, और कोशिश की गयी है कि वह तकनीकि हैसियत से भी पूरे हों। इनकी तैयारी में हमारे प्रिय मुहम्मद हसन अंसारी एम0ए (भूगोल), प्रो0 मुहम्मद शफी साहब प्रोवाइस चांसलर और विभागाध्यक्ष भूगोल विभाग अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, तथा उनके विभाग के अन्य लोगों ने बहुत रूचि ली। कार्टोग्राफी (मानचित्र कला) का पूरा काम प्रिय महमूद अख़्तर, एम0ए कार्टोग्राफर, भूगोल विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय इलाहाबाद ने बड़ी तन्मयता से किया। अल्लाह इन सबको इसका प्रतिफल दे कि इस काम को नबी सल्ल0 की सीरत के प्रति सेवा भाव से किया। प्रिय मौलवी मुहम्मद राबे हसनी नदवी लेखक "जज़ीर तुल अरब का भूगोल" (उर्दू) और अध्यक्ष अरबी साहित्य विभाग, दारूल उलूम नदवतुल उलमा लखनऊ के कीमती सुझाव भी इस काम में शामिल रहे। अल्लाह पाक इन सबको इसका प्रतिफल प्रदान करें।

अरबी से उर्दू में किताब का अनुवाद लेखक के भतीजे प्रिय सैय्यद मुहम्मदुल हसनी ☆ सम्पादक 'अलबाएस–अलइस्लामी' ने बड़ी लगन से किया, और अब हिन्दी अनुवाद प्रिय मुहम्मद हसन अंसारी पेश कर रहे हैं। अल्लाह पाक इनकी कोशिशों को कुबूल करें।

अल्लाह पाक से दुआ है कि इस किताब को लाभकारी बनाएं, इसे कुबूल फरमाए तथा इसको आख़िरत (मरने के बाद पारलौकिक जीवन) की पूंजी तथा सीरत के अध्ययन और उससे अधिक से अधिक लाभ उठाने का वसीला बनाए। अगर यह किताब किसी ईमान वाले के दिल में श्रद्धा और प्रेम की एक चिंगारी भी भड़का देती है और किसी ग़ैर मुस्लिम के अंदर नबी–ए–रहमत सल्ल0 की पाक सीरत के प्रति आकर्षण, आपके सल्ल0 के प्रति अनुराग की कोई लहर तथा इस्लाम के समझने की जिज्ञासा पैदा कर देती है, और इस सबसे बढ़कर यह कि अल्लाह के

यहां कुबूल तथा लेखक के लिए मोक्ष का साधन हो तो वह समझेगा कि उसकी मेहनत ठिकाने लगी और जीवन सफल हो गया।

अबुल हसन अली नदवी

अध्याय एक
अज्ञानता का युग

छठी शताब्दी ईस्वी कें धर्मों तथा उनके मानने वालों पर एक निगाह

छठी शताब्दी ईस्वी में दुनिया के बड़े धर्म, प्राचीन धार्मिक ग्रन्थ और उनके उपदेश व सिद्धान्त (जिन्होंने धर्म, आचरण और ज्ञान के क्षेत्र में विभिन्न मौकों पर अपनी अहम भूमिका निभाई थी) बच्चों का खिलौना बन चुके थे, और बदलाव व परिवर्धन के समर्थकों, मुनाफिकों (दोहरी नीति रखनें वाले) नास्तिकों व आत्माविहीन धार्मिक नेताओं के लालच का निशाना और काल के गाल का शिकार हो चुके थे और उनके असल रूप को पहचानना नामुमकिन सा था। अगर उन धर्मों के प्रवर्तक तथा उनके नबी दोबारा वापस आकर उस हालत को देखते तो उन धर्मों को स्वयं न पहचान पाते और उनको अपने से जोड़ने पर कभी तैयार न होते। ☆

☆ विस्तार में लेखक की पुस्तक " मंसबे नबूवत और उसके आली मकाम हामलीन" का व्याख्यान न0 7 देखें

यहूदी धर्म कुछ बेजान रीतियों और परम्पराओं का नाम था जिसमें ज़िंदगी की कोई चमक–दमक बाक़ी नहीं थी। यहूदी धर्म खुद अपने में एक नस्ली धर्म है जिसके पास दुनिया के लिए कोई दावत तथा मानवता के दुखों का कोई इलाज नहीं है।

इस धर्म का एकेश्वरवाद में यकीन भी जो (विभिन्न धर्मों एवं क़ौमों में) इसका विशिष्ट चिन्ह रहा है जिसमें इसके आदर व सम्मान तथा बनी इस्राईल (इस्राईल की सन्तान) की अन्य क़ौमों पर इसकी प्राथमिकता का

राज़ छिपा है और जिसकी वसीयत हज़रत इब्राहीम और हज़रत याकूब ने अपने बेटों से की थी) अडिग नहीं रह सका। यहूदियों ने अपनी पड़ोसी कौमों के असर और उन पर विजय हासिल करने वाली क़ौमों के दबाव में उनकी बहुत सी बातों आस्थाओं को मान लिया, और उनकी अनेक जाहिलाना रस्मों को अपना लिया। इस बात को कुछ इंसाफ पसंद यहूदी इतिहासकारों ने खुद माना है। Jewish Encyclopaedia Vol XII के पेज न0 568–69 से एक पद का अनुवाद इस तरह है।

" मूर्ति पूजा के ख़िलाफ नबियों का गुस्सा यह बताता है कि देवताओं की पूजा इस्राईली जनता के दिलों में घर कर चुकी थी और बाबुल के देश निकलने से वापस आने के समय तक पूरी तरह उसका अन्त नहीं हुआ था। अन्धविश्वास और जादू टोना द्वारा अनेक जाहिलों वाले विचार एवं रस्में जनमानस ने दोबारा अपनी ली थीं। तालमूद से भी इस बात की पुष्टि होती है कि मूर्ति पूजा में यहूद के लिए बड़ा आर्कषण था।"

बाबुल की तालमूद (जो यहूदियों में बहुत ही पवित्र समझी जाती है और कभी–कभी तौरेत पर उसको प्राथमिकता दी गई है, वह छठी शताब्दी ई0 में यहूदियों में लोकप्रिय व प्रचलित थी)। कम समझ, अशिष्ट शब्दों, ईश्वर के प्रति अशिष्ट व्यवहार, दीन धर्म की सच्चाईयों के साथ मज़ाक के अजीब व ग़रीब नमूनों से भरी किताब को देखकर उस शताब्दी में यहूदी समाज के बौद्धिक पतन, धार्मिक दिल चस्पी के बिगाड़ का पूरा अन्दाज़ा होता है। ☆

ईसाई धर्म अपने पहले ही दौर में उग्रवादियों के परिवर्धन, जाहिलों की व्याख्या तथा रूमी नसरानियों की मूर्ति पूजा का शिकार हो गया था। हज़रत मसीह अ0 की सादा पवित्र शिक्षाएं इस मलबे के नीचे दब गई थीं। ईमानदारी के साथ अल्लाह की इबादत की किरण घने बादलों के अन्दर छिप चुकी थी।

चौथी शताब्दी के अन्त में ईसाई समाज में तसलीस की आस्था ☆ किस तरह रच बस गयी थी उसके बारे में एक ईसाई विद्वान ने लिखा है।

"यह आस्था कि एक अल्लाह तीन सूत्रों (इकाईयों) से मिलकर बना है, ईसाई दुनिया की पूरी ज़िंदगी में चौथी शताब्दी के अन्त में ही रच बस गयी थी। जिसको मसीही दुनिया सरकारी और मान्यता प्राप्त आस्था के तौर पर बहुत दिनों तक मानती रही, यहां तक कि 19वीं शताब्दी में इस आस्था के बदलाव तथा इस रूप तक पहुंचने का भेद खुला। ☆

☆ विस्तृत वर्णन के लिए देखें 'यहूदी तलमूद की रोशनी में' लेखक डा० रोहलिंग

☆ईसाइयों का धार्मिक विश्वास कि हज़रत मसीह अ० अल्लाह के बेटे हैं जिन का जन्म हज़रत मरियम की कोख से हुआ। (अनुवाद)

☆New Catholic Encyclopaedia Vol. 14 pp. 295

उसी दौर के एक ईसाई इतिहासकार Rev. Houstan Baxtor ने ईसाई समाज में मूर्ति पूजा की शुरूआत तथा उसके नए-नए रूपों की (उनकी धार्मिक पहचान, उनके आचार व्यवहार, त्योहारों एवं आयोजनों में) आंख बंद करके नक़ल करने, उनसे प्रभावित हो कर या आज्ञानता में उनको अपनाने, नकल करने की भावना तथा इस मामले में ईसाईयों द्वारा नई-नई बातें गढ़ने का ख़ूब वर्णन किया है। उसने अपनी किताब The History of Christianty in The Light of Modern Knowledge (Glasgow 1929 pp 407) में लिखा है।

" मूर्ति पूजा ख़त्म तो हो गई मगर तबाह नहीं हुई बल्कि गायब हो गई। लगभग सब ही कुछ जो मूर्ति पूजा में था, ईसाईयत के नाम से चलता रहा। जिन लोगों को अपने देवताओं और लोकनायकों से हाथ धोना पड़ा था उन्होंने अनजाने तौर पर बहुत आसानी से किसी शहीद

को पुराने देवताओं के गुणों से युक्त बताकर किसी स्थानीय मूर्ति को उसका नाम दे दिया और इस तरह काफिराना रीति और देवमाला इन स्थानीय शहीदों के नाम से जुड़ गई तथा अल्लाह के गुणों से युक्त वलियों ☆ की आस्था की बुनियाद पड़ गई। इन वलियों ने एक तरफ तो अरीयोसीन की आस्था के आधार पर इन्सान और अल्लाह के बीच ईश्वरीय गुण रखने वाले इन्सानों की शक्ल अपना ली और दूसरी तरफ यह मध्य युग की पवित्रता एवं पारसाई के निशान बन गए। मूर्ति पूजा करने वाले त्यौहार अपना कर उनके नाम बदल दिए गए यहां तक कि सन 400 ई0 तक पहुंचते–पहुंचते सूरज देवता के प्राचीन त्योहार ने मसीह के जन्म दिन का रूप अपना लिया।"

जब छठी शताब्दी ई0 शुरू हुई, उस समय सीरिया व ईराक़ के ईसाईयों तथा मिस्र के ईसाईयों के बीच लड़ाई अपनी चरम सीमा पर थी। यह लड़ाई हज़रत मसीह अ0 की सच्चाई और अस्तित्व को लेकर हो रही थी। इसकी वजह से स्कूल और गिरजाघर सब कुछ युद्ध क्षेत्र में बदल गए थे, जो एक दूसरे की बुराई में लगे रहते और एक दूसरे के ख़ून के प्यासे थे। ऐसा मालूम पड़ता था कि यह दो धर्मों या दो विरोधी क़ौमों की लड़ाई है। ☆ इस वजह से ईसाईयों को इसकी फ़ुर्सत न थी कि पूरी दुनिया में हो रहे बिगाड़ की रोक थाम और सुधार की कोशिश करते और मानवता को भलाई का पैग़ाम देते।

मजूसी (ईरान के पारसी) प्राचीन काल के चार तत्वों (जिसमें सबसे बड़ा तत्त्व आग था) की इबादत किया करते थे और उन्होंने इसके लिए ख़ास अग्निकुण्ड व पूजाघर बनाए थे। आग की पूजा देश के कोने–कोने में फैली थी। इसके लिए कठोर नियम तय किए गए थे। जिनको मानना ज़रूरी था। आग की पूजा और सूरज की इबादत के सिवा हर आस्था व धर्म वहां मिट चुका था। उनके नज़दीक धर्म की हैसियत कुछ रीतियों या कुछ प्राचीन रस्मों से अधिक न थी, जिनको वह ख़ास मौकों पर अदा

करते थे। इबादतगाहों से बाहर वह बिलकुल आज़ाद थे जहां वह अपनी मर्ज़ी के मुताबिक मनमानी ज़िंदगी बिताते थे। एक मजूसी और एक अधर्मी, आत्मा विहीन व चरित्रहीन व्यक्ति में कोई फर्क बाकी नहीं रह गया था।

"ईरान ब अहदे सासानियान"☆ (ईरान सासानी काल में) के लेखक आर्थर क्रिस्टियन सीन ने उस दौर के धार्मिक कामों और ज़िम्मेदारियों पर रोशनी डालते हुए लिखा है कि :—

"सरकारी कर्मचारियों के लिए ज़रूरी था कि वह दिन में चार बार सूरज की पूजा करें, चांद, आग और पानी की पूजा इसके अलावा थी। सोने—जागने, नहाने, जनेऊ पहनने, खाने—पीने, बाल बनवाने, नाख़ुन कटवाने, शौच के लिए जाने और दिया (दीपक) जलाने, हर काम के लिए दुआएं थी जिनका पढ़ना उन पर ज़रूरी था। उनको इसका भी हुक्म था कि आग किसी भी समय बुझने न पाए और आग पानी एक दूसरे से न मिले। धातु को मोर्चा (ज़ंग) न लगे इसलिए कि खनिज भी उनकी निगाह में पूज्य थे। ......(पृष्ठ 155)

ईरान के लोग आग की तरफ रूख़ करके इबादत करते थे। ईरान के आख़िरी राजा यज्दगर्द ने एक बार सूरज की क़सम खाते हुए यह कहा था, " मैं सूरज की क़सम खाता हूं जो सबसे बड़ा माबूद (पूज्य) है।" उसने उन ईसाईयों को जिन्होंने ईसाईयत से तौबा कर ली थी इसका पाबन्द किया था कि वह अपनी सच्चाई साबित करने के लिए सूरज की पूजा करें। (पृष्ठ 186—187)

ईरान वाले हर युग में सनूवियत (दो ख़ुदाओं) का शिकार रहे यहां तक कि यह उनकी पहचान बन गई। वह दो ख़ुदाओं के क़ायल थे। एक रोशनी या ख़ैर (अच्छाई) का ख़ुदा जिसको वह आहुरमज़दा या यज़दां कहते थे, दूसरा ज़ुल्मत या बुराई का ख़ुदा जिसका नाम उन्होंने अहरमन रखा था। उनकी आस्था थी कि उन दोनों ख़ुदाओं के बीच आपस में

टकराव और शक्ति परीक्षण बराबर जारी है। (पृष्ठ 183–233)

ईरानी धर्मों के इन इतिहासकारों ने उनके माबूदों के बारे में जो कहानियां लिखीं हैं और पूरा पुराण–शास्त्र (Mythology) तैयार कर दिया है वह अपनी अजायब पसन्दी और ब्योरा में यूनानी अथवा हिन्दुस्तानी देवमाला से किसी तरह कम नहीं। (पृष्ठ 204–209)

बौद्ध धर्म जो हिन्दुस्तान और मध्य एशिया में फैला हुआ था वह भी एक ऐसे मूर्ति पूजा वाले धर्म में बदल चुका था कि बुत उसके साथ चलते थे जहां उसके क़ाफ़िले का पड़ाव होता वहां गौतम बुद्ध की मूर्ति स्थापित की जाती और देखते–देखते एक माबूद (पूज्य) तैयार हो जाता। ☆

विद्वानों को इस धर्म और इसके संस्थापक के बारे में अभी तक यह शक है कि आसमान और ज़मीन और खुद इन्सान के बनाने वाले खुदा के अस्तित्व पर उनका अक़ीदा व ईमान था या नहीं। उनको हैरत है कि ईमान व आस्था के बिना यह महान धर्म कैसे क़ायम रह सका। ☆

जहां तक हिन्दू धर्म की बात है तो वह देवी देवताओं की कसरत (बाहुल्यता) में दूसरे धर्मो से बहुत आगे है। छठी शताब्दी में इस धर्म में मूर्ति पूजा अपनी चरम सीमा पर थी। माबूदों (पूज्य) की संख्या उस शताब्दी में 33 करोड़ तक बताई जाती है। प्रत्येक महान, भयावह अथवा लाभ पहुंचाने वाली चीज की पूजा की जाती थी। मूर्तिकला भी अपनी चरम सीमा पर थी और उसमें नई बातें निकाली जाती थीं। ☆

एक हिन्दू विद्वान सी0वी वैद्य ने अपनी किताब 'History of Mediaeval Hindu Ind (Vol. I Poona, 1921 P.P I0I) में राजा हर्ष (V0 6–648) के बारे में लिखा है, याद रहे कि यह वह दौर है जिसके बाद ही अरब प्रायद्वीप में इस्लाम शुरू हुआ। :

''उस दौर में हिन्दू धर्म और बुद्धमत दोनों ही समान रूप से मूर्ति पूजा के समर्थक थे बल्कि शायद बुद्धमत मूर्ति पूजा में हिन्दू धर्म से भी

आगे बढ़ गया था यह धर्म असल में अल्लाह के इन्कार से शुरू हुआ लेकिन आख़िर में उसने बुद्ध को सबसे बड़ा ख़ुदा बना लिया, बाद में और दूसरे ख़ुदाओं जैसे बोधिसत्व ☆ आदि बढ़ते गए और विशेषकर महायान ☆ धर्म (स्कूल) में मूर्ति पूजा ने पुख़्ता तौर पर अपने क़दम जमा लिए। हिन्दुस्तान में इसे इतनी पहचान मिली कि कुछ पूर्वी भाषाओं में बुद्ध का नाम ही बुत का पर्यायवाची हो गया।"

☆ संस्कृत में भावी युद्ध के लिए प्रयुक्त शब्द (अनुवाद)

☆ बौद्ध मत के अनुयाइयों की दो शाखाएं हैं एक उदार दृष्टिकोण पर आधारित महायान, दूसरी संकुचित दृष्टि कोण पर आधारित हीनयान। (अनुवाद)

इसमें शक नहीं किया जा सकता कि मूर्ति पूजा उस दौर में पूरी दुनिया में फैली हुई थी। हिन्द महासागर से प्रशान्त महासागर तक दुनिया मूर्ति पूजा में डूबी थी। ईसाई व सामी धर्म, बुद्ध मत मानों बुतों के प्रति श्रद्धा में एक दूसरे से आगे बढ़ जाने की कोशिश में लगे थे।

I.S.S O'Malley C.I.E., C.I.E., I.C.S. viuh fdrkc Popular Hinduisd-The Religion of The Masses (Cambridge 1935) PP 6-7 में लिखते हैं कि:-

" ख़ुदा गढ़ने की क्रिया यहीं पर ख़त्म नहीं हो गई बल्कि विभिन्न दौर में इस ख़ुदाई एकेडेमी या कौंसिल में इतनी बड़ी संख्या की बढ़ोतरी हो गई कि इस की गणना कठिन है। इनमें बहुत से हिन्दुस्तान के प्राचीन वासियों के माबूद थे जिनको हिन्दू धर्म के देवताओं और ख़ुदाओं के साथ शामिल कर लिया गया था इन की कुल संख्या तीन करोड़ बताई जाती है।"

जहां तक उन अरबों का सम्बन्ध है जो प्राचीन युग में इब्राहीमी दीन के मानने वाले थे और जिनके यहां अल्लाह का सबसे पहला घर बना, नुबूवत और नबियों के दौर से दूरी तथा अरब प्रायद्वीप में बन्द रहने

की वजह से बहुत घटिया दर्जे की मूर्ति पूजा से घिरे थे जिस का उदाहरण हिन्दुस्तान के बुत परस्तों और मुशरिकों के अलावा कहीं और नहीं मिलता। वह शिर्क ☆ में भी बहुत आगे थे और अल्लाह को छोड़कर उन्होंने बहुत से माबूद बना लिए थे। वह आस्था रखते थे कि यह अपने से बनाए माबूद कुदरत के बंदोबस्त में अल्लाह के साथ शामिल है और लाभ–हानि पहुंचाने तथा ज़िन्दा रखने व मारने की अपने में ताकत रखते हैं। इसलिए पूरी अरब क़ौम बुतों की पूजा में डूब चुकी थी। हर क़बीला और क्षेत्र का अलग–अलग माबूद था बल्कि यह कहना सही होगा कि हर घर बुतखाना था।

☆ अल्लाह की ज़ात में किसी को शामिल करना।

ख़ुद काबा के अन्दर और उसके आंगन में (जिसको हज़रत इब्राहीम अ0 ने सिर्फ अल्लाह पाक की इबादत के लिए बनाया था) 360 बुत थे वह बुतों और माबूदों की इबादत से आगे बढ़कर हर तरह के पत्थरों को पूजने लगे थे तथा फरिश्तो, जिन्नों और सितारों को भी अपना माबूद समझते थे। उनकी आस्था थी कि फरिश्ते खुदा की बेटियां हैं, जिन्न खुदा के शरीक हैं इस वजह से वह उनकी ताक़त और असर को मानते थे और उनकी इबादत करना ज़रूरी समझते थे।

दुनिया के अन्य देशों और क़ौमों पर एक निगाह

यह उन धर्मों का हाल था जो अपने–अपने दौर में अल्लाह की तरफ बुलाने के लिए आए थे। जहां तक उन सभ्य देशों का सम्बन्ध है जहां महान साम्राज्य क़ायम थे, ज्ञान व कला कौशल का बाज़ार गरम था और जो सभ्यता व संस्कृति, कारोबार व व्यवसाय तथा ज्ञान व कला कौशल के केन्द्र समझे जाते थे, वहां धर्मों का रूप बिगड़ चुका था और उन्होंने अपनी सच्चाई, महत्व, मूल्य, शक्ति व उपयोगिता खो दी थी। सुधारकों और आचार्यों का दूर–दूर तक पता न था।

पूर्वी रूमी सल्तनत

पूर्वी रोमन साम्राज्य ☆ में टैक्सों की इतनी भरमार थी कि देशवासी अपनी हुकूमत पर विदेशी हुकूमत को प्राथमिकता देने लगे थे। बार–बार क्रांति और बगावतें होती थीं। सिर्फ 533 ई के एक दंगे में कुस्तुनतुनिया के 30 हज़ार नागरिकों का क़त्ल कर दिया गया। उनकी सबसे बड़ी दिलचस्पी किसी न किसी साधन से माल हासिल करना, फिर भोग विलास में उसको ख़र्च करना था। मनोरंजन और भोग विलास में वह इतना आगे बढ़ गए थे कि उसकी सीमाएं दानवता को छूने लगीं थीं। ☆

T.Walter Wall Bank And Alast Air M. Taylor ने अपनी किताब Civilization-Past And Present (1954 P.P 261-262) में बाज़नतीनियों के समाज में इस अजीब विरोधाभास, नैतिक पतन तथा भोग विलास पर रोशनी डालते हुए लिखा है कि "बाज़नतीनियों के सामाजिक जीवन में बड़ा विरोधाभास पाया जाता था। मज़हबी पन उनके मन में घर कर चुका था। दुनिया से दूरी एवं सन्यास की भावना पूरे राज्य में रच बस गई थी। आम नागरिक भी धार्मिक बहस में गहरी दिलचस्पी लेता था। जन साधारण के दैनिक जीवन पर रहस्य उद्घाटन में दिलचस्पी एवं अन्तःकरण से लगाव की छाप लगी हुई थी, लेकिन इसके विपरीत यही लोग हर तरह के खेल तमाशों के आसाधारण रूप से शौकीन भी थे। बड़े–बड़े सरकस के मैदान थे जिनमें 80 हज़ार लोगों के बैठने की जगह थी, जहां रथों की दौड़ के मुकाबले हुआ करते थे। जन साधारण को "नीले" और "हरे" दो वर्गों में बांट दिया गया था। बाज़नतीनियों में ख़ूबसूरती से प्रेम भी था और जुल्म की आदत भी। उनके खेल तमाशे आम तौर से ख़ून–ख़राबे वाले एवं दुखदायी होते थे। उनके दुख भयानक तथा उनके अमीरों की ज़िंदगी भोग–विलास,

बनाव–श्रंगार तथा बुराईयों से युक्त थी।"

मिस्र (जो दौलतमन्द बाज़नतीनी साम्राज्य का एक प्रांत था) सबसे ख़राब धार्मिक जुल्मों और राजनीतिक सामन्तशाही का शिकार था, साथ ही वह बाज़नतीनी सल्तनत की ख़ुशहाली का एक बड़ा स्रोत भी था। उसका उदाहरण उस गाय की तरह था जिसको अच्छी तरह दुहा जाए और चारा कम से कम दिया जाए। ☆

शाम (सीरिया) जो बाज़नतीनी साम्राज्य का दूसरा प्रांत था, रोम वालों की विस्तारवादी नीति का शिकार था। जहां सिर्फ लाठी के ज़ोर पर विदेशियों की तरह हुकूमत की जाती थी और जनता प्यार व मुहब्बत से सदा वंचित रहती थी। ग़रीबी का हाल यह था कि आम तौर पर वहां के वासी अपना कर्ज़ चुकाने के लिए अपने बच्चों को बेच देते थे। तरह–तरह के जुल्म, अधिकारों के हनन, गुलाम बनाने और बेगार लेने की प्रथा आम थी।

ईरानी साम्राज्य

ज़रदश्त धर्म जिसने मज़दाइयत की जगह ली, ईरान का प्राचीन धर्म है। इस धर्म के संस्थापक ज़रदश्त सातवीं शताब्दी ईसा पूर्व में सामने आए। ईरानी साम्राज्य पूर्वी रोमन साम्राज्य से (रोमतुल किब्रा से अलग होने के बाद) अपने क्षेत्रफल, आय के साधनों तथा शान व शौकत में अधिक बड़ा था। उसकी बुनियाद 224 ई में अर्देशीर के हाथों पड़ी। इसके विकास काल में असीरिया, ख़ूजिस्तान, मेडिया, फारस, आज़बाईजान, तिब्रिस्तान, सरख़स, मरजान, किरमान, मरो, बलख़, सग़द, सीस्तान, हिरात, ख़ुरासान, ख़्वारज़म, इराक़ और यमन सब इसके इलाक़े में शामिल थे। किसी समय सिन्ध नदी के मध्यवर्ती ज़िले और उसके मुहाने के करीबी सूबे जैसे कच्छ, काठियाबाड़, माल्वा और उनके परे के इलाक़े भी उसके अधीन थे।

तीसफून (अल्मदाइन) जो इस साम्राज्य की राजधानी थी, नगरों का एक समूह था जैसा कि इसके अरबी नाम से पता चलता है। यह नगर पांचवी शताब्दी और उसके बाद के दौर में अपनी सभ्यता व विकास तथा भोग-विलास की चरम सीमा पर था।

ज़रदश्त धर्म शुरू से ही उजाले-अंधेरे, भलाई के खुदा और बुराई के खुदा के बीच लगातार टकराव की बुनियाद पर आधारित था। तीसरी शताब्दी ई० में "मानी" इस धर्म के सुधारक के रूप में सामने आया। इसके बाद अर्देशीर पहले इस धर्म का अनुयायी और फिर इसका विरोधी हो गया। इसलिए कि मानी दुनिया से बुराई व बिगाड़ को पूरी तरह ख़त्म करने के लिए ब्रहम्चर्य जीवन को ज़रूरी बताता था। उसका कहना था कि उजाले व अंधेरे का संगम अपने में खुद एक बुराई है जिससे इंसान को पहले छुटकारा पाना ज़रूरी है। उसने मरकर फौरन परलोक पहुंचने, अमर होने और अंधेरे पर उजाले की जीत के लिए मानव जाति के सिलसिले को ख़त्म करने और विवाहित जीवन के सम्बंधों को ख़त्म करने का रास्ता अपनाया। उसने कई वर्षों तक निर्वासित (घर-बार से दूर) जीवन बिताया, फिर ईरान वापस आया, और बहराम प्रथम के शासन काल में मारा गया, लेकिन उसकी शिक्षाएं उसकी मौत के बाद भी ज़िंदा रहीं, तथा ईरानी विचारधारा और ईरानी समाज पर बहुत दिनों तक असर डालती रहीं।

पांचवी शताब्दी ई० के शुरू में "मज़दक" सामने आया। उसने माल-दौलत और औरत में पूरी तरह रचने व भागीदारी का खुला आह्वान दिया, और यह चीज़े सबके लिए बिना किसी रोक-टोक के जायज़ कर दी गयीं। उसकी विचारधारा ने जल्दी ही जड़ पकड़ ली। हालत यह हो गई कि लोग जिसके घर में जब चाहते बेधड़क घुस जाते और उसकी दौलत व औरत पर ज़बरन कब्ज़ा कर लेते। एक प्राचीन ईरानी दस्तावेज़ जो "नामे 'एतिन्सर' के नाम से जाना जाता है में उन

हालात को पेश किया गया है जो मज़दक शासन काल में थे। उसमें लिखा है कि:–

"नामूस अदब (आदर सम्मान) का पर्दा उठ गया। ऐसे लोग पैदा हो गए जिनमें न शराफत थी न अमल (कर्म) न उनके पास पुश्तैनी जागीर थी, और न उन्हें ख़ानदान व क़ौम का ग़म था। न वह पुरूषार्थी थे न कारोबारी, न उन्हें किसी तरह की चिन्ता थी और न उनका कोई पेशा था। चुग़ली और शरारत में चुस्त और निन्दा व आरोप में माहिर थे। यही उनकी आय का माध्यम था और इसी को वह दौलत व सम्मान का साधन बनाते थे।"

आर्थर क्रिस्टन सीन ने अपनी किताब "ईरान सासानियों के शासन काल में" में लिखा है कि :–

"नतीजा यह हुआ कि हर तरफ किसानों की बग़ावतें शुरू हो गयीं। लूटमार करने वाले, अमीरों के महल में घुस जाते थे, माल व दौलत लूटते थे, औरतों को पकड़ ले जाते थे और जागीरों पर कब्ज़ा कर लेते थे। ज़मीनें धीरे–धीरे वीरान हो गयीं क्योंकि यह नए जागीरदार खेती करना नहीं जानते थे।"

इन सब बातों से पता चलता है कि प्राचीन ईरान में उग्रवादी आंदोलनों और अपीलों को अपनाने की योग्यता थी और वह हमेशा तेज़ क्रिया प्रक्रिया के असर में रहा था। लज़्ज़त की विचारधारा और सर्वोत्कृष्ट सन्यास व इच्छाओं के हनन के बीच हमेशा हिचकोले खाता रहा। कभी वह ख़ानदानी व पुश्तैनी जागीरदाना बंदोबस्त या धार्मिक इज़ारादारी के दबाव में रहा कभी बे–नकेल साम्यवाद और सामन्तशाही के भयानक साये में। इसी वजह से उसमें वह सन्तुलन और गम्भीरता कभी न पैदा हो सकी जो एक स्वाभाविक और सेहतमंद समाज के लिए ज़रूरी है।

इस साम्राज्य में (विशेषकर सासानी शासन काल में छठी शताब्दी

तक) हालात बहुत खराब हो चुके थे। पूरा देश उन राजाओं के रहम व करम पर था जो पुश्तैनी तौर पर राज सिंहासन के मालिक बनते थे और अपने को जनसाधारण से ऊंचा समझते थे। बादशाह आसमानी खुदाओं की नस्ल से माना जाता था। खुसरों द्वितीय परवेज़ अपने नाम के साथ निम्नलिखित सम्मानजनक शब्द (अल्काब) लिखता था।:–

" खुदाओं में अमर मानव और इंसानों में अद्वितीय खुदा, उसके नाम का बोल–बाला, सूरज के साथ उदय होने वाला, रात की आंखों का उजाला"

देश की पूरी सम्पत्ति और आय के सभी संसाधन इन बादशाहों की सम्पत्ति समझे जाते थे। दौलत जमा करने, तोहफे और कीमती वस्तुए जमा करने के पागलपन, जीवन यापन के स्तर में उठान, नए–नए फैशन, ज़िंदगी का मज़ा लूटने, अधिक दौलतमंद बनने, और दुनिया के मज़े उड़ाने की होड़ इतनी बढ़ चुकी थी कि उस पर कल्पना की उड़ान और शायरी का शक होने लगता है। इसकी परिकल्पना वही व्यक्ति कर सकता है जिसने प्राचीन ईरान के साहित्य को गहराई से पढ़ा हो तथा मदाइन (शहर), ऐवाने किस्रा (राजमहल) बहारे किस्रा (वह कालीन जिस पर बसंत के मौसम में ईरान के बादशाह मदिरा पान किया करते थे) ताजे किस्रा, ईरानी बादशाहों से जुड़े नौकर–चाकर, बीवियों, लौंडियों, सेवकों, बावर्चियों, पशु–पक्षियों के सिधाने वाले, शिकार का सामान, बर्तनों आदि के बंदोबस्त से भली भांति परिचित हो। इसका अनुमान सिर्फ एक घटना से लगाया जा सकता है। इस्लामी विजय के फलस्वरूप ईरान का अंतिम शासक यज़्दगर्द जब अपनी राजधानी मदाइन से भागा तो इस हालत में भी उसके साथ एक हज़ार गायक, एक हज़ार चीतों का बंदोबस्त करने वाले, एक हज़ार बावर्ची, शिकरों (चिड़ियों का शिकार करने वाला एक पक्षी) की देख–रेख करने वाले एक हज़ार सेवक, नौकर–चाकर तथा संगियों की बड़ी संख्या थी। इतने बड़े लश्कर के बाद

भी वह इस संख्या को कम और खुद को एक आम शरणार्थी समझता था। वह महसूस करता था कि सत्संगियों और कर्मचारियों की संख्या तथा भोग–विलास के सामान में कमी के कारण उसकी हालत बहुत ही दयनीय है।

दूसरी तरफ गरीब जनता त्राहि–त्राहि करती और अपनी किस्मत को कोसती थी, उन्हें ज़िंदा रहने के लिए कड़ी मेहनत और संघर्ष करना पड़ता था। तरह–तरह के टैक्सों और बंधनों नें उनकी ज़िंदगी को नर्क बना दिया था। वह जानवरों की तरह ज़िंदगी गुज़ारा करते थे। इस मुसीबत से तंग आकर, टैक्सों और फौज में अनिवार्य भरती से घबराकर बहुत से किसानों ने अपने खेतों को छोड़ कर साहिबों (सन्यासी सूफी बुजुर्गों) की ख़ानकाहों में पनाह ली। वह पूर्वी सासानी सल्तनत और पश्चिमी बाज़नतीनी सल्तनत की लम्बी चलने वाली ख़ूनी लड़ाईयों में (जो विभिन्न समयों में होती रहीं और उनका जनहित व जनता की रूचि से कोई लेना–देना नही था) ईंधन की तरह काम आते रहे।

हिन्दुस्तान

हिन्दुस्तान जो प्राचीन युग में गणित, ज्योतिष, चिकित्सा और दर्शन शास्त्र में बहुत नाम रोशन कर चुका था, उसके बारे में इतिहासकारों की आम राय यह है कि उसका धार्मिक, नैतिक और सामूहिक रूप से सबसे अंधकार मय काल छठी शताब्दी ई0 से शुरू होता है। भोग–विलास और बेहयाई से उनकी इबादतगाहें भी पाक नहीं रह गयी थीं और इन कामों में कोई बुराई नहीं समझी जाती थी, क्योंकि धर्म ने उनको पवित्रता एवं इबादत का रंग दे दिया था 1☆ औरत की कोई इज़्ज़त व क़ीमत बाक़ी नहीं रह गयी थी। पति अपनी पत्नी को जुए में हार जाता था 2☆ अगर उसका पति मर जाता था तो वह ज़िंदा होते हुए भी मरी होती थी, न शादी कर सकती थी न उसे कोई सम्मान की निगाह से देखता था।

अमीर घरानों में पति के मरने के बाद औरत के सति हो जाने का चलन था। यह बुरा चलन अंग्रेजों के शासन काल के बाद ही ख़त्म हो सका।3☆

☆1 सत्यार्थ प्रकाश लेखक दयानन्द सरस्वती पृ0न0 344

☆2 महाभारत का प्रारम्भिक अध्याय

☆3 देखें फ्रांसीसी यात्री बर्नियर का सफरनामा तथा मध्य युग के राजगान का इतिहास।

हिन्दुस्तान अपने पड़ोसियों और दुनिया की अन्य देशों की बिरादरियों में वर्ग–भेद और इंसानों के बीच भेद–भाव करने में बहुत आगे था। यह एक कठोर और ज़ालिम सामाजिक व्यवस्था थी जिसमें नरमी और लचक की कोई गुंजाईश न थी। भेद–भाव के इस व्यवहार को धर्म का संरक्षण हासिल था और आर्य हमलावरों के शुभचिन्त धर्म के ठेकेदार ब्राहम्णों के हित की भी यही मांग थी। यह वर्ण व्यवस्था उन पेशों की बुनियाद पर आधारित थी जो विभिन्न बिरादरियों और जातियों में पीढ़ी दर पीढ़ी चली आ रही थी। इसके पीछे उस देशी, राजनीतिक और धार्मिक कानून की ताकत थी जिसे उन हिन्दू विधायकों ने बनाया था जो धार्मिक हैसियत के भी मालिक थे। यह कानून ज्यों का त्यों पूरे समाज पर लागू था और उसे ज़िंदगी की आचार संहिता समझा जाता था। इसने हिन्दुस्तान के लोगों को चार वर्गों में बांट दिया था।

1– धर्म के इज़ारादार और पुरोहित जिनकों ब्राहम्ण कहा जाता था।

2– सिपाही और फौज में भरती होने वाले लोग 'क्षत्रिय'।

3– खेती और कारोबार करने वाले लोग वैश्य।

4– नौकर–चाकर और सेवा करने वाले लोग ''दलित'' या 'आछूत'।

यह अंतिम वर्ग (जो सबसे बड़ी संख्या में था) सर्वाधिक दलित था।

इसके बारे में लोग समझते थे कि वह सृष्टि निर्माता के पैरों से पैदा हुआ है इसलिए उसका काम सिर्फ इन तीनों वर्गों की सेवा करना और आराम व राहत पहुंचाना है।

इस कानून ने ब्राहम्ण को इतने अधिकार दे दिए थे और उन्हें इतना उच्च पद प्रदान किया था जिससे कोई दूसरा उनके बराबर न था। ब्राहम्ण के सभी गुनाह माफ थे, चाहे वह तीनों लोक को अपने गुनाहों और दुराचारों से गंदा, तबाह व बर्बाद कर दे। उसपर कोई टैक्स नहीं लगाया जा सकता था। उसको किसी दशा में भी मौत की सज़ा नहीं दी जा सकती थी। इसके विपरीत दलित न कुछ कमा सकते थे न जमा कर सकते थे, न किसी ब्राहम्ण के पास बैठ सकते थे न उसके शरीर को छू सकते थे न पवित्र पुस्तकों का पढ़ना उनके लिए वैध था। 1☆

☆1 देखें मनुशास्त्र अध्याय 1,2,8,9,10,11

पूरा देश फूट का शिकार था और टुकड़े–टुकड़े हो रहा था। इसमें सैंकड़ों राज्य और शासन थे जो आपस में लड़ते रहते थे। अशांति और अव्यवस्था तथा जनता के प्रति लापरवाही और जुल्म हर तरफ फैला हुआ था। इसके अलावा यह देश दुनिया से कटकर ज़िंदगी गुज़ार रहा था, उसमें ठहराव आ गया था। वह आदतों, परम्पराओं, रीति–रिवाजों के जाल में फंसा वर्ग भेद और ऊंच–नीच का शिकार था। ख़ून–नस्ल और नसब (वंशज) के भेद–भाव से पीड़ित था। एक हिन्दू इतिहासकार विद्याधर महाजन (भूतपूर्व प्रो0 इतिहास, पंजाब विश्वविद्यालय कालेज) इस्लाम के आगमन से पहले हिन्दुस्तान की हालत पर रोशनी डालते हुए लिखते हैं।:–

" हिन्दुस्तान के लोग सारी दुनिया से कटे हुए थे। वह अपने आप में मगन और दुनिया के हालात से बेख़बर थे इस बेख़बरी ने उनकी हालत बहुत कमज़ोर कर दी थी। उसमें ठहराव पैदा हो चुका था तथा पतन के लक्षण दिखाई पड़ने लगे थे उस समय के साहित्य में कोई जान

'नहीं थी। वास्तु कला, चित्रकला और अन्य ललित कलाओं में भी गिरावट थी, ज़ात–पात के बंधन कठोर थे। विधवाओं की शादी नहीं की जाती थी, खाने पीने के सिलसिले में कठोर बंधन थे, अछूत बस्तियों के बाहर रहने पर मजबूर थे।" 1☆

☆ मुस्लिम रूल इन इण्डिया लेखक वी डी महाजन (नई दिल्ली 1970 पृ० न० 33)

अरब प्रायद्वीप

अरबों के चाल–चलन भी बहुत बिगड़ चुके थे। वह शराब पीते और जुए के रसिया थे। वह कितने जाहिल और दिल के कितने बुरे थे इसका अंदाज़ा उनके लड़कियों को ज़िंदा दफन कर देने के चलन से किया जा सकता है। क़ाफ़िलों को लूटना और बेगुनाहों को मार डालना उनके शौक थे, औरत की उनके समाज में कोई इज़्ज़त न बची थी। घर के अन्य सामानों और जानवरों की तरह जहां चाहती वहां भेज दी जाती अथवा वरसे (उत्तराधिकार) में मिलती थी। कुछ पकवान पुरूषों के साथ विशेषकर जुड़े थे औरतें उन्हें खा नहीं सकती थीं। मर्द जितनी औरतों से चाहता शादी कर सकता था। कुछ लोग गरीबी और अन्य आर्थिक कठिनाईयों के डर से अपनी औलादों का क़त्ल कर डालते थे। जातिगत, नस्ली और ख़ानदानी भेद–भाव बहुत अधिक था। लड़ाई उनकी घुट्टी में पड़ी थी। एक दूसरे का क़त्ल करना उनके लिए खेल तमाशा था। कोई आम सी घटना अक्सर भयानक और लम्बी जंग की वजह बन जाती। कुछ लड़ाईयों का सिलसिला 40–40 साल चला और हज़ारों लोग अपनी जान से हाथ धो बैठे।

यूरोप

यूरोपीय क़ौमें जो उत्तर पश्चिम में दूर तक बसी हुयीं थीं अज्ञानता और निरक्षता से घिरी थीं। भयानक लड़ाईयों में व्यस्त सभ्य संसार से

बहुत पीछे तथा कला कौशल के मैदान से बहुत दूर थीं। बाहर की दुनिया को न उनसे कोई सरोकार था, न उनको बाहर की दुनिया से कोई मतलब। उनके शरीर गन्दे और दिल व दिमाग़ अंधविश्वास से भरे हुए थे। वह पवित्रता का कम ध्यान रखते और पानी का प्रयोग कम से कम करते थे। उनके पादरी और राहिब शरीर को कष्ट पहुंचाते और इंसानों से दूर रहने में बहुत उग्र थे1☆। उनके यहां अभी तक यही बात तय न हुई थी कि औरत इंसान है या हैवान (जानवर) ? उसके अंदर भी आत्मा है या नहीं उसको मिल्कियत और ख़रीदने–बेचने का हक़ हासिल है या इनमें से वह किसी बात का हक़ नहीं रखती।

☆1 देंखें हिस्ट्री ऑफ यूरोपियन मॉरल्स लेखक 'लीकी'

राबर्ट बैरीफाल्ट ने अपनी किताब 'दि मेकिंग ऑफ हुयूमनिटी में लिखा है:–

"पांचवी शताब्दी से लेकर दसवी शताब्दी तक यूरोप पर गहरा अंधेरा छाया हुआ था और यह अंधेरा और अधिक गहरा व भयानक होता जा रहा था। उस युग की असभ्यता और वहशत प्राचीन युग की सभ्यता और वहशत से कई गुना अधिक थी। इसका उदाहरण सभ्यता की एक बड़ी लाश के जैसा था जो सड़ गई हो। उसकी सभ्यता के निशान मिट रहे थे और उस पर पतन की मुहर लग चुकी थी। वे देश जहां यह सभ्यता फूली फली और जो पिछले समय में विकासं की चरम सीमा पर पहुंच गए थे जैसे इटली, फ्रांस आदि वहां तबाही, वीरानी और अव्यवस्था का दौर दौरा था।"

घटाटोप अंधेरा और मायूसी का दौर

संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि छठी शताब्दी ई0 जिसमें हज़रत मुहम्मद रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का अभ्युदय (पैग़म्बरी मिली) हुआ, इतिहास का सबसे खराब दौर था। वह इंसान के भविष्य और उसकी पहचान की दृष्टि से बहुत अंधेरे वाला और

अफसोसनाक दौर था।

मशहूर अंग्रेज़ लेखक एच0जी0वेल्स ने भी सासानी और बाज़नतीनी शासन के वर्णन में उस युग का नक्शा खींचा है। वेल्स ने लिखा है:–

" इन लड़ाई पर तुली और पतन की तरफ बढ़ रही हुकूमतों में सांइस और राजनीति दोनों मौत की नींद सो चुके थे। एथेन्स में बाद के दार्शनिकों ने अपनी तबाही तक, जो उन पर थोप दी गई थी, प्राचीन युग की साहित्यिक धरोहर को हालांकि बिना सोचे समझे लेकिन बहुत ही आस्था से बचा रखा था। लेकिन अब दुनिया में इंसानों का कोई वर्ग ऐसा बाक़ी नहीं रहा था जो प्राचीन युग के शरीफों की तरह बहादुर और साफ विचारों का समर्थक होता और पुराणों के लेखों की तलाश या विचारों को बहादुरी से पेश करने के लिए सक्षम होता। इस वर्ग के ख़त्म होने की मुख्य वजह राजनीतिक और सामाजिक अव्यवस्था थी। लेकिन एक कारण और भी था जिससे इस दौर में इंसानी अक्ल कुन्द और बन्जर हो चुकी थी। ईरान और बाज़नतीन दोनों देशों में अशिष्टाचार का दौर था। दोनों एक नई तरह की धार्मिक हुकूमतें थीं जिनमें विचारों की आज़ादी पर कड़े पहरे बिठा दिए गए थे।"

बाज़नतीनी साम्राज्य पर ईरानी साम्राज्य के हमले और बाज़नतीनियों की कामयाबी का विस्तार से वर्णन करने के बाद छठी शताब्दी ई0 में सामाजिक व नैतिक पतन पर रोशनी डालते हुए लेखक ने लिखा है।:–

"अगर कोई राजनीतिक पर्यवेक्षक सातवीं शताब्दी के शुरू में दुनिया की समीक्षा करता तो इस नतीजे पर पहुंचता कि सिर्फ कुछ एक सदियों की बात है कि पूरा यूरोप और एशिया मंगोलों के प्रभाव में आ जाएगा। पश्चिमी यूरोप में न कोई व्यवस्था थी और न एकता। बाज़नतीनी और ईरानी हुकूमतें एक दूसरे को तबाह बर्बाद करने पर तुली थीं। हिन्दुस्तान भी विभाजित और तबाह हाल था।1☆

विश्व व्यापी बिगाड़

हालांकि हज़रत मुहम्मद साहब सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के

अभ्युदय के समय पूरी इंसानियत आत्म-हत्या के रास्ते पर तेज़ी से बढ़ रही थी। इंसान अपने बनाने वाले मालिक को भूल चुका था और खुद अपने आपको और अपने भविष्य को भुला चुका था। उसके अंदर भलाई और बुराई, अच्छे और बुरे की पहचान करने की क्षमता नहीं बची थी। ऐसा मालूम होता था कि लोगों के दिल व दिमाग किसी चीज़ में खो चुके हैं। उनको दीन व आख़िरत (इस ज़िंदगी के बाद आने वाली ज़िंदगी) की तरफ सिर उठा कर देखने की फुर्सत नहीं थी। आत्मा और अन्तःकरण की शांति, परलोक की भलाई, मानवता की सेवा और सुधार के लिए उनके पास एक पल ख़ाली नहीं था। कभी-कभी पूरे देश में एक व्यक्ति भी ऐसा दिखाई नहीं पड़ता था जिसको अपने दीन की फिक्र हो, जो एक अल्लाह को पूजता हो और किसी दूसरे को अल्लाह के साथ न जोड़ता हो। जिसकी अंतर आत्मा में इंसानियत के लिए दर्द हो और उसके अंधेरे भविष्य के लिए बेचैनी हो। यह हालत अल्लाह पाक के इस इरशाद (कथन) को दर्शाती थी कि :-

" अनुवाद:- जल और थल में लोगों के कर्म की वजह से फसाद फैल गया है, ताकि अल्लाह उनको उनके कुछ एक कर्मों का मज़ा चखाए, अजब नहीं कि वह बाज़ आ जाएं।" सूरः रूम-41

अध्याय दो

मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम

अरब प्रायद्वीप में क्यों पैदा हुए?

विधि का विधान था कि इंसानियत की मुक्ति और उन्हें रास्ता दिखाने का यह सूरज जिससे दुनिया में रोशनी फैली, अरब प्रायद्वीप के आसमान में उगे, जो उस वक़्त दुनिया का सबसे अंधेरा क्षेत्र था और जिसको इस तेज़ रोशनी की सबसे ज़्यादा ज़रूरत थी।

अल्लाह पाक ने इस दावत के लिए अरबों का चयन इस लिए किया और उनको पूरी दुनिया में इसके प्रचार–प्रसार का ज़िम्मेदार बनाया कि उनके दिलों की पाटी (तख़्ती) बिल्कुल साफ थी। उसमें पहले से कुछ न था, जिनको मिटाना कठिन होता। उनके मुकाबले में रूमियों, ईरानियों या हिन्दुस्तानियों के जिनको अपने विकास, कला कौशल, सभ्यता व संस्कृति और दर्शनशास्त्र पर बहुत गर्व था और इसकी वजह से उनके अन्दर कुछ ऐसी मनोवैज्ञानिक गुत्थियां तथा मानसिक उलझने पैदा हो गई थीं, जिनका दूर करना आसान न था। अरबों के दिल व दिमाग की सादा तख़्तियां सिर्फ उन मामूली और हल्के फुल्के लेखों को जानती थी। जिनको उनकी अज्ञानता, निरक्षरता और बद्वी जीवन (घुमक्कड़) ने उनमें लिख दिया था और जिनका धोना व मिटाना और उनकी जगह पर नया लेख लिखना बहुत आसान था। वर्तमान ज्ञान की शब्दावली में वह "सहज अज्ञानता" का शिकार थे और यह वह ग़लती है जिसको आसानी से सुधारा जा सकता है। दूसरी सभ्य और विकसित क़ौमें "यौगिक अज्ञानता" से घिरी थीं जिसका इलाज और उसे मिटाकर नए अक्षर लिखने का काम हमेशा बहुत कठिन होता है।

यह अरब अपने मूल स्वभाव पर थे, मज़बूत और पुख़्ता इरादे के मालिक थे। अगर हक बात (सत्य) उनकी समझ में न आती तो वह

उसके ख़िलाफ तलवार तक उठाने में संकोच न करते और हक़ खुलकर सामने आ जाता तो वह उससे जी जान से अधिक मुहब्बत करते उसको गले लगाते और उसके लिए जान तक देने में भी नहीं हिचकते थे।

अरबों की इस हालत की झलक सुहैल बिन अम्र1 ☆ के उन शब्दों में मिलती है जो हुदैबिया का समझौते लिखते वक़्त उनकी ज़बान से निकले। समझौते के शुरूआती शब्द यह थे......

"यह वह है जिसका फैसला मुहम्मद रसूलुल्लाह ने किया"। उन्होंने कहा "वल्लाह अगर हम यह जानते और मानते कि आप अल्लाह के रसूल हैं तो न आपको अल्लाह के घर से रोकते न आपसे लड़ाई करते।" यह हालत इक्रमा बिन अबी जहल के शब्दों में भी झलक रही है। जब यरमूक की लड़ाई अपनी चरम सीमा पर थी और इक्रमा पर बड़ा दबाव पड़ रहा था। जब रूमी चढ़ाई करते हुए इक्रमा की तरफ बढ़े तो उन्होंने उनको ललकार कर कहा कि अक़्ल के दुश्मनो! (जब तक बात मेरी समझ में नहीं आई) मैं रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के मुक़ाबले में हर जगह डटा रहा, आज मैं तुमसे भागूंगा ? फिर उन्होंने पुकार कर कहा कि है कोई जो मौत पर मुझसे बैअत (शपथ ले) ☆ करे ? कुछ लोग आए और बैअत की फिर वह आगे बढ़कर लड़ने लगे यहां तक कि ज़ख्मी हुए और शहादत पाई। ☆

1☆ अरब में सन्तान के नाम के साथ पिता का नाम जोड़ने का चलन है। 'बिन' या 'इब्न' का मतलब होता है 'बेटा' यानि अम्र के बेटे सुहैल। बेटी के लिए 'बिन्त' लिखते हैं।

2☆ हाथ में हाथ देकर वादा (शपथ) करना।

3☆ तारीख़ तिब्री भाग 4 पे0 36 देंखें।

यह अरब बड़े सच्चाई पसंद, गम्भीर, सज्जन, साफ बात करने वाले, कड़े मेहनती और पुरुषार्थी थे। वह न दूसरों को धोखा देते थे न अपने को धोखे में रखना पसन्द करते थे। सच्ची और पक्की बात के आदी, बात की लाज रखने वाले और पक्के इरादे के मालिक थे। इस की एक ज़िंदा मिसाल बैअत उक़बा–ए–सानिया में हमें नज़र आती है जिसके बाद ही मदीना तय्यबा हिजरत की शुरूआत हुई।

इब्न इसहाक़ बयान करते हैं कि जब औस व ख़ज़रज ☆ अक़बा में रसूलुल्लाह सल्ल0 से बैअत करने के लिए जमा हुए तो अब्बास बिन एबादा अल ख़ज़रजी ने अपनी क़ौम को सम्बोधित करते हुए कहाः–"ऐ! ख़ज़रज वासियों! क्या तुम्हें मालूम है कि तुम हुज़ूर सल0 से किस चीज़ पर बैअत कर रहे हो?" उन्होंने जवाब दिया, "हां!" कहने लगे कि तुम इनसे अहमर व असवद हर तरह के लोगों से जंग पर बैअत कर रहे हो। (अर्थात बहुत बड़ी संख्या और विभिन्न प्रकार के लोगों से) अगर तुम ऐसा सोचते हो कि तुम्हारे माल लूट लिए जाएंगे और तबाह व बर्बाद कर दिए जाएंगे, तुम्हारे क़बीले के शरीफ और सरदार क़त्ल कर दिए जाएंगे तो तुम इनको दुश्मनों के हवाले करके अलग हो जाओगे। अगर ऐसा है तो अभी इस बात को ख़त्म कर दो। इसलिए कि अगर तुमने ऐसा किया तो वल्लाह दुनिया व आख़िरत दोनों जगह की रूसवाई (अपमान) है, और अगर तुम्हारा फैसला यह है कि जिस चीज़ के लिए तुमने इनको बुलाया है उसको पूरा करोगे चाहे तुम्हारा सारा माल व दौलत तहस नहस हो जाए और तुम्हारे शरीर और सरदार क़त्ल कर दिए जाएं तो अपना हाथ इनके हाथ में दो। इस समय इसमें अल्लाह की क़सम दुनिया व आखिरत दोनों जगह की कामयाबी व भलाई है। उन लोगों ने जवाब दिया कि माल व दौलत की तबाही और सरदारों के क़त्ल हर चीज़ पर हम आपसे बैअत करते हैं। लेकिन ऐ! अल्लाह के रसूल अगर हमने यह इरादा पूरा किया तो इसका बदला क्या मिलेगा,? आप सल0 ने फरमाया जन्नत। कहने लगे हाथ बढ़ाइए। आपने अपना मुबारक हाथ आगे किया और उन सबने आपसे बैअत की। ☆2

1☆ अरब के क़बीलों के नाम

2☆ सीरत इब्ने हश्शम भाग 1 पे0 446 (दूसरा संस्करण)

और सच्चाई यह है कि उन्होंने इस वादे को जिस पर आप सल0 से बैअत की थी, पूरा किया। हज़रत साद बिन मआज़ रज़ी0 ने अपने मशहूर वाक्य में इन सबकी भावनाओं को बयान किया था। उन्होंने कहा था कि " अल्लाह की क़सम अगर आप चलते–चलते बरकुल्ग़माद ☆ तक पहुंच जाएंगे तब भी हम आपके साथ चलते रहेंगे अगर आप समन्द्र

को पार करना चाहेंगे तो हम आपके साथ समन्द्र में कूद जाएंगे।"

वह धुन के पक्के व इरादे के सच्चे थे। काम में उनकी लगन और हक़ के सामने सिर झुका देने का पता उस वाक्य से भी मिलता है जो इस्लामी फौज के मशहूर सेनापति उक़बा बिन नाफ़े रज़ी0 ने कहा था। जब उनकी विजय के रास्ते में अटलांटिक महासागर की वजह से रूकावट पैदा हुई तो उन्होंने कहा, "खुदाया! यह महासागर रास्ते में है वरना जी चाहता है कि बराबर आगे बढ़ता जाऊं और जल थल में तेरे नाम का डंका बजा दूं"

1☆ बरकुल्ग़माद के बारे में विभिन्न कथनों में एक कथन यह है कि वह यमन का कोई बहुत दूर स्थित इलाका है। सुहेली कहते हैं कि इसका मतलब हबश से है। कहने का मतलब यह है कि अगर आप बहुत दूर तक जाएंगे तो भी हम साथ न छोड़ेंगे।

इसके विपरीत यूनान, रोम और ईरान के लोग दुनियादारी और हवा के रूख़ पर चलने के आदी थे। अन्याय व जुल्म के ख़िलाफ वह आवाज़ नहीं उठा सकते थे। किसी आदर्श व किसी सिद्धान्त में उनके लिए कोई दिलचस्पी न थी। कोई दावत व अक़ीदा (आस्था व विश्वास) उनके विचारों और भावनाओं में इस तरह रच–बस नहीं पाता था कि वह उसके लिए दुनियादारी और भोग–विलास सब कुछ की बाज़ी लगा दें।

सभ्यता व संस्कृति और भोग–विलास व आराम तलबी की पैदा की हुई इन तमाम बीमारियों और ख़राबियों से अरब बचे हुए थे। इन बीमारियों का इलाज बड़ा कठिन होता है और यह ईमान और अक़ीदा की राह में हमेशा रूकावट डालती हैं और आम तौर पर आदमी के पैरों में बेड़िया डाल देती हैं। अरब वासियों के अन्दर सच्चाई भी थी, ईमानदारी भी और बहादुरी भी। उनकी प्रवृत्ति दोहरी नीति व साज़िश को पसन्द न करती उनमें वह सभी गुण थे जो दुनिया में कोई महान काम करने वाली कौम के लिए ज़रूरी होते हैं। ख़ासकर उस समय जब लड़ाईयों का युग हो तब बहादुरी का आम चलन हो। अरब जी जान से लड़ने वाले, घोड़े की पीठ पर ज़्यादा समय बिताने वाले, मज़बूत सुरक्षात्मक शक्ति और सहनशीलता के मालिक, सरल जीवन के आदी,

घुड़सवारी और युद्धकला के रसिया थे।

दूसरी बात यह है कि उनकी सोच–विचार की ताकत और पैदाईशी क्षमताएं सुरक्षित थीं और दार्शनिकों की निरर्थक तार्किक बहसों और बाल की खाल निकालने तथा वार्तालाप के गूढ़ व संवेदनशील विषयों अथवा स्थानीय या क्षेत्रीय गृह–युद्धों में बर्बाद नहीं हुई थीं। यह एक नई उभरी "सुरक्षित" क़ौम थी जो जीवन की गर्मी, जोश और उल्लास, आकांक्षा और पक्के इरादे से भरपूर थी।

आज़ादी व समता की भावना, कुदरती दृश्यों से लगाव तथा सादगी अरब क़ौम की घुट्टी में पड़ी थी। उसे कभी किसी विदेशी सत्ता के सामने झुकना नहीं पड़ा था। यह क़ौम गुलामी और एक इंसान के दूसरे इंसान पर हुक्म चलाने के मतलब को नहीं जानती थी। उसको ईरानी व रूमी साम्राज्यों के घमंड, मानव और इंसानियत को तिरस्कार की नज़र से देखने का भी अनुभव नहीं हुआ था। इसके विपरीत ईरानी बादशाह (जो अरब प्रायःद्वीप के पड़ोस में थे) अलौकिक व्यक्ति समझे जाते थे। अगर ईरानी बादशाह का आप्रेशन होता या उसे कोई दवा दी जाती तो राजधानी में एलान कर दिया जाता कि आज बादशाह सलामत के फोड़े का आप्रेशन हुआ है या दवा दी गयी है। इस एलान के बाद शहर में न कोई पेशावर अपने पेशे में व्यस्त होता और न कोई सरकारी दरबारी आदमी कोई काम कर सकता था 1☆ अगर उसको छींक आती तो उसके लिए किसी को दुआ शब्द कहने का हक नहीं था। वह ख़ुद दुआ करता तो कोई आमीन (अल्लाह करे ऐसा ही हो) भी नहीं कह सकता था। अगर वह अपने मंत्रियों व अमीरों में किसी के घर जाता तो वह दिन बहुत असाधारण और अहम समझा जाता और उस दिन ख़ानदान की नई जंत्री शुरू होती और पत्रों में नई तारीख़ डाली जाती। एक निर्धारित समय के टैक्स माफ कर दिए जाते और उस व्यक्ति को अनेक पुरस्कार, पदवियां और माफियां व तरक्किया मिलती। सिर्फ इसलिए कि बादशाह ने उसके घर आकर उसका गौरव बढ़ाया है। 2☆

1☆ देखें "ईरान बअहद सासानियान" पे0 535–536।

2☆ देखें ईरान बअहद सासानियान"

यह सम्मान व शिष्टाचार, उन औपचारिकताओं के अलावा था जिनका पालन करना राज्य के कर्मचारियों, दरबारियों और दूसरे सभी लोगों के लिए ज़रूरी था जैसे उनके सामने हाथ बान्धे खड़ा रहना। ☆ (यानी सीने पर हाथ रखकर आदर के साथ सिर झुका देना)। उनके सामने अदब के साथ इस तरह खड़ा रहना जिस तरह नमाज़ में कोई अल्लाह के सामने खड़ा होता है। यह हाल खुसरों प्रथम (531 से 579) के शासन काल का है जो दुनिया में नवशेरवाने आदिल के नाम से मशहूर है। इससे अनुमान लगाया जा सकता है कि ईरान के उन बादशाहों का क्या हाल होगा जो जुल्म व अत्याचार के लिए दुनिया में मशहूर थे।

☆ इसके लिए "अरबी में एक मुहावरा बन गया था, कहते थे," कुफ़्रफलां" अर्थात झुकते हुए अपना हाथ सीने पर रखकर सादर सर झुका दिया। यह ईरान की आम प्रथा थी और वहीं से यह शब्दावली निकली, और अरबी के शब्दकोश में दाख़िल हुई है। लिसानुल अरब में है कि कुफ़्र का मतलब है ईरानी का अपने बादशाह के प्रति सम्मान करना। लिखा है कि जैसे कोई देहाती किसान अपने मुखिया के सामने सीने पर हाथ रखकर अदब से अपना सर झुका देता है। (लिसानुल अदब खण्ड 7 पे 466)

अपनी बात कहने की आज़ादी (न कि आलोचना) बड़े ईरानी साम्राज्य में लगभग ख़त्म थी। तिब्री ने इस सम्बन्ध में नव शेरवाने आदिल की एक रोचक़ कहानी लिखी है जिससे हमें अन्दाज़ा होता है कि ईरानी साम्राज्य में विचारों को प्रकट करने पर कितनी सख़्त पाबन्दी थी और शाही दरबार में मुंह खोलने की क्या कीमत चुकानी पड़ती थी। इस घटना को ईरान बअहद सासानियान के लेखक ने तिब्री के हवाले से लिखा है :–

"उसने सलाहकारों की एक बैठक बुलाई और कर के सचिव को आदेश दिया कि लगान की नई दरें तेज़ आवाज़ में पढ़कर सुनाएं। जब वह पढ़ चुका तो खुसरों ने दो बार मौजूद लोगों से पूछा कि किसी को कोई अपत्ति तो नहीं है? सब चुप रहे। जब बादशाह ने तीसरी बार यही

सवाल किया तो एक व्यक्ति खड़ा हुआ और अदब से पूछने लगा क्या बादशाह यह चाहते हैं कि जल्द बर्बाद होने वाली चीज़ों पर स्थायी कर लगाया जाए जो हमें अन्याय की तरफ ले जाएगा इस पर बादशाह लल्कार कर बोला ऐ गुस्ताख़! तू किन लोगों में से है? उसने जवाब दिया कि मैं सचिवों में से हूं। बादशाह ने हुक्म दिया कि इसको क़लमदानों से पीट–पीट कर मार डालो। इस पर एक सचिव ने अपने कलमदान से उसको मारना शुरू किया। यहां तक कि वह बेचारा मर गया। इसके बाद सबने कहा," ऐ बादशाह! जितने टैक्स तूने हम पर लगाए हैं वह हमारे विचार से सब न्याय पर आधारित हैं।"

हिन्दुस्तान में अछूतों के प्रति तिरस्कार और निरादर की जो भावना फैली थी वह सोच से परे है। विजयी आर्यों और देश के कानून ने उनको बहुत ही गिरे हुए जीव का दर्जा दिया था। अछूत, पालतू जानवरों से सिर्फ इस बात में भिन्न थे कि वे दो पैरों पर चलते थे और आदमियों जैसी शक्ल रखते थे। कानून मे यह बात लागू थी कि अगर कोई शूद्र किसी ब्राहम्ण को नुक़सान पहुंचाने के लिए हाथ या लाठी उठाए तो उसका हाथ काट दिया जाए। अगर वह, यह दावा करे कि वह ब्राहम्ण को शिक्षा दे सकता है तो उसको खौलता हुआ तेल पिलाया जाए।" ☆ इस कानून के अनुसार कुत्ते या बिल्ली, मेढ़क, गिरगिट, कौआ, उल्लू तथा अछूत वर्ग के किसी व्यक्ति के क़त्ल की सज़ा बराबर थी। ☆

इंसानियत को अपमानित करने में रोम और ईरान वासी हिन्दुस्तानियों के हालांकि समकक्ष न थे लेकिन लगभग उनके समान ही थे। यूरोप के एक इतिहासकार विक्टर चौपर्ट ने अपनी किताब 'दी रोमन वर्ल्ड' के पृ0 418 पर लिखा है:–

"कैसर माबूद (पूज्य) समझे जाते थे। यह बात ख़ानदानी उत्तराधिकार के तौर पर न थी बल्कि जो भी राज गद्दी पर बैठता उसे खुदा मान लिया जाता था भले ही उसमें इस पद की गरिमा के अनुकूल कोई निशानी न पायी जाती हो। अगस्तस की राज्य पदवी, एक राजा से दूसरे राजा को कानून के अनुसार हस्तान्तरित नहीं होती थी बल्कि रोम की राज्य–सभा को ताकत के बल पर जारी किए गए हर आदेश को

अनुमोदन देने के अलावा और कुछ न करना पड़ता था।"

☆1 'मनुशास्त्र' अध्याय 10

☆2 आर0सी0दत्त

अगर इसकी तुलना इस्लाम के आने से पहले, आज़ादी के मतवाले, आदर व सम्मान में बीच का रास्ता अपनाने वाले स्वाभिमानी अरबों से की जाए तो दोनों की हालत, अरबी व अजमी समाज का फ़र्क साफ हो जाएगा। अरब कभी–कभी अपने बादशाहों को "अबैतुल्लअन" (आप बुराई से सुरक्षित रहें) "अम सबाहन" (आप अच्छी तरह सुबह करें) जैसे शब्द कहते थे। अरबों में आज़ादी व स्वाभिमान की इतनी ज़्यादा भावना थी कि वह अपने सरदारों और शासकों की कुछ मांगों और फरमाइशों को पूरा करने से भी कभी–कभी मना कर देते थे। इस बारे में इतिहास में यह रोचक घटना आती है कि एक अरब बादशाह ने बनी तमीम क़बीले के एक व्यक्ति से एक घोड़ी जिसका नाम "सिबाब" था मांगी तो उसने घोड़ी देने से साफ इन्कार कर दिया और कविता के माध्यम से कहा, " ऐ बादशाह! यह बहुत क़ीमती और नफीस घोड़ी है, न इसे भेंट दिया जा सकता है न इसे बेचा जा सकता है। इसे हासिल करने की आप कोशिश न करें। आपसे इसकी रक्षा करने का मुझमें बल है।"

आज़ादी, आत्म सम्मान, सद्गुण, शराफत और हौसलामन्दी की भावना जनता के हर वर्ग में मौजूद थी तथा स्त्री–पुरूष दोनों में पायी जाती थी। इसका नमूना हमें हीरा के राजा अम्र बिन हिन्द के क़त्ल की घटना में दिखाई देता है। इस घटना को अरब इतिहासकारों ने इस तरह बयान किया है कि अम्र बिन हिन्द ने मशहूर अरब शह सवार (घुड़ सवार) और शायर अम्र बिन कुलसूम की दावत की और इच्छा जतायी कि उसकी मां बादशाह की मां के साथ दावत में शामिल हो। अम्र बिन कुलसूम क़बीला बनू तुग़लब के कुछ ज़िम्मेदारों के साथ जज़ीरा से हीरा की तरफ चला और उसकी मां लैला बिन्त मुहलहिल भी क़बीले की कुछ औरतों के साथ आयी। अम्र बिन हिन्द का डेरा हीरा और फरात की बीच लगाया गया। एक डेरे में अम्र बिन हिन्द ने अम्र बिन कुलसूम के स्वागत का बंदोबस्त किया और दूसरे ख़ेमे में हिन्द और लैला जमा हुयीं। अम्र

बिन हिन्द ने अपनी मां से पहले ही कह दिया था कि जब खाना लग जाए तो थोड़ी देर के लिए नौकरों को हटाकर लैला से काम लेना। अतः ऐसा ही हुआ जब खाना लगाया जा चुका तो हिन्द ने (नौकरों को हटाकर) लैला से कहा, "बहन! ज़रा यह तबाक (थाल) तो मुझे उठा दो"। लैला ने जवाब दिया, "जिसको ज़रूरत हो वह खुद उठाए" जब हिन्द ने दोबारा ज़ोर देकर कहा तो लैला चिल्ला उठी, "हाय! क्या अपमान की बात है, बनू तुग़लब के सपूतो"! मां के यह शब्द सुनकर अम्र बिन कुलसूम आग बबूला हो उठा" उसने लपक कर अम्र बिन हिन्द की तलवार जो सामने लटक रही थी उठायी और उसका काम तमाम कर दिया। इसके साथ बनु तुग़लब ने ख़ेमा लूट लिया और जज़ीरा की तरफ वापस आ गए। इसी घटना पर अम्र बिन कुलूसम ने वह मशहूर कसीदा कहा जिसकी गिनती 'सबाहा मुअल्लकात' (सात भूलती कविताएं) में की जाती है।

इसी तरह जब मुग़ीरा बिन शोबा रज़ी0 मुसलमानों के दूत बनकर रुस्तम के दरबार में गए तो वह अपनी शान व शौकत के साथ अपने राज तख़्त पर बैठा था। मुग़ीरा बिन शोबा रज़ी0 अरबों की आदत के अनुसार उसी के साथ उसके सिंहासन पर गाव तकिया के पास बैठ गए। रुस्तम के दरबारी मुग़ीरा बिन शोबा रज़ी0 पर टूट पड़े और उनको नीचे उतार लाए। इस पर मुग़ीरा बिन शोबा रज़ी0 ने कहा," हमने तो सुना था कि तुम लोग बहुत अक़्ल मन्द हो लेकिन मुझे तुमसे ज़्यादा मूर्ख कोई नज़र नहीं आता। हम अरब तो सबसे बराबरी का सलूक करते हैं। हममें से, लड़ाई के मैदान को छोड़कर, कोई किसी को गुलाम (दास) नहीं बनाता। मेरा अनुमान था कि तुम भी इसी तरह अपनी क़ौम से बराबरी का व्यवहार करते होगे। अच्छा यह था कि तुम मुझे पहले बता देते कि तुमने आपस में एक दूसरे को ख़ुदा बना रखा है, और यह बात तुम्हारे साथ तय न हो सकेगी। उस दशा में हम तुमसे यह बर्ताव नहीं करते और न तुम्हारे पास आते, लेकिन तुमने हमें खुद बुलाया है"☆

अरब प्रायद्वीप में अख़िरी नबी सल0 के पैदा होने की दूसरी वजह अरब के मक्का शहर में काबा का होना था जिसको हज़रत इब्राहीम व

हज़रत इस्माईल अ० ने इसलिए बनाया था कि एक अल्लाह की इबादत की जाए और यह जगह सदा के लिए तौहीद की दावत (बुलावा) का केन्द्र बने। सूरे आले इमरान की आयत 96 में है:–

अनुवाद:– पहला घर जो लोगों की इबादत करने के लिए निर्धारित किया गया था, वही है जो राह दिखाने वाला है।

बाइबिल में इतने संशोधन के बाद भी 'वादी–ए–बक़ा' का शब्द आज तक मौजूद है लेकिन अनुवादकों ने इसको 'वादी–ए–बुका' बना दिया है अर्थाथ 'दुख की घाटी' मज़ामीर दाऊद के शब्दों का अनुवाद इस तरह है।

"मुबारक है वह इंसान जिसमे ताक़त तुझसे है उनके दिल में तेरी राहे हैं वह बुका की घाटी से गुज़रते हुए इसे एक कुंआ बनाते" (किताब मुकद्दस)

☆1 तारीख़ तिब्री भाग 4 पृ0 108

☆ अरबी ज़बान में "मीम" और "बे" में आम तौर पर अन्तर नहीं किया जाता है जैसे "लाज़िम और लाजिब" और "मलीत और बलीत" समान अर्थ रखते हैं। देखें "तफ्सीर माजिदी लेखक मौलाना अब्दुल माजिद दरियाबादी और " रहमतुल्लि आल्मीन' लेखक काज़ी सुलेमान मन्सूरपूरी।

लेकिन यहूदी विद्वानों को बाद में इस ग़लती का अहसास हुआ इस लिए Jewish Encyclopaedia में हैं, कि वह एक विशिष्ट घाटी है जिसमें पानी न मिलता था और जिसने यह लिखा है उसके मन में एक ऐसी घाटी की तस्वीर थी जिसकी विशिष्ट दशाएं थी। इस बारे में अंग्रेज़ी के अनुवादकों ने अरबी के अनुवादकों की अपेक्षा अधिक सावधानी बरती है उन्होंने 'बक़ा' शब्द को वैसा ही लिखा है जैसा वह मूल रूप से था।

"Blessed is the man whose strength is in Thee; in whose heart are the ways of them. Who Passing through the valley of Baca make it a well." (Pslam 84:5-6)

अनुवाद:– "मुबारकबाद है उन लोगों को जिनकी इज़्ज़त व ताक़त

तेरे साथ है। जिनके दिलों में तेरे रास्ते हैं जो "बका" की घाटी से गुज़रते हुए उसको एक कुंआ बनाएंगे।"

हजरत मुहम्मद मुस्तफा सल्ल0 का अभ्युदय हज़रत इब्राहीम व हजरत इस्माईल अ0 की दुआ के नतीजे में हुआ जो उन्होंने काबा की बुनियाद रखते समय मांगी थी और जो इस तरह है:-

अनुवाद:- "ऐ! हमारे पालनहार! इन लोगों में इन्ही में से एक पैग़म्बर भेजिए जो इनको तेरी आयतें पढ़ कर सुनाया करे और किताब तथा दानाई सिखाया करे और इनके दिलों को पाक साफ किया करे। बेशक तू ग़ालिब और हिकमत वाला है।" (सूर: बक़रा 1209)

अल्लाह अपने भक्तों की दुआएं ज़रूर कुबूल करता है नबियों का स्थान तो भक्तों से कहीं अधिक ऊंचा है। तौरेत में आया है कि :-

" और इस्माईल के हक़ में मैं ने तेरी सुनी, देख मैं इसे बरकत दूंगा और इसे बहुत बढ़ाऊंगा। इससे बारह सरदार पैदा होंगे और मैं इसे बड़ी क़ौम बनाऊंगा।"

हज़रत मुहम्मद सल्ल0 अपने बारे में फरमाया करते थे कि मैं इब्राहीम अ0 की दुआ और ईसा अ0 की बशारत हूं" तौरेत में है कि:-

अनुवाद:- " खुदावन्द! तेरा अल्लाह तेरे लिए तेरे ही बीच से तेरे ही भाईयों में से मेरी तरह एक नबी बरपा करेगा। तुम उसकी तरफ कान धरियो " तेरे ही भाईयों" का शब्द स्वयं बता रहा है कि इसका मतलब बनी इस्माईल से है जो बनी इस्राईल के चचेरे भाई थे।

कुछ आगे फिर लिखा है कि :-

अनुवाद:- " और खुदावन्द ने मुझे कहा कि उन्होंने जो कुछ कहा सो अच्छा कहा। मैं उनके लिए उनके भाईयों में से तुझसा एक नबी बरपा करूंगा और अपना कलाम उसके मुंह में डालूंगा और जो कुछ मैं उसे फरमाऊंगा वह सब उनसे कहेगा।"

"अपना कलाम उसके मुंह में डालूंगा" के शब्द निश्चित रूप से

हज़रत मुहम्मद सल्ल0 की तरफ इशारा करते हैं क्योंकि आप ही वह अकेले नबी हैं जिन पर अल्लाह का कलाम (ईश वाणी) एक–एक अक्षर उतरा हुआ और अल्लाह पाक ने इसका एलान भी फ़रमाया।

अनुवादः–"और वह अपनी मनमानी बातें नहीं करता। यह तो अल्लाह का हुक्म है जो उसे भेजा जाता है।" (सूरः नज्म 3)

दूसरी जगह आता हैः–

अनुवादः– इस पर झूठ का दख़ल न आगे से हो सकता है न पीछे से! दाना और ख़ूबियों वाले अल्लाह की उतारी हुई है।" (सूरः हामीम 42)

इसके विपरीत बनी इस्राईल के नबियों के सहीफ़े इसका बिल्कुल दावा नहीं करते कि वह भाव व शब्द दोनों तरह से अल्लाह का कलाम है, उनके विद्वान भी उसको नबियों से जोड़ने में तकल्लुफ से काम नहीं लेते। जेविश इन्साइक्लो पीडिया में आता है कि :–

" किताब मुकद्दस (OLD TESTAMENT) की पहली पांच किताबें (जैसा कि प्राचीन यहूदी धार्मिक परम्पराएं हमें बताती हैं) मूसा अ0 की जमा की हुयी हैं। आख़िरी आठ आयतों को छोड़कर (जिनमें मूसा अ0 के देहान्त की घटनाएँ बयान की गयी हैं) रब्बी (यहूदी विद्वान) इस विरोधाभास तथा एक दूसरे से भिन्न परम्पराओं पर ग़ौर करते हैं जो इन सहीफों में आयी हैं और इसमें अपनी अक़्ल से सुधार करते रहते हैं" (Vol.9 p 589)

जहां तक New Testament का सवाल है वह न शब्दों से और न ही भाव से ईशवाणी है असल में यह जीवनी की किताबें ज़्यादा मालूम होती है ईशवाणी कम।अरब प्रायद्वीप की भौगोलिक स्थिति दीन की दावत के लिए सबसे ज़्यादा अनुकूल है जहां से दीन का पैग़ाम सारी दुनिया को पहुंचाया जा सकता है। यह एक तरह से एशिया, अफ्रीका और यूरोप महाद्वीप के मिलन केन्द्र के करीब है और इसके निकटवर्ती क्षेत्र हमेशा मानव सभ्यता व संस्कृति का केन्द्र रहे हैं और जहां

शक्तिशाली एवं विशाल साम्राज्य स्थापित हुए। जहां से विभिन्न दिशाओं में व्यापारिक मार्ग जाते थे और यह इलाका कारोबार करने वाले काफिलों के लिए बड़ा महत्व रखता था। ☆ यह क्षेत्र दो शक्तिशाली लेकिन एक दूसरे के कट्टर विरोधी राज्यों के बीच स्थित था एक तरफ पूरब में सासानी हुकूमत थी दूसरी तरफ पश्चिम में बाज़नतीनी ईसाई हुकूमत, और यह दोनों ताक़तें एक दूसरे से लड़ती रहती थी, लेकिन इस पर भी अरब प्रायद्वीप ने अपनी आज़ादी और अपने व्यक्तित्व की हमेशा रक्षा की, और अपने कुछ सीमान्त क्षेत्रों और कुछ क़बीलों को छोड़कर वह कभी इन ताक़तों के अधीन नहीं रहा। यह इलाका एक विश्व व्यापी दावत के लिए सबसे उचित था जो हर तरह के राजनीतिक दबाव से आज़ाद था और मानवता के सन्देश का उचित केन्द्र बन सकता था।

☆ डा० हुसैन कमाल उद्दीन ने जो रियाद विश्वविद्यालय के इन्जीनियरिंग कालेज में सिविल इन्जीनियरिंग विभाग के अध्यक्ष हैं अपने एक प्रेस इन्टरव्यू में जो उन्होंने काहिरा के अल–अहराम के संवाददाता को जनवरी 1977 में दिया, बताया कि उन्होंने एक नई भौगोलिक खोज की है जिससे यह साबित होता है कि थल भाग में मक्का भूतल के बीचो–बीच स्थित है। उन्होंने यह शोधकार्य एक ऐसे कम कीमत वाले उपकरण की तैयारी के बारे में किया जिससे दुनिया के विभिन्न भागों में काबा की सही दिशा तय की जा सके।

इन सब कारणों से अल्लाह ने अरब में मक्का का चयन हज़रत मुहम्मद सल्ल० के अभ्युदय, आसमानी 'वही' के उतारने और इस्लाम के विश्व व्यापी प्रचार के लिए पहले केन्द्र के रूप में किया।

अनुवादः– "और अल्लाह पाक ज़्यादा जानता है कि उसका पैग़ाम कहां और किसके हवाले किया जाए।" (सूरः इनाम 124)

अध्याय तीन

अरबों का अंधेरा दौर

एक नए नबी की ज़रूरत

उन विशेषताओं एवं ख़ूबियों के बावजूद जिनकी वजह से अल्लाह ने अरबों का चयन हज़रत मुहम्मद सल्ल0 के अभ्युदय और इस्लाम के उदय के लिए किया था, अरब प्रायद्वीप में चेतना और बेचैनी के कोई लक्षण नज़र नहीं आते थे। कुछ एक हनीफ ☆ और सच की खोज करने वाले बाक़ी रह गए थे जो उंगलियों पर गिने जा सकते थे और जिनकी हैसियत बरसात की अन्धेरी और ठिठुरती हुई रात में उन जुगनुओं से अधिक न थी जो न तो किसी भटके को राह दिखा सकते हैं और न किसी को गर्मी पहुंचा सकते हैं।

जिस समय अरब में हज़रत मुहम्मद सल्ल0 का अभ्युदय हुआ वह अरब के इतिहास का भी अन्धेरा दौर था, उस समय पूरा अरब अज्ञानता और पतन की अफ़सोस नाक सीमा तक पहुंच चुका था। ऐसी प्रतिकूल रूकावट वाली हालत शायद ही किसी नबी के प्रचार के रास्ते में पेश आई होगी।

☆1 वह लोग जो मूर्तिपूजा छोड़ चुके थे और अपनी समझ के अनुसार इब्राहीमी आस्था पर कायम थे।

अंग्रेज़ लेखक सर विलियम म्योर, जो इस्लाम और हज़रत मुहम्मद सल्ल0 पर आरोप लगाने के लिए कुख्यात है, ने उस दौर का बड़ा अच्छा ख़ाका पेश किया है। उसने पश्चिमी लेखकों की इस धारणा को ग़लत ठहराया है कि हज़रत मुहम्मद सल्ल0 के अभ्युदय से पहले लावा बिल्कुल पक चुका था और हज़रत मुहम्मद सल्ल0 ने सिर्फ इतना किया कि समय से और सही जगह पर उसको आग दिखा दी और यह लावा फूट पड़ा।

वह कहता है:–

"मुहम्मद की नौजवानी में अरब अत्यधिक सुधार विरोधी था। शायद उससे पहले वह इतनी निराशाजनक हालत में कभी न था।"

"इसाई धर्म के प्रचार की मामूली कोशिश से अरब के ऊपरी धरातल पर जब तब हल्की लहरें पैदा होती थीं, यहूदी धर्म के गहरे असर कभी–कभी गहरी एवं तेज़ लहरें पैदा कर देते थे, लेकिन स्वदेशी मूर्तिपूजा और इस्माइलियों के अन्ध विश्वास की तेज़ धारा चारों तरफ से काबा की तरफ उमड़ कर आ रही थी और इस बात का सबूत दे रही थी कि मक्का का मज़हब और इबादत का ढंग अरबों के दिल व दिमाग में इस तरह रच बस गया था कि उसमें किसी बदलाव या हस्तक्षेप की गुंजाइश न थी।" ☆ इसी ऐतिहासिक बात को वासवर्थ स्मिथ ने संक्षिप्त में लेकिन बहुत सफाई से इस तरह पेश किया है।:–

" सबसे ज़्यादा दार्शनिक विचार रखने वाला एक एतिहासकार कहता है कि उन सभी क्रान्तियों में जिन्होंने इंसानियत के इतिहास पर गहरी छाप छोड़ी है, किसी का अभ्युदय इंसानी सोच के लिए इतना उम्मीद भरा न था जितना कि अरब के इस मज़हब का, और पहली ही निगाह में यह मानना पड़ता है कि अगर इतिहास नाम की कोई चीज़ है, तो यहां कारक तथा प्रभाव की उन कड़ियों को तलाश करने में असमर्थ है जिनको खोजना असल में इतिहास का प्रमुख उद्देश्य है।"☆

☆1 देखें The life of Mohammad by sir Willam Muir vol I London 1858 p 238-239.

☆2 देखें Mohammad and Mohammednism (London, 1876) P. 105 by Boswarth smith.

एक नए नबी की ज़रूरत

छठी शताब्दी के मध्य में बिगाड़ इतना बढ़ चुका था और मानवता

पतन के ऐसे गर्त में पहुंच चुकी थी कि अब वह किसी सुधारक या नैतिक शिक्षा के किसी उपदेशक के बस की बात न थी। सवाल किसी एक अक़ीदा को सही करने, किसी ख़ास आदत को बदलने या इबादत के किसी तरीके के चलन का न था और न ही समस्या समाज सुधार की थी। इसके लिए वह सुधारक और शिक्षक काफ़ी थे, जिनसे कोई दौर और कोई इलाका कभी ख़ाली नहीं रहा। समस्या यह थी कि अज्ञानता की चादर ओढ़े शिर्क व बुत परस्ती के उस भयंकर मलबे को किस तरह हटाया और साफ किया जाए जो सदियों से तले ऊपर जमा हो रहा था और जिसके नीचे नबियों की शिक्षाएं और सुधारकों की कोशिशें दफन थीं, और फिर उसकी जगह वह नई, बड़ी और शानदार इमारत कैसे खड़ी की जाए जिसकी छाया में पूरी इंसानियत को पनाह मिल सके। समस्या यह थी कि वह इंसान कैसे ढाला जाए जो अपने से पहले के इंसान से हर बात में भिन्न और नया नज़र आए।

अनुवादः– भला जो पहले मुर्दा था फिर हमने उसको ज़िन्दा किया और उसके लिए रोशनी कर दी जिसके ज़रिए लोगों में चलता फिरता है कहीं उस व्यक्ति जैसा हो सकता है जो अन्धेरे में पड़ा हो और उससे निकल ही न सकें। (सूरः इनआम 123)

समस्या फसाद व बिगाड़ की जड़ को हमेशा के लिए ख़त्म करने और बुत परस्ती को जड़ से इस तरह उखाड़ फेंकने की थी कि दूर–दूर तक उसका कोई असर व निशान बाक़ी न रह जाए और तौहीद का अक़ीदा लोगों के दिल व दिमाग़ में इस तरह रच–बस जाए कि उससे आगे सोचा भी न जा सके। इंसान के दिल में अल्लाह की रज़ा की खोज तथा इबादत की लगन, इंसानियत की सेवा, सच के रास्ते पर चलने की भावना तथा हर ग़लत बात से मन को रोकने की क्षमता और ताक़त पैदा की जाए। मतलब इंसानियत को, जो आत्म हत्या पर उतारू ही न थी बल्कि उसके लिए पर तौल चुकी थी, कमर पकड़ के दुनिया व

आख़िरत के नरक से बचाया जाए और उसको उस सच्चे रास्ते पर डाला जाए जिसका पहला सिरा वह पाक ज़िंदगी (जीवन) है जो अल्लाह के परम भक्तों और ईमान वालों को इस दुनिया में ही नसीब होता है तथा दूसरा सिरा हमेशा रहने वाली वह जन्नत है जिसका तक़वा ☆ की ज़िंदगी अपनाने वालों से वादा किया गया है।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अभ्युदय के उपकार का वर्णन करते हुए अल्लाह पाक ने क़ुर्आन मजीद में जो इरशाद फरमाया है उस से बढ़कर उस हालत का चित्रण और कहीं नहीं मिल सकता।

अनुवादः– और अल्लाह की उस मेहरबानी को याद करो जब तुम एक दूसरे के दुश्मन थे तो उसने तुम्हारे दिलों में मुहब्बत डाल दी और तुम उसकी मेहरबानी से भाई–भाई हो गए और तुम आग के गढ़े के किनारे तक पहुंच चुके थे तो अल्लाह ने तुमको उससे बचा लिया।

(सूरः आले इमरान 103)

मानव विकास के पूरे इतिहास में हमें इससे अधिक नाज़ुक और पेचीदा काम तथा इससे बड़ी ज़िम्मेदारी नज़र नहीं आती जो एक नबी की हैसियत से हरज़त मुहम्मद सल्ल० पर डाली गई और न कोई खेती इतनी उपजाऊ साबित और फलदार हुई, और न कोई कोशिश इतनी फायदे मंद साबित हुई जितनी जीवन दायक और फायदेमंद आप सल्ल० की कोशिश। यह दुनिया के अजूबों में सबसे बड़ा अजूबा और दुनिया का सबसे बड़ा चमत्कार है। मशहूर फ्रांसीसी साहित्यकार Lamartine ने अपनी किताब Historis Dala Turquie खण्ड दो के पृ० 276–277 पर लिखा है।

" किसी भी इन्सान ने कभी भी जाने या अनजाने में अपने लिए इतना ऊंचा लक्ष्य नहीं चुना। इसलिए कि यह मकसद इन्सान की ताक़त के बाहर था। अन्धविश्वास और भुलावे, जो इन्सान और उसके मालिक

के बीच दीवार बन गए थे, को हिलाकर रख देना, इन्सान को खुदा की पवित्र परिकल्पना को फिर से बहाल करना, एक महान लक्ष्य था। किसी इन्सान ने कभी भी ऐसे महान कार्य का जो किसी तरह इन्सानी ताक़त के बस का न था, इतने कमज़ोर साधनों के साथ बीड़ा नहीं उठाया।"

"इससे भी अधिक आपका यह कारनामा है कि आपने कुर्बानगाहों, देवताओं, धर्मों, विचारों, विश्वास एवं लोगों के अन्तःकरण में एक तहलका मचा दिया। एक ऐसी किताब को बुनियाद बनाकर जिसका हर एक अक्षर कानून की हैसियत रखता है, आपने एक ऐसी रूहानी मिल्लत (आध्यात्मिक समुदाय) की संरचना की जो हर नसब और हर ज़बान के लोगों से मिलकर बनी है। इस इस्लामी मिल्लत जिसे हज़रत मुहम्मद सल्ल० ने हमारे लिए वरसे (उत्तराधिकार) में छोड़ा है, की विशेषता यह है कि उसे झूठे खुदाओं से बहुत नफरत है और निराकार एक अल्लाह से सबसे ज़्यादा लगाव, और यही लगाव उसे एक अल्लाह के अपमान के ख़िलाफ बदला लेने पर मजबूर कर देता है और यही लगाव मुहम्मद सल्ल० के मानने वालों की ख़ूबियों की बुनियाद बनता है। अपनी आस्था को एक तिहाई दुनिया से स्वीकार करा लेना बेशक आपका मोजज़ा (चमत्कार) था लेकिन ज़्यादा सही तो यह है कि यह एक व्यक्ति का नहीं बल्कि अक्ल का मोजज़ा (चमत्कार) है। अल्लाह की तौहीद के विचार का ऐसे समय एलान करना जब दुनिया अन गिनत बिचौलिए खुदाओं के बोझ से दबी हुई थी, खुद अपने में एक महान अजूबा (चमत्कार) था। मुहम्मद सल्ल० की ज़बान से जैसे ही इस अक़ीदे का एलान हुआ, बुतों के तमाम बुतख़ाने में ख़ाक उड़ने लगी और एक तिहाई दुनिया ईमान की लौ से गरम हो गई।

(डा० ज़की अली की किताब "Islam in the World" लाहौर 1947 के पृ० 15.16 से साभार)

दुनिया भर में फैली इस क्रांति तथा इंसानियत के नवनिर्माण के

इस महान काम को पूरा करने के लिए एक ऐसे नए नबी की मांग थी जो तमाम नबियों से बढ़कर हो। समय को एक ऐसे नबी की ज़रूरत थी जो लोगों को सच्चा रास्ता दिखाए और सच का झण्डा दुनिया में हमेशा के लिए बुलन्द कर दे। कुर्आन पाक में अल्लाह पाक फरमाता हैः–

अनुवादः– जो लोग काफिर हैं मतलब अहले किताब और मुशरिक वह कुफ्र से बाज़ रहने वाले न थे जब तक कि उनके पास खुली दलील न आती, यानी अल्लाह के पैग़म्बर जो पवित्र पन्ने पढ़ते हैं जिनमें ठोस आयतें लिखी हुयी हैं। (सूरः बय्यनात 3)

अध्याय चार

अरब प्रायद्वीप

सीमाएं

अरब प्रायद्वीप विस्तार में दुनिया का सबसे बड़ा प्रायद्वीप है। अरब विद्वान इसे जज़ीरतुल अरब ☆ अर्थात अरब प्रायद्वीय कहते हैं। हालांकि यह एक द्वीप नहीं है, इसके सिर्फ तीन तरफ पानी है। यह एशिया में दक्षिण पश्चिम में स्थित है इसके पूर्व में अरब की खाड़ी है जिसे यूनानी फारस की खाड़ी के नाम से जानते हैं, दक्षिण में हिन्द महासागर और पश्चिम में लाल सागर है जिसे यूनानी और लैटिन में Sinus Arabicus कहते थे, और अरब इसे प्राचीन समय में 'बहरे कुल्ज़म' कहते थे इसकी उत्तरी सीमा अरब विद्वानों के अनुसार वह काल्पनिक रेखा है जो अकबा की खाड़ी से शतत–उल–अरब को मिलाने से बनती है।

☆ प्राचीन समय से इस शब्द का प्रयोग होता आया है क्योंकि प्राचीनकाल में द्वीप और प्रायद्वीप में कोई फर्क नहीं किया जाता था और उनके लिए अलग शब्दावली का प्रयोग होता था। कुछ विद्वानों ने यह साबित करने की कोशिश की है कि आधुनिक भौगोलिक शब्दावली में अरब एक द्वीप है जैसे अल्लामा खुज़री की किताब "तारीखुल उमम अल इस्लामिया" भाग1। लेकिन इसके लिए प्रायद्वीप की सीमाओं को बहुत दूर तक ले जाने की ज़रूरत पड़ती है।

मुस्लिम भूगोल विशेषज्ञों ने अरब प्रायद्वीप को पांच भागों में विभाजित किया है। 1 हिजाज़, जो एला (अकबा) से यमन तक फैला है। इसे हिजाज इसलिए कहा जाता है कि यह उस पर्वतमाला से मिलकर बना है जो तेहामा अर्थात लाल सागर के तटीय भाग को नज्द से अलग करती है। 2 तेहामा, 3 यमन 4 नज्द अर्थात वह पठारी हिस्सा जो हिजाज़ से बहरीन के रेगिस्तान तक फैला है और जिसमें अनेक रेगिस्तान व पर्वत श्रेणियां हैं और 5 'अरूज' अर्थात यमन व नज्द के

मध्य का हिस्सा जिसे 'यमामा' भी कहते हैं।

प्राकृतिक दशा और निवासी

अरब प्रायद्वीप का अधिकांश भाग गर्म और शुष्क है। विशेष भौगोलिक हालात के कारण पुराने समय में और आज भी यहां की आबादी कम रही है और सभ्य समाज तथा बड़े साम्राज्यों का यहां अभाव रहा है। घुमक्कड़ जीवन, व्यक्तिवाद के प्रति आस्था, कबीलों के बीच लड़ाई झगड़ों की वजह से सभ्यता उन इलाकों में सिमट कर रह गयी थी, जहां बारिश होती थी या पानी की आसानी थी। पानी यहां के जन–जीवन को पटरी पर लाने का माध्यम रहा है। काफिले पानी की तलाश में रहते और जहां पानी आसानी से मिलता उन हरे भरे इलाकों में अरब बस जाते। वह घुमक्कड़ जीवन बिताते। किसी इलाके में वह उसी वक्त तक रहते जब तक वहां जानवरों के लिए घास और उनके लिए पानी होता, जब यह सुविधा ख़त्म हो जाती तो वह कहीं और चले जाते थे।

इस वजह से उनकी ज़िंदगी, मेहनत और करोठता का नमूना थी और उनका समाज कबीले का रूप धारण कर लेता। एक बद्दू के लिए उसका कबीला हुकूमत और राष्ट्र की हैसियत रखता था। उसकी ज़िंदगी अस्थिर और कठोर होती थी, आराम करने को वह जानते ही नहीं थे। ताकत का बोलबाला था। वह आपस में लड़ते रहते थे और उससे फुरसत पाते तो पड़ोस की सभ्य आबादी से लड़ने लगते और ज़िंदगी बिताते, और पड़ोस की सभ्य आबादी के लिए ख़तरा बने रहते। लेकिन वह अपने कबीलों और उनकी रस्मों के प्रति बड़े वफादार और ईमानदार होते। वह एक अच्छे मेज़बान की पूरी ज़िम्मेदारी निभाते, लड़ाई के समझौतों का पूरा पालन करते, वह एक वफादार दोस्त होते और अपनी रीति व रस्मों का आख़िरी पल तक सम्मान करते। इन सभी बातों के सुबूत उनके साहित्य में जगह–जगह मिलते हैं।

अरब जन्म से लोकतन्त्र का मानने वाला, आज़ादी का मतवाला, सच्चा और व्यवहार कुशल तथा एक हकीकत पसन्द होता था। वह

अश्लील कामों से नफ़रत करता। वह अपने सीमित साधनों से न केवल खुश रहता बल्कि अपनी किस्मत पर गर्व महसूस करता। मज़हब से उसका इलका अक्सर कमज़ोर रहता लेकिन अपने क़बीलों की रस्मों और परम्पराओं पर उनका पक्का ईमान होता। उनका आचरण बहादुरी, शराफ़त और उनका दिल हमदर्दी के गुणों से भरपूर होता था, जिसकी संकल्पना " मुरव्वत" के शब्द में की गई है और जिसकी प्रशंसा के गीत गाते वह कभी नही थकता।

सांस्कृतिक केन्द्र

उन स्थानों पर जहां बारिश, झरनों और कुंओं का काफी पानी मौजूद होता वहां गांवों, मौसमी बाज़ारों और मेलों के रूप में एक सभ्यता पैदा हो उठती थी। बद्दुओं की ज़िंदगी पर इन बातों का असर पड़ता और इस तरह एक ख़ास तरह के समाज तथा माहौल का जन्म होता जो भौगोलिक परिस्थितियों से नियंत्रित होता। इन केन्द्रों का अपना एक विशिष्ट रंग–रूप होता। इस तरह के सांस्कृतिक केन्द्र मक्का, हीरा, यसरब में अपनी अपनी विशेषताएं लिए हुए थे। अरब समाज में यमन अपने विशिष्ट हालात, प्राचीन सभ्यता और राजनीतिक कारणों से सबसे अधिक विकसित था और अनाज की पैदावार, पशुपालन, खनिज के उपभोग, महलों और किलों के निर्माण में बहुत आगे था। उद्योगों और ज़िदंगी की ज़रूरतों को पूरा करने के लिए वह बाहर से सामान और उपकरण मंगाता था। उसके इराक़, शाम (सीरिया) और अफ्रीका से कारोबारी रिश्ते थे।

अरब वासियों के वंशज

लगभग सभी इतिहासकार इस बात को मानते हैं कि प्राचीन अरबों के तीन प्रकार हैं। (1) अरब बायदा (जो इस्लाम से पहले ख़त्म हो चुके थे) (2) अरब आरबा या बनू क़हतान जो अरब बायदा के बाद हुए और (3) अरब मुस्तअरबा या हज़रत इस्माईल की सन्तान जो हिजाज़ में

आबाद हुए। वह वंश के आधार पर अरब वासियों की दो किस्में करते हैं (1) कहतानी, जिनकी आबादी का शुरूआती केन्द्र यमन था और (2) अदनानी जो पहले हिजाज़ में आबाद थे इसी तरह वंशवली के अन्वेषक, विशेषज्ञ (Genealogists) अदनान की दो शाख़ाएं बताते हैं (1) रबिआ (2) मुज़र। कहतानी व अदनानी प्राचीन काल से एक दूसरे के दुश्मन थे। इस तरह रबिया और मुज़र के बीच सदियों से दुश्मनी चली आ रही थी। वंशवली के विद्वानों का मानना है कि कहतानी असली और अधिक पुराने हैं तथा अदनानी उनकी शाख़ा में से हैं☆ जिन्होंने उनसे अरबी सीखी और फिर जिसे हज़रत इस्माईल अ0 की सन्तान ने हिजाज़ में आने के बाद अपना लिया। हज़रत इस्माईल अ0 अरब मुस्तअरबा अर्थात अदनानियों के पूर्वज हैं।

☆1 आधुनिक युग के कुछ शोधकर्ताओं की राय है कि असल अरब अदनानी हैं और वही पहले अरब आरबा है जब कि अधिकतर इतिहासकारों का मत इसके विपरीत है उनका कहना है कि यह विभाजन अज्ञानता पर आधारित नहीं है बल्कि इस्लामी दौर में लिखी गई कहतानी और यमनी वंशज से संबंधित विद्वानों की किताबों से ली गयी है, अल्लाह जाने।

अरबवासी वंश का विशेष ध्यान रखते थे और इसे बहुत महत्व देते थे। जिसे अजमी विद्वानों ने हमेशा माना है। ईरानी सेनापति रुस्तम ने अपने दरबारियों से जब वह मुग़ीरा बिन शोबा रज़ी0 को फटे कपड़े व ख़स्ता हाली की वजह से इज़्ज़त की निगाह से नहीं देख रहे थे, कहा था, "तुम अजीब बेवकूफ हो। अरब खाने और कपड़ों को महत्व नहीं देते बल्कि वह अपने हसब नसब (वंशज) की सुरक्षा करते हैं।"

भाषायी एकता

इस विशाल प्रायद्वीप में अगर अनेक भाषाएं होती तो कोई हैरत की बात न थी क्योंकि क़बीले दूर-दूर आबाद थे और एक किनारे के वासी दूसरे किनारे के लोगों से कभी-कभी ही मिलते थे। वह क़बायली भेद-भाव तथा नसली ऊंच-नीच की भावना से घिरे रहते थे। रोम और

ईरान की सीमाओं के पास रहने वाले अरब क़बीले वहां की भाषाओं से स्वाभाविक रूप से प्रभावित होते थे यही वजह है कि मध्य यूरोप और हिन्दुस्तान के उपमहाद्वीप में भाषाएं बहुत हैं। भारत के संविधान में मान्यता प्राप्त भाषाओं की संख्या 15 हैं इनमें कुछ ऐसी भाषाएं भी हैं जिनके बोलने वालों को अनुवादक की ज़रूरत पड़ती है या अंग्रेज़ी से काम लेना पड़ता है।

लेकिन अरब प्रायद्वीप की विशालता एवं क़बीलों की बाहुल्यता के बावजूद इसकी इस्लाम के अभ्युदय से अब तक एक ही भाषा रही है। अरबी यहां के वासियों की हमेशा से बोल–चाल की भाषा रही है चाहे वह बद्दू हों या क़हतानी व अदनानी, और यह इस प्रायद्वीप की प्रमुख विशेषता रही है। हालांकि भौगोलिक दूरी तथा भौतिक परिस्थितियों में विभिन्ता के फलस्वरूप स्थानीय बोलियों के लहजे में फर्क पाया जाना स्वाभाविक है, तथापि इसमें एक भाषाई एकता, समानता मौजूद रही है। इस्लाम के प्रचार व प्रसार तथा दूर–दूर तक फैली हुई इकाईयों को अलंकृत भाषा में संबोधित करने तथा उन्हें प्रभावित करने में अरबी भाषा ने अहम भूमिका निभाई है।

मानव विकास का इतिहास और अरब प्रायद्वीप

पुरातत्व विज्ञान के अनुसार अरब प्रायद्वीप में प्राचीन पाषाण युग से इन्सानी आबादी के निशान मिलते हैं। यहां जो प्राचीन अवशेष (निशानिया) पाए गए हैं वह पाषाण युग के प्रथम चरण से सम्बन्धित हैं जिसे मानव विकास के इतिहास में पैलियोलीथिक काल के शेलियन युग के नाम से जाना जाता है। अरबों का वर्णन तौरेत में भी आया है जिससे इब्रानियों के अरबों से सम्बन्ध का पता चलता है यह वर्णन 750 से 200 ईसा पूर्व का है। इसी प्रकार तलमूद में भी अरबों की तरफ इशारे हैं। जोज़िफस (37–100) की किताब में अरबों तथा नतबियों से सम्बन्धित कीमती जानकारी मिलती है। इस्लाम से पहले लिखी गई किताबों में कुछ ग़लती और भ्रम के बावजूद अनेक ऐतिहासिक तथा भौगोलिक सबूत

मिलते हैं। इनमें बहुत से ऐसे अरब कबीलों के नाम मिलते हैं जिनका कहीं और वर्णन नहीं आया है। इस्कन्दरिया उन महत्वपूर्ण केन्द्रों में एक था जहां अरबों के हालात और आदतों तथा देश की पैदावार का हाल मालूम करने की विशेष व्यवस्था थी यहां से अनेक वस्तुएं भूमध्य सागर के तट पर स्थित देशों के व्यापारियों को पहुंचायी जाती थीं।

युनान के अख़ीलस (525–456ई पूर्व) तथा हेरीडोटस (480–425 ई०पू) ने सबसे पहले अरबों का वर्णन किया। इनके अलावा जिन लेखकों की किताबों में अरबों का वर्णन मिलता है उनमें दूसरी शताब्दी ई० में इस्कन्दरिया के क्लैडियस टालोमियस का नाम उल्लेखनीय है जिसकी किताब अल्माजेस्ट (Almagest) का अरबी पाठ्यक्रम में प्रमुख स्थान है। मसीही स्रोतों में भी पर्याप्त वर्णन मिलते हैं यद्यपि इन स्रोतों का मुख्य मक़सद ईसाई धर्म और उसके केन्द्रों का प्रचार प्रसार था।

तौरेत में जिन अरबों का वर्णन आया है वह बद्दू अरब हैं। क्योंकि "एरब" (Ereb) का शाब्दिक अर्थ सेमिटक में "मरूस्थल" हैं तथा उसके लोगों की जो विशेषताएं वर्णन की गई हैं वह बद्दूओं के जीवन पर पूरी उतरती हैं। इसी तरह यूनान तथा रोम वासियों की किताबों और इन्जील में जहां भी इन विशेषताओं का वर्णन आया है उससे तात्पर्य उन अरब बद्दुओं से है जो रोमन साम्राज्य और यूनान की सीमाओं पर चढ़ाई करते रहते थे। सिसिली के लेखक दियोदोरस ने अरबों के बारे में लिखा है कि वह आज़ादी के मतवाले खुले वातावरण में ज़िंदगी गुज़ारने वाले साफ विचार तथा पूर्ण आज़ादी के कायल हैं। इसीलिए हिरोडोटस ने उनके बारे में लिखा है "वह हर उस ताकत का मुक़ाबला करते हैं जो गुलाम बनाने और अपमानित करने की कोशिश करती है" आज़ादी अरबों का वह विशिष्ट गुण है जिसके लिए वह यूनानी तथा लैटिन लेखकों की नज़रों में मुमताज़ रहे हैं। अरब तथा हिन्दुस्तान के कारोबारी और सांस्कृतिक रिश्ते बहुत पुराने हैं। इस्लाम के आने से बहुत पहले से दोनों

एक दूसरे को जानते थे और एशियाई देशों में अरब सबसे अधिक जानकारी हिन्दुस्तान के बारे में रखते थे। यह दोनों देश भौगोलिक तथा आर्थिक निगाह से बहुत कुछ समान थे जैसा कि आधुनिक खोज से पता चलता है।☆

☆1 देखें "अरब व हिन्द के तअल्लुकात" लेखक मौलाना सैय्यद सुलेमान नदवी।

अरब का नुबूवत और आसमानी धर्मों से रिश्ता

अरब प्रायद्वीप बहुत से नबियों की दावत का केन्द्र रहा है। कुर्आन में आया है:–

अनुवादः– "और (ऐ पैग़म्बर) तुम आद के भाई हूद अ0 को याद करो जब उन्होंने अपनी क़ौम को अहक़ाफ में डराया और उनसे पहले बहुत से डराने वाले गुज़र चुके कि अल्लाह के सिवा किसी और की इबादत न करो मुझको तुम्हारी निस्बत एक बड़े दिन के अज़ाब का डर है।" (सूरःअहक़ाफ 21)

हज़रत हूद अ0 आद क़ौम की तरफ भेजे गए थे, इतिहासकारों के अनुसार आद का सम्बन्ध "अरब बायदा" से था और वह अहक़ाफ में रहते थे। हक़फ रेत के ऊंचे टीले को कहते हैं। आद की बस्तियां प्रायद्वीप के दक्षिण में ऊंचाई पर थीं जो आजकल "रुबा ख़ाली" के दक्षिण पश्चिम में हज़रमौत के निकट स्थित है। इनमें न अब ज़िंदगी ही है न कोई आबादी है। जब कि किसी समय यहां हरे भरे इलाके में गुलज़ार शहर थे जिन में आद ज़ैसी जाबिर क़ौम आबाद थी। उन्हें अल्लाह ने तेज़ आन्धी से समाप्त कर दिया जिसने उन्हें रेतीले तूफान में ढक लिया था। सूरः अहक़ाफ की उपरोक्त आयत यह भी बता रही है कि हज़रत हूद अ0 इस इलाक़े में आने वाले पहले और आख़िरी नबी नहीं थे। उनसे पहले और बाद भी नबी आते रहे थे इसलिए कुर्आन कहता है,"और उनसे पहले और पीछे भी डराने वाले गुज़र चुके थे।"

इस प्रकार क़ौम समूद के नबी हज़रत सालेह अ0 का अभ्युदय भी अरब प्रायद्वीप में हुआ। समूद अलहिज्र में रहते थे जो तबूक और हिजाज़ के बीच एक बस्ती है। हज़रत इस्माईल अ0 जन्म के बाद ही मक्का आ गए और वहीं रहे और वहीं उनकी वफ़ात (निधन) हुई, और अगर प्रायद्वीप की सीमा में मदीने को भी शामिल कर लिया जाए तो हज़रत शोएब अ0 भी अरब ही साबित होते हैं क्योंकि मदीना शाम के इलाक़े में अरब प्रायद्वीप की सीमा पर था। इतिहासकार अबुलफ़िदा ने लिखा है:–

"मदीना वासी अरब थे और मदीने में रहते थे जो मआन के निकट शाम और हिजाज़ की सीमा के पास लूत सागर (मृतक सागर) के निकट था। क़ौम लूत के बाद ही उनका ज़माना है।" अरब की धरती में बहुत से नबी पैदा हुए जिन पर उनके देश वासियों ने बड़े ज़ुल्म ढाए थे और वह अपने देश में परदेसी बन कर रह गए थे। इसलिए उन्होंने दूर दराज़ ऐसे इलाक़े का चयन किया जो जाबिर बादशाहों और ज़ालिम हाकिमों के असर से दूर थे, जैसा कि हज़रत इब्राहीम अ0 के साथ मक्का और हज़रत मूसा अ0 के साथ मदीना में पेश आया। इसके अलावा बहुत से धर्मों को जब अपने केन्द्रों में फलने–फूलने का मौक़ा न मिला तो वह इस प्रायद्वीप में आकर बस गए। अतः यहूद का एक बड़ा समुदाय रोमियों के अत्याचार से तंग आकर यमन व यसरब आ गया और बाज़नतीनी महाराजाओं से तंग आकर ईसाइयों ने नजरान में पनाह ली।

अध्याय पाँच

मक्का, हज़रत मुहम्मद सल्ल0 के अभ्युदय से पहले

हज़रत इस्माईल अ0 मक्का में

सैय्यदना हज़रत इब्राहीम अ0 मक्का की तरफ आए जो सूखे और बग़ैर पानी की पहाड़ियों में घिरा हुआ था। जहां इंसानी ज़िंदगी की ज़रूरतों को पूरा करने के लिए पानी, गल्ला आदि कुछ न था। उनके साथ उनकी पत्नी बीबी हाजरा और बेटे हज़रत इस्माईल भी थे। इस सफर का मक़सद दुनिया में फैली बुत परस्ती से इंसान की दूरी और एक ऐसे केन्द्र की स्थापना करना था जहां अल्लाह पाक की इबादत की जाए और दूसरे लोगों को भी उसकी तरफ बुलाया जाए और यह केन्द्र सच्चे रास्ते की एक किरन बनकर इंसानियत की पनाह और अमन का घर तथा मूर्ति पूजा से हटकर तौहीद व विशुद्ध दीन की दावत का केन्द्र बिन्दु बन सके।

अल्लाह पाक ने उनकी दिली तमन्ना पूरी की और इस सूखी घाटी में ख़ूब बरकत दी और इस छोटे से परिवार के लिए जिसमें सिर्फ माँ बेटे थे, (जिनको हज़रत इब्राहीम अ0 इस दूर स्थित उजाड़ रेगिस्तान में अल्लाह के भरोसे पर छोड़ गए थे) पानी का एक चश्मा (सोता) जारी कर दिया जो ज़मज़म कहलाया और अल्लाह ने इसमें बहुत बरकत दी।

हज़रत इस्माईल अ0 अब कुछ बड़े हुए और चलने फिरने तथा दौड़ने भागने लगे तो हज़रत इब्राहीम अ0 ने अल्लाह की मुहब्बत पर उनकी मुहब्बत को कुर्बान कर दिया और उनको ज़िबह करने का इरादा किया इस लिए कि सपने में उनको इसका इशारा दिया गया था। आज्ञाकारी बेटे ने अल्लाह पाक की इच्छा के सामने सर झुका दिया लेकिन अल्लाह ने ज़िबह अज़ीम (बड़ी कुर्बानी) को इसका बदल बना दिया और हज़रत इस्माईल अ0 को सुरक्षित रखा ताकि अल्लाह की

तरफ बुलाने में वह अपने पिता का हाथ बटा सकें, और हज़रत मुहम्मद सल्ल0 के पूवर्ज बनने तथा मुसलमानों का पूवर्ज बनने का सौभाग्य उनको हासिल हो जिस पर अल्लाह की तरफ बुलाने और अल्लाह की राह में जिहाद करने की ज़िम्मेदारी कयामत तक के लिए डाली गयी है।

हज़रत इब्राहीम अ0 मक्का वापस हुए और बाप–बेटे दोनों ने मिलकर अल्लाह के घर का निर्माण शुरू किया। उनकी दुआ यह थी कि अल्लाह पाक इस घर को कुबूल करे और इसमें बरकत दे और वह दोनों इस्लाम पर जिएं और मरें, और उनकी मौत के बाद उनकी सन्तान को यह दौलत और उत्तराधिकार हासिल हो। वह इस दावत की सिर्फ सुरक्षा ही न करें बल्कि इस दुनिया में इसके प्रचारक और अलम बरदार बनकर रहें। इसको हर चीज़ पर प्राथमिकता दें तथा इसकी राह में किसी कुर्बानी में पीछे न हटें यहां तक कि यह दावत पूरी दुनिया में फैल जाए, और अल्लाह पाक उनकी सन्तान में ऐसा नबी पैदा करे जो अपने पूर्वज इब्राहीम अ0 की दावत को नए सिरे से ज़िन्दा करे और उस काम को पूरा करे जिसको वह शुरू कर रहे हैं। कुर्आन में आया है:–

अनुवाद:– और जब इब्राहीम अ0 और इस्माईल अ0 बैतुल्लाह शरीफ (अल्लाह का घर काबा) की बुनियादें ऊंची कर रहे थे तो दुआ किए जाते थे कि हमारे परवर दिगार हमको अपना फरमांबरदार (आज्ञाकारी) बनाए रखियो और हमारी सन्तान में से भी एक गिरोह को अपना आज्ञाकारी बनाए रहियो, और परवरदिगार हमें हमारी इबादत का तरीक़ा बता और हमारे हाल पर (रहम के साथ) ध्यान दे। बेशक तू ध्यान देने वाला बड़ा मेहरबान है। " ऐ! हमारे परवर दिगार! इन लोगों में इन्हीं में से एक पैग़म्बर भेजियो जो इनको तेरी आयतें पढ़–पढ़ कर सुनाया करे और किताब और दानाई सिखाया करे और (इनके दिलों को) पाक साफ किया करे बेशक तू ग़ालिब और हिकमत वाला है।" (सूरः बकरा 127–129)

हज़रत इब्राहिम अ0 ने यह भी दुआ की थी कि यह घर हमेशा हमेशा सुख, चैन और अमन–शान्ति का घर रहे। अल्लाह पाक उनकी औलादों और बाद में आने वाली नस्लों को बुतों की पूजा से बचाए रखे

जो उनके लिए सबसे ज़्यादा नापसंद चीज़ थी और जिसे वह अपनी आने वाली नस्ल के लिए सबसे बड़ा ख़तरा समझते थे क्योंकि नबियों (पहले) के बाद उनकी क़ौमों का नतीजा उनकी नज़र के सामने था और उन्होंने देखा था कि उनकी लगातार कोशिशों और महान कुर्बानियों के बावजूद यह क़ौमें किस तरह उनके रास्ते से हट गईं और अपने नबी के दुनिया से विदा होते ही शैतानों, फसादियों, अपने–अपने समय के दज्जालों, बुतों के पुजारियों तथा अज्ञानता के अगुआकारों ने उनको अपना शिकार किया।

उन्होंने अल्लाह पाक से यह तमन्ना भी की थी कि उनकी सन्तान और सन्तान की सन्तान इस दावत और जिहाद से बराबर रिश्ता जोड़े रखे, और उनकी बुत शिकनी, शिर्क व बुत परस्ती (मूर्ति पूजा) से उनकी नफरत व बेज़ारी, सच की रक्षा के लिए उनकी लगातार कोशिश, अपने बुत गढ़ने तथा उन्हें बेचने वाले पिता के मुक़ाबले में उनका खड़ा होना, उनकी साफ बात करने और उनके अपना देश छोड़कर दूसरी जगह जाने को हमेशा याद रखें, और यह महसूस करें कि इतने नाज़ुक और अहम काम के लिए इस वीराने और रेतीली ज़मीन में, जो न खेती के काबिल थी न सभ्यता व संस्कृति के विकास के लिए यहां कोई सामान था, चयन का भेद क्या है और दुनिया के बड़े–बड़े आबाद शहरों, कारोबारी व औद्योगिक केन्द्रों पर, जहां हर तरह के सुख समृद्धि के साधन मौजूद थे को छोड़कर इस दूर स्थित गुमनाम इलाके को क्यों प्राथमिकता दी गई।

उन्होंने अल्लाह से यह भी दुआ की कि उनकी औलाद को लोकप्रिय बनने का सौभाग्य मिले। लोग अपने आप उनकी तरफ खिंचे चले आएं और दुनिया के कोने–कोने से आकर लोग उनको अपनी श्रद्धा पेश करें। खाना उनको खुद हर तरफ से पहुंचता रहे। मेवे तथा फल और कोशिशों के बेहतर फल उनको मिलते रहें।

अनुवादः– और जब इब्राहिम अ० ने दुआ की कि मेरे पालनहार! इस शहर को (लोगों के लिए) अमन की जगह बना दे और मुझे तथा मेरी सन्तान को इस बात से कि बुतों की पूजा करने लगें, बचाए रख।

ऐ! परवरदिगार उन्होंने बहुत से लोगों को गुमराह किया, सो जिस व्यक्ति ने मेरा कहा माना वह मेरा है, और जिसने मेरी नाफरमानी की तो तू बख़्शने वाला मेहरबान है। ऐ! परवर दिगार! मैं ने अपनी सन्तान को मैदान (मक्का) जहां खेती नहीं, तेरे इज़्ज़त व अदब वाले घर के पास ला बसाया है। ऐ! परवर दिगार!! ताकि यह नमाज़ पढ़े। तू लोगों के दिलों को ऐसा कर दे कि उनकी तरफ झुके रहें और उनको मेवों से रोज़ी दे ताकि तेरा शुक्र करें। (सूरः इब्राहिम 35–37)

कुरैश का क़बीला

यह सारी दुआए और तमन्नाएं (मनोकामनाएं) एक एक करके पूरी हुयीं। अल्लाह पाक ने उन दोनों की नस्लों में बढ़ोतरी की। यह इब्राहिमी अरबी ख़ानदान ख़ूब फला–फूला और फैला। हज़रत इस्माईल अ0 ने जुरहुम ☆ के क़बीले में रिश्ता किया। जिसकी गिनती अरब अरबा में होती थी। हज़रत ईस्माइल अ0 की औलाद में बहुत बरकत हुई यहां तक कि उन्हीं में अदनान पैदा हुए जिनके वंशज अरब में सर्वोत्तम और सर्वश्रेष्ठ हैं।

☆ कहा जाता है कि जुरहुम का कबीला वह सबसे पहला क़बीला है जो मक्का में बसा। इसकी वजह पानी के न ख़त्म होने वाले सदाबहार स्रोत का होना था। बताया जाता है कि जब जहरत इब्राहिम अ0 अपनी पत्नी हज़रत हाजिरा और अपने बेटे हज़रत इस्माईल अ0 को इस घाटी में छोड़ कर गए उस समय यह क़बीला यहां मौजूद था।

अदनान की भी बहुत औलादें हुयीं जिनमें माअद बिन अदनान अधिक मशहूर हैं। माअद की सन्तान में मुज़र मशहूर हुए और उनकी सन्तान में फिहर बिन मालिक ने ख़ानदान का नाम रौशन किया। फिहर बिन मालिक की सन्तान का नाम "कुरैश" पड़ गया, और यह नाम उनके सारे नामों पर इस तरह प्रतिष्ठा, उसकी व्याखान शक्ति, उनका उच्च आचरण, उसकी बहादुरी और हौसलामन्दी अरब वासियों में सर्वमान्य हो गई और अब यह एक ऐसी हक़ीकत बन गई जो कहावत की तरह मशहूर और विवाद से परे समझी गई है और इसमें कोई दो राय नहीं

है।☆

☆विस्तार में सीरत इब्न हश्शाम भाग 1 देखें

कुसई बिन क्लाब और उनकी औलाद

फिहर की सन्तान में कुसई बिन क्लाब पैदा हुए और मक्का की सरदारी क़बीला जुरहुम के हाथ में रही यहां तक कि खुजाआ जो काबा के संरक्षक थे उन पर छा गए। इसके बाद कुसई बिन क्लाब की किस्मत जाग उठी। उनकी क्षमाताएं विकसित हुयीं और काबा की सेवा का पद भार उनके हवाले किया गया। कुरैश के सारे लोग उनके साथ मिल गए और उन्होंने क़बीला खुजाआ को मक्का से बेदख़ल करके उसका बंदोबस्त अपने हाथ में ले लिया। कुसई बिन क्लाब बड़े लोकप्रिय सरदार थे, काबा की दरबानी और देखभाल उनके ज़िम्मे थी। उसकी कुंजी उन्हीं के क़ब्ज़े में थी और उनकी इजाज़त के बिना कोई उसमें दाख़िल नहीं हो सकता था। साथ ही ज़मज़म ☆ रिफादा ☆ और नदवा ☆ सब चीज़े उनके अधिकार में थीं और इस तरह मक्का में हर तरह की प्रतिष्ठा उन्हें हासिल हो गई थी।

☆ज़मज़म कुआं जिसका पानी सबसे पवित्र और लाभकारी है और जिसका प्रयोग हाजी करते हैं तथा अपने साथ लाते भी हैं।

☆ उस दावत को कहते हैं जो हाजियों के लिए हर साल इस भावना के प्रति की जाती थी कि वह अल्लाह के मेहमान हैं।

☆ वह बैठक, जो परामर्श और लड़ाईयों में झण्डा लेकर चलने वाली टुकड़ी के सरदार के चयन के लिए ज़रूरत पड़ने पर होती थी।

कुसई बिन क्लाब की सन्तान में अब्द मनाफ बहुत मशहूर हुए। उनके सबसे बड़े लड़के हाशिम थे जिनके अधिकार में ज़मज़म के पानी और रिफादा का पूरा बन्दोबस्त था। अब्द मनाफ हज़रत मुहम्मद सल्ल0 के दादा अब्दुल मुत्तलिब के पिता थे।

ज़मज़म और रिफादा के बन्दोबस्त का यह ज़िम्मा अब्दुल मुत्तलिब को अपने चचा मुत्तलिब बिन अब्द मनाफ से मिला था। उन्होंने अपनी

क़ौम में जो आदर, नेकनामी व लोकप्रियता पाई वह उस वक्त तक उनके पूर्वजों में किसी और के हिस्से में नही आई थी।

बनी हाशिम

बनी हाशिम क़बीला कुरैश की सुनहरी और अहम कड़ी थे। इतिहास के पन्नों में उनका जो विवरण हमारे लिए सुरक्षित कर दिया है (और जो सच्चाई से बहुत कम है) उनको पढ़ने से अन्दाज़ा होगा कि उनमें सज्जनता किस तरह कूट–कूट कर भरी थी। हर चीज़ में बीच का रास्ता अपनाना, अक़्ल से काम लेना, काबा की गरिमा और मान मर्यादा का पूरा–पूरा ध्यान, जुल्म और शोषण से दूरी, जोश, कमज़ोरों और पीड़ितों के साथ हमदर्दी, हमदर्दी व बहादुरी उनकी ज़िंदगी में हमें कदम–कदम पर दिखाई पड़ती है। अरब इन सद्गुणों को बहुत महत्व देते हैं। यह वह आचरण है जो हज़रत मुहम्मद सल्ल0 के पूर्वजों के सर्वथा अनुकूल है और आपने जिस उच्च आचरण की, अपनी वाणी और व्यवहार से दावत दी थी, वह उसके अनुरूप था। फर्क सिर्फ यह था कि उनके समय में वही नहीं उतरती थी और अज्ञानता के विश्वास व आराधना में अपनी क़ौम के साथ बहरबाल शरीक थे।

मक्का में मूर्तिपूजा उसका मूल स्रोत और इतिहास

कुरैश का क़बीला हज़रत इब्राहिम अ0 और अपने पितामह हज़रत इस्माईल अ0 के दीन पर बराबर क़ायम तथा ईश्वर की आराधना पर साबित क़दम रहा। यहां तक कि अम्र बिन लुहैयल खुज़ाई का दौर आया। वह पहला व्यक्ति था जिसने हज़रत इस्माईल अ0 के दीन में बदलाव किया। मूर्तियां स्थापित कीं। जानवरों की पूजा और उनको बुतों के नाम पर सान्ड बनाकर छोड़ने (सायबा) की बुनियाद डाली उसने हलाल व हराम के नए नियम गढ़े जिनका अल्लाह के आदेशों से कोई सम्बन्ध न था और जो इब्राहिमी शरीअत से सर्वथा अलग थे ☆ हुआ

यह कि अम्र मक्का से शाम गया और वहां देखा कि लोग बुतों को पूजते हैं। यह बात उसको बहुत पसन्द आई और उसने कुछ बुत वहां से हासिल करके मक्का में स्थापित किए, और लोगों को उनकी पूजा का आदेश दिया।

☆हदीस में आता है कि रसूलुल्लाह अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि मैंने अम्र बिन आमिरूल खुजाई को देखा कि वह जहन्नम में अपनी आन्त घसीटता हुआ चल रहा है। (बुख़ारी, मुस्लिम, अहमद) मुहम्मद बिन इसहाक़ दूसरी जगह लिखतें कि वह पहला व्यक्ति था जिसने इस्माईल अ० के दीन को बदला, बुत स्थापित किए और जानवरों को सायबा करने की परम्परा डाली।

ऐसा भी मुमकिन है कि अम्र शाम जाते हुए "बतरा" से गुज़रा हो जिसको प्राचीन इतिहासकार और भूगोल विशेषज्ञ 'पतरा' कहते आए हैं। बतरा पूर्वी जार्डन के दक्षिण में स्थित मशहूर पहाड़ी क़स्बा है जिसका वर्णन रोमियों तथा युनानियों के यहां भी मिलता है। कहा जाता है कि इसको नबतियों ने, जो मूलतः अरब थे हज़ारों वर्ष पहले बसाया था। यह लोग मिस्र, शाम, फरात की घाटी और रोम का सफर बराबर करते थे और हो सकता है कि फरात की घाटी जाते हुए वह हिजाज से ज़रूर गुज़रते हों। यह लोग खुली हुई बुत परस्ती करते थे। पत्थरों से मूर्तियां बनाते और उनकी पूजा करते थे। इतिहासकारों का विचार है कि उत्तरी हिजाज का मशहूर बुत "लात" जो सबसे अहम समझा जाता था असल में बतरा से ही मंगाया गया था। ☆

☆लेखक ने 19 अगस्त 1973 को राब्ता आलमें इस्लामी के शिष्ट मण्डल के सदस्य की हैसियत से यह जगह खुद देखी हैं और पहाड़ों में तराशे गए बुतों की बाहुल्तया ख़ास तौर से नोट की है। विस्तार के लिए लेखक का सफरनामा "दरिया–ए–काबुल से दरिया–ए–यरमूक तक" देखें।

इसकी पुष्टि पी0के0 हिट्टी की किताब History of Syria से भी होती है जिसमें इन नबती इलाकों (वर्तमान पूर्वी जार्डन) पर रोशनी डाली गयी है उसका कहना है कि :

"इन देवताओं का सरदार, "जूशरा" था जो एक आयताकार खम्बे या काले वर्गाकार पत्थर के रूप में था। "लात" जिसकी अरब पूजा करते थे असल में "जूशरा" ही से सम्बन्धित था, दूसरे नबती बुत जिसका उल्लेख इन ऐतिहासिक नबती पाण्डुलिपियों में मिलता है, "मनात" और "उज़्ज़ा" है। इनमें "हबल" का उल्लेख भी मिलता है।☆

☆ History of Syria By P.K. Hitti (London 1951) p 382-383.

यह ध्यान रहे कि यह वह युग है जिसमें मूर्तिपूजा के विभिन्न रूप अरब प्रायद्वीप के चारों तरफ जल–थल के इलाके में फैल रहे थे। हज़रत मसीह अ0 और उनके हवारियों की दावत, जिसने मूर्तिपूजा के इस बढ़ावे को रोका और उसकी तेज़ रफ्तार को कम किया, ज़ाहिर न हुई थी। रह गई बात यहूदी धर्म की तो वह सीमित नस्ली मज़हब था जो बनी इस्राईल तक सीमित था। उसमें बनी इस्राईल के अलावा किसी अन्य को दावत देने की इजाज़त न थी। Delacy O'Leary ने अपनी किताब Arabia before Muhammad में लिखा है:–

"यह कहना गलत न होगा कि बुतों की इबादत वास्तव में शाम की देन है। जो अरब प्रायद्वीप को शाम व यूनान की मिली जुली परम्पराओं से मिली है, जो शाम में आम थीं और शायद अरब के शेष भागों में उनका अधिक चलन न था" (लन्दन 1927 पृ0 196–97) इसी तरह मूर्तिपूजा फरात की घाटी और अरब प्रायद्वीप के पूर्व में आम थी। चूंकि इस इलाके से अरब प्रायद्वीप के कारोबारी और दोस्ताना सम्बन्ध थे, इसीलिए हो सकता है कि अरब प्रायद्वीप में मूर्तिपूजा फैलाने में इस इलाके का भी हिस्सा हो। George Roux ने अपनी किताब

Ancient Iraq (1972 pp-283) में इसकी विवेचना की है कि ईराक की प्राचीन ऐतिहासिक पाण्डुलिपियां यह ज़ाहिर करती हैं कि मूर्ति पूजा वहां तीसरी शताब्दी ई0 और उसके बाद आम थी। यह देश बुतों और देवताओं का केन्द्र था जिसमें विदेशी बुत भी थे और स्थानीय भी।

एक कथन यह भी है कि कुरैश में मूर्तिपूजा धीरे–धीरे शुरू हुई इसका एक कारण अरब इतिहासकारों के अनुसार यह भी हो सकता है कि पहले वह लोग जब मक्का से कहीं बाहर यात्रा पर जाते थे तो हरम काबा के कुछ पत्थर सौग़ात के रूप में श्रद्धापूर्वक अपने साथ ले लेते थे। इसके बाद जो पत्थर उनको ज़्यादा पसन्द आते उसे पूजने लगते। उनकी सन्तान और नई नस्ल इस विवरण से भी अपरिचित थी वह खुली हुई मूर्तिपूजा करने लगी और दूसरी रास्ता भटकी क़ौमों की तरह यह भी रास्ते से हट गई। फिर भी इब्राहिमी दौर के कुछ कामों और रस्मों को अपने सीने से लगाए रहे। जैसे काबा के प्रति श्रद्धा, तवाफ ☆ हज ☆ और उमरह ☆। क़ौमों तथा धर्मों का सिलसिले वार इतिहास देखने से इतिहासकारों की इस बात की पुष्टि होती है कि अरबों में और विशेषकर कुरैश में मूर्तिपूजा किस तरह शुरू हुई।

1☆ काबा की परिक्रमा (अनुवाद)

2☆ मक्का की तीर्थयात्रा जो ज़िलहिज्ज के महीने में की जाए (अनुवाद)

3☆ हज के दिनों के अलावा किसी समय काबा की तीर्थयात्रा करना। इन बुतों के नाम आदि का विस्तृत विवरण जानने के लिए सैय्यद महमूद शकरी अलअलसी की किताब "किताबुल असनाम लिल कल्बी" देखें।

कुछ दूसरी मुस्लिम क़ौमों और वर्गों में तस्वीरों, काल्पनिक चित्रों तथा मज़ारों से जितना अधिक लगाव तथा उनके प्रति जिस तरह श्रद्धा व सम्मान व्यक्त किया गया उससे भी इसकी पुष्टि होती है। इसीलिए इस्लामी शरीअत ने वह सभी रास्ते व चोर दरवाज़े पहले ही से बन्द कर दिए हैं जो शिर्क या व्यक्ति, स्थान व अवशेष निशानों के प्रति श्रद्धा व सम्मान की अनावश्यक सीमा तक ले जाते हैं। ☆

☆ इस्लामी शरीअत और हदीसों में इसके तर्क इतने ज़्यादा हैं कि उनकी गिनती मुश्किल है। इन ही में से एक मशहूर हदीस है कि," मेरी कब्र को ईद और जश्न की जगह न बनाना, न इस पर मेला लगाना।" एक और हदीस में है कि " सिर्फ तीन मस्जिदें हैं जहां बाकायदा ज़ियारत (दर्शन) की नियत करके सफर करना जायज़ है।" दूसरी हदीस है कि " मेरी इस तरह हद से बढ़ी हुई प्रशंसा न करो जिस तरह नसारा ने मसीह बिन मरियम की की है।" जानदारों की तस्वीर बनाना इसीलिए मना है। प्राचीन समय में अनेक क़ौमें अपने पूर्वजों के चित्रों के प्रति श्रद्धा, उनकी मूर्ति गढ़ना और उनकी पूजा करने लगी है। इब्न कसीर लिखते हैं। मुहम्मद बिन कैस बयान करते हैं कि," आदम व नूह के बीच वह सन्त व सज्जन व्यक्ति थे जिनके शिष्यों और भक्तों की बड़ी संख्या थी, जब उनका निधन हुआ तो उन शिष्यों और भक्तों ने सोचा अगर हम उनकी कोई तस्वीर या काल्पनिक चित्र बनाएं तो इससे उनकी याद ताज़ा होगी और इबादत में अधिक दिल लगेगा। इस विचार से शिष्यों ने उनकी तस्वीर बनाई। जब यह नस्ल भी ख़त्म हुई और नई नस्ल आई तो शैतान ने उसको सिखाया या पढ़ाया कि उनके पूर्वज वास्तव में तस्वीरों और चिन्हों की इबादत करते थे और उन ही की बरकत से वर्षा होती थी। धीरे-धीरे यह उनकी बाकायदा पूजा करने लगे और खुली हुई मूर्ति पूजा का चलन हो गया।

हाथी वालों की घटना

इसी दौर में इतनी बड़ी घटना हुई जिससे बड़ी घटना अरबों के इतिहास में कभी न घटी थी। यह इस बात का इशारा था कि निकट भविष्य में कोई बहुत बड़ी बात होने वाली है और अल्लाह पाक अरबों के साथ अच्छाई का इरादा रखता है, और काबा की शान इस तरह बढ़ने वाली है और उसके साथ मानवता का उज्जवल भविष्य तथा उसकी सुख शान्ति जुड़ी है।

कुरैश के लोगों का यह पक्का यक़ीन था कि अल्लाह की निगाह में काबा का एक ख़ास स्थान है और वही उसका संरक्षक है। उनके इस यक़ीन की पुष्टि उस बात-चीत से होती है जो हज़रत मुहम्मद सल्ल0 के दादा व कुरैश के सरदार अब्दुल मुत्तलिब और हब्शा के राजा अब्रहा के बीच हुई थी। इसका किस्सा यह है कि अब्दुल मुत्तलिब के दो सौ ऊंट अब्रहा ने ले लिए थे, वह इसके लिए अब्रहा से मिलने गए और अन्दर आने की अनुमति चाही। अब्रहा ने उनको बहुत इज़्ज़त दी, अपने सिंहासन से उतर आया, उन्हें अपने पास बिठाया और आने की वजह

पूछी। अब्दुल मुत्तलिब ने कहा कि मेरे दो सौ ऊंट बादशाह ने ले लिए हैं वह वापस लेना चाहता हूं। बादशाह ने अब्दुल मुत्तलिब की इस छोटी मांग पर हैरत प्रकट करते हुए कहा,"तुम दो सौ ऊंटों की बात करते हो जो मैंने ले लिए हैं और उस घर की चिन्ता नहीं करते जिस पर तुम्हारा और तुम्हारे पूर्वजों का दीन व धर्म कायम है और जिसको गिराने के लिए मैं यहां आया हूं। "अब्दुल मुत्तलिब ने बहुत यकीन के साथ जवाब दिया कि मैं तो ऊंटों का मालिक हूं (इस लिए उसकी फिक्र करता हूं) जो घर का मालिक है वह अपने आप उसकी रक्षा करेगा। उसने कहा, "वह मुझसे कहां बच सकता है" अब्दुल मुत्तलिब ने जवाब दिया," यह तुम जानो और वह (घर का मालिक) जाने।" इसके बाद जो कुछ हुआ उसका वर्णन आगे आएगा। इस घटना के बाद अब किसी की हिम्मत नहीं कि काबा को बुरी नज़र से देखे और उस पर हाथ उठाए। निश्चय ही अपने घर और दीन की रक्षा अल्लाह पाक ही के ज़िम्मे थी और है।

इस अहम घटना का सारांश यह है कि अब्रहा हब्शा के राजा नजाशी का सनआ में नियुक्त गर्वनर था। अब्रहा ने सनआ में एक बड़ा गिरजा घर बनाया और उसका नाम "अल्कुल्लैस" रखा। जिसका मकसद यह था कि अरबों के हज का रुख़ इस तरफ मोड़ दिया जाए। क्योंकि काबा की शान उसकी निगाह में खटकती थी और वह चाहता था कि यह शान और विशिष्ट स्थान गिरजा को हासिल हो।

यह बात अरबों को बहुत अखरी क्योंकि काबा की मुहब्बत उनकी घुट्टी में पड़ी थी, और वह किसी धार्मिक केन्द्र व प्रार्थना स्थल को इसके बराबर नहीं समझते थे और उसको छोड़कर कोई बड़ी से बड़ी दौलत लेने को तैयार न थे। इस बात ने उनके दिल व दिमाग को झिंझोड़ कर रख दिया। इसी दौरान कनानी इस काम के लिए निकल खड़ा हुआ और उस गिरजा में जाकर मल–मूत्र से अपवित्र कर दिया। इससे एक नया हंगामा खड़ा हो गया। अब्रहा को इस बात पर बहुत

गुस्सा आया उसने उसी वक़्त कसम खाई कि वह खुद काबा पर हमला करेगा और उसको गिराए बिना चैन की सांस नही लेगा।☆

☆मुमकिन है अब्रहा के हमले का मक़सद इस से कुछ अधिक रहा हो और वह मक्का पर विजय हासिल करना चाहता हो ताकि शाम से यमन का सम्पर्क जुड़ जाए और ईसाई शासन के कदम अरब प्रायद्वीप में जम जाएं। उसका यह क़दम रोम तथा हब्शा के हित में था क्योंकि वह दोनों ईसाई धर्म से संबंध रखते थे यह योजना, चाहे उसके निशाने कुछ भी रहे हों, तब तक सफल नहीं हो सकती थी जब तक मक्का जिसे विशिष्ट स्थान हासिल था और जो मानवता के लिए रोशनी का मिनार बनने वाला था, को अपने गौरव पूर्ण पद से बेदखल न किया जाता। लेकिन कुदरत को मंजूर कुछ और ही था। ऐसा भी मुमकिन है कि रोमियों ने ही अब्रहा को उकसाया हो और उसके पीछे कुछ राजनीतिक मक़सद काम कर रहे हों जैसे ईरान के प्रभाव को कम करना क्योंकि अरब प्रायद्वीप में रोमियों का मुक़ाबला अकेले ईरानी कर रहे थे।

अब्रहा की सेना में बड़ी संख्या में हाथी थे, अरबों ने हाथियों के बारे में पहले भी काफी सुन रखा था। यह ख़बर उन पर बिजली बन कर गिरी, और वह इस हमले से बहुत डर गए और कोशिश की कि किसी तरह अब्रहा के लश्कर को आगे बढ़ने से रोका जाए लेकिन उनको जल्दी ही अन्दाज़ा हो गया कि अब्रहा और उसकी विशाल सेना का मुकाबला करना उनकी ताकत से बाहर है। अतः यह मामला उन्होंने अल्लाह के सुपुर्द कर दिया। उनको पूरा यक़ीन था कि इस घर का जो मालिक है वह इसकी खुद रक्षा करेगा।

फौज के जुल्मों से बचने के लिए कुरैश के लोगों ने पहाड़ियों और घाटियों में पनाह ली और प्रतीक्षा करते रहे कि अल्लाह अपने घर (काबा) की रक्षा कैसे करता है। अब्दुल मुत्तलिब उनके कुछ साथी काबा का दरवाज़ा पकड़ कर अल्लाह से दुआ करने लगे, और अब्रहा की हार की दुआ की। उधर अब्रहा अपनी फौज के साथ काबा की तरफ बढ़ा, अपने हाथी को जिसका नाम 'महमूद' था उसने हमले के लिए तैयार किया लेकिन मक्का के रास्ते ही में हाथी एक जगह बैठ गया और मारने के बावजूद वह वहां से न उठा। जब उन्होंने उसका रुख़ यमन की तरफ किया तो वह फौरन उठा और तेज़ी से दौड़ने लगा। उस समय अल्लाह

ने समुन्द्र की तरफ से चिड़ियों के झुंड भेजे। हर चिड़िया अपने पंजों में पत्थर लिए हुए थी। यह पत्थर जिसको लगता वह मर जाता। यह देखकर हब्शा वासी जिस रास्ते से आए थे उसी पर तेज़ी से वापस भागे। भागते हुए चिड़ियों के पत्थरों से गिर गिर कर मरते गए। अब्रहा का बदन भी छलनी हो गया। वह उसको उठा कर अपने साथ वापस ले जाने लगे तो उसका एक-एक पोर गिरने लगा। यहां तक कि सनआ पहुंच कर उसका अन्त हो गया। इस घटना का वर्णन कुर्आन में भी आया है।

अनुवादः- क्या तुमने नहीं देखा कि तुम्हारे परवर दिगार ने हाथी वालों के साथ क्या किया। उनका दांव गलत नहीं किया। (और उन पर झुंड के झुंड जानवार भेजे जो उन पर कंकर पत्थर फेंकते थे, तो उनको ऐसा कर दिया जैसा खाया हुआ भूसा)। (सूरः फील 1-5)

अब्रहा की हार के परिणाम

जब अल्लाह ने हब्शा वासियों को हरा कर वापस किया और उन पर यह मुसीबत टूटी जिसका ऊपर वर्णन किया गया, तो अरबों के दिल में स्वाभाविक रूप से कुरैश के प्रति बड़ी श्रद्धा पैदा हो गई। वह कहने लगे कि बेशक यह अल्लाह वाले हैं। उनकी तरफ से अल्लाह ने दुश्मन को पराजित किया और उनको लड़ना भी न पड़ा। उनके दिलों में काबा के प्रति श्रद्धा और बढ़ गयी, और अल्लाह की तरफ से उसकी रक्षा पर उनका ईमान और बढ़ गया।

यह अल्लाह की एक खुली हुई निशानी और चत्मकार था। इस बात का इशारा कि मक्का में एक ऐसे नबी का अभ्युदय होने वाला है जो काबा को बुतों की अपवित्रता से पाक करेगा। उसके हाथों इसकी शान बढ़ेगी। उसके दीन का इस घर से गहरा व और कभी न ख़त्म होने वाला पक्का रिश्ता रहेगा। इस घटना से यह भी अन्दाज़ा होता था कि उस नबी का अभ्युदय जल्द होने वाला है।

अरबों में इस को बहुत महत्व हासिल हुआ और उससे उन्होंने नई

तारीख़ शुरू की फलतः उनके लेखों में इस का प्रचलन मिलता है कि यह बात आमुल फील (अर्थात हाथी वाली घटना का वर्ष) में घटित हुई। अमुक व्यक्ति आमूल फील में पैदा हुआ। यह घटना 570 ई0 में घटी।

अध्याय छः

मक्का नबी सल्ल0 के अभ्युदय के समय

मक्का एक महानगर

बहुत से लोग जो नबी सल्ल0 के अभ्युदय काल के हालात से भली प्रकार परिचित नहीं हैं और जिनकी अरबों के इतिहास, उनके सामाजिक जीवन, साहित्य तथा उनके क़बीलों की परम्पराओं पर गहरी नज़र नहीं है, वह यह समझते हैं कि मक्का हज़रत मुहम्मद सल्ल0 के अभ्युदय के समय एक छोटा सा गांव था जहां ज़िंदगी, बौद्धिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक, हर पहलू से शुरूआती दौर में थी। वह क़बीलों की कुछ आबादियों का नाम था जहां बालों के बने हुए खेमों और डेरों में (जिनके चारों तरफ ऊंटों, भेड़–बकरियों और घोड़ों के बांधने की जगहें थीं) उनकी ज़िंदगी गुज़रती थी। वह अधिकतर घाटियों के किनारे और पहाड़ों के पहलू में फैले हुए थे। उनका खाना सूखी रोटी या ऊंट का गोश्त था जिसे वह ठीक से पकाना भी नहीं जानते थे। ऊंट के बालों से बने हुए कपड़े पहनते थे। उनका खान–पान साधारण था। उनके पहनावे में न कोई आकर्षण था न उनकी ज़िंदगी में गर्मी, न उल्लास व सौन्दर्य न ही विचारों में उठान।

मक्का का यह धुमिल चित्र सीरत व इतिहास की जिन सामान्य किताबों में पेश किया गया है वह ज़्यादा़तर अजमी (गैर अरब) ज़बानों में लिखी हुई हैं। जब कि यह तस्वीर उन ऐतिहासिक सच्चाईयों के विपरीत है जो इतिहास की किताबों व प्राचीन साहित्य में मिलते हैं और जिसमें मक्का और मक्का वासियों (जो शुरूआती बद्दुवी जीवन से प्रारंभिक नागरिक और सभ्य जीवन के दौर में दाख़िल हो चुके थे।) की आदतों, परम्परओं तथा आचार्य संहिता का चित्रण पेश किया गया है। क़ुर्आन मजीद में मक्का को " उम्मुल क़ुरआ" अर्थात नगरों की जननी के नाम से याद किया गया है।

अनुवादः–"और इस तरह तुम्हारे पास क़ुर्आन अरबी में भेजा ताकि

तुम बड़े गांव (अर्थात मक्का) के रहने वालों को और जो लोग उसके आस पास रहते हैं उनको रास्ता दिखाओ और उन्हें क़यामत के दिन का भी जिसमें कुछ शक नहीं है ख़ौफ दिलाओ। उस दिन एक फ़रीक़ (पक्ष) जन्नत में होगा और एक फरीक़ (पक्ष) जहन्नम में।' (सूरः शूरा–7)

दूसरी जगह आता है कि:

अनुवादः– " अन्जीर की क़सम और ज़ैतून की और तूरे सीनीन (सिनाई पहाड़) की और उस अमन वाले शहर की" (सूरः तीन 1–3)

एक और जगह आता है:

अनुवादः– "उस शहर (मक्का) की क़सम और तुम उसी शहर में तो रहते हो।" (सूरः बलद 1–2)

सच्चाई यह है कि पांचवी शताब्दी ई0 के मध्य ही में मक्का अज्ञानता के युग से सभ्यता के युग में दाख़िल हो चुका था। हालांकि यह सभ्यता सीमित इलाके में थी। यह नगर एक ऐसे बंदोबस्त के तहत था जो आपसी सहयोग व एकता, जन कल्याण तथा धर्म विभाजन की बुनियाद पर क़ायम था। इस व्यवस्था के संस्थापक कुसई बिन क्लाब थे, जिनकी पांचवी पीढ़ी में हज़रत मुहम्मद सल्ल0 हैं।

शुरुआत में मक्का की आबादी बहुत कम थी, यह स्थान दो पहाड़ियों "अबुकुबैस" और " अहमर" के मध्य स्थित था, लेकिन काबा की बदौलत तथा उसके सेवकों एवं देख–रेख करने वालों और मक्का वासियों को आमतौर पर जो इज़्ज़त हासिल थी तथा वहां जो अमन–शान्ति व सुख हासिल था उसकी वजह से क़बीलों के लिए मक्का में बड़ा आकर्षण था। फलतः समय के साथ उसकी आबादी खुद ही बढ़ती गई। ख़ेमों और छोलदारियों की जगह पत्थर या गारे के बने हुए मकान बन गए। आबादी और मकानों की यह लहर मस्जिदे हराम (ख़ाना काबा) से मक्का की पहाड़ियों और चोटियों तक फैल गई। शुरू में यह लोग अपने मकानों की छतें काबा की तरह वर्गाकार न बनाते थे और

ऐसा करना बेअदबी समझते थे, लेकिन धीरे-धीरे यह बात न रही और इसमें बहुत गुंजाइश पैदा कर ली गई फिर भी काबा से उस समय भी मकान नीचे ही रखे जाते थे। कुछ लोगों का कहना है कि मक्का वासी काबा के प्रति श्रद्धा व सम्मान के कारण अपने मकान गोल बनाते थे पहला व्यक्ति जिसने वर्गाकार मकान बनवाया हुमैद बिन ज़ुहैर है उसके इस काम को कुरैश के लोगों ने न पसन्द किया। मक्का के मालदारों और सरदारों के मकान पत्थर के बने हुए होते थे। इनमें कई कमरे होते थे। आमने सामने दो दरवाज़े होते थे ताकि घर के एक हिस्से में मेहमानों की मौजूदगी के समय औरतें दूसरे दरवाज़े से निकल सकें।

मक्का का पुनर्निर्माण

मक्का के विकास, विस्तार तथा पुनर्निर्माण में सबसे बड़ा हाथ कुसई बिन क्लाब का था, क्योंकि उन्होंने सबसे पहले कुरैश को इस मक़सद के लिए जोड़ा और मकान के लिए जगहों की विधिवत हदबंदी की जिसको अरबी में "रिबा" कहते हैं अर्थात मकान व उसके आस-पास का हिस्सा। कुरैश के विभिन्न ख़ानदानों और बिरादरियों को इन मकानों में आबाद किया। उनकी सन्तान ने मक्का की ज़मीन को विभाजित करने और सीमाबन्दी का काम जारी रखा। ख़ुद आबाद हुए और ज़मीनें दूसरों के हाथ बेचीं। ख़रीदने-बेचने और मकान बनाने का यह सिलसिला बिना किसी रुकावट के कुरैश और दूसरी बिरादरियों के बीच चलता रहा।

ज़िंदगी का बंदोबस्त

कुसई अपनी क़ौम तथा मक्का वासियों दोनों पर हावी थे। काबा की दरबानी, पियाऊ☆ की व्यवस्था, हाजियों की सालाना दावत ☆ सलाहकार समिति तथा जंगी बंदोबस्त सब उन्हीं के हाथ में था।

1☆ सेकाया अर्थात हाजियों के लिए पानी का बन्दोबस्त करना। 2☆ रिफादा अर्थात हाजियों के लिए विशिष्ट भोज।

उन्होंने नदवा (सलाहकार समिति का भवन) को मस्जिदे हराम से लगा हुआ बनाया और उसका दरवाज़ा काबा की तरफ निकाला। यह

नदवा कुसई बिन किलाब का घर भी था और कुरैश के मशवरों, फैसलों और मक्का की सोसाइटी का केन्द्र भी। कुरैश का कोई व्यक्ति मर्द या औरत शादी करना चाहता, किसी अहम विषय पर फौरन सलाह की ज़रूरत होती, किसी कबीले पर जंग करने या उसकी तैयारी करना होती तो, जब बच्ची बड़ी होती तो उसको ओढ़नी उढ़ाने की भी रस्म यहीं अदा की जाती। कुसई के व्यक्तित्व को उनके जीवनकाल में और मरने के बाद भी दीन व मज़हब जैसी प्रतिष्ठा हासिल रही। जिसके असर के बिना कोई काम नहीं हो सकता था। कानून यह था कि दारुल नदवा में 'बनी कुसई' के अलावा दूसरे क़बीलों के वही लोग आ सकते हैं जिनकी अवस्था 40 से कम न हो। बनी कुसई तथा उनके साथी संगी क़बीलों के सभी व्यक्ति छोटे हों या बड़े उसमें शामिल होने का हक़ रखते थे। दारुल नदवा में जिन बिरादरियों और ख़ानदानों को शामिल होने की इजाज़त थी वह थे हाशिम, उमैया, मख़ज़ूम, जमह, सहम, तैम, अदी, असद, नौफल तथा ज़ोहरा। यह दस विभिन्न ख़ानदान के लोग थे। कुसई के निधन के बाद पदों का नया विभाजन हुआ। बनी हाशिम को सेकाया(प्याऊ), बनी उमैया को कुरैश का झंडा "एकाब" बनी नौफल को 'रिफाद' बनी अब्दुल दार को काबा की दरबानी, पौरोहित्य और रक्षा मंत्रालय और बनी असद को मुशावरत (विधानसभा) का विभाग दिया गया।

कुरैश के लब्ध प्रतिष्ठित एवं सूझबूझ वाले व्यक्तियों में यह ज़िम्मेदारियां बंटी थी। हज़रत अबुबक्र सिद्दीक जो बनी तैयम से थे के पास तावान, अनुग्रह दान और जुर्माना आदि का विभाग था। ख़ालिद बिन वलीद जो बनी मख़ज़ूम में से थे, के पास 'कुब्बा' और 'अन्ना' का विभाग था। 'कुब्बा' उसे डेरे को कहते हैं जिसमें फौजी ज़रूरत का सामान रखा जाता था। 'अन्ना' वह सामान था जो जंग के समय कुरैश के घोड़ों पर रहता था। उमर बिन ख़त्ताब के पास दूतावास का विभाग था। जब किसी क़बीले से लड़ाई लड़नी होती तो राजदूत के रूप में उन्हें दूसरे पक्ष के पास भेजा जाता। अगर कोई बिरादरी अपने पर घंमड करती तो मुकाबले के लिए उनको भेजा जाता। सफवान बिन उमैया, जो बनी जमह

के थे, के ज़िम्मे "ऐसार व अज़लाम" (अर्थात जुए के वह पासे जो किसी मामले में किसी पहलू को प्राथमिकता देने के लिए फेंके जाते, उन पर 'हां' 'नहीं' के निशान बने होते थे) का काम था। हारिस बिन कैस के ज़िम्मे प्रशासन बन्दोबस्त और बुतों के नाम पर जमा किया हुआ माल था। यह ज़िम्मेदारियां इन लोगों को अपने पूर्वजों से उत्तराधिकार में मिली थीं।

व्यवसायिक आयात–निर्यात

कारोबार के लिए दो दिशाओं में सफर करते थे एक, गर्मियों में शाम की तरफ, दूसरे जाड़ों में यमन की तरफ। रजब ज़ीकाअदा, ज़िलहिज्ज और मोहर्रम के चार इस्लामी महीने उनके वहां पवित्र समझे जाते थे, और वह इन महीनों में लड़ाई से बचते थे। उनके बाज़ार काबा के बराबर में हरम शरीफ के अन्दर लगते थे। इस बाज़ार में दैनिक जीवन की ज़रूरत का सभी सामान मिलता था। मक्का के इतिहास में हमें बाज़ारों का जो वर्णन मिलता है उससे वहां के लोगों के जीवन स्तर का पता चलता है इन बाज़ारों में एक बाज़ार इत्र बेचने वालों के लिए तय था, एक, विभिन्न प्रकार के फलों के लिए, एक पंसारियों के लिए, एक नाईयों के लिए। यह सब बाज़ार बड़े होते थे जिसमें गेहूं, घी, शहद आदि विभिन्न वस्तुएं बड़ी मात्रा में बिकती थी, 'यमामा' मक्का की गल्ला मण्डी थी। ☆ इन बाज़ारों के अलावा एक गली जूतों की दुकानों के लिए और एक कपड़े की दुकानों के लिए थी। मक्का वासियों के कुछ मनोरंजन केन्द्र भी थे। जहां सर्दी के दिनों में शाम का समय मक्का में गुज़ारते और गर्मियां तायफ में। मक्का में कुछ नौजवान कीमती वस्त्रों और बनाव श्रंगार के लिए बहुत मशहूर थे, उनमें से कुछ की पोशाकें कई–कई सौ दिरहम में तैयार होती थीं।

☆1 जब समामा बिन आसाल ने इस्लाम कुबूल करने के बाद मक्का गेहूं ले जाने पर पाबन्दी लगा दी तो कुरैश को बहुत कठिनाई का सामना करना पड़ा। उन्होंने पैग़म्बरे इस्लाम हज़रत मुहम्मद सल्ल0 से इसकी शिकायत की। आप सल्ल0 ने यमामा को यह पाबन्दी हटा लेने का हुक्म दिया। (ज़ादु लमआद खण्ड 1 पृ0 377)

कारोबारी काम मक्का में बहुत अच्छा था। वहां के व्यापारी अफ्रीका

व एशिया के विभिन्न देशों की यात्रा करते थे और हर देश की विशिष्ट व मशहूर वस्तुएं अथवा वह वस्तुएं जिनकी उनके देश को ज़रूरत थी अपने साथ लाते थे। वह अफ्रीका से गोन्द, हाथी दांत, सोना, आबनूस की लकड़ी, यमन से खालें, अगरबत्ती व लोबान, कपड़े, इराक़ से गर्म मसाले, हिन्दुस्तान से सोना, टीन, जवाहरात, हाथी दांत, चन्दन (सन्दल) की लकड़ी, गर्म मसाले और ज़ाफ़रान, मिस्र व शाम से विभिन्न तरह के तेल, अनाज, हथियार, रेशम और शराब आयात करते थे।

वह कुछ बादशाहों और अमीरों को मक्का की विशेष वस्तुएं तोहफे के रूप में भी भेजा करते थे। उनमें सबसे विशेष चीज़ चमड़ा होता था। जब कुरैश ने हब्शा के राजा नजाशी के पास अपने दो प्रतिनिधियों अब्दुल्ला बिन रबेया और अम्र बिन अलआस बिन वायल को, वहां पहले से गए हुए मुसलमानों को वापस लेने के लिए भेजा तो उन्होंने मक्का के ख़ास तोहफे के रूप में चमड़ा भी दिया था।

वहां औरतें भी कारोबार करती थीं तथा शाम व अन्य देशों में उनके काफिले जाया करते थे। इनमें ख़दीजा बिन्त ख़ुवैलिद तथा अबुजहल की मां हज़ैलिया बहुत मशहूर थीं। कुर्आन के निम्न वाक्यों से भी इसकी पुष्टि होती है।

अनुवादः– "मर्दों को हिस्सा है अपनी कमाई से और औरतों को हिस्सा है अपनी कमाई से" (सूरः निसा 32)

आर्थिक दशा और नाप–तौल के पैमाने

मक्का वासियों में अनेक लोग बड़े खुशहाल और खाते पीते थे तथा उनके पास बहुत पूंजी थी। इसका सुबूत इससे भी मिलता है कि कुरैश का वह व्यापारिक काफिला जो बद्र की लड़ाई के मौके पर शाम से वापस आया था उसके साथ एक हज़ार ऊंट थे तथा उन पर पचास हज़ार दीनार का सामान था।

मक्का वाले बाज़नतीनी व ईरानी दो तरह के सिक्के प्रयोग में लाते थे उस समय अरब प्रायद्वीप में दो तरह के सिक्के चलन में थे। एक

दीनार व दूसरे दिरहम। दिरहम दो तरह का था। एक पर फारस (ईरान) की मुहर थी उसे 'बग़लिया' और 'सौदाय दामिया' कहते थे। दूसरे पर रोम की मुहर थी। उसे 'तबरिया' और 'बैज़न्तिया' कहते थे। यह सब चांदी के सिक्के होते थे। इनकी तौल अलग–अलग होती थी। इसीलिए मक्कावासी इनकी संख्या पर नहीं बल्कि मात्रा (वज़न) पर लेन देन करते थे। विद्वानों के कथन से पता चलता है कि दिरहम, जो कि शरीअत में मान्य है, जौ के पचपन दानों के वज़न के बराबर होता है। दस दिरहम सात मिस्काल के बराबर है, और शुद्ध सोने का एक मिस्काल 72 दानों के वज़न के बराबर, और यही सर्वमान्य है।

हज़रत मुहम्मद सल्ल0 के समय में प्रायः चांदी के सिक्के चलन में आते थे। उस समय चांदी का प्रचलन था सोने का नहीं। दीनार सोने का होता था। अज्ञानता के युग में और इस्लाम के शुरूआती दौर में शाम व हिजाज़ में दीनार का प्रचलन था, वह रोमी सिक्का था जो रोम में ढाला जाता था। उस पर रोम के सम्राट का चित्र बना होता था और उसका नाम रोमन में लिखा होता था, जैसा कि इब्न अब्दुलबर ने " अल्तमहीद" में लिखा है। दीनार शब्द मूलतः एक प्राचीन रोमी सिक्के दिनैरियस (Dinarius) से अरबी भाषा में आया है। कुछ पश्चिमी देशों में यह शब्द अब तक प्रचलित है। इन्जील में इसका वर्णन बराबर आया है। दीनार का वज़न एक मिस्क़ाल के बराबर माना जाता था और विशुद्ध सोने का एक मिस्क़ाल मध्यम आकार के जौ के 72 दानों के बराबर माना गया था। इसके वज़न में कभी बदलाव नहीं हुआ। दायरतुल मआरिफ इस्लामिया में है कि एक बाज़नतीनी दीनार 4.25 ग्राम के बराबर होता है। कुछ शोधकर्ताओं का कहना है कि उस समय दीनार का वज़न 4.55 ग्राम था जिसे ख़लीफा अब्दुल मलिक के दौर में संशोधित कर के 4.25 ग्राम कर दिया गया। ज़म्बावर के अनुसार मक्का का मिस्क़ाल 4.25 ग्राम होता है। दिरहम और दीनार में 7:10 का अनुपात था और दिरहम का वज़न 7:10

मिस्क़ाल के बराबर होता था।

हदीस, फ़िक़्ह (Jurisprudence) व इतिहास से यह साबित होता है कि लेन–देन में एक दीनार दस दिरहम के बराबर था। अबु दाऊद शरीफ में अम्र बिन शोएब कहते हैं कि 'देत'(Blood Money) की कीमत रसूलुल्लाह सल्ल0 के समय में आठ सौ दीनार या आठ हज़ार दिरहम थी, इसके बाद सहाबा रज़ी0 का इसी पर अमल रहा यहां तक कि उम्मत के लिए यही सर्वमान्य हो गया। इस तरह यह साबित होता है कि सोने का हिसाब बीस दीनार है और यह कि अज्ञानता के युग में तथा इस्लाम के अभ्युदय के समय एक दीनार दस दिरहम के बराबर था। इमाम मालिक रह0 ने 'मूता' में लिखा है कि, "वह नियम जो हमारे निकट सर्वमान्य है यह है कि ज़कात बीस दीनार पर या दो सौ दिरहम पर वाजिब है।

नाप तौल के जो पैमाने उस दौर में प्रचलित थे वह यह थे "साआ", "मुदद", "रतल", "औक़िया", और "मिस्क़ाल"। इन्हीं में से कुछ नए पैमाने उन्होंने निकाले थे। अरब गणित से भी परिचित थे। हिस्सा व मीरास के बंटवारे के सिलसिले में कुर्आन में जो वर्णन आया है उससे इसका पता चलता है।

कुरैश के धनवान

कुरैश के धनी परिवारों में बनू उमैय्या तथा बनू मख़ज़ूम विशेष तौर से उल्लेखनीय हैं। धनी व्यक्तियों में वलीद बिन मुग़ीरा, अब्दुल उज्ज़ा (अबुलहब), अबु ओ हैहा बिन सईद, अब्दुल्ला बिन रबिया मख़ज़ूमी का नाम उल्लेखनीय है। इनमें बनू तय्यम के अब्दुल्ला बिन जदआन अल–तैमी बहुत मशहूर थे, जिनके बारे में आता है कि वह सोने के प्याले में पानी पीते थे और उनका पूरा लंगर खाना था, जिसमें ग़रीबों और भूखे लोगों को खाना खिलाया जाता था। अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब की

गिनती भी कुरैश के धनवान लोगों में होती थी। वह अपनी दौलत लोगों पर खूब खर्च करते थे और सूदी लेन–देन भी करते थे। यहां तक कि इस्लाम फैला और सूद–ब्याज़ को हराम बताया गया। हज़रत मुहम्मद सल्ल0 ने हज्जतुल विदा (आख़िरी तीर्थ यात्रा–हज) के मौके पर सूदी पैसा व कारोबार ख़त्म करने का ऐलान किया और इसे अपने चचा अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब से शुरू किया। आप सल्ल0 ने फरमाया, "पहला सूद जिसको मैं ख़त्म करता हूं वह अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब का सूद है।"

कुरैश के धनवानों में ऐसे लोग भी थे जो रात–रात भर भोग विलास में पड़े रहते थे, सुसज्जित कमरें, सजे हुए दस्तरख़ान और मदिरा पान का चलन आम था। क़ौम (कबीले) के सरदारों की महफिलें आम तौर से काबा के सामने जमती थीं, जहां शेर व शायरी होती और अज्ञानता के युग के मशहूर शायर जैसे लबीद बिन रबिया आदि उसमें शामिल होते। इसका भी उल्लेख मिलता है कि अब्दुल मुत्तलिब का फर्श (महफिल) काबा के साये में बिछता था उनके लड़के श्रद्धापूर्वक फर्श के बाहर चारों तरफ बैठते और जब तक वह न आ जाते कोई फर्श पर न बैठता।

मक्का के उद्योग धन्धे, साहित्य व संस्कृति

मक्का वाले उद्योग धन्धों को बहुत महत्व न देते थे, बल्कि वह उसको गिरी हुई निगाह से देखते और मान मर्यादा के ख़िलाफ समझते थे। आम तौर पर उद्योग धन्धों को गुलामों तथा अजमियों के साथ जोड़ा जाता था। तथापि कुछ उद्योग धन्धे जिनकी उन्हें अधिक ज़रूरत थी, वहां थे और मक्का के कुछ लोग उनसे जुड़े थे। ख़ब्बाब बिन अलअरत तलवारें बनाते थे। निर्माण का काम रूमी व ईरानी मज़दूर करते थे।

निरक्षता वहां आम थी लेकिन कुछ लिखने पढ़ने वाले लोग मौजूद थे। कुर्आन पाक ने इसी लिए उनको "उम्मी" अर्थात निरक्षर कहा है।

अनुवादः– "वही है जिसने निरक्षर लोगों में उन्हीं में से एक पैग़म्बर भेजा।" (सूरः जुमुआ 2)

मक्का वाले पूरे अरब प्रायद्वीप में सौन्दर्य, सुरूचि तथा बनाव श्रंगार के मामले में सर्वश्रेष्ठ समझे जाते थे जैसा कि प्रायः प्राचीन सभ्यता के केन्द्र व राजधानी का हाल होता है। उनकी भाषा प्रमाणिक थी और अरब प्रायद्वीप में तथा उसके आस–पास उसी के मापदण्ड माना जाता था। मक्का वाले सबसे अधिक अलंकृत भाषा का प्रयोग करते थे वह बोलने में तेज़ होते, शारीरिक गठन, सौन्दर्य एवं सन्तुलन में भी अन्य क्षेत्रों की अपेक्षा वह अधिक उत्कृष्ट थे। वह बहादुरी और हमदर्दी के उन गुणों से भरपूर थे जिसे अरबी में 'अल्फातु' और 'अल्मर्वा' कहा जाता है (और जो अरबी के कवियों और वक्ताओं द्वारा बार–बार प्रयोग किया गया है।) इस तरह मक्का वाले अच्छाई व बुराई दोनों मैदानों में सबके उस्ताद थे।

जातीय ज्ञान, अरब की पौराणिक कथाएं, काव्य रचना, ज्योतिष नक्षत्र ज्ञान, पक्षियों से मुहुर्त लेने, उनके पूर्वजों के कथनों पर आधारित उनको थोड़ा बहुत औषधि ज्ञान, शहसवारी, घोड़ों की पहचान उनके अंगों तथा गुण–दोषों की भरपूर पहचान तथा मुखाकृति विज्ञान मक्का वालों की अभिरूचि के मुख्य विषय थे। उपचार के जो तरीके उनमें प्रचलित थे उनमें दागने, सड़े अंग को काटने, शल्य चिकित्सा, पुछना लगवाने का उल्लेख मिलता है।

फौजी ताक़त

कुरैश स्वभाव से अमन पसंद थे। उस दौर की दूसरी क़ौमों की तरह उनकी अर्थव्यवस्था अधिकतर कारोबारी क़ाफिलों के आने जाने, बाज़ारों और मण्डियों के बंदोबस्त तथा व्यापारियों के आने जाने पर आधारित थी। इससे उनके धार्मिक व आर्थिक दोनों पक्षों के विकास एवं बढ़ोतरी का मौक़ा मिलता था, और हर तरह के खाने–पीने का सामान चारों तरफ से वहां पहुंचता था। क़ुर्आन में आता है।

अनुवादः– "तो चाहिए बन्दगी करें उस घर के रब की, जिसने उनको खाना दिया भूख में और अमन दिया डर में।" (सूरः लिईलाफ 3–4)

यद्यपि अरब की लड़ाईयां बहुत लम्बी होती थीं जिनका सिलसिला 30–30, 40–40 वर्ष चलता रहता था और जिसके नतीजे में जैसा कि जुहैर बिन अबी सलमा ने वर्णन किया है, हज़ारों बच्चे अनाथ और हज़ारों औरतें विधवा हो गयीं तथापि मक्का वाले जंग के दूरगामी और बुरे असर को जानते थे। वह मक्का की 'हरबुल फिजार' और मदीना की 'बेआस' का हशर देख चुके थे। इन दोनों जंगों के कुपरिणाम उनकी आंखों के सामने थे। अतः सच्चाई को मानते हुए वह अरब के अन्य लड़ाकू क़बीलों की तरह, जिनका पेशा ही लड़ना था, जल्दी लड़ाई करने को तैयार न थे। दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि कुरैश, जब तक कि उनकी कबायली व मज़हबी गैरत को ललकारा न जाए, ' अपना अस्तित्व बचाए रखने के सिद्धान्त के समर्थक थे लेकिन इसके साथ ही पर्याप्त फौजी ताकत के मालिक थे। उनकी बहादुरी और घुड़सवारी बेमिसाल थी। उनका 'अल–ग़ज़वतुल मुज़रिया' (मज़री गुस्सा) पूरे अरब में मशहूर था और अरबी साहित्य का एक मुहावरा बन गया था।

कुरैश की शक्ति यहीं तक सीमित नहीं थी बल्कि वह मक्का के आस–पास रहने वाले किनाना ख़ुजैमों की औलादों 'अहाबीश' से भी फायदा उठाते रहे। ख़जाआ कुरैश के समर्थक थे। कुरैश के पास गुलामों की भी बड़ी संख्या थी, जो तमाम लड़ाईयों में उनके झंडे तले रहते थे। वह एक समय में कई हज़ार बीर बांकुरे लड़ाई के मैदान में झोंक देते थे। अहज़ाब की लड़ाई में यह संख्या दस हज़ार तक पहुंची थी और यह अज्ञानता के युग के इतिहास में अरब प्रायद्वीप की सबसे बड़ी फौजी टुकड़ी थी।

मक्का अरब का दिल

अपनी इस मज़हबी हैसियत, आर्थिक विकास, कारोबारी क्रिया कलाप, सामाजिक विकास व तरक्की की वजह से मक्का, अरब प्रायद्वीप का एक बड़ा शहर बन गया था और यमन के मशहूर शहर 'सनआ' से आंखें मिला रहा था और जब छठी शताब्दी ई0 के मध्य में सनआ पर एक–एक करके हब्शा और ईरान का अधिकार हो गया और ग़स्सान के राज्यों की भी पहले जैसी शान शौकत न रही तो उस समय मक्का को अरब प्रायद्वीप में जो मज़हबी व सामाजिक हैसियत हासिल थी वह किसी दूसरे शहर को नहीं।

नैतिक पक्ष

मक्का का नैतिक पक्ष बहुत कमज़ोर था, सिर्फ उन कुछ एक रस्मों को छोड़कर जिन्हें वह अपने सीने से लगाए हुए थे। जुए का कारोबार उनमें आम था और वह इस पर गर्व करते थे। शराब का आम चलन था। भोग–विलास तथा नाच गाने की महफिलें ख़ूब सजती थी। अनेक बुराईयां, अत्याचार, अन्याय शोषण और अवैध कमाई उनके समाज में बुरी नज़र से न देखी जाती थी। उस नैतिक पतन की सबसे सच्ची तस्वीर हमें कुरैश ही के एक सपूत और मक्का के असली निवासी ज़फर बिन अबी तालिब के उन शब्दों में देखने को मिलती है जो उन्होंने नजाशी के दरबार में कहे थे, उन्होंने कहा था:–

" ऐ बादशाह! हम जाहिलियत वाली क़ौम थे। बुतों को पूजते थे। मुर्दार खाते थे, हर तरह की बे–हयाई करते थे। रिश्ते को तोड़ते थे। पड़ोसी के साथ बुरा सुलूक करते थे और ताक़तवर कमज़ोर को खाता था।"

(सीरते इब्ने हेशाम खण्ड 1 पृ0 336)

धार्मिक पक्ष

मक्का वालों का धार्मिक पक्ष और भी अधिक कमज़ोर था। इसकी वजह यह थी कि वह बहुत दिनों से किसी पैग़म्बर की शिक्षा–दीक्षा से वंचित थे। अज्ञानता आम थी। मूर्तिपूजा जो उन्होंने अपने पड़ोस की

क़ौमों से सीख ली थी, उनके दिलों में घर कर चुकी थी। बुतों से उनको एक तरह से इश्क़ हो गया था। फलतः सिर्फ काबा के अन्दर और आंगन में 360 बुत थे जिसमें सबसे बड़ा हुबल था और जिसे सम्बोधित करते हुए अबु सुफियान ने उहद की जंग में कहा था, " हुबल की बड़ाई हो" यह काबा के बीच में एक गढ़े के ऊपर था जिसमें चढ़ावे आदि जमा होते थे। यह बुत लाल पत्थर का बना हुआ था। यह एक मानव मूर्ति के समान था जिसका दायां हाथ टूटा हुआ था। कुरैश ने इसको इसी तरह से पाया था। इसमें उन्होंने सोने के हाथ लगवा दिए थे। काबा के सामने दो बुत रखे थे। जिनमें एक का नाम 'उसाफ' और दूसरे का 'नायला' था। एक काबा से बिल्कुल मिला हुआ था और दूसरा ज़मज़म के पास था। कुरैश ने काबा के करीब वाले बुत को भी दूसरे बुत के पास कर दिया था। यह वह जगह है जहां अरब कुर्बानी आदि करते थे। सफा पर भी एक बुत था जिसका नाम 'नहिक् मुजाविदुल रीह' था। मरवा पर जो बुत रखा था उसका नाम 'मुत अमत्तैर' था।

मक्का के हर घर में एक बुत था जिसकी सब घर वाले इबादत करते थे। " उज्ज़ा" अरफात से करीब था और उस पर एक मन्दिर बना दिया गया था। कुरैश के नज़दीक यह सभी बुतों से बड़ा और अधिक माननीय था। वह इन बुतों के सामने तीरों से फाल निकाला करते थे। "अल ख़ल्सा" मक्का की घाटी में था, इस बुत को हार पहनाए जाते थे। जौ और गेहूं की भेंट इस पर चढ़ाई जाती थी। इसको दूध से नहलाया जाता था इसके लिए कुर्बानी की जाती थी और इस पर शुतुमुर्ग के अण्डे लटकाए जाते थे। बुत मक्का में गली–गली आवाज देकर बेचे जाते थे। देहात के लोग अधिक पसन्द करते और ख़रीद कर अपने घरों की शोभा बढ़ाते।

इस तरह यह क़ौम अपनी सारी जवांमर्दी, वफादारी तथा अपनी हमदर्दी के बावजूद मूर्तिपूजा, अन्धविश्वास में लीन थी। दीन के वास्तविक अर्थ से अनजान तथा दीने इब्राहीमी से कोसों दूर, पतन के उस गढ़े में पहुंच चुकी थी जहां दुनिया की बहुत कम क़ौमें होंगी।

छठी शताब्दी के मध्य में मक्का का यह हाल था जो रसूलुल्लाह

सल्ल0 की पैगम्बरी का ऐलान होने और उसके अन्धेरे आसमान से इस्लाम का सूरज उगने से पहले हमें दिखाई देता है।

कुर्आन पाक में आता है:–

अनुवाद:– (यह ख़ुदाए ग़ालिब व मेहरबान ने नाज़िल किया है) "ताकि तुम उन लोगों को जिनके बाप दादा को सचेत नहीं किया गया था, सचेत कर दो, वह ग़फलत में पड़े हुए हैं।" (सूरः यासीन–6)

अध्याय सात

जन्म से पैग़म्बरी की शुरूआत तक

अब्दुल्ला और आमिना

कुरैश के सरदार अब्दुल मुत्तलिब के दस लड़के थे जो सब उत्कृष्ट और मशहूर थे। अब्दुल्ला अपने भाईयों में बहुत सज्जन और असरदार व्यक्तित्व के मालिक थे। उनके पिता ने उनकी शादी बनी ज़हरा के सरदार वहब की बेटी आमिना से की, जो उस समय वंशज तथा सम्मान व श्रद्धा में कुरैश की सबसे सम्मानित औरत समझी जाती थीं। हज़रत मुहम्मद सल्ल० अपनी माता के गर्भ में थे कि आप सल्ल० के पिता अब्दुल्ला का निधन हो गया। हज़रत आमिना को आप सल्ल० के जन्म से पहले ही बहुत सी निशानियां और लक्षण दिखाई दिए, जिन से पता चलता था कि उनके बेटे की भविष्य में बड़ी शान होनी है।

आपका जन्म

आपका जन्म 12 रबिउल अव्वल को आमुलफील में 570 ई० सोमवार के दिन हुआ। ☆ यह मानव इतिहास का सबसे रौशन और मुबारक दिन था।

☆ मशहूर उल्लेख यही है, लेकिन मिस्र के मशहूर ज्योतिषी तथा विद्वान महमूद पाशा की खोज यह है कि आप सल्ल० का जन्म सोमवार के दिन 9 रबिउल अव्वल को हाथी वाली घटना के पहले साल हुआ जो 20 अप्रैल 571 ई० की तारीख़ थी।

आपका वंश इस तरह है:– मुहम्मद सल्ल० बिन अब्दुल्ला बिन अब्दुल मुत्तलिब बिन हाशिम बिन अब्द मनाफ़ बिन कुसैई बिन किलाब बिन मर्रा बिन काब बिन लुअई बिन ग़ालिब बिन फिहर बिन मालिक बिन अलनज़र बिन किनान बिन ख़ुज़ैमा बिन मदरिका बिन इलियास बिन मुज़र बिन नेज़ार बिन मअद बिन अदनान।

अदनान का नसब (सिलसिला) हज़रत इस्माईल अ० बिन हज़रत इब्राहिम अ० तक पहुंचता है।☆ जब आप सल्ल० का जन्म हुआ तब

आपकी माता ने आपके दादा को यह सूचना भिजवाई। वह आए, मुहब्बत से आपको देखा और गोद में लेकर काबा के अन्दर दाखिल हुए और अल्लाह की प्रशंसा बयान की और दुआ की और आपका नाम "मुहम्मद" रखा। यह नाम बिल्कुल नया था अतः अरबों को इस पर बहुत हैरत हुई।☆

1☆ लेखक ने अदनान तक आप सल्ल० का नसब यहां दर्ज किया है जिसमें किसी को कोई मतभेद नहीं है।

2☆ सुहैली की किताब "अलरौजुल अनफ" तथा इब्न फौरक की " अलफसूल" से पता चलता है कि आपसे पहले पूरे इतिहास में सिर्फ तीन व्यक्ति ऐसे मिलते हैं जिन्होंने अहले किताब से यह सुनकर कि अरब प्रायद्वीप में एक नबी ज़ाहिर होने वाले हैं जिन का नाम मुहम्मद होगा। उनको यह भी बताया गया था कि उसका समय निकट है और उनकी बीबियां गर्भवती थीं, उस समय इस लालच में उन्होंने नज़र मानी कि लड़का हुआ तो उसका नाम मुहम्मद रखेंगे। अतः उन्होंने ऐसा ही किया। कुछ लोगों ने इससे अधिक संख्या बताई है लेकिन लेखक का विचार है इस पर शोधकार्य किया जाना चाहिए क्योंकि कुरैश के प्रत्येक व्यक्ति ने इस पर हैरत व्यक्त की थी।

बचपना

कुछ दिन आपको आपके चचा अबुलहब की बान्दी सुवैबा (शुएबा) ने दूध पिलाया। फिर अब्दुल मुत्तलिब ने अपने यतीम पोते के लिए देहात की किसी दूध पिलाने वाली की तलाश शुरू की। अरब उस दौर में अपने बच्चों के शुरूआती पालन–पोषण के लिए शहरों से अधिक देहातों को पसन्द करते थे। क्योंकि वहां की जलवायु, वातावरण अधिक साफ और पाक होता था तथा वहां के वासियों के आचरण में सन्तुलन और सहज प्रवृत्ति अधिक थी। देहातों की ज़बान भी सही और प्रभावशाली मानी जाती थी और इस तरह उनके बच्चे शहर की बुराईयों से बचते थे ।

क़बीला बनी साद की औरतें इस काम में तथा बहुत मंझी हुई अच्छी ज़बान के लिए अधिक मशहूर थीं। उन्हीं में हलीमा सादिया थीं जिन्हें यह गौरवपूर्ण काम मिला। हलीमा सादिया बच्चों की तलाश में अपने गांव से आई थीं। सूखा पड़ा था। लोग बहुत परेशान थे। आप को इन सब औरतों के सामने लाया गया लेकिन अधिकतर ने यह सोचकर कि यह यतीम बच्चा है, इसके पिता होते तो कुछ लाभ की उम्मीद थी,

मां और दादा से क्या मिल पायेगा। आपकी तरफ ध्यान नहीं दिया। पहले बीबी हलीमा का खिंचाव भी दूसरी तरफ होने लगा लेकिन अचानक उनके दिल में आपकी मुहब्बत पैदा हो गई। कोई दूसरा बच्चा भी सामने नहीं था अतः वह वापस आई और आप सल्ल0 को लेकर अपने क़ाफिले से जा मिलीं, और तब आपकी बरकत खुली आंखों से उन्होंने देख ली। उन की हर चीज़ में एक दूसरा रंग दिखाई देने लगा। उनको दूध में, जानवरों में, खाने में, हर चीज़ में साफ बरकत महसूस हुई। उनके साथ की जितनी दूध पिलाने वालियां थीं अब उन्होंने कहना शुरू कर दिया कि हलीमा तुम को तो बहुत मुबारक बच्चा मिला है। बहुत मुबारक जान है, उन्हें बीबी हलीमा से जलन भी होने लगी।

दूसरी तरफ ख़ैर व बरकत का सिलसिला बराबर जारी रहा, यहां तक कि बनी साद के इस क़बीले में आपकी उम्र के दो साल पूरे हो गए और बीबी हलीमा ने आप का दूध छुड़ा दिया और आपको लेकर आपकी माँ के पास गईं और उनसे इच्छा व्यक्त की कि कुछ दिनों के लिए आपको उनके पास रहने दिया जाए। अतः बीबी आमिना ने आप को उनके पास वापस लौटा दिया।☆1

वापसी के बाद जब बनी साद में थे, दो फरिश्ते आए, आप का सीना चाक किया आपके दिल से गोश्त के टुकड़े के समान एक खराब और काली चीज़ निकाल कर फेंक दी। फिर आपके दिल को अच्छी तरह धोकर साफ करके अपनी जगह वापस कर दिया और वह उसी तरह हो गया जैसे पहले था।☆2

☆1 पालन पोषण की यह लम्बी और रोचक कहानी सीरत इब्न हिशाम में बहुत विस्तार से बयान की गई है देखिए पृ0 162–166

☆2 विस्तृत वर्णन के लिए सीरत की किताबें देखें। विशेषकर इमाम मुस्लिम की किताब "किताबुलईमान" शाह वली उल्लाह देहलवी रह0 ने "हुज्जतुललहिल–बालिग़" में लिखा है कि फरिश्ते ज़ाहिर हुए आपका सीना चाक किया, दिल को निकाला और उसको ईमान व हिकमत से भर दिया। यह सदृश्य और चेतना जगत के बीच की स्थिति की घटना है। यह चाक करना ऐसा न था कि जिससे नुकसान पहुंचता। इसे दोबारा सीने का असर आपके सीने पर बाकी न रहा। सदृश्य और चेतना जगत जहां मिलते हैं वहां इस प्रकार की घटनाएं घटित होती हैं।

आप अपने रज़ाई भाईयों के साथ जंगल में बकरियां भी चराया करते थे। इस तरह आपका पालन पोषण देहात के साफ़–सुथरे खुले माहौल में हो रहा था जहां मेहनत कश लोग थे और जो शहर के दूषित पर्यावरण से सुरक्षित था और जहां बनी साद का बड़ा नाम था। आप सहाबा से कभी–कभी फरमाया भी करते थे कि मैं तुम सबसे अधिक अरब हूं कुरैशी हूं और बनी साद बिन बकर के क़बीला में मैंने दूध पिया है।

बीबी आमिना और दादा अब्दुल मुत्तलिब का निधन

जब आप की उम्र छः साल की हुई तो आप की माता आपको आपके दादा के ननिहाल दिखाने के लिए यसरब ले गयीं। वह अपने पति अब्दुल्लाह बिन अब्दुल मुत्तलिब की क़ब्र पर भी जाना चाहती थीं।☆ मक्का वापस होते वक़्त एक जगह पर जिसको 'अबवा' ☆ कहते हैं, बीबी आमिना का निधन हो गया। अब एक तरफ मां की जुदाई का ग़म था दूसरी तरफ सफर का अकेलापन। जन्म से लगातार आप के साथ कुछ इसी तरह की घटनाएं होती रहीं। कुदरत को अल्लाह ही जानता है। हब्श की रहने वाली एक बान्दी उम्मे ऐमन बरका आप को लेकर मक्का आई और आपके दादा अब्दुल मुत्तलिब के सुपुर्द किया। इसके बाद आप अपने दादा की संरक्षता में रहे। आपके दादा आपको बहुत चाहते थे वह आपको काबा के साए में फ़र्श पर अपने साथ बिठाते और आप से बहुत मुहब्बत करते।

☆ हिजरत के बाद बनी नज्ज़ार के मकानों को देखकर फरमाया कि मेरी मां यहीं उतरी थीं और बनी अदी बिन नज्ज़ार की बावली में मैं ख़ूब तैरा था। ☆

यह स्थान मस्तूरा के निकट है जो इस समय मक्का और मदीना के बीच की मशहूर मंज़िल है जो आधे रास्ते पर है।

जब आपकी उम्र आठ साल की हुई तो दादा अब्दुल मुत्तलिब का भी निधन हो गया और आप उनकी संरक्षता से वंचित हो गए। आपके लिए दादा का निधन बहुत दुखदायी था। अपने पिता को तो आपने देखा भी न था इस लिए दादा का बिछड़ना आपको अधिक दुखी कर गया।

चचा अबुतालिब के साथ

दादा के देहान्त के बाद आप अपने चचा अबुतालिब के साथ रहने लगे। अबुतालिब आपके पिता के सगे भाई थे। आपके दादा उनको आपकी देख भाल तथा आपके साथ अच्छा बर्ताव करने की वसीयत बराबर करते रहते थे। अबुतालिब आपके सुख दुख का पूरा ध्यान रखते और अपने बेटे अली, जाफ़र और अक़ील से भी ज़्यादा आपको प्यार करते।

कहा जाता है जिस समय अबुतालिब कारोबार के लिए एक क़ाफ़िले के साथ शाम जाने लगे उस समय आपकी अवस्था 9 वर्ष की थी। आप चलते समय अपने चचा से लिपट गए। चचा इससे बहुत प्रभावित हुए। और उन्होंने इस यात्रा में आपको अपने साथ ले लिया।

जब यह क़ाफ़िला शाम में स्थित "बुसरा" पर पहुंच कर ठहरा तो यहां क़ाफ़िले वालों की भेंट बुहैरा राहिब (सन्यासी) से हुई जो अपनी ख़ानकाह (कुटिया) में रहते थे। बुहैरा ने इस क़ाफ़िले का आद्वितीय तौर पर अतिथि सत्कार किया क्योंकि उनको इस क़ाफ़िले के साथ अल्लाह का ख़ास मामला नज़र आ रहा था। बुहैरा ने जब आपको देखा तो आपकी और ज़्यादा अगवानी की और इस बात की संतुष्टि की कि नुबूवत की निशानियां आपके अन्दर मौजूद हैं। उन्होंने अबुतालिब का ध्यान आपके गौरव और पद की गरिमा की तरफ़ दिलाया और कहा कि अपने भतीजे को लेकर अपने देश वापस जाएं और यहूद से ख़ास तौर पर आप सल्ल० की सुरक्षा करें क्योंकि तुम्हारे भतीजे की आगे चलकर बड़ी शान होने वाली है। अतः अबुतालिब आपको सुरक्षित मक्का वापस ले आए। ☆

1☆ इस घटना का सीरत इब्ने हिशाम तथा सीरत की अन्य किताबों में विस्तार से वर्णन मिलता है। इसकी सच्चाई में उल्लेख कर्ताओं की कमज़ोर कड़ी तथा परिस्थितिगत प्रमाण दोनों के आधार पर विद्वानों को शंका है। इमाम तिरमिज़ी कहते हैं कि इस घटना का उल्लेख करने वालों में अब्दुल रहमान बिन ग़ज़वान का नाम भी आता है जिनके उल्लेख अविश्वसनीय है। ज़हबी का मानना है कि अब्दुल रहमान ने सबसे अधिक जाली हदीसे गढ़ी हैं, और उनमें सबसे ज़्यादा जाली हदीस वह है जिसमें बुहैरा की घटना का उल्लेख है (तिरमिज़ी खण्ड 1 पृ 160) इसमें एक आपत्ति यह भी है कि इस हदीस में यह भी उल्लेख है कि अबुतालिब ने

आपको बिलाल के साथ मक्का वापस भेजा था। इब्न अल्कैय्यम ने "जादुल्मआद" में लिखा है कि तिरमिज़ी और दूसरी किताबों में यह आता है कि उन्होंने आपके साथ बिलाल को भेजा जो सरासर गलत है। क्योंकि बिलाल शायद उस वक़्त मौजूद ही न थे और अगर थे भी तो आपके चचा अथवा अबुबक्र के साथ कदापि न थे। (जादूल्मआद खण्ड 1 पृ 18) पूर्ववर्ती विद्वान (Orientalist) तथा बदनीयत इतिहासकार ऐसे अवसर की तलाश में रहते हैं अतएव बुहैरा सन्यासी से आप की इस कुछ पलों की मुलाकात को उन्होंने राई का पर्वत बना दिया और यह साबित करना चाहा कि आपने तौहीद की साफ व बेलाग शिक्षा वास्तव में एक ईसाई विद्वान से हासिल की । इससे ज़्यादा हैरत की बात यह है कि एक फ्रांसीसी विद्वान (Carra De Veaux) ने इस विषय पर एक किताब लिखी और उसका नाम (Buhaira, The Author of The Quran) रखा और इसमें यह दावा किया कि इस कुछ पलों की मुलाकात में बुहैरा ने पूरा कुर्आन हज़रत मुहम्मद सल्ल0 को याद कराया। यदि बुहैरा सन्यासी से आपकी भेंट को सही भी मान लिया जाए तो भी कोई समझदार और अक्ल रखने वाला व्यक्ति इस बात को मानने के लिए तैयार न होगा। क्या यह बात किसी की समझ में उस समय आ सकती है कि एक बच्चा जिसकी उम्र उस समय 9 वर्ष से 12 वर्ष बताई गई है, एक ऐसे बुजुर्ग व्यक्ति से जिसकी भाषा भी वह नहीं जानता और जिसे सिर्फ एक समय खाने पर साथ बैठने का मौका मिला हो, ऐसे गूढ़ मामले पर विचारों का आदान प्रदान करेगा और छठी शताब्दी ई0 में ईसाई धर्म के निरस्त अकीदा और विचारों की उन बारीकियों से आगाह हो जाएगा जहां तक प्रोटेस्टेन्ट धर्म के बड़े-बड़े पादरी और विद्वान न पहुंच सकें और फिर तीस चालीस वर्ष बाद कुर्आन के रूप में इन सब को संकलित कर देगा। यह बात सिर्फ वही कह सकता है जिसे पक्षपात ने अन्धा कर दिया हो या मनगढ़त बातें करने की जिसकी आदत पड़ चुकी हो। अगर यह किस्सा सीरत की किताबों में न होता तो यहां इसके उल्लेख की ज़रूरत न थी।

आसमानी प्रशिक्षण

आपका पालन पोषण विशेष तरह से हुआ। अल्लाह ने आपको जाहिलियत की अपवित्रताओं और बुरी आदतों से हमेशा सुरक्षित व दूर रखा। आप अपनी कौम से शुरू से ही सबसे अधिक सज्जन, सदाचारी, हयादार, सच्चे और अमानत दार थे। आप गाली-गलौज से बहुत दूर रहते थे। आप की कौम में लोग आपको "अमीन" के नाम से याद करते थे। आप रिश्तों का ख़्याल करते, लोगों का बोझा हल्का करते और उनकी ज़रूरतें पूरी करते। मेहमानों का आदर सत्कार करते और अच्छे कामों में दूसरों की मदद करते। ☆ मेहनत करके रोज़ी हासिल करते और आम और ज़रूरत भर खाने पर सन्तोष करते।

☆ देखें हज़रत ख़दीजा, जो आपकी धर्म पत्नी थीं, की गवाही जो उन्होंने आपके ग़ारे हिरा से वापसी पर आपके आचरण के बारे में दी।

आपकी उम्र 14–15 वर्ष की थी कि कुरैश और क़बीला क़ैस के बीच 'हर्बुल फ़िजार' की लड़ाई शुरू हो गई। आपने इस लड़ाई को क़रीब से देखा बल्कि आप दुश्मन के प्रयोग में लाए गए तीरों को कुरैश तक पहुंचाते थे। इस मौके पर आपको लड़ाई का व्यवहारिक अनुभव हुआ तथा घुड़सवारी व सिपाहगरी से परिचय हुआ।

जब आप कुछ और बड़े हुए तो आपने रोज़ी रोटी कमाने की तरफ ध्यान देना ज़रूरी समझा और बकरियां चराने का पेशा अपनाया। जो उस दौर में एक शरीफ़ाना पेशा होने के साथ साथ मनोवैज्ञानिक दीक्षा, कमज़ोरों व दीन दुखियों पर दया की भावना पैदा करने तथा साफ व ताज़ा हवा का आनन्द लेने के साथ–साथ शारीरिक अभ्यास का मौक़ा प्रदान करता था। इसके अलावा वह नबियों की सुन्नत है। अतः नुबूवत के बाद आपने फरमाया कि कोई नबी ऐसा नहीं गुज़रा जिसने बकरियां न चराई हों। पूछा गया कि आप ने भी ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल0? फरमाया! हां मैंने भी। आपने पहले भी बनी साद में अपने रज़ाई भाई (दूध शरीक भाई) के साथ बकरियां चराई थीं इस लिए आप इस काम को जानते थे। हदीस से साबित है कि आप मक्का में कुछ 'क़ीरात' जो आप बकरियों के मालिक से लेते थे के बदले बकरियां चराते थे। ☆

☆ अल्लामा शिबली नोमानी ने " सीरतुन्नबी" के खण्ड 1 में लिखा है कि 'क़ीरात' के अर्थ में विद्वानों का मतभेद है। इब्न माजा के शेख़ सवीद बिन सईद की राय है कि यह 'क़िरात' का बहुवचन है जो दिरहम या दीनार का एक अंश था। इस तरह उनके निकट हदीस का भावार्थ यह है कि आप मज़दूरी पर बकरियां चराते थे, लेकिन इब्राहीम अल्हर्बी की खोज यह है कि एक जगह का नाम है। इब्न जौज़ी भी इसी को मानते हैं और ऐनी ने तर्क सहित इसी बात को सही ठहराया है। 'नूरिन निब्रास' के लेखक का भी यही मानना है।

हज़रत ख़दीजा से शादी

जब आप पचीस वर्ष के हुए तो ख़ुवैलिद की लड़की ख़दीजा के साथ आपने शादी की। ख़दीजा कुरैश की बहुत ही प्रभावशाली और पहुंच

वाली औरत थीं। अपनी सूझ–बूझ, सदाचरण और धन दौलत के लिए भी वह बहुत मशहूर थीं। ख़दीजा विधवा थीं और उनके पति अबुहाला का निधन हो चुका था। उस समय ख़दीजा की उम्र 40 वर्ष थी और आप सल्ल0 25 वर्ष के थे।

ख़दीजा व्यापार भी क़रती थीं। रुपया उनका होता था और दूसरे लोग मेहनत करते थे और अपनी मेहनत का मेहनताना पाते थे। ख़दीजा को आपकी सच्चाई, सदाचारण तथा परोपकार की भावना का ज्ञान उस समय अच्छी तरह हो चुका था जब आप शाम के सफर पर गए थे। उस सफर में आप ख़दीजा का सामान लेकर शाम व्यापार करने गए थे। उस सफर में, जो अनोखी घटनाएं घटी थीं उनकी ख़दीजा को जानकारी थी अतः उन्होंने आपसे रिश्ते की इच्छा जताई। हालांकि वह इससे पहले कुरैश के बड़े–बड़े सरदारों की याचना को ठुकरा चुकी थीं आपके चचा सैय्यदना हमज़ा ने यह पैग़ाम आप तक पहुंचाया। अबुतालिब ने निकाह का ख़ुत्बा पढ़ा और आपके वैवाहिक ज़िंदगी की शुरुआत हुई। आपके लड़के इब्राहीम को छोड़कर (जिनका निधन बचपन में हो गया था) आपकी सारी औलादें उन्हीं से हुयीं।

काबा का नव निर्माण

जब आपकी उम्र 35 वर्ष की हुई तो कुरैश ने काबा के नव निर्माण का इरादा किया और उस पर छत डालने का प्रस्ताव रखा। इससे पहले काबा के निर्माण में मिट्टी और गारे से जोड़े बिना भारी पत्थर तले ऊपर रख दिए थे, जो इंसान की ऊंचाई से कुछ अधिक ऊंचे थे। अब इसे गिराकर नए सिरे से निर्माण किया जाना था जब दीवारों की ऊंचाई "हज्र असवद" (काला पत्थर) तक पहुंची तो हज्र अवसद को उसकी सही जगह लगाने में लोगों में बड़ा मतभेद खड़ा हो गया। हर क़बीला चाहता था कि हज्र असवद को उठाकर उसकी सही जगह लगाना उसकी किस्मत में आए। नौबत लड़ाई और मार–पीट तक पहुंची। उस दौर में इससे भी मामूली बात पर लड़ाईयां होती रही हैं, यह तो एक बड़ी बात थी।

बनु अब्दुल्दार ने ख़ून से भरी हुई एक लगन तैयार की। अब्दुल्दार और बनूअदी ने ख़ून की लगन में अपना हाथ डालकर मरते दम तक लड़ते रहने की क़सम खाई। कुरैश कई दिन तक इसी उलझन में रहे। फिर इस बात पर वह सब एक मत हो गए कि जो व्यक्ति मस्जिदे हराम (काबा हरम परिसर) में सबसे पहले दाख़िल होगा वह इस बात का फ़ैसला करेगा कि हज्र अवसद को कौन उठाकर उसकी जगह रखे। दूसरे दिन सबसे पहले आप सल्ल0 मस्जिदे हराम में दाख़िल हुए। अतः आप पर यह फ़ैसला रखा गया।

आपने एक चादर मंगाई और हज्र असवद को स्वयं उठाकर उस चादर में रखा। फिर कहा कि हर क़बीले का एक व्यक्ति चादर का एक कोना पकड़ कर उठाए। सबने ऐसा ही किया जब चादर में पत्थर उस जगह के पास आया जहां उसे लगाया जाना था तो आपने अपने हाथ से उठाकर उसको उस जगह रख दिया। इसके बाद बाक़ी इमारत बनाई गई।

इस तरह आपने कुरैश को बड़ी लड़ाई से बचा लिया। इस मौक़े पर आपने जिस समझदारी व सूझ–बूझ से काम लिया उससे बढ़कर कोई हिकमत नहीं हो सकती थी। नुबूवत के बाद आपने तमाम इन्सानों और दुनिया की क़ौमों को जिस तरह जंगों की भट्टी से छुटकारा दिलाया, यह घटना वास्तव में उसकी शुरुआत थी। यह घटना आपकी सूझ–बूझ, बेहतरीन शिक्षा, हमदर्दी और आपकी समझौता कराने की परिचायक थी। यह वह बात थी जिसने आपको रहमतुल्ल लिल आल्मीन (सारे जहानों के लिए रहमत) की उच्च पदवी दी, और आप उस सादा और अनपढ़ क़ौम के उन लड़ाकू तथा एक दूसरे के ख़ून के प्यासे क़बीलों के लिए नबी–ए–रहमत साबित हुए।

हल्फुल फजूल

हल्फुल फजूल अरबों का सबसे शरीफाना समझौता था, जिसमें रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम शामिल थे। उस का किस्सा यह था कि यमन के शहर जुबैद का एक व्यापारी मक्का में कुछ सामान

लेकर आया और कुरैश के एक सरदार आस बिन बायल ने वह सब सामान ख़रीद लिया, लेकिन उसके दाम व्यापारी को नहीं दिए। व्यापारी ने कुरैश के सरदारों का समर्थन हासिल करना चाहा लेकिन आस बिन बायल के दबदबे की वजह से उन्होंने व्यापारी का साथ देने से मना कर दिया, उसे डांट कर भगा दिया। तब उस व्यापारी ने मक्का वालों से फरियाद की और हर न्याय प्रिय व्यक्ति से जो उसे मिला इसकी शिकायत की। आख़िर में उन्हें उनकी ग़ैरत ने झिंझोड़ा, और यह सब लोग अब्दुल्लाह बिन जदआन के मकान पर जमा हुए। उन्होंने इन सब को खाना खिलाया, इसके बाद उन्होंने अल्लाह के नाम पर क़सम उठाई कि वह ज़ालिम के मुक़ाबले में मज़लूम का समर्थन करने में एक हाथ की तरह रहेंगे और काम करेंगे जब तक ज़ालिम मज़लूम का हक़ न देदे। कुरैश ने इस समझौते का नाम 'हल्फुल फजूल' अर्थात फजूल का समझौता रखा और कहने लगे कि उन्होंने एक फालतू काम में, जो उनके अधिकार क्षेत्र से बाहर है, हस्तक्षेप किया है।☆ फिर सब मिलकर आस बिन बायल के पास गए और उस व्यापारी का सामान उनसे ज़बरदस्ती लेकर व्यापारी को वापस कर दिया।

☆इसके नामकरण की एक वजह यह बताई गई कि कुरैश से पहले जुरहम कबीला ने भी एक ऐसा ही समझौता किया था उसमें जो लोग शामिल थे उनमें से तीन का नाम भी हल्फुल फजूल पड़ गया। इसके अलावा इसके और भी कारण हैं।

आप इस समझौते से बहुत ख़ुश हुए थे और नुबूवत के बाद भी आपने उसकी तारीफ की और फरमाया कि, "मैं, अब्दुल्लाह बिन जदआन के मकान पर एक ऐसे समझौते में शामिल था जिसमें अगर इस्लाम के बाद भी मुझे बुलाया जाता तो मैं ज़रूर शामिल होता। उन्होंने वहां पर यह समझौता किया था कि वह हक़ हक़दार तक पहुंचाएंगे और यह कि कोई ज़ालिम मज़लूम पर हावी न हो सकेगा। (सीरत इब्ने कसीर खण्ड–1)

एक अजीब बेचैनी

उम्र में बढ़ोतरी के साथ आप अपने अन्दर एक अजीब बेचैनी महसूस करते थे जिसकी कोई वजह आपको मालूम न थी। आपके दिल

में कभी भूल कर भी यह ख़्याल न आया था कि अल्लाह पाक "वही" तथा "रिसालत" से आपको गौरवान्वित करने वाले हैं। कुर्आन पाक में आता है:–

अनुवाद:– "और इस तरह से अपने हुक्म से तुम्हारी तरफ रूहुलकुदस द्वारा कुर्आन भेजा है। तुम न तो किताब को जानते थे और न ईमान को। लेकिन हमने इसको नूर बनाया है कि इससे हम अपने बन्दों में से जो जिसको चाहते हैं और बेशक ऐ मुहम्मद तुम सीधा रास्ता दिखाते हो।" (सूरः शूरा–52)

दूसरी जगह आता है:–

अनुवाद:– "और तुम्हें उम्मीद न थी कि तुम पर किताब उतारी जाएगी। मगर तुम्हारे परवर दिगार की मेहरबानी से (नाज़िल हुई) तो तुम हरगिज़ काफिरों के मददगार न होना।" (सूरः कसस–86)

अल्लाह पाक की ख़ास हिकमत थी कि रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का पालन पोषण "उम्मी" की तरह हुआ। आप न पढ़ सकते थे और न लिख सकते थे। इस तरह आप इस्लाम के दुश्मनों के आरोपों और मन गढ़त आलोचनाओं से बहुत दूर और सुरक्षित रहे। कुर्आन में आता है।

अनुवाद:– "और तुम इससे पहले न कोई किताब पढ़ते थे और न इसे अपने हाथ से लिख सकते थे, ऐसा होता तो अहले बातिल ज़रूर शक करते।" (सूरः अन्कबूत– 48)

कुर्आन पाक में इसी लिए आपको "उम्मी" की पदवी दी गई और इरशाद हुआ।

अनुवाद:– "वह जो (मुहम्मद) रसूल की, जो उम्मी (बे पढ़े–लिखे) पैग़म्बर की पैरवी करते हैं, जिनके औसाफ (गुणों) को वह अपने यहां तौरेत और इन्जील में लिखा हुआ पाते हैं।" (सूरः एराफ– 157)

अध्याय आठ

पैगम्बरी की शुरूआत

इंसानियत की सुबह

हज़रत मुहम्मद मुस्तफा सल्ल0 ने जिस समय अपनी उम्र के 40 वर्ष पूरे किए उस समय दुनिया आग के एक गढ़े के एकदम किनारे बल्कि यह कहना सही होगा कि उसकी कगार पर खड़ी थी। मानव जाति तेज़ी के साथ आत्म हत्या के पथ पर आगे बढ़ रही थी। यह वह नाजुक समय था जब इंसानियत की सुबह की किरनें फूटीं। अभागे संसार की क़िस्मत जागी, और हज़रत मुहम्मद सल्ल0 की पैगम्बरी के ऐलान की घड़ी आई। कुदरत का शुरू से नियम रहा है कि जब अधर्म और अन्धकार बहुत बढ़ जाता है और अन्तर आत्मा मुर्दा होने लगती है तो उसकी रहमत का कोई जीवन दायक झोंका चलता है और पतझड़ से घिरी इंसानियत के बाग में फिर से बहार आ जाती है।

दुनिया में उस समय अज्ञानता, अनाचार तथा शिर्क व बुतपरस्ती का राज था। जिसे देखकर आप सल्ल0 की बेचैनी, कुदरत की हिदायतों और आदेशों के लिए चरम सीमा पर पहुंच चुकी थी, ऐसा महसूस होता था कि कोई आसमानी ताक़त और आवाज़ आपको बुला रही है और आपको रास्ता दिखा रही है और किसी बड़े मंसब के लिए आपको तैयार कर रही है।

उन दिनों आप सल्ल0 अकेला रहने पसंद करते थे और अकेले बैठने में सुकून मिलता था, आप मक्का की घाटियों से गुज़रते तो पेड़ों और पत्थरों से आवाज़ आती "अस्सलामु अलैक या रसूलुल्लाह" (ऐ अल्लाह के रसूल आप पर सलामती हो) आप अपने दाएं बाएं और पीछे मुड़कर देखते तो पेड़ों और पत्थरों के अलावा कुछ नज़र न आता। ☆

ग़ारे हिरा में ज्ञान प्राप्ति

आप ज़्यादातर वक़्त ग़ारे हिरा ☆ में रहते और लगातार कई–कई

रातें वहां गुज़ारते। इसका बन्दोबस्त आप पहले से ही कर लेते थे। यहां आप इब्राहीमी तरीके पर अल्लाह की इबादत में लीन रहते। इसी तरह आप एक बार ग़ारे हिरा में थे कि नुबूवत के मंसब से आप को गौरवान्वित करने की शुभ घड़ी आ पहुंची।

आप की उम्र के 41वें वर्ष में रमज़ान की 17 तारीख़ को (6 अगस्त 610 ई0) आपके पास ग़ारे हिरा में फरिश्ता (जिबरईल) आया और कहा, "पढ़िए" आपने जवाब दिया दिया, "मैं पढ़ा हुआ नहीं हूं" आप फरमाते हैं कि उस पर उसने मुझे पकड़ कर दबाया यहां तक कि मैंने उसकी तकलीफ महसूस की 'मैंने जवाब दिया' "मैं पढ़ा हुआ नहीं हूं"। उसने फिर मुझे पकड़ा और इतनी ज़ोर से से लिपटाया कि मुझ पर उसका सख़्त दबाव पड़ा 'फिर मुझे छोड़ दिया और कहा, "पढ़िए"। मैंने कहा कि मैं पढ़ा नहीं हूं। उसने फिर मुझे पकड़कर दोबारा उसी तरह दबाया और कहा।

अनुवादः— (ऐ मुहम्मद) अपने परवर दिगार का नाम लेकर पढ़ो जिसने दुनिया को पैदा किया। जिसने इन्सान को ख़ून की बूंद से बनाया। पढ़ो, और तुम्हारा परवर दिगार बड़ा करीम है जिसने कलम के ज़रिए से इल्म सिखाया और इन्सान को वह बातें सिखायीं जिनका उसको ज्ञान न था। (सूरः अलक 1—5)

☆1सीरत इब्न हिशाम खण्ड 1 पृ0234—235 । सही मुस्लिम में आपका यह कथन दर्ज है कि मैं मक्का के एक पत्थर से अब भी परिचित हूं जो नुबूवत से पहले मुझे सलाम करता था।
☆2 मक्का के पास एक गुफा का नाम जहां हज़रत मुहम्मद सल्ल0 को ज्ञान प्राप्त हुआ। (अनुवाद)

ग़ारे हिरा से घर वापस

इस अजीब घटना से आप सल्ल0 को डर महसूस होने लगा क्योंकि ऐसा न कभी आपके साथ पेश आया था और न आपने इस तरह की बात कभी सुनी थी। इसलिए आपको अपने लिए ख़तरा महसूस हुआ और आप घर चले आए। डर से आपका कन्धा कांप रहा था। घर पहुंचते ही आपने हज़रत ख़दीजा से कहा कि मुझे जल्दी उढ़ा दो। मुझे जल्द उढ़ा दो। मुझे कुछ ख़तरा महसूस हो रहा है।

आपकी पत्नी ख़दीजा ने आपसे इसकी वजह पूछी तो आपने पूरी बात बयान की। ख़दीजा एक समझदार औरत थीं। नुबूवत, नबियों और फरिश्तों के बारे में उन्होंने बहुत कुछ सुन रखा था। वह अपने चचेरे भाई वरक़ा बिन नौफल के पास (जिन्होंने ईसाई धर्म अपना लिया था, आसमानी किताबों का अध्ययन किया था और यहूद व नसारा के पास जिनका बैठना था) कभी–कभी जाया करती थीं। ख़दीजा आपकी पत्नी थीं वर्षों से आपके साथ रह रही थीं उन्हें आपका पूरा भरोसा हासिल था और आपके उच्च आचरण से वह भली प्रकार परिचित थीं। आपके आचरण व व्यवहार को देखकर उनको इसका पूरा यकीन हो गया था कि हर पल अल्लाह की मदद आपके साथ है। आप अल्लाह के सबसे प्यारे भक्त हैं और आपका आचरण परम प्रिय है, और जो व्यक्ति ऐसा पवित्र आचरण रखता हो उस पर किसी शैतान या जिन्न और आसेब का असर कभी नहीं हो सकता। उन्होंने यकीन के साथ बल देकर कहा।

" हर गिज़ नहीं, अल्लाह की क़सम अल्लाह आपको कभी अपमानित न करेगा। आप रिश्ते–नाते का लिहाज़ करते हैं। दूसरों का बोझा हल्का करते हैं। मोहताजों के काम आते हैं। मेहमानों का आदर सत्कार करते हैं। (सच्चाई की राह की तकलीफों और मुसीबतों में मदद करते हैं।)"

वरक़ा बिन नौफल के यहां

हज़रत ख़दीजा ने यह बात अपने अनुभव के आधार पर कही थी, लेकिन यह मामला बहुत बड़ा था और इसमें किसी ऐसे व्यक्ति से सलाह की ज़रूरत थी जो धर्मों, उनके इतिहास, नुबूवत और उनके स्वभाव को अच्छी तरह जानता हो। उन्होंने सोचा कि अपने विद्वान चचेरे भाई वरक़ा बिन नौफल से मदद लेनी चाहिए। अतः वह आप को साथ लेकर उनके पास गयीं। आप सल्ल0 ने वरक़ा को पूरा हाल सुनाया। वरक़ा ने सुनते ही कहा, " क़सम है उसकी जिसके हाथ में मेरी जान है। आप इस उम्मत के नबी हैं और आप के पास वही महान नामूस (जिबरईल) आया था जो हज़रत मूसा अ0 के पास आया था, और एक ज़माना आएगा कि

आपकी कौम आपको झुठलाएगी, और दुख पहुंचाएगी। आपको निकालेगी और आपसे जंग करेगी।" जब रसूल अल्लाह सल्ल० ने यह सुना कि कौम आपको निकाल देगी तो आपको कुछ हैरत हुई, क्योंकि कुरैश में अपनी हैसियत से आप परिचित थे और जानते थे कि वह आप सल्ल० को सादिक (सच्चा) और "अमीन" (अमानतदार) कहते, हैं और उनकी ज़बान न थकती थी। आपने हैरत से पूछा "क्या वह मुझे निकाल देंगे ?" वरका ने जवाब दिया। "हां" जब भी कोई, वह पैग़ाम लेकर आया जो आप लाए है, तो लोगों ने उससे दुश्मनी पर कमर बांध ली और उससे जंग की। यह बराबर होता आया है अगर मुझे वह दिन नसीब होगा और मैं ज़िंदा रहूंगा तो मैं आपकी पूरी ताकत से मदद करूंगा।

इसके बाद बहुत दिनों तक 'वही' का सिलसिला बन्द रहा। फिर जारी हुआ और कुर्आन का उतरना शुरु हुआ और पूरे 23 वर्ष जारी रहा।

हज़रत ख़दीजा का इस्लाम कुबूल करना

सबसे पहले हज़रत ख़दीजा ने इस्लाम कुबुल किया। आपकी पत्नी होने की वजह से ख़दीजा को आपकी सेवा और सहायता का ख़ूब मौका था और उन्होंने हर मौके पर आपका साथ दिया। लोगों से आपको जो तकलीफें पहुंचती वह उनको हमेशा हल्का करने की कोशिश करतीं और हिम्मत बंधाती।

हज़रत अली और ज़ैद बिन हारिस का इस्लाम लाना

हज़रत ख़दीजा के बाद हज़रत अली बिन अबी तालिब इस्लाम लाए। उस समय उनकी उम्र दस साल थी। इस्लाम लाने से पहले आपकी गोद में खेले थे, आपने परेशानी व आकाल के समय उनको अबुतालिब से मांग लिया था और अपने घराने में शामिल कर लिया था। इसके बाद ज़ैद बिन हारिसा, जो आपके गुलाम थे और आपने उनको भी गोद लिया था, इस्लाम लाए। इन लोगों का इस्लाम कुबूल करना असल में ऐसे लोगों की गवाही थी जो आपसे सबसे करीबी थे और आप सल्ल० को सबसे ज़्यादा जानते थे।

हज़रत अबुबक्र का इस्लाम लाना

हज़रत अबुबक्र का इस्लाम की परिधि में आना कोई कम अहम बात न थी क्योंकि उनकी सूझ–बूझ, उनके जोश और उनके मियानारवी (बीच का रास्ता अपनाने वाले) की वजह से कुरैश में उनको ख़ास स्थान हासिल था। उनके व्यक्तित्व में बड़ी सादगी और सलोना पन था। कुरैश के वंशज के इतिहास से पूरी परिचित थे, और एक सुशील एवं सफल व्यापारी भी। अतः अपने जानने पहचानने वालों तथा अपने आस–पास उठने–बैठने वालों में उन्होंने इस्लाम का प्रचार शुरू किया। ☆ उनके प्रचार से कुरैश के बहुत से नामी सरदार इस्लाम लाए जिनमें हज़रत उस्मान बिन अफफान रज़ी० जुबैर रज़ी०, अब्दुल रहमान बिन औफ रज़ी०, तलहा बिन अब्दुल्लाह रज़ी० उल्लेखनीय हैं। हज़रत अबुबक्र इन लोगों को आपके पास लाए और उन्होंने इस्लाम कुबूल किया। उनके बाद कुरैश के अनेक नामी गिरामी लोग इस्लाम लाए। उनमें कुछ के नाम इस तरह हैं। अबु उबैदा रज़ी०, अरकम रज़ी०, उस्मान बिन मज़ऊन रज़ी०, उबैद बिन हारिस रज़ी०, सईद बिन ज़ैद रज़ी०, ख़ब्बाब रज़ी०, अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ी०, अम्मार बिन यासिर रज़ी०, सुहैब रज़ी० आदि।

इसके बाद लोगों ने बड़ी संख्या में इस्लाम कुबूल करना शुरू किया। टोली की टोली इस्लाम की परिधि में आने लगी। इनमें औरतें व मर्द दोनों होते। यहां तक कि मक्का में जगह–जगह इस्लाम की चर्चा होने लगी।

सफ़ा पहाड़ से हक़ का एलान

शुरू में अल्लाह के रसूल सल्ल० इस्लाम के प्रचार का काम छिपा कर करते रहे और तीन साल इसी तरह गुज़र गए। फिर अल्लाह की तरफ से आपको खुलकर ऐलान करने का आदेश हुआ।

अनुवादः– पस जो हुक्म तुमको अल्लाह की तरफ से मिला है वह लोगों को सुना दो और मुशरिकों का ज़रा ख्याल न करो और अपने करीब के रिश्तेदारों को डर सुना दो और जो मोमिन तुम्हारे पैरव हो गए हैं उनके साथ सत्कार से पेश आओ और कह दो कि मैं तो (ऐलान के

साथ डर सुनाने वाला हूं) (सूर: हिज्र 89)

हुक्म के बाद आप सफा पहाड़ी की चोटी पर चढ़े और ज़ोर से यह सदा लगाई, " या सबाहा"। यह नारा अरबों के लिए जाना पहचाना था और उस समय लगाया जाता था जब किसी दुश्मन या लुटेरे के हमले का फौरन ख़तरा होता। "या सबाहा" का नारा सुनना था कि कुरैश का सारा क़बीला वहां जमा हो गया जो किसी वजह से नहीं आ सका उसने अपना प्रतिनिधि भेजा। उस समय आपने उनको सम्बोधित करते हुए फरमायाः—

"ऐ बनी अब्दुल मुत्तलिब! ऐ बनी फिहर! ऐ बनी काब! अगर मैं तुमको यह सूचना दूं कि इस पहाड़ के पहूल में एक लश्कर खड़ा है और तुम पर हमला करना चाहता है, तो क्या तुम इस बात पर यक़ीन करोगे?"

अरब सच्चे और व्यवहारिक लोग थे। उन्होंने एक व्यक्ति में सच्चाई, ईमानदारी और ख़ैर ख़्वाही का अनेक बार अनुभव किया था। जब उन्होंने देखा कि यह व्यक्ति पहाड़ की चोटी पर खड़ा है और पहाड़ की दूसरी तरफ भी इसकी नज़र है, जबकि वह स्वयं सिर्फ अपने सामने की चीज़ देख रहे हैं तो वह सब एक नतीजे पर पहुंचे और उन सब ने कहा कि हां, हम यकीन करेंगे।

इस तरह जब सुनने वालों के यक़ीन का ज्ञान हो गया तो आपने बड़े जतनपूर्ण एवं प्रभावी ढंग से फरमाया, तो यह समझो कि मैं तुमको एक सख़्त अज़ाब से डराने और आगाह करने आया हूं। जो बिल्कुल तुम्हारे सामने है।

यह असल में नुबूवत की सही तारीफ और निशानदही थी। यह इस बात का इशारा था कि गैबी हक़ीक़तों तथा ईश्वरीय ज्ञान में नुबूवत को एक विशिष्ट स्थान प्राप्त है। सच तो यह है कि इससे आसान एवं संक्षिप्त रास्ता तथा इससे अधिक सुबोध और साफ वर्णन शैली कोई और नहीं हो सकती थी। यह सुनते ही जन समूह पर एक ख़ामोशी छा गई। अबु लहब ने हिम्मत करके कहा, सारे दिन तुम्हारे लिए ख़राबी हो, सिर्फ यही कहने के लिए तुमने हमें यहां बुलाया था।

दुश्मनी और उत्पीड़न शुरू

जब अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने दावत और प्रचार का काम इस तरह निडर होकर शुरू किया तो शुरू में आपकी कौम ने इसकी ज़्यादा परवाह नहीं की और उन्होंने उसके रद्द या जवाब की कोई ज़रूरत नहीं समझी, लेकिन जब आपने उनके पत्थर के बने बुतों और देवताओं की निंदा करनी शुरू की तो यह बात उनको बहुत बुरी लगी और वह सब एक होकर आपके विरोध पर उतर आए।

इस मौके पर आपके चचा अबु तालिब ने आपको सुरक्षा प्रदान की और आपके साथ बहुत हमदर्दी का बर्ताव किया। आप किसी बाधा को ख़ातिर में लाए बिना दीन के प्रचार–प्रसार में तन–मन से लगे रहे।

अब कुरैश में हर तरफ और हर समय आपकी चर्चा होने लगी। लोग एक दूसरे को आपके ख़िलाफ और दुश्मनी पर आमादा करते और इसके लिए माहौल बनाते। इस लिए एक बार दोबारा यह सब लोग एक प्रतिनिधि मण्डल बना कर अबु तालिब के पास गए और उनसे कहा:–

" ऐ अबु तालिब! आप क्योंकि बुजुर्ग हैं और हम आपका बहुत सम्मान करते हैं। हमने आपसे पहले भी निवेदन किया था कि आप अपने भतीजे को मना कर लें, लेकिन आपने इस सिलसिले में कुछ न किया अब अल्लाह की कसम हम इससे अधिक सब्र नहीं करेंगे। अब हम अपने पूर्वजों का अपमान, हमें ना समझ व बेवकूफ ठहराने तथा हमारे देवताओं को ऐब लगाने की कोशिश और अधिक सहन नहीं करेंगे। या तो आप उनको इस हरकत से रोके रखें या फिर हम उनसे और आपसे समझ लेंगे यहां तक कि हममें कोई एक पक्ष ख़त्म हो जाए।"

अबु तालिब को अपनी कौम की दुश्मनी भी अखरती थी और वह इस पर भी राज़ी न थे कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 की मदद से हाथ उठा लें और उनको कौम के हवाले कर दें। उन्होंने आपको बुला भेजा और कहा:–

"मेरे भतीजे! तुम्हारी कौम के लोग मेरे पास आए थे और ऐसा ऐसा कह रहे थे ज़रा मेरी जान का भी ख़्याल करो और अपनी जान का

भी। मुझ पर इतना बोझ न डालो जिसको मैं उठा न सकूं।"

अल्लाह के रसूल सल्ल0 को यह सुनकर ख़्याल हुआ कि शायद अबु तालिब अब उनके मामले में चिन्तित हैं और अब आपके चचा आपको अधिक संरक्षण व समर्थन न दे सकेंगे। आप ने फरमाया कि:—

" चचा! अल्लाह की क़सम अगर वह मेरे दाएं हाथ में सूरज व बाएं हाथ में चांद रख दें और यह चाहें कि मैं इस काम को छोड़ दूं, यहां तक कि अल्लाह पाक इस को ग़ालिब करे या मैं इस राह में मर जाऊं, तब भी मैं इस से बाज न आऊंगा।"

यह कह कर अल्लाह के रसूल सल्ल0 की आंखों में आंसू आ गए और आप रो दिए। इसके बाद आप उठे और जाने लगे। आपको इस तरह जाता देखकर अबुतालिब ने आपको आवाज़ दी और कहा कि मेरे प्यारे भतीजे आओ! आप सामने आए उन्होंने कहा, "जाओ और जो तुम्हारा दिल चाहे और जिस तरह चाहो तबलीग़ (दीन का प्रचार) करो अल्लाह की क़सम मैं तुमको कभी किसी के हवाले न करूंगा।

कुरैश के हाथों मुसलमानों पर जुल्म

अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने प्रचार का काम पूरे ज़ोर शोर से शुरू कर दिया। कुरैश जब आपसे और आपके चचा अबु तालिब से निराश हो गए तो उनका सारा गुस्सा अपने क़बीले के उन लोगों पर उतरने लगा जिन्होंने इस्लाम कबूल किया था और जिनका कोई समर्थक न था।

हर क़बीला अपने क़बीला के उन लोगों पर टूट पड़ा जिन्होंने इस्लाम कबूल कर किया था उनको कैद, मार—पीट, भूख—प्यास, तथा मक्का की झुलसा देने वाली गर्मी का उत्पीड़न बर्दाश्त करना पड़ा।

हज़रत बिलाल रज़ी0 को उनके आका (स्वामी) उमैय्या ठीक तपती हुई दोपहर में बाहर लाते पीठ के बल लिटा देते, फिर हुक्म देते कि एक बहुत बड़ा पत्थर इनके सीने पर रखा जाए। फिर कहते कि नहीं! अल्लाह की क़सम नहीं! तुमको उस समय तक इसी हालत में रखा जाएगा जब तक तुम्हारा दम न निकल जाए, या तुम मुहम्मद सल्ल0 का इन्कार कर दो और लात व उज़्ज़ा की पूजा करने लगो, लेकिन वह इस

पर भी तौहीद के एलान से बाज़ न आते और कहते, "अहद" "अहद" (वह एक है वह एक है) इस हालत में एक बार हज़रत अबुबक्र उनके पास से गुज़रे और उमैयया को एक ज़्यादा शाक्तिशाली बलवान, स्वस्थ और काला गुलाम देकर हज़रत बिलाल रज़ी0 को आज़ाद करा लिया।

अम्मार बिन यासिर और उनके माँ–बाप को भी बनी मख़ज़ूम बाहर लाते और मक्का की तपती धूप में तरह–तरह की तकलीफें पहुंचाते, अगर अल्लाह के रसूल सल्ल0 का उधर गुज़र होता तो फरमाते, "यासिर की सन्तान! थोड़ा सब्र! थोड़ा सब्र। तुम्हारी मंज़िल जन्नत है।" उनकी माँ को उन लोगों ने इस्लाम के सिवा हर चीज़ का इन्कार करने की वजह से शहीद कर दिया।

मसअब बिन उमैर रज़ी0 मक्का के सजीले और लाड़–प्यार से पले नौजवान थे उनके माता–पिता बहुत धनी थे, और उनको अच्छे से अच्छे कपड़े पहनाते थे। ख़ुशबू के प्रयोग में मक्का में उनसे बढ़कर कोई न था। बहुत ही क़ीमती जूते पहनते। अल्लाह के रसूल सल्ल0 उनकी चर्चा करते हुए फरमाते थे, मैं ने मक्का में मुसअब बिन उमैर से अधिक सजीला, सुरूचि पूर्ण और लाड़–प्यार से पला किसी और को नहीं देखा" मुसअब बिन उमैर को जब यह ख़बर मिली कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 अरक़म के घर में इस्लाम की दावत (बुलावा) देते हैं तो वह भी वहां पहुंचे। इस्लाम क़बूल किया, लेकिन अपनी माँ और क़ौम के डर से यह बात उन्होंने किसी को बताई नहीं, और छिप–छिप कर अल्लाह के रसूल सल्ल0 से मिलते रहे। उस्मान बिन तलहा ने एक बार नमाज़ पढ़ते हुए देख लिया, तो उनकी माता और क़बीलों वालों को ख़बर कर दी। वह उनको पकड़ कर ले गए और क़ैद कर दिया, और जब तक हब्शा (अबीसीनिया) की तरफ पहली हिजरत (प्रस्थान) न हुई वह कैद में ही रहे। इस पहले काफिले के साथ उन्होंने हिजरत की। फिर मुसलमानों के साथ इस शान से वापस हुंए कि उनकी हालत एक दम बदल चुकी थी। कोमलता और लालित्य की जगह खुर्दुरापन पैदा हो गया था। उनकी माँ भी उनमें यह बदलाव देख कर कुछ न कह सकीं और चुप रह गयीं।

कुछ अन्य मुसलमानों ने मुशरिकों की पनाह (शरण) भी ली थी।

यह मुशरिक कुरैश के प्रभावशाली सरदार थे और अपनी पनाह में आए मुसलमानों की पूरी रक्षा करते थे। उस्मान बिन मज़ऊन रज़ी ने वलीद बिन मुग़ीरा के यहां पनाह ली थी, लेकिन उन्हें किसी ग़ैर अल्लाह की पनाह पसन्द न थी। इस लिए वह वलीद की पनाह से अलग हो गए। एक दिन उनकी किसी मुशरिक से कुछ बात हुई, इस पर उस मुशरिक ने गुस्से में आकर ऐसा तमाचा मारा कि उनकी आंख जाती रही। वलीद, जो करीब ही यह मंज़र देख रहा था, बोल उठा "मेरे भतीजे तुम मेरी पनाह में थे तुमने नाहक़ उसे छोड़ा" उस्मान ने जवाब दिया, "मेरी अच्छी आंख भी उसी तरह अल्लाह की राह में दुख झेलने के लिए तैयार है, और ऐ अब्द शम्स! मैं तो उसकी पनाह में हूं जो तुम से ज़्यादा इज़्ज़त व कुदरत वाला है।"

जब हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान इस्लाम लाए तो उनको उनके चचा हकम बिन अबी अलआस बिन उमैय्या ने ख़ूब जकड़ कर बान्ध दिया और कहा,"तुम अपने पूर्वजों का दीन छोड़ कर एक नया दीन अपना रहे हो। अल्लाह की क़सम मैं तुमको उस समय तक न खोलूंगा जब तक तुम अपने इस नए दीन को न छोड़ दोगे।" हज़रत उस्मान ने कहा, "मैं इसको कभी न छोड़ूंगा।" उनकी हिम्मत देखकर हकम ने उनको रिहा कर दिया।

आपके एक और साथी बयान करते हैं कि एक दिन कुरैश मुझे पकड़ कर ले गए, आग जलाई और उसमें मुझे घसीट कर डाल दिया, फिर एक व्यक्ति ने मेरे सीने पर अपना पैर रखकर इस तरह दबाया कि मेरी पीठ ज़मीन से लग गई। फिर उन्होंने अपनी पीठ खोलकर दिखाई तो पीठ पर सफ़ेद दाग़ पड़ गए थे।

कुरैश की दुश्मनी और आप सल्ल० पर ज़ुल्म

कुरैश के तरह–तरह से सताने से भी जब इस्लाम के दीवाने अपने दीन से न हटे तो कुरैश अपनी असफलता पर खीझ उठे। उन्होंने कुछ बेवक़ूफ़ों तथा गुन्डों को आप सल्ल० के पीछे लगा दिया। उन्होंने आपको झुठलाया और तरह–तरह की तकलीफ़ें देना शुरू कीं। आप पर जादू

गरी, शायरी और जनून के आरोप लगाए, और आपको सताने के लिए हर तरह के हरबे आज़माए।

एक दिन मक्का के सरदार 'हिज्र' ☆ में जमा थे कि अचानक अल्लाह के रसूल सल्ल० तशरीफ लाए और काबा की परिक्रमा (तवाफ) करते हुए उनके करीब से गुज़रे। उन्होंने आपका मज़ाक उड़ाया। तीसरी बार आप रुक गए और फरमाया, "कुरैश के लोगों, क्या तुम सुनते हो। क़सम है उसकी जिसके कब्ज़े में मेरी जान है मैं तुम्हारे लिए ज़िबहे अज़ीम (A Great Slaughter) लेकर आया हूं" आपके यह शब्द सुनकर उन पर सन्नाटा छा गया। इसके बाद आपसे कुछ ने मेल की बातें करनी शुरू कर दीं।

☆ हतीम और काबा की दीवार के बीच की जगह। इसका नाम हिज्र ईस्माईल भी है। हतीम उस हिस्से का नाम है जो धनुषाकार दीवार और काबा के बीच है। इसके दोनों किनारे काबे की उत्तरी और पश्चिमी दिशा में मिलते हैं। हिज्र पहले काबा में शामिल था। अभ्युदय काल से पहले एक बाढ़ में जब काबा की दीवारें गिर गयीं और कुरैश ने नए सिरे से उसे बनाया तो आर्थिक कठिनाईयों के कारण उन्होंने इसको इतना ही रहने दिया और बाकी हिस्से को मुंडेर से घेर दिया जो धनुषाकार है।

दूसरे दिन यही घटना घटी। वह लोग उसी जगह जमा थे कि अल्लाह के रसूल सल्ल० तशरीफ लाए। वह सब एक साथ आप पर टूट पड़े, और आपको घेर लिया। उनमें से एक ने आपकी चादर पकड़ कर इस तरह घसीटनी शुरू की कि आपका गला मुबारक कस गया। यह देखते ही हज़रत अबुबक्र दौड़कर बीच में आ गए, और रो-रो कर कहने लगे, 'क्या तुम एक व्यक्ति को सिर्फ इतनी बात पर जान से मार डालना चाहते हो कि वह कहता है 'मेरा रब अल्लाह है'। इस पर उन्होंने आप को छोड़ दिया लेकिन हज़रत अबुबक्र इस हाल में घर वापस हुए कि उनका सिर खुल गया था उनकी दाढ़ी पकड़ कर खींचते हुए उनको बाहर ले जाया गया।

एक दिन आप निकले तो दिन भर आपको कड़े उत्पीडन का सामना करना पड़ा। कोई ऐसा न मिला जिसने आपको तकलीफ न पहुंचाई हो। जब आप घर आए तो तकलीफ के कारण चादर ओढ़ कर लेट गए। उस समय 'सूरे मुद्दसिर' की शुरूआती आयतें उतरीं। जिसमें

आपको "या अय्युहल मुद्दस्सिर" कहकर सम्बोधित किया गया। अर्थात 'ऐ चादर ओढ़े हुए पैग़म्बर, उठो और लोगों को सचेत करो।'

हज़रत अबुबक्र का उत्पीड़न

एक दिन हज़रत अबुबक्र रज़ी0 एक मजमें में इस्लाम के प्रचार की नियत से खड़े हुए और इस्लाम का प्रचार करना शुरू किया तो मुशरिक़ गुस्से में उन पर टूट पड़े और उनको बहुत मारा। उत्बा बिन रबिया दो फटे पुराने जूतों से उनके चेहरे पर इस तरह से मारता रहा कि बाद में उनका चेहरा पहचाना न जाता था, हज़रत अबुबक्र रज़ी0 बेहोश हो गए। बनुतैयम उनको उठाकर ले गए। दिन ढले हज़रत अबुबक्र को होश आया। होश आने पर सब से पहले उन्होंने अल्लाह के रसूल सल्ल0 की ख़ैरियत पूछी। बनूतैयम ने इस पर उनको बुरा भला कहा (कि इस हाल में भी उनको अपने से ज़्यादा उनकी फ़िक्र है जिनकी वजह से यह सारी परेशानी उठानी पड़ी)। उसी समय उम्मे जमील जो इस्लाम ला चुकी थीं उनसे करीब हुयीं तो हज़रत अबुबक्र ने उनसे अल्लाह के रसूल सल्ल0 के बारे में पूछा। उम्मे जमील ने कहा, 'आपकी माता खड़ी हैं सुन लेंगी' हज़रत अबुबक्र रज़ी0 ने कहा कि उनके सामने कोई हर्ज नहीं। तब उम्मे जमील ने बताया कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 ख़ैरियत से हैं। हज़रत अबुबक्र रज़ी0 ने कहा मेरी अल्लाह से नज़र है कि मैं उस समय तक न कुछ खाऊंगा न पीऊंगा जब तक अल्लाह के रसूल सल्ल0 की सेवा में हाज़िर न हो जाऊं।

जब लोगों का आना जाना बन्द हुआ और सन्नाटा हुआ तो उम्मे जमील और अबुबक्र की मां सहारा देकर रसूल अल्लाह सल्ल0 की सेवा में हाज़िर हुए। अबुबक्र की यह हालत देखकर आप फिक्रमंद हुए। आपने उनकी मॉं के लिए बहुत दुआ की और उनको इस्लाम लाने पर राज़ी किया और वह उसी समय मुसलमान हो गयीं।

कुरैश की एक और साज़िश

कुरैश अपनी नाकामियों से बहुत परेशान थे उनकी समझ में न आता था कि किस तरह अल्लाह के रसूल सल्ल0 से लोगों को बदगुमान

करें और आप के पास आने और इस्लाम लाने से रोकें। वह चाहते थे किसी तरह दूर तथा निकट से आने वाले काफ़िलों को आप से दूर रखें और आप की बात सुनने से रोकें। वह सब मिलकर वलीद के पास गए और उनसे सलाह ली। वलीद ने कहा,'ऐ लोगों! हज का दौर आ चुका है इस समय अरब के विभिन्न शिष्ट मण्डल आएंगे और उन सब के कान में यह बात पड़ चुकी है। इस लिए इन साहब (अल्लाह के रसूल सल्ल0) के बारे में कोई एक बात तय कर लो। जिससे कि एक दूसरे की काट न हो और सब एक ही बात कहें। देर तक इस बात पर सोच विचार होता रहा। अनेक प्रस्ताव सामने आए लेकिन वलीद को किसी बात पर राज़ी नहीं हुआ और उसने सबकी राय को रद्द कर दिया। तब उन्होंने स्वयं उसकी राय पूछी। उसने कहा कि मेरे विचार से सब मिलकर यह कहो, "वह जादूगर है, जादू करने आया है, वह अपने जादू से बाप–बेटे, भाई–भाई, पति–पत्नी और ख़ानदान वालों में फूट और अलगाव पैदा कर देता है।"

कुरैश की पत्थर दिली

कुरैश ने अल्लाह के रसूल सल्ल0 को सताने में बड़ी पत्थर दिली से काम लिया। वे तरह–तरह से आप को तकलीफें पहुंचाते। न तो रिश्ते–नाते का ध्यान किया और न इन्सानियत का। एक बार आप हरम काबा की मस्जिद में नमाज़ पढ़ रहे थे, आपके पास कुरैश के लोग बैठे हुए थे कि उक़बा बिन अबी मुईत कहीं से ऊंट की ओझड़ी ले आया और जब आप सजदे में गए तो आपकी पीठ पर फेंक दी। आप उसी तरह सजदे में रहे, यहां तक कि बेटी फातिमा रज़ी0 आयीं, उन्होंने उसको पीठ से हटाया, और जिसने यह हरकत की थी उसके लिए बद–दुआ की। आपने भी उन लोगों के लिए बद–दुआ की।

हज़रत हमज़ा का इस्लाम कुबूल करना

एक दिन अबु जहल सफा के करीब आपके पास से गुज़रा और आप को बहुत बुरा भला कहा और आप सल्ल0 को तकलीफ पहुंचाई। आपने उसका जवाब नहीं दिया तो वह चला गया। थोड़ी देर में हज़रत

हमज़ा तीर कमान लिए एक शिकार से वापस आए। हमज़ा कुरैश के सबसे बहादुर और दिलेर नौजवान समझे जाते थे। उनको अब्दुल्लाह बिन ज़दआन की बान्दी ने पूरी बात बतायी। वह उसी समय गुस्से में मस्जिदे हरम में दाख़िल हुए। देखा कि अबु जहल अपने आदमियों के साथ बैठा है। वह उसके करीब गए और बिल्कुल सिर के ऊपर खड़े होकर कमान उसके सिर पर मार कर उसे घायल कर दिया और कहा, "तुम्हारी यह हिम्मत कि तुम इनको बुरा-भला कहो और गाली दो, हालांकि मैं इन ही के दीन पर हूं और जो वह कहते हैं वहीं मैं करता हूं।" अबु जहल ख़ामोश रहा। हज़रत हमज़ा इस्लाम लाए, कुरैश को उनके मुसलमान होने से बड़ा धक्का पहुंचा।

उत्बा से बात चीत

जब कुरैश ने देखा कि आपके समर्थकों की संख्या दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही है तो उत्बा बिन राबिया ने सुझाव दिया कि बात चीत द्वारा आप सल्ल० से समझौता किया जाए। उसने कुरैश से इजाज़त चाही कि आप सल्ल० से मिलकर उनके सामने कुछ पेश कश और सुझाव रखना चाहता है, हो सकता है आप सल्ल० उसे मान कर अपने प्रचार से बाज़ आ जाएं। कुरैश ने उत्बा को इजाज़त दे दी और उसे अपना प्रतिनिधि घोषित किया।

उत्बा अल्लाह के रसूल सल्ल० के पास आकर बैठ गया और कहा कि मेरे भतीजे तुम हमारे बीच जिस हैसियत के मालिक हो उसका ज्ञान तुम्हें है। तुमने एक बड़े झगड़े की बात अपनी क़ौम में खड़ी कर दी है तुमने उनमें फूट डाली। उनको बेवकूफ और जाहिल ठहराया। उनके धर्म और उनके देवताओं को अपमानित किया, उनके पूर्वजों के तरीक़ों का इन्कार किया। अब मैं कुछ बातें तुम्हारे सामने रखता हूं। मुमकिन है कि इसमें कोई बात तुम्हारे मानने के काबिल हो।

रसूल अल्लाह सल्ल० ने फरमया, "कहो, मैं सुन रहा हूं।"

उसने कहा मेरे भतीजे! जो तरीक़ा व दीन तुम लाए हो अगर उससे तुम्हारा मतलब माल व दौलत है तो हम यह माल व दौलत तुम्हारे

लिए इतना जमा कर देंगे कि तुम हम में सबसे अधिक मालदार हो जाओगे। अगर इज़्ज़त व ख्याति चाहते हो तो हम तुम्हे अपना सरदार मान लेंगे और कोई फैसला तुम्हारी मर्ज़ी के बिना नहीं करेंगे। अगर बादशाह बनना चाहते हो तो हम तुमको बादशाह बना लेंगे। अगर यह बात भूत प्रेत की वजह से है, जिसका बचाव तुम्हारे पास नहीं है तो इसके लिए हम झाड़–फूंक करने वाले ला सकते हैं और इस पर जितना खर्च होगा दिल खोलकर खर्च कर सकते हैं यहां तक कि इससे तुम्हारी सेहत को पूरी तरह फायदा हो जाए।

जब उत्बा यह सब कहा चुका तो आपने फरमाया कि क्या जो कुछ कहना था कह चुके? उसने कहा, 'हां'। आपने फरमाया,"अब मुझसे सुनो।"इसके बाद आप सल्ल0 ने सूरः फुस्सिलत की कुछ आयतें (सजदा तक)☆ उसके सामने पढ़ीं। उत्बा के कान में जब वह आवाज़ पहुंची तो उसने ख़ामोशी के साथ सुनना शुरू किया। उसने दोनों हाथ पीठ की तरफ टेक लिए थे और अल्लाह का कलाम पूरा ध्यान लगाकर सुन रहा था। जब आप सजदे की आयत तक पहुंचे तो आपने सजदा किया और फरमाया "अबु वलीद! तुम्हे जो कुछ सुनना था सुन लिया, अब जैसा तुम समझो।"

उत्बा जब लौट कर अपने साथियों में आया तो लोग उसकी सूरत देखकर कहने लगे, 'हम क़सम खा कर कहते हैं कि अबु वलीद जिस चेहरे के साथ गए थे यह चेहरा उससे बदला हुआ है।" जब वह बैठा तो लोगों ने फौरन पूछा "अबु वलीद क्या ख़बर लाए?" कहने लगा "ख़बर यह है कि मैंने एक ऐसा कलाम सुना है जो इससे पहले मैंने कभी नहीं सुना था। अल्लाह की क़सम! ऐ कुरैश के लोगो! न वह शायरी है न जादू है। न जादू–टोना है न ज्योतिष। मेरी बात मानो और उस व्यक्ति को उसके हाल पर छोड़ दो।" यह सुनकर कुरैश उत्बा को बुरा भला कहने लगे और कहा कि उसका जादू तुम पर भी चल गया। उत्बा ने कहा,"मेरी राय यही है, अब जो तुम्हारा जी चाहे करो।"

☆1सूरः हकीम सजदा की शुरू की 38 आयतें।

☆2 अल्लाह की राह में घर बार छोड़कर कहीं और जाना

मुसलमानों की हब्शा की तरफ हिजरत

जब अल्लाह के रसूल सल्ल० ने देखा कि आपके साथियों को कठोर यातनाएं सहन करनी पड़ रही हैं तो आपने उनसे कहा, 'अगर तुम लोग हब्शा (अबीसीनिया) की तरफ निकल जाओ तो अच्छा है वह एक अच्छा देश है। वहां का जो बादशाह है उसके कारण कोई दूसरे पर अत्याचार नहीं करता यहां तक कि अल्लाह पाक तुम्हारे लिए नजात और कुशादगी का कोई सामान पैदा कर दे।

इस पर दस मुसलमानों की एक टोली मक्का से हब्शा की तरफ गई। इस्लाम में यह पहली हिजरत थी जिसका नेतृत्व हज़रत उस्मान बिन मज़ऊन रज़ी० ने किया। इसके बाद जाफर बिन अबी तालिब रज़ी० ने हिजरत की। फिर एक-एक करके बहुत से मुसलमान हब्शा पहुंचे। उन में कुछ लोग अकेले थे कुछ परिवार के साथ। हब्शा की हिजरत करने वालों की कुल संख्या 83 बताई जाती है।

कुरैश का पीछा करना

जब कुरैश ने देखा कि मुसलमान हब्शा पहुंच गए और आराम से हैं, तो उन्होंने अब्दुल्लाह बिन अबी रबिया तथा अम्र बिन अलआस बिन वायल को उन का पीछा करने के लिए भेजा, और उनके साथ हब्शा के राजा नजाशी तथा उसके सरदारों और सिपहसालारों के लिए बहुत सी भेंट और तोहफे भेजे। हब्शा पहुंच कर पहले इन दोनों ने बादशाह के प्रमुख सरदारों को भेंट देकर उन्हें अपने पक्ष में किया और बादशाह के दरबार में पहुंचकर अपनी बात इस तरह शुरू की।

"महाराजा! आपके देश में हमारे कुछ बेवकूफ लड़कों ने आकर पनाह ली है जिन्होंने अपना दीन छोड़ा है और आपका दीन भी स्वीकार नहीं किया बल्कि एक नया दीन बना लिया है जिसको न हम जानते पहचानते हैं न आप। हमें आपके पास उनकी कौम के कुछ ज़िम्मेदार लोगों ने भेजा है ताकि आप उनको वापस कर दें।"

बादशाह के पास बैठे प्रमुख सरदार एक स्वर होकर बोले,'यह दोनों बिल्कुल सही कह रहे हैं। आप इनको उनके सुपुर्द करे दें।' नजाशी को

इस बात पर बहुत गुस्सा आया और उसने उनकी बात मानने से इन्कार कर दिया और यह पसन्द नहीं किया कि जो उसकी पनाह में आए उसको इस तरह दूसरों के हवाले कर दिया जाए। उसने इस पर क़सम खाई। उसने अपने पादरियों को जमा किया और मुसलमानों से पूछा,"वह दीन क्या है जिसके लिए तुमने अपनी क़ौम को छोड़ दिया है और उसे छोड़ने के बाद न मेरे दीन को अपनाया और न किसी अन्य मशहूर धर्म को अपनाया।"

जाफर बिन अबी तालिब ने इस्लाम का परिचय पेश किया

उस समय रसूल अल्लाह सल्ल0 के चचेरे भाई जाफर बिन अबी तालिब खड़े हुए और उन्होंने कहा।

" ऐ बादशाह! हम एक जाहिलियत वाली क़ौम थे। बुतों को पूजते थे। मुर्दार खाते थे। हर तरह की बेहयाई और गुनाहों से घिरे हुए थे। हम में जो ताक़तवर होता वह कमज़ोर को फाड़ खाता। हम इस हाल में थे कि अल्लाह ने हम ही में से एक रसूल भेजा जिसके ख़ानदान और हसब–नसब से और जिसकी सच्चाई, अमानतदारी तथा सदाचरण से हम पहले से परिचित थे। उन्होंने हमको यह दावत दी कि हम सिर्फ एक अल्लाह पर ईमान लाएं और उसी की इबादत करें। हम और हमारे पूर्वज जिन बुतों को पूजते थे उनको बिल्कुल छोड़ दें, और उनसे अपने सम्बन्ध तोड़ लें। उन्होंने हमको सच बोलने, अमानत अदा करने, रिश्तेदारी का ख्याल रखने, पड़ोसी से अच्छा बर्ताव करने, अवैध व हराम बातों तथा ना हक़ ख़ून से बचने का हुक्म दिया। बेहयाई के कामों, झूठ फरेब, यतीम (अनाथ) का माल खाने, पाक दामन व पाकबाज़ औरतों पर आरोप लगाने से मना किया। उन्होंने हमको हुक्म दिया कि हम सिर्फ एक अल्लाह की इबादत करें और उसके साथ किसी चीज़ को शरीक न ठहराएं। उन्होंने हमें नमाज़, रोज़ा और ज़कात अदा करने का हुक्म दिया और इस्लाम के अन्य अरकान (मूलमंत्र) बताए। हम ने उन्हें माना। उन पर ईमान लाए और जो तरीक़ा व शिक्षा वह अल्लाह की तरफ से लाए हैं उसकी पैरवी (अनुसरण) की। सिर्फ एक अल्लाह की इबादत अपनाई और उसके साथ

किसी को शामिल नहीं किया। जो उन्होंने हराम बताया उसको हराम माना, जो उन्होंने हलाल बताया उसको हलाल माना। इस पर हमारी क़ौम दुश्मनी पर उतारू हो गई। हमारी क़ौम ने हमको तरह–तरह की तकलीफें पहुंचायीं और हमको इस दीन से फेरने के लिए आज़माइशों में डाला और इसकी कोशिश की कि एक अल्लाह की इबादत छोड़ कर हम फिर बुतों की इबादत को अपना लें और जिन गुनाहों और जिन अपराधों को पहले वैध समझते थे फिर वैध व हलाल समझने लगें। जब उन्होंने हमारे साथ बहुत ज़ोर ज़बर्दस्ती की और हमारा जीना दूभर कर दिया, और हमारे दीन के रास्ते में दीवार बन कर खड़े हो गए तो हम आपके देश में पनाह लेने के लिए आए और इसके लिए आप ही का चयन किया। आपकी पनाह चाही।

ऐ बादशाह! हम यहां यह उम्मीद लेकर आए हैं कि हम पर कोई जुल्म न किया जा सकेगा।"

नजाशी ने यह बातें बहुत ग़ौर व सब्र के साथ सुनी और कहा, " तुम्हारे नबी अल्लाह के पास से जो कुछ लाए हैं उसकी कोई चीज़ तुम्हारे पास है? हज़रत जाफर ने कहा, 'है'। नजाशी ने कहा मुझे वह पढ़कर सुनाओ। हज़रत जाफर ने सूरः मरियम की कई शुरूआती आयतें पढ़कर सुनाई तो नजाशी रो पड़ा और उसके आंसुओं से उसकी दाढ़ी भीग हो गई। उसके दरबार के पादरी भी रोने लगे यहां तक कि उनके सहीफे (धार्मिक आसमानी किताब) आंसुओं से भीग गए।

कुरैशी शिष्टमण्डल की असफलता

नजाशी ने कहा, "बेशक यह और जो कुछ हज़रत ईसा अ० लाए थे एक ही रोशनी की किरनें हैं" फिर उसने कुरैश के दोनों प्रतिनिधियों को सम्बोधित करते हुए कहा, "तुम यहां से चले जाओ। अल्लाह की क़सम मैं इनको तुम्हारे हवाले करने वाला नहीं।" इस पर अम्र बिन अलआस ने अपने तरकश का आख़िरी तीर चलाया। उन्होंने कहा, "बादशाह सलामत! यह लोग हज़रत ईसा मसीह अ० के बारे में ऐसी बाते करते हैं जिनका ज़बान से निकालना भी मुश्किल है।" नजाशी ने

पूछा, "तुम लोग हज़रत मसीह अ0 के बारे में क्या कहते हो?" जाफर बिन अबी तालिब ने जवाब दिया," हम उनके बारे में वही कहते हैं जो हमारे नबी सल्ल0 ने हमें बताया है। वह अल्लाह के बन्दे हैं, अल्लाह के रसूल हैं और रूह (आत्मा) और शब्द हैं। जो उसने कुमारी पाकबाज़ मरियम पर डाला। यह सुनकर नजाशी ने अपना हाथ ज़मीन पर मारा और एक तिनका उठाकर कहा," अल्लाह की क़सम जो कुछ तुमने बयान किया है हज़रत ईसा अ0 उससे इस तिनके के बराबर भी अधिक नहीं हैं।" नजाशी ने मुसलमानों को अमान दी और उन्हें आदर के साथ विदा किया। कुरैश के दोनों दूत अपमानित होकर वहां से निकले और मुसलमानों ने बहुत अच्छे घर और अच्छे पड़ोस में जगह पाई।

हज़रत उमर रज़ी0 का इस्लाम लाना

फिर अल्लाह ने उमर बिन अलख़त्ताब, जो क़बीला कुरैश के एक सम्मानित व्यक्ति थे, के द्वारा इस्लाम और मुसलमानों की कामयाबी का ग़ैबी सामान पैदा किया। उमर इस्लाम लाए। उनका व्यक्तित्व बहुत प्रभावशाली और रोबीला था। हज़रत मुहम्मद मुस्तफा सल्ल0 की बड़ी इच्छा थी कि उमर मुसलमान हो जाएं। आप इसके लिए दुआ भी फरमाया करते थे।

हज़रत उमर के इस्लाम लाने की घटना इस तरह हैं। उनकी बहन फातिमा बिन्त अलख़त्ताब इस्लाम ला चुकी थीं, उनके बाद उनके पति सईद बिन ज़ैद भी इस्लाम ला चुके थे, लेकिन दोनों ने हज़रत उमर के रोब तथा दबदबा की वजह व उनके डर से अभी तक इसे सबके सामने ज़ाहिर नहीं किया था। इस्लाम लाने के बाद ख़ब्बाब बिन अलअरत फ़ातिमा को कुर्आन पढ़ाते थे।

हज़रत उमर एक बार तलवार लटकाए हुए अल्लाह के रसूल सल्ल0 और आपके साथियों की तलाश में निकले। उनको यह पता चला था कि यह सब लोग उस वक्त सफा के करीब किसी घर में जमा हैं, रास्ते में उनको नुऐम बिन अब्बदुल्ला मिले जो उन्हीं के क़बीला बनी अदी से थे और इस्लाम ला चुके थे। उन्होंने पूछा, "उमर! कहां का इरादा

है?" कहने लगे कि "मुहम्मद सल्ल० का फैसला करने जा रहा हूं जिसने बेदीनी अपना ली है कुरैश में फूट डाली है, उनको जाहिल और बेवकूफ ठहराया है, उनके दीन पर आरोप लगाया, बुतों को गालियां दीं, आज उनका किस्सा ही तमाम कर देना है।" नुएम ने कहा, "उमर! तुम किस धोखे में पड़े हो। अपने घर वालों की ख़बर लो, और पहले उनको ठीक करो" हज़रत उमर ने पूछा मेरे घर में कौन"? नुऐम ने जवाब दिया तुम्हारे बहनोई और चचेरे भाई सईद बिन ज़ैद और तुम्हारी बहन फातिमा, यह दोनों मुसलमान हो चुके हैं और मुहम्मद सल्ल० का दीन अपना चुके हैं। पहले उनको देख लो।

हज़रत उमर उलटे पैर अपनी बहन और बहनोई के पास गए। उस समय उनके पास ख़ब्बाब बिन अलअरत बैठे हुए थे उनके पास एक सहीफा था जिसमें सूरः ताहः लिखी हुई थी और वह उनको यह सूरः पढ़ा रहे थे जब उनको हज़रत उमर की आहट महसूस हुई तो ख़ब्बाब घर के एक अन्दरूनी कमरे में छिप गए। फातिमा ने सहीफा को जल्दी से अपनी रान के नीचे दबा लिया। हज़रत उमर ने ख़ब्बाब की तिलावत सुन ली थी। वह जब अन्दर आए तो पूछा कि यह क्या खुसर-पुसर हो रही थी? उन दोनों ने जवाब दिया कि क्या तुमने कुछ सुन लिया? उन्होंने कहा, "हां", सुना है और मुझे मालूम हो चुका है कि तुमने मुहम्मद सल्ल० का दीन अपना लिया है फिर वह अपने बहनोई सईद बिन ज़ैद को मारने दौड़े। उनकी बहन फातिमा उनको बचाने के लिए लपकीं तो उमर ने उनकी भी ख़बर ली और घायल कर दिया।

जब यह सब कर चुके तो उनकी बहन और बहनोई ने कहा, 'बेशक हम मुसलमान हो चुके हैं, तथा अल्लाह और उसके रसूल सल्ल० पर ईमान ला चुके हैं। अब तुम हमारा जो चाहे कर लो।'

जब उमर ने अपनी बहन के बदन पर ख़ून के धब्बे देखे तो उनका गुस्सा ठण्डा हुआ और उन्हे अपने किए पर पछतावा सा हुआ। वह रुक गए और कहने लगे, मुझे वह सहीफा दो जो अभी मैंने पढ़ते हुए तुम दोनों को सुना था। मैं देखूं कि मुहम्मद सल्ल० की शिक्षा क्या है? हज़रत उमर पढ़े-लिखे थे। जब उन्होंने यह कहा तो उनकी बहन बोली। हमें

डर है, मालूम नहीं तुम इसके साथ क्या करो? उमर ने कहा तुम डरो नहीं भरोसा रखो और अपने बुतों की क़सम खाकर उन्हें यक़ीन दिलाया, जब उमर ने इस तरह कहा तो उनकी बहन को यह लालच हुई कि शायद उमर इस्लाम ले आएं। उन्होंने नर्मी से कहा—भाई जान! आप शिर्क की वजह से अपवित्र हैं और इस सहीफा को सिर्फ पवित्र आदमी छू सकता है।

हज़रत उमर ने जाकर नहाया तब उनकी बहन ने यह सहीफा उनके हाथ में दिया। उसमे सूरः ताहः दर्ज थी। थोड़ा ही सा पढ़ा था कि हज़रत उमर बोल उठे—क्या पाकीज़ा कलाम है? जब ख़ब्बाब ने यह सुना तो कमरे में निकल कर सामने आए और कहने लगे—ऐ उमर! अल्लाह की क़सम मुझे उम्मीद है कि अल्लाह पाक अपने नबी की दावत से आपको ज़रूर गौरवान्वित करेगा। मैंने कल ही अल्लाह के रसूल सल्ल0 को यह दुआ करते सुना है। ऐ अल्लाह! इस्लाम की अबुल हकम बिन हिशाम (अबु जहल) या उमर बिन अलख़त्ताब के माध्यम से मदद फरमा। ऐ उमर! अब तुमको कुछ अल्लाह का ख़ौफ और शर्म व लिहाज़ आना चाहिए।

हरज़त उमर ने कहा— ख़ब्बाब! मुझे मुहम्मद सल्ल0 के पास ले चलो। मैं उनके हाथ पर इस्लाम कुबूल करना चाहता हूं। ख़ब्बाब ने कहा कि वह सफा के पास एक घर में हैं। आपके साथ कई और साथी हैं। हज़रत उमर ने तलवार ली और अल्लाह के रसूल सल्ल0 की तरफ़ चले। वहां पहुंचकर उन्होंने दरवाजे पर दस्तक दी। उमर की आवाज़ सुनकर एक सहाबी ने खड़े हो कर दरवाज़े की दरार से झांक कर इत्मीनान करना चाहा। देखा कि उमर तलवार लगाए है वह घबराए हुए अल्लाह के रसूल सल्ल0 के पास आए और कहने लगे या रसूल अल्ला सल्ल0! उमर बिन अलख़त्ताब हैं और तलवार लगाकर आए हैं। हज़रत हमज़ा बोले—आने दो। अगर वह नेक इरादे से आ रहे हैं तो स्वागत है और नहीं तो हम उन्हीं की तलवार से उनका काम तमाम कर देंगे। फिर अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने फरमाया कि इजाज़त दे दो। अतः उन सहाबी रज़ी0 ने हज़रत उमर को अन्दर आने की इजाज़त दे दी। हज़रत

उमर आने लगे तो आप आगे बढ़ कर कमरे में उनसे मिले और उनका दामन मज़बूती से पकड़ कर खींचा और कहा–इब्न ख़त्ताब! यहां किस इरादे से आए हो। अल्लाह की क़सम मुझे ऐसा नज़र आता है कि अन्त से पहले तुम्हें कोई सख़्त आफत या मुसीबत का सामना करना पड़ेगा।

हज़रत उमर ने कहा–या रसूल अल्लाह सल्ल०! मैं आपके पास अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान और अल्लाह ने जो हिदायत व शिक्षा आपके द्वारा भेजी है उसको कुबूल करने हाज़िर हुआ हूं। हज़रत उमर बयान करते हैं कि यह सुनकर अल्लाह के रसूल ने तकबीर का नारा☆ बुलन्द किया। इस तकबीर से वहां मौजूद सब सहाबी समझ गए कि उमर मुसलमान हो गए।

हज़रत उमर के इस्लाम लाने से मुसलमानों का हौसला बढ़ गया। हज़रत हमज़ा पहले ही मुसलमान हो चुके थे। वह जानते थे कि कुरैश पर इस बात का कड़ा असर होगा। कुरैश को किसी दूसरे के इस्लाम लाने से इतनी परेशानी नहीं हुई जितनी हज़रत उमर के।

हज़रत उमर ने अपने मुसलमान होने का खुलकर ऐलान किया। कुरैश में यह ख़बर आग की तरह फैल गई। वह हज़रत उमर से भी लड़ने–मरने पर आमादा हो गए। हज़रत उमर भी पूरी तरह मुक़ाबले पर आ गए। अख़िर में इस्लाम के दुश्मन निराश व हिम्मत हार कर बैठ गए।

बनी हाशिम का बहिष्कार

इस्लाम अरब के क़बीलों में तेज़ी से फैलने लगा तो कुरैश को बहुत फ़िक्र हुई उन्होंने सलाह के लिए बैठक की और उसमें फैसला लिया गया कि एक लिखित समझौते द्वारा बनी हाशिम और बनी अब्दुल मुत्तलिब को इसका पाबन्द कर दिया जाए कि वह किसी और जगह शादी नहीं कर सकते। न दूसरे उनसे शादी कर सकेंगे। न कोई चीज़ उनके हाथ बेचेंगे न उनसे खरीदेंगे। बैठक के बाद उन्होंने इन धाराओं को लिखकर सबके लिए इसका पालन करना अनिवार्य कर दिया और इसे पुष्टि के लिए काबा के अन्दर लगा दिया।

बनी हाशिम शुएब अबी तालिब की घाटी में नज़रबंद

कुरैश की इस पाबन्दी के बाद बनी हाशिम और बनी अब्दुल मुत्तलिब, अबु तालिब के साथ हो गए और शुएब अबी तालिब के साथ उसी घाटी में नज़रबंद हो गए। यह घटना अभ्युदय काल के सातवें वर्ष की है। अबुलहब बिन अब्दुल मुत्तलिब, बनी हाशिम के साथ नहीं था और कुरैश के साथ हो गया। बनी हाशिम तीन साल तक इसी तरह घाटी में घिरे रहे। यहां उन्हे बबूल के पत्ते खाकर गुज़ारा करने की नौबत आई उनके बच्चे भूख से रोते बिलबिलाते थे। कुरैश व्यापारियों को उनके ख़िलाफ भड़काते थे। अतः व्यापारियों ने कीमत इतना बढ़ा दी कि वह यह सामान खरीद ही न सकें। तीन साल इसी तरह गुज़रे। इन दिनों कुछ आवश्यक वस्तुएं चोरी छिपे उनके पास पहुंच पाती थीं। कुरैश के कुछ हमदर्द लोग इस तरह चोरी–छिपे उनकी मदद करते थे। इस परीक्षा की घड़ी में भी अल्लाह के रसूल सल्ल0 अपनी क़ौम में प्रचार का काम दिन रात, कभी ऐलानिया कभी छिप कर करते रहे। बनी हाशिम सब्र और आशा के साथ इन तकलीफों को झेलते रहे।

समझौता ख़त्म

बनी हाशिम की यह दयनीय दशा देखकर कुरैश के कुछ हमदर्द लोगों का दिल भर आया। इसमें हिशाम बिन अम्र बिन राबिया सबसे आगे थे। हिशाम हमदर्द और सज्जन व्यक्ति थे। उनकी क़ौम में उनका बड़ा सम्मान था। उन्होंने इस सम्बन्ध में कुरैश के कुछ हमदर्द एवं सक्षम लोगों से सम्पर्क स्थापित कर उनकी शराफत और इंसानियत को गै़रत दिलाई और इस बात पर आमादा किया कि इस अत्याचार पूर्ण समझौते को ख़त्म किया जाए। यह पांच लोग थे और उन सबने इस समझौते को अवैधानिक घोषित कर समाप्त करने का निर्णय लिया। दूसरे दिन कुरैश की महफिल में जुहैर बिन अबी उमैय्या लोगों के सामने आए और कहने लगे, "ऐ मक्का वालों! हम मज़े से खाएं पिएं और बनी हाशिम दाने दाने को तरसें और मरने के करीब पहुंच जाएं। उनके साथ ख़रीदना–बेचना तक बन्द हो। अल्लाह की क़सम मैं तब तक चैन से नहीं बैठूंगा जब तक

कि इस अत्याचारपूर्ण समझौते के टुकड़े-टुकड़े न कर दिया जाएं।" इस पर अबुजहल ने कुछ हस्तक्षेप करना चाहा लेकिन उसकी कुछ चल न सकी। मुतअम बिन अदी समझौते को फाड़ने की ग़रज़ से आगे बढ़े तो देखा कि दीमक पूरे कागज़ को चाट कर ख़त्म कर चुकी है और सिर्फ " बाइस्मुका अल्लाहुम्मा" (अल्लाह के नाम से) के शब्द बाक़ी हैं। आख़िर में इस समझौते को फाड़कर फेंक दिया गया और इस तरह इसमें जो कुछ लिखा था वह सब ख़त्म हो गया।

ख़दीजा और अबुतालिब का निधन

नुबूवत के दसवें वर्ष, एक ही साल के अन्दर हज़रत ख़दीजा और अबुतालिब का निधन हो गया। यह दोनों ही अल्लाह के रसूल के बहुत करीब, उनके शुभ चिन्तक तथा उनके बहुत अच्छे सहयोगी थे। उनके निधन से आपको बड़ा धक्का पहुंचा और इसके बाद लगातार कई परेशानियों का सामना आपको करना पड़ा।

कुर्आन का जादुई असर

तुफैल बिन अम्र दौसी जो अरब के एक उच्च कोटि के कवि तथा सम्मानित व्यक्ति थे जब मक्का आए तो कुरैश ने उनको अल्लाह के रसूल सल्ल० से मिलने से रोकना चाहा। उन्होंने तुफैल को आप सल्ल० के करीब जाने और आपकी बात सुनने से बहुत डराया और कहा, हमें डर है कि कहीं तुम्हारे और तुम्हारी कौम के साथ वही बात न हो जो यहां हमारे साथ हो रही है। इस लिए न तुम उनसे न कुछ बात करना न उनकी सुनना।

तुफैल कहते हैं, "वल्लाह वह मेरे पीछे पड़े रहे यहां तक कि मैंने फैसला कर लिया कि उनकी सुनूंगा न उनसे बात करूंगा। इससे भी बढ़कर यह कि मैंने अपने कानों में रूई ठूंस ली और हरम की तरफ गया। अचानक मेरी निगाह उठी तो क्या देखता हूं कि रसूल अल्लाह सल्ल० काबा के नजदीक नमाज़ पढ़ रहे हैं। मैं आपके पास खड़ा हो गया और अल्लाह ने आपका कुछ कलाम मुझे ज़बर्दस्ती सुनवा ही दिया। मैंने बहुत अच्छा कलाम सुना। मैंने अपने दिल में कहा, मेरी माँ मुझे रोए,

अल्लाह की क़सम मैं कवि भी हूं और कविता को परखने वाला भी, कलाम की अच्छाई–बुराई मुझसे छिपी नहीं रह सकती। आख़िर यह कलाम सुनने से मुझे क्या चीज़ रोक रही है। अगर वह सचमुच अच्छी बात है तो मैं उसे क़ुबूल करूंगा, बुरी बात है तो छोड़ दूंगा।"

इसके बाद तुफ़ैल अल्लाह के रसूल सल्ल० से आपके घर में मिले और सारा क़िस्सा कह सुनाया। आपने तुफ़ैल को इस्लाम लाने की दावत दी और उनके सामने क़ुर्आन की तिलावत की। तुफ़ैल मुसलमान हो गए और इस्लाम के प्रचारक बनकर अपनी बिरादरी में वापस हुए। उन्होंने अपने घर वालों के साथ रहने से भी इन्कार कर दिया और कह दिया कि जब तक वह मुसलमान न होंगे मैं उनसे कोई संबंध नहीं रखूंगा। इस बात पर उनके घर वाले भी मुसलमान हो गए। उन्होंने अपने क़बीले के लोगों को इस्लाम की दावत दी और इस क़बीले में इस्लाम का ख़ूब प्रचार हुआ।

हज़रत अबुबक्र शुरू में अपने घर के अन्दर ही नमाज़ पढ़ा करते थे। फिर उन्होंने अपने घर के आंगन में नमाज़ की एक जगह बना ली और वहां नमाज़ पढ़ते और क़ुर्आन की तिलावत करते। जब वह क़ुर्आन की तिलावत करते तो मुशरिकों की औरतें और बच्चे उनको घेर लेते और उन पर टूट पड़ते, वे उनको देखते और हैरत करते। हज़रत अबुबक्र बहुत हमदर्द थे। तिलावत करते समय उनके आंसू निकल आते। यह देखकर मुशरिक और घबरा गए। उन्होंने इब्न अल्दुग़न्ना, जिन्होंने अबुबक्र को पनाह दी थी, को बुलवा भेजा। जब वह उनके सामने आए तो उन सबने उनसे कहा कि तुमने अबुबक्र को जब पनाह दी थी तो हमने उसको इस शर्त पर माना था कि वह अपने घर के अन्दर अल्लाह की इबादत करें लेकिन उन्होंने अपनी नमाज़ और क़ुर्आन पाक की तिलावत और सब कुछ खुलेआम करना शुरू कर दिया है। हमें डर है कि वह हमारे लड़कों व औरतों पर असर डालेंगें। अब अगर वह इस पर राज़ी हों कि अपने घर के अन्दर अल्लाह की इबादत करें तो ठीक है नहीं तो उनसे कहो कि तुम्हारी पनाह छोड़ दें क्योंकि न हम अपनी शर्त तोड़ना चाहते हैं और न अबुबक्र को खुलेआम इबादत व तिलावत की इजाज़त

देने पर राज़ी हैं। जब इब्न अल्दुग़न्ना ने अबुबक्र को कुरैश की इस मांग से अवगत कराया तो उन्होंने जवाब दिया कि मैं तुम्हारी पनाह और ज़मानत छोड़ता हूं और अल्लाह की ज़मानत व हिफाज़त पर राज़ी हूं।

तायफ़ का सफ़र

अबु तालिब के निधन के बाद अल्लाह के रसूल सल्ल0 को कुरैश ने अनेक ऐसी तकलीफें पहुंचाई जिनकी हिम्मत अबु तालिब के जीवन काल में वह नहीं करते थे। एक बार आपके सर पर मिट्टी भी फेंकी गई। इन मुसीबतों का सिलसिला टूटता न देखकर आपने तायफ जाने का इरादा किया।☆ आपकी इच्छा यह थी कि आप सक़ीफ क़बीला के लोगों को इस्लाम की दावत दें, और उनकी मदद हासिल करें। तायफ वासियों से आपको कुछ अच्छाई की उम्मीद थी क्योंकि आपका बचपन क़बीला साद में गुज़रा था जो तायफ के करीब आबाद था। तायफ नगर आबादी के फैलाव तथा सुख–समृद्धि में मक्का के बाद दूसरे नम्बर पर था। कुर्आन पाक में कुरैश की ज़बान से इसी बात की तरफ इशारा किया गया है। अनुवादः–

"और यह भी कहने लगे कि यह कुर्आन दोनों बस्तियों (अर्थात मक्का और तायफ) में से किसी बड़े आदमी पर क्यों अवतरित न हुआ। (सूरः ज़ख़रफ–31)

तायफ नगर मशहूर बुत "लात" की पूजा का भी केन्द्र था जहां लोग तीर्थ यात्रा पर आते थे। इस बात में तायफ मक्का के समकक्ष था जो कुरैश के सबसे बड़े बुत "हुबल" का पूजा केन्द्र था। अमीर और धनी लोग गर्मियों के दिन यहीं गुज़ारते थे। इस्लामी दौर में और उसके बाद भी तायफ का यह महत्व बाकी रहा।

तायफ वाले जायदाद और ज़मीनों के मालिक थे उनके पास बड़े बाग़ और खेत थे। इस दौलत और खुशहाली ने उनके अन्दर अंहकार पैदा कर दिया था। कुर्आन पाक में आता है।

अनुवादः–"और हमने किसी बस्ती में कोई डराने वाला नहीं भेजा मगर वहां के ख़ुशहाल लोगों ने कहा कि जो चीज़ देकर तुम भेजे गए

हो, हम उसके क़ायल (समर्थक) नहीं, और (यह भी) कहने लगे कि हम बहुत सा माल और औलाद रखते हैं और हमको अज़ाब नहीं होगा। (सूरःबसा 34–35)

तायफ पहुंचकर सबसे पहले आप सक़ीफ के सरदारों से मिलने गए और उनके पास बैठकर उन्हें इस्लाम की दावत दी, लेकिन इसका आपको बहुत बुरा और कठोर जवाब मिला। उन्होंने आपका मज़ाक भी उड़ाया और शहर के ओबाशा लोगों तथा गुलामों को आप सल्ल० को सताने के लिए छोड़ दिया। यह लोग आपको गालियां देते, शोर मचाते और आप पर पत्थर फेंकते। इसी बेकसी और परेशानी में आप पनाह लेने के लिए एक खजूर की छाया में बैठे। तायफ में आपको जितना सताया गया वह मक्का की यातनाओं से कहीं अधिक था। तायफ वालों ने रास्ते के दोनों तरफ अपने आदमी खड़े कर दिए। आप एक क़दम भी उठाते तो किसी तरफ से पत्थर आप पर फेंका जाता। यहां तक कि आपके दोनों पैर ज़ख़्मों से लहूलुहान हो गए। उस समय सहज ही आपकी ज़बान पर यह दुआ जारी हुई–

अनुवादः– इलाही! अपनी कमज़ोरी, बे सरो सामानी, और लोगों में अपने अपमानित होने की बाबत तेरे सामने फरियाद करता हूं। तू सब रहम (दया) करने वालों से अधिक रहम करने वाला है। दलित और दीन दुखियों का मालिक तू ही है। मुझे किसके सुपुर्द किया जाता है, क्या किसी पराए कटुवादी के या उस दुश्मन के जो काम पर क़ाबू रखता है। अगर मुझ पर तेरा ग़ज़ब (क्रोध) नहीं तो मुझे इसकी परवाह नहीं लेकिन तेरी दया दृष्टि मेरे लिए अधिक विशाल है। मैं तेरी ज़ात के नूर (प्रकाश) से पनाह चाहता हूं, जिससे सारा अंधेरा रोशनी में बदल ज़ाता है और तेरा ग़ज़ब मुझ पर उतरे या तेरी नारज़ा मन्दी मुझ पर उतरे। मुझे तेरी ही रज़ामन्दी चाहिए और नेकी करने या बदी (बुराई) से बचने की ताक़त मुझे तेरी ही तरफ से मिलती है।

इस मौके पर अल्लाह पाक ने पहाड़ों के फरिश्ते को आपके पास भेजा उसने आप से इस बात की इजाज़त चाही कि वह उन दोनों पहाड़ों को जिनके बीच तायफ है मिला दे। आपने इरशाद फरमाया कि नहीं।

मुझे उम्मीद है कि इनकी सन्तान में से कोई ऐसा पैदा होगा जो एक अल्लाह की इबादत करेगा और उसके साथ किसी को शामिल न ठहराएगा।

जब उत्बा बिन रबिया और शैबा बिन रबिया ने आपकी यह हालत देखी तो उनका दिल कुछ नर्म पड़ा। उन दोनों ने अपने एक ईसाई गुलाम "अद्दास" को बुलाया और उस से कहा कि लो यह अंगूर का गुच्छा एक प्लेट में रखकर उस व्यक्ति के पास ले जाओ और कहो कि यह उनके खाने के लिए है। अद्दास ने ऐसा ही किया वह आपकी बात चीत तथा सदाचरण से प्रभावित होकर मुसलमान हो गया। अल्लाह के रसूल सल्ल0 जब तायफ से वापस मक्का आए तो कुरैश में आपके ख़िलाफ तथा आपको तकलीफें पहुंचाने का पहले जैसा ही हाल था।

मेराज का सफर

इसके बाद अल्लाह के रसूल सल्ल0 को मेराज हुई। आप रातों रात कुदरती ताक़त से मस्जिदे हरम (काबा) ले जाया गया वहां से मस्जिदे अक़्सा पहुंचाया गया इसके बाद जन्नत तथा सातों आसमानों की सैर, अल्लाह की निशानियां दिखायी गयीं, नबियों से मुलाकात की वह सभी बाते हुयी जिसके बार में कुर्आन में आया है कि:—

अनुवाद:— "उनकी आंख न तो और तरफ मायल (आकर्षित) हुई और न (हद से) आगे बढ़ी। उन्होंने अपने परवर दिगार की कितनी ही बड़ी निशानियां देखीं।" (सूर: अलनज्म 17—18)

यह अल्लाह की तरफ से आपकी आव भगत थी जो आपकी दिलदारी तथा तायफ की यातनाओं, अपमान और बेगानगी की क्षति पूर्ति के लिए थी जिसकी कठिन परीक्षा से आप गुज़रे थे।

जब सुबह हुई तब आपने लोगों को इस बात की ख़बर दी। कुरैश ने इस बात पर बहुत हैरत जताई और इसे ना मुमकिन बताया। आपको झुठलाया और आपका मज़ाक उड़ाया। हज़रत अबुबक्र ने यह सुनकर कहा कि अगर आपने ऐसी बात कही है तो सच ही कही है। तुमको इस पर हैरत क्यों है? अल्लाह की क़सम आपने तो मुझे बताया है कि "वही"

(आकाश वाणी) आपके पास दिन रात के किसी हिस्से में आसमान से ज़मीन तक आ जाती है। यह तो उससे भी कठिन है जिस पर तुम लोग हैरत कर रहे हो और मैं आप सल्ल0 की इस बात की पुष्टि करता हूं।

मेराज का वास्तविक महत्व

मेराज का सफर कोई सामान्य बात नहीं थी जिसमें आपको अल्लाह की बड़ी–बड़ी निशानियां दिखायीं गयीं और आसमान व ज़मीन की बादशाहत बेपर्दा हो कर आपके सामने आ गई। नुबूवत के इस ग़ैबी व आसमानी सफर में इसके अलावा भी अनेक रहस्य हैं, और इसमें बड़े दूरगामी इशारे किए गए हैं। मेराज के सफर के बारे में कुर्आने पाक की सूरः 'नज्म' व 'इसरा' दोनों यह एलान करती हैं कि रसूल अल्लाह सल्ल0 दोनों क़िबलों (काबा और मस्जिद अक़्सा) के नबी और दोनों दिशा में (पूर्व व पश्चिम) के इमाम (लीडर) और अपने से पहले हुए सभी नबियों के वारिस और बाद में आने वाली मानव जाति के पथ प्रदर्शक है। आपकी यह यात्रा काबा और मस्जिदे अक़्सा, मक्का और जेरूशलम को जोड़ती है। आपकी इमामत में सभी नबियों ने नमाज़ पढ़ी और वास्तव में यह बात आपके पैग़ाम की व्यापकता, आपकी चिरस्थायी इमामत तथा मानव जाति के हर वर्ग के लिए आपकी शिक्षाओं की उपयोगिता की दलील और निशानी थी। यह बात अल्लाह के रसूल सल्ल0 के व्यक्तित्व का सही ज्ञान कराती है। यह इस बात की तरफ भी इशारा करती है कि आपकी उम्मत का स्थान कितना ऊंचा है और उसे मानवता के कल्याण के लिए इस धरती पर क्या कुछ करना है। मेराज का सफर असल में इस बात का ऐलान करता है कि हज़रत मुहम्मद सल्ल0 का पैग़ाम विश्वव्यापी है। अगर आप कोई स्थानीय लीडर, किसी देश के नेता, किसी ख़ास नस्ल को बुराईयों तथा अधर्म से छुटकारा दिलाने वाले होते या किसी नई एवं महान कृति के संस्थापक होते तो आपको इस आसमानी मेराज की ज़रूरत न थी क्योंकि आपको न ज़मीन–आसमान की विशाल बादशाही की सैर की ज़रूरत थी न इसकी ज़रूरत थी कि आपके द्वारा धरती व आकाश का यह नया सम्बन्ध बने। उस समय

आपकी यह धरती यह माहौल और यह समाज आपके लिए काफी होता। इसे छोड़कर आपको किसी अन्य क्षेत्र की तरफ जाने की भी ज़रूरत न थी न कि आसामन और सिदरतुल मुन्तहा ☆ तक पहुंचने की या मस्जिद अक्सा जाने की जो आपके शहर से बहुत दूर तथा ईसाई धर्म और बलवान रोमन साम्राज्य के अधीन थी।

मेराज का सफर यह ऐलान करता है कि हज़रत मुहम्मद सल्ल0 उन राष्ट्रीय और राजनीतिक नेताओं की श्रंखला से कोई संबंध नहीं रखते जिनकी क्षमताओं तथा कोशिशों की सीमा उनके देश या उनके राष्ट्र तक सीमित रहती हैं और उससे सिर्फ उन्हीं नस्लों तथा कौमों को फायदा पहुंचता है जिससे उनका संबंध होता है और उसी वातावरण तक उनका असर बाक़ी रहता है जिसमें वह पैदा होते हैं। आपका संबंध अल्लाह के भेजे हुए नबियों की श्रंखला से है जो आसमान का पैग़ाम ज़मीन वालों को और कुदरत का पैग़ाम कुदरत के प्राणियों को पहुंचाते हैं, और उनसे पूरी इंसानियत (काल, देश और जाति के भेद भाव के बिना) गौरवान्वित होती है और उसकी किस्मत जाग उठती हैं।

☆ जन्नत के छाया भाग्य वृक्ष की तरफ इशारा है।

नमाज़ फर्ज़ होना

इस मौके पर अल्लाह ने आप पर और आपकी उम्मत पर पचास वक़्तों की नमाज़ फर्ज की। आप बराबर इसमें कमी का सवाल करते रहे यहां तक कि अल्लाह पाक ने इसको दिन व रात में पांच वक़्त सीमित कर दिया और यह ऐलान कर दिया कि जो ईमान के साथ यह नमाज़ें पढ़ेगा उसे 50 नमाज़ों का ही सवाब मिलेगा।

इस्लाम का रास्ता

अब अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने हज के ज़माने में अरब के कबीलों के सामने इस्लाम का प्रचार करना शुरू किया तथा उनकी इस काम में मदद चाही उन्हें संबोधित करते हुए आपने फरमाया, " ऐ बनी फुलां (अमूक)! मैं तुम्हारी तरफ अल्लाह का रसूल बना कर भेजा गया हूं जो तुम्हे अल्लाह की इबादत का हुक्म देता है कि तुम उसके साथ किसी

और को शरीक (सम्मिलित) न ठहराओ, और उन तमाम चीज़ों से जिन को तुम ने उनका हमसर बना लिया है और उनकी इबादत करते हो, सम्बन्ध तोड़ लो। उस पर ईमान लाओं उसकी पुष्टि करो और मेरी उस समय तक हिफाज़त करो जब तक अल्लाह ने जो चीज़ लेकर मुझे भेजा है वह मैं अच्छी तरह खोल कर बयान न कर दूं।

जब आप अपनी बात कह चुके तो अबु लहब खड़ा हुआ और कहने लगा—ऐ बनी फुलां! यह तुमको इस बात की दावत दे रहे हैं कि तुम "लात" व "उज़्ज़ा" की पूजा छोड़ दो और अपने मददगार जिन्नों से भी सम्बन्ध तोड़ करके उस बिदअत (नई–रीति) तथा भ्रष्टमार्ग को अपना लो जो वह लाए हैं। इस लिए तुम न इनकी बात मानना और न इनकी सुनना।

यह रास्ता जो हज़रत मुहम्मद सल्ल० तथा इस्लाम की तरफ जाता था कांटो और हर तरह के ख़तरों से भरा हुआ था जिस पर अपनी जान का ख़तरा मोल लिए बिना चलना और मंज़िल तक पहुंचना मुमकिन नहीं था।

हज़रत अब्दुल्ला बिन अब्बास रज़ी० ने हज़रत अबु ज़र गफ्फ़ारी रज़ी० के मक्का तक पहुंचने, अल्लाह के रसूल सल्ल० की सेवा में हाज़िर होने तथा इस्लाम कुबूल करने का जो वर्णन किया है उसमें इस बात की पुष्टि होती है। वह कहते हैं:—

"जब अबुज़र रज़ी० को हज़रत मुहम्मद सल्ल० के नबी होने की सूचना मिली तो उन्होंने अपने भाई से कहा कि तुम घाटी में जाओ और ज़रा उस आदमी का कुछ पता लगाओ जो यह दावा करता है कि उसके पास आसामान से 'वही' आती है। उसकी बात चीत सुनो और फिर आकर बताओ, वह गए। अल्लाह के रसूल सल्ल० से मिले आपकी बात सुनी, फिर वापस जाकर अबुज़र रज़ी० से कहा कि मैंने देखा कि वह बहुत प्रिय तथा उच्च आचरण की शिक्षा देते हैं, और ऐसा कलाम मैंने सुना जो शेर नहीं कहा जा सकता। उन्होंने कहा कि मैं जो कुछ जानना चाहता था इससे मेरी तृप्ति नहीं हुई फिर उन्होंने (अबुज़र) स्वयं सफर की तैयारी की और पानी का मश्कीज़ा (चमड़े का डोल) लेकर प्रस्थान

किया, मक्का पहुंचे। काबा शरीफ में पहुंचकर अल्लाह के रसूल सल्ल0 को तलाश करना शुरू किया। वह आपको पहचानते न थे और किसी से पूछना उचित नहीं समझा। इसी तलाश में रात हो गई। उस समय हज़रत अली रज़ी0 ने उन्हें देखा वह समझ गए कि यह कोई नया मुसाफिर है। वह आपके पीछे हो लिए, लेकिन किसी ने एक दूसरे से कुछ न पूछा। जब सुबह हुई तो अबुज़र अपना डोल और पोटली लेकर दोबारा उसी मस्जिद में पड़ गए और यह दिन भी उसी तरह गुज़र गया, हालांकि अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने उन्हें देख लिया लेकिन कुछ बात नहीं हुई। शाम हो गई और अबुज़र दोबारा अपने सोने की जगह चले गए। उस समय हज़रत अली रज़ी0 उनके पास से गुज़रे और दिल में सोचा—क्या अभी तक इस मुसाफिर को अपनी मंज़िल का पता नहीं मिला। तीसरे दिन हजरत अली उसी तरह उनके पास पहुंचे। उनको उठाया और कहा—तुम मुझे बताओगे कि क्या चीज़ तुम्हें यहां लाई है? अबुज़र ने कहा,"अगर तुम वादा करो कि तुम मुझे रास्ता दिखाओगे तो मैं बता सकता हूं।" जब हज़रत अली रज़ी0 ने यह वचन दिया तो अबुज़र उनके साथ चलने को तैयार हो गए। वह अल्लाह के रसूल सल्ल0 की सेवा में पहुंचे तो यह भी उनके साथ सेवा में हाज़िर हुए। आप ने उनसे फरमाया कि अपनी क़ौम में वापस जाओ और यह दावत उन लोगों को पहुंचाओं यहा तक कि मेरी बात अच्छी तरह फैल जाए। अबुज़र रज़ी0 ने कहा—उसकी क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है मैं उनके बीच चिल्ला चिल्ला कर यह दावत दूंगा। फिर निकल कर मस्जिदे हराम में आए और ऐलान किया।

अनुवादः—"मैं गवाही देता हूं कि अल्लाह एक है और मुहम्मद सल्ल0 अल्लाह के रसूल हैं।" यह सुन कर लोगों ने उन्हें घेर लिया और इतना मारा कि बेदम होकर ज़मीन पर लेट गए। इतने में हज़रत अब्बास रज़ी0 आए और उनको झुक कर देखा और लोगों से कहा—तुम जानते नहीं यह क़बीला गफ्फार से सम्बन्ध रखते हैं और तुम्हारे व्यापारियों का रास्ता जो शाम तक जाता है इसी क़बीले से होकर गुज़रता है। फिर उन्होंने अबुज़र को बचाया। दूसरे दिन भी उन्होंने यही किया और

उत्तेजि होकर लोगों ने उन्हें चोट पहुंचाई और हज़रत अब्बास रज़ी0 ने आकर उनकी मदद की।" (बुख़ारी शरीफ)

अन्सार इस्लाम की परिधि में

अल्लाह के रसूल सल्ल0 हज के ज़माने में इस्लाम के प्रचार–अभियान पर निकलें। 'अक़बा' ☆ के पास क़बीला "ख़ज़रज" के कुछ अन्सार आप से मिले। आपने उन्हें इस्लाम की दावत दी और क़ुर्आन की तिलावत की। यह लोग मदीने में यहूदियों के पड़ोस में रहते थे उन से इन लोगों ने सुना था कि निकट भविष्य में कोई नबी आने वाला है। वह आपस में एक दूसरे से कहने लगे–वल्लाह! यह वही नबी मालूम होते हैं, जिनकी ख़बर हमको यहूद देते थे। यह सोच कर कि मुसलमान होने में कोई उनसे आगे बढ़ न जाए, उन लोगों ने उसी समय इस्लाम क़ुबूल किया। आप से उन्होंने बताया– हम अपनी बहुत ही लड़ाकू, फूट डालने वाली क़ौम को छोड़कर आए हैं। शायद आपके द्वारा अल्लाह उनको जोड़ दे। हम यहां से जाकर उनको यह बात बताएंगे और इसकी दावत देंगे। आप उन पर भी वह चीज़ पेश करें जिसको हमने क़ुबूल किया। अगर अल्लाह उन्हें आपके हाथों संगठित कर दे तो आपसे अधिक इज़्ज़त वाला फिर कोई न होगा।

यह लोग इस्लाम लाने के बाद मदीना वापस पहुंचे तो अपने दूसरे भाईयों से आपके बारे में बताया और उनको भी इस्लाम की दावत दी। इस तरह उनकी क़ौम और बिरादरी में इस्लाम का ख़ूब प्रचार हुआ, और अन्सार का कोई घर ऐसा न बचा जहां आप की चर्चा न हो।

☆ घाटी, यह मिना के मक्का की तरफर वाली ढाल पर आड़ वाली एक जगह थी। यह जगह 'जमरतुल कुबरा' के पास ही थी।

अक़बा की पहली बैअत (शपथ) ☆

अगले साल हज के मौक़े पर अन्सार के 12 लोग आपसे अक़बा की बैअत के मौके पर मिले और आप के हाथ पर चोरी, बलात्कार, सन्तानों की हत्या से बचने, अच्छी बातों के करने तथा तौहीद पर बैअत की। जब वह वापस जाने लगे तो अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने उनके

साथ मुसअब बिन उमैर रज़ी0 को कर दिया और उन्हें निर्देश दिया कि उनको कुर्आन पाक पढ़ाएं। इस्लाम की शिक्षा दें और दीन की बातें बताएं। यही वजह है कि उमैर रज़ी0 को मदीना में "मुक़री" (पढ़ाने वाला) कहा जाता है वह असद बिन ज़रारा के यहां मेहमान थे और नमाज़ भी पढ़ाते थे।

☆ अल्लाह के किसी परम भक्त के हाथ में हाथ देकर चोरी बलात्कार, छोटे बड़े गुनाहों से बचने, अच्छी बातों का पालन करने तथा अल्लाह को एक मानने की प्रतिज्ञा। (अनु0)

अन्सार के मुसलमान होने के कारण

अल्लाह का करना कि ऐसे नाज़ुक दौर में उसने अपने रसूल और अपने दीन के समर्थन व मदद के लिए "औस" व "ख़ज़रज" ☆ को खड़ा कर दिया। यह यसरब (मदीना) के दो बड़े और अहम क़बीलें थे। उनको अपने समकालीन हिजाज़ वासियों पर इस्लाम लाने की बाज़ी ले जाने का सौभाग्य हासिल हुआ। उन्होंने उस समय इस दीन को अपने सीने से लगाया जब अरब के सब क़बीले ख़ास तौर पर क़ुरैश ने उससे बिल्कुल आंखें फेर ली थीं। सच है "और अल्लाह जिसे चाहता है सीधा रास्ता दिखाता है।"

अल्लाह की हिकमत से विभिन्न कारणों में "औस" व "ख़ज़रज" कई बातों में क़ुरैश से अच्छे थे। वह उदार एवं रहमदिल थे। अहंकार, उग्रवादिता तथा सच को न मानने की बुराई उनमें न थी। इसका इशारा अल्लाह के रसूल सल्ल0 के उस कथन में मिलता है जो आपने यमन के एक दल से मिलने के बाद फरमाया था। आपने फरमाया, "तुम्हारे यमनवासी, आए हैं जो बड़े उदार और रहमदिल हैं।" यह दोनों क़बीले मूलतः यमन से सम्बन्ध रखते थे। प्राचीन समय में उनके पूर्वज वहीं से हिजाज आए थे। कुर्आन पाक में आता है।

अनुवादः– और (उन लोगों के लिए भी) जो मुहाजरीन से पहले (हिजरत के) घर (अर्थात मदीना) में थे और ईमान में (स्थिर) रहे, और जो लोग हिजरत करके उनके पास आते हैं उनसे मुहब्बत करते हैं और जो कुछ उनको मिला उससे अपने दिल में कुछ इच्छा और बेचैनी नहीं पाते और उनको अपनी जानों से ज़्यादा प्यार करते भले ही वह खुद तंगी में

हों। (सूरः हश्र–9)

☆ औस व खजरज (अज़्द) के दो कबीले थे जो कहतान की शाखा से सम्बन्ध रखते थे। उनके पूर्वज यमन की तबाही के बाद 120 ई0 पूर्व में हिजाज आए थे।

अन्सार के इस्लाम लाने की एक वजह यह भी थी कि आपस की निरन्तर लड़ाईयों ने उन्हें चूर–चूर कर दिया था। 'बोआस' की लड़ाई को अभी ज़्यादा दिन नहीं गुज़रे थे, और उसके बुरे परिणाम उनके सामने थे। अब उनके अन्दर मिल जुल कर अमन से रहने की इच्छा प्रबल हो गई थी। उनके यह शब्द उनकी आत्मा को बताते हैं "हम अपनी क़ौम को छोड़कर आए हैं। किसी अन्य क़ौम में इतनी अधिक बुराई, फसाद और आपस की दुश्मनी नहीं जितनी उनके अन्दर है। शायद अल्लाह आपके द्वारा उनको संगठित कर दे। अगर अल्लाह उनको संगठित कर देगा तो फिर आपसे अधिक इज़्ज़त वाला कोई न होगा।" हज़रत आयशा रज़ी0 फरमाती हैं–' बुआस की जंग अल्लाह के रसूल सल्ल0 के लिए एक कुदरती मदद तथा मदीने की हिजरत की प्रस्तावना थी।'

दूसरी वजह यह थी कि कुरैश तथा अन्य तमाम अरबों का संबन्ध नुबूवत से बहुत दिनों से टूटा था और लम्बा समय गुज़र जाने की वजह से वह नुबूवत के अर्थ से बिल्कुल अपरिचित हो गए थे। उनकी अज्ञानता और निरक्षरता चरम सीमा पर थी। बुतों की पूजा उन्हें सबसे ज़्यादा प्यारी थी। वह उन कौमों (यहूदी और ईसाई) से बहुत दूर थे जो नबियों और आसमानी सहीफों (परिवर्तित और संशोधित ही सही) से अपना रिश्ता जोड़े हुए थे। कुर्आन पाक में आता है।:–

अनुवादः– "ताकि तुम लोगों को जिनके बाप दादा को ख़बरदार नहीं किया गया था, ख़बरदार कर दो। यह ग़फलत में पड़े हुए हैं।" (सूरः यासीन –6)

इसके विपरीत औस व ख़ज़रज यहूद को आपस में नबियों के बारे में बातचीत करते हुए तथा तौरेत की तिलावत करते हुए बराबर देखते और सुनते थे। बल्कि यहूदी अक्सर उनको ख़बर दिया करते थे कि आने वाले समय में एक नबी आने वाला है हम उसके साथ मिलकर तुमको इस तरह क़त्ल करेंगे जिस तरह "आद" और "इरम" क़त्ल किए गए।

कुर्आन पाक में आता है।

अनुवादः– "और जब अल्लाह के यहां से उनके पास किताब आई जो उनकी आसमानी किताब की भी तस्दीक़ (पुष्टि) करती है और वह पहले (हमेशा) काफ़िरों पर विजय मांगा करते थे तो जिस चीज़ को वह ख़ूब पहचानते थे जब उनके पास आ पहुंची तो उससे काफ़िर हो गए। बस काफ़िरों पर अल्लाह की लानत। (सूरः बक़रः–89)

औस और ख़ज़रज तथा मदीने के अन्य आदिवासी जो मुशरिक और बुत पूजने वाले थे, धार्मिक बातों, पारिभाषिक शब्दावली और अल्लाह की सुन्नत से उतने अनजान न थे जितने कि कुरैश और उनके पड़ोसी क़बीले वक़्त की वजह से हो गए थे। औस व ख़ज़रज लम्बे समय से यहूदियों के साथ रहने बसने की वजह से धर्म की बातों, पारिभाषिक शब्दों, नबियों के नामों, घटना चक्रों के इतिहास तथा हिदायत (पथ–प्रदर्शन) के आसमानी बंदोबस्त से परिचित हो गए थे। उनका, दिन रात यहूदियों के साथ उठना बैठना होता था। इन बातों से उनको हज के मौक़े पर मक्का में अल्लाह के रसूल सल्ल0 के हाथों पर इस्लाम लाने में सुविधा हुई। आप सल्ल0 ने जब उन्हें इस्लाम की दावत दी तो ऐसा मालूम हुआ कि अचानक उनकी आंखों से पर्दा उठ गया और मानो वह पहले से इसके लिए तैयार थे।

यसरब की विशेषताएं

हिजरत के घर तथा इस्लाम की दावत के प्रमुख केन्द्र के रूप में मदीने के चयन में, मदीना वासियों की इज़्ज़त बढ़ाने तथा उन रहस्यों के अलावा जिनको अल्लाह के सिवा कोई नहीं जानता, एक हिकमत यह भी थी कि मदीना को सामाजिक तथा भौगोलिक निगाह से एक मज़बूत क़िले की हैसियत हासिल थी।

अरब प्रायद्वीप का कोई अन्य क़रीब का शहर इसके बराबर न था। मदीना के पश्चिम में "हर्रतुलवबरा"☆ स्थित है जो एक सुरक्षा–रेखा का काम करता है। पूर्व में 'हर्र एवाकिम' इसे अपने घेरे में लिए हुए था। मदीने का उत्तरी हिस्सा अकेला रास्ता था जो किसी के हमले के लिए

खुला था (यह वही इलाका है जहां सन 5 हिजरी में 'अहज़ाब की लड़ाई के मौके पर अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने खन्दक तैयार करने का हुक्म दिया था।) मदीने की अन्य सीमाओं पर ख़जूर के घने बाग़ और खेत थे। अगर किसी हमला करने वाली फ़ौज को इससे गुज़रना होता तो उसके रास्ते में ऐसी पगडंडियां और पतले रास्ते पड़ते थे कि इन्हें पूरी साज सज्जा तथा फौजी ताम–झाम के साथ पार करना आसान काम न था और मामूली फौजी चौकियां इस काम में रुकावट डालने के लिए काफ़ी थीं।

इब्न इस्हाक़ कहते हैं, "मदीना की एक सीमा खुली हुई थी बाक़ी सभी सीमाएं आबादी तथा खजूर के घने बाग़ों से एक दूसरे से मिल गई थीं और कोई दुश्मन इसमें से होकर आगे नहीं बढ़ सकता था।"

☆ 'हर्रा' या लावा काले झुलसे हुए आड़े तिरछे पत्थरों के इलाके को कहते हैं। वह भू–आकृति है जो ज्वाला मुखी फूटने के समय लावा के बहकर जमा हो जाने से बनती है। इस क्षेत्र में ऊंटों और घोड़ों का चलना या किसी भी सेना टुकड़ी का गुज़रना तो दूर रहा किसी एक व्यक्ति का पैदल चलना भी दूभर है। मदीना के पूर्व तथा पश्चिम स्थित दर्रे उसकी बाहरी हमलों से सुरक्षा करते हैं मुजद्दीन फिरोज़ाबादी की किताब "अल्मग़ानिम अल्मताबा फी मआलिम टाबा" देखें।

हिजरत के पहले अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने भी मदीना के चयन में शायद अल्लाह की इसी हिकमत और मसलहत की तरफ इशारा फरमाया था, 'मुझे तुम्हारी हिजरत का घर दिखाया गया है। यह खजूर के बाग़ों वाला इलाका है वह लाबतैन (जले हुए क्रम विहीन पत्थरों वाले दो इलाके) के बीच स्थित है।" इसी के बाद जिसको हिजरत करना थी उसने मदीना हिजरत की।

मदीने के दो क़बीले औस व ख़ज़रज देश भक्ति, स्वाभिमान घुड़ सवारी और बहादुरी में विशिष्ट स्थान रखते थे। यह आज़ादी के माहिर और आदी थे। उन्होंने न कभी किसी के सामने अपना सर झुकाया था न किसी बड़े क़बीले हुकूमत को टैक्स और तावान अदा किया था। इसकी विवेचना औस के सरदार साद बिन मआज़ रज़ि0 के उस वाक्य से होती है जो उन्होंने अल्लाह के रसूल सल्ल0 से गज़वा–ए–ख़न्दक़ (ख़न्दक़ की लड़ाई) के मौके पर कहा था– 'जब हम और यह शिर्क व बुतपरस्ती से

घिरे थे, न हम अल्लाह की इबादत करते थे न उसको पहचानते थे, उस समय भी यह मजाल न थी कि मेहमानदारी या क़ीमत दिए बिना यह मदीने की एक खजूर खा लें।"

इब्न खल्दून लिखते हैं।

"यह दोनों क़बीले यसरब में यहूदियों पर ग़ालिब थे तथा इज़्ज़त, शान व शौकत में नाम पैदा किए हुए थे। उनके करीब जो मुज़र के क़बीले आबाद थे वह भी उन ही की मिल्लत (अधीन) में थे।"

मशहूर अरब लेखक इब्न अब्द रब्बा के अनुसार, "अन्सार क़बीला अज़्द से है। यह औस व ख़जरज कहलाते हैं। हारिसा बिन अम्र बिन आमिर के दो बेटों से इन की नस्ल चली है। यह लोग तमाम लोगों में सबसे अधिक स्वाभिमानी और सबसे अधिक हौसले वाले थे और किसी बादशाह या हुकूमत को टैक्स अदा करने वाले नहीं थे।" इसके अलावा बनी हाशिम का बनू अदी बिन अल्नज्जार से ननिहाली सम्बन्ध था। हाशिम ने उनकी एक लड़की सलमा बिन्त अम्र से शादी की थी।

हाशिम के एक लड़का अब्दुल मुत्तलिब पैदा हुआ। हाशिम ने उसको माँ के पास छोड़ दिया जब लड़का बड़ा हुआ तो उसको उसके चचा मक्का ले आए। अरब के सामाजिक जीवन में रिश्तेदारियों और सम्बन्धों का बहुत महत्व था और उसकी अनदेखी नहीं की जा सकती थी। अबु अय्यूब अन्सारी रज़ी० जिनके घर मदीना पहुंच कर अल्लाह के रसूल सल्ल० ठहरे थे, का सम्बन्ध बनी अदी बिन अल्नज्जार से था।

औस व ख़ज़रज कहतान की नस्ल से थे। मुहाजरीन और जो लोग मक्का तथा उसके करीबी इलाकों में उनसे पहले इस्लाम ला चुके थे वह अदनान की नस्ल से थे जब अल्लाह के रसूल सल्ल० ने मदीना हिजरत की और अन्सार ने आपका समर्थन किया तो इस तरह अदनान और कहतान दोनों क़बीले इस्लाम के झण्डे तले एक हो गए। अज्ञानता के युग में इन के बीच बड़ी खींच तान थी। इस्लाम की बरकत से शैतान को इनमें फूट डालने का रास्ता न मिल सका।

इन वजहों और विशेषताओं को देखते हुए यसरब अल्लाह के रसूल सल्ल० तथा आपके साथियों की हिजरत के लिए सबसे बेहतर जगह थी।

इस शहर को यह हक़ हासिल था कि इसे इस्लामी दावत का केन्द्र बनाया जाए यहां तक कि इस्लाम ताक़तवर और सक्षम होकर अरब प्रायद्वीप और फिर उस समय के समस्त सभ्य संसार पर छा जाए।

मदीना में इस्लाम का विकास

अब अन्सार के घरानों में इस्लाम का प्रचार शुरू हुआ। पहले साद बिन मआज़, उसैद बिन हुज़ैर जो औस की शाखा से थे और अपनी क़ौम के सरदार थे, इस्लाम लाए। इसमें पहले मुसलमान होने वालों की हिकमत, उनके ईमान, उनकी रहम दिली तथा मुसअब बिन उमैर के सुरूचिपूर्ण प्रचार का बहुत दख़ल था। इसके बाद बनी अब्दुल अशहल ने भी इस्लाम कुबूल किया और आख़िर में अन्सार के घरों में से कोई घर ऐसा बाकी न बचा जहां कुछ मर्द और औरतें मुसलमान न हों।

अक़बा की दूसरी बैअत

दूसरे साल मुसअब बिन उमैर रज़ी0 मक्का वापस हुए और अन्सार के कुछ मुसलमान, मुशरिकों की एक टोली के साथ जो हज के लिए जा रही थी, मक्का पहुंचे और अल्लाह के रसूल सल्ल0 से अक़बा में बैअत का वचन दिया। जब वह हज कर चुके और एक तिहाई रात गुज़र गई तो वह अक़बा के निकट एक घाटी में जमा हुए उन सबकी संख्या 73 थी जिनमें दो औरतें भी शामिल थीं। आप तशरीफ लाए आपके साथ आपके चचा अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब भी थे वह उस समय तक मुसलमान नहीं हुए थे।

अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने उनसे बात–चीत की। क़ुर्आन पाक उन को पढ़कर सुनाया और अल्लाह की तरफ आने की दावत दी और इस्लाम लाने का शौक़ दिलाया फिर आपने फरमाया कि मैं तुमसे इस पर बैअत लेता हूं कि तुम मेरे साथ सुरक्षा का वही मामला करोगे जो अपने परिवार के साथ करते हो। उन्होंने आपसे बैअत की और आप से यह वचन लिया कि आप उन्हें बे–यार व मददगार न छोड़ेंगे, और अपनी क़ौम की तरफ वापस हो जाएंगे। आपने उनको वचन दिया और फरमाया कि मैं, तुमसे हूं और तुम मुझसे हो जिससे तुम जंग करोगे उससे मैं भी

जंग करूंगा, जिससे तुम सुलह करोगे उससे मैं भी सुलह करूंगा फिर अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने उन में से 12 ज़िम्मेदार लोगों का चयन किया 9 ख़ज़रज और 3 औस के।

मदीना हिजरत करने की इजाज़त

जब अन्सार के इस क़बीले ने अल्लाह के रसूल सल्ल0 से बैअत कर ली और आप तथा आपके साथियों का समर्थन करने का वचन दिया तो बहुत से मुसलमान उनकी पनाह में आ गए। रसूल अल्लाह सल्ल0 ने उन तमाम मुसलमानों को जो आपके साथ मक्का में थे मदीना की हिजरत करने और अन्सार से मिल जाने का हुक्म दिया और फरमाया, "अल्लाह ने तुम्हारे लिए कुछ भाई और घरबार का बंदोबस्त कर दिया है जहां तुम अमन के साथ रह सकते हो।" यह सुन कर लोग टोलियां बनाकर हिजरत करने लगे। खुद अल्लाह के रसूल सल्ल0 मक्का में ठहर कर हिजरत के बारे में अल्लाह के हुक्म का इंतेज़ार करने लगे।

मक्का से मुसलमानों की हिंजरत कोई हंसी खेल न था जिसे कुरैश ठंडे दिल बर्दाश्त कर लेते। उन्होंने मुसलमानों के रास्ते में तरह–तरह की रुकावटें खड़ी कर दीं और मुहाजिरों को तकलीफें देने लगे, लेकिन मुहाजिर अपनी धुन के पक्के और इरादे के सच्चे थे वह किसी क़ीमत पर मक्का में रहना पसन्द न करते थे। इस लिए किसी को अपनी पत्नी और बच्चों को मक्का में छोड़कर अकेले जाना पड़ा जैसा कि अबु सलमा रज़ी0 ने किया है। किसी को अपनी उम्र भर की कमाई छोड़ना पड़ी जैसा कि सुहैब रज़ी0 ने किया।

उम्मे सलमा रज़ी0 खुद बयान करती हैं कि अबु सलमा रज़ी0 ने मदीना हिजरत करने का फ़ैसला कर लिया तो सफ़र के लिए अपना ऊंट तैयार किया। मुझको उस पर सवार कराया और मेरे लड़के सलमा बिन अबी सलमा को मेरी गोद में दे दिया। फिर ऊंट की नकेल हाथ में ली और चले। जब बनी अल्मुग़ीरा के कुछ लोगों की नज़र उन पर पड़ी तो वह उनके पास आए और कहने लगे तुम्हारी हद तक ठीक है तुम अपने को बचा कर जा रहे हो। इन बीबी को हम तुम्हारे साथ कैसे जाने दें

सकते हैं। यह कहकर उन्होंने ऊंट की नकेल उनके हाथ से छीन ली और मुझे अपने साथ ले गए। यह देखकर बनू अब्दुल असद जो अबु सलमा के समर्थक थे, बहुत उत्तेजित हुए। उन्होंने कहा अल्लाह की क़सम तुमने इसको हमारे भाई से छीन लिया लेकिन हम अपने लड़के को अब उनके पास बिल्कुल नहीं छोड़ेंगे। इसके बाद दोनों में मेरे बच्चे के लिए खींच-तान शुरू हो गई, और दोनों उसे अपनी तरफ खींचने लगे यहां तक कि उसका हाथ उखड़ गया। बनू अब्दुल असद उसको छीन लेने में कामयाब हो गए और उसको अपने साथ ले गए। बनू अल्मुग़ीरा ने मुझे अपनी क़ैद में कर लिया। मेरे पति मदीना जा चुके थे।

इस तरह मेरे बेटे, मेरे पति और मैं एक दूसरे से अलग हो गए। मैं हर सुबह को बाहर आती और "अब्तह" में बैठ जाती और शाम तक रोती रहती। इस तरह एक साल गुज़र गया। एक दिन बनू अल्मुग़ीरा ही में से मेरे एक चचेरे भाई की नज़र मुझ पर पड़ी। मेरी हालत देखकर उसे दया आयी और उसने बनू अल्मुग़ीरा से कहा कि इस ग़रीब को क्यों नहीं छोड़ देते। तुमने इसे अपनी पति और बेटे दोनों से अलग कर दिया है। वह कहने लगे-अगर तुम्हारा जी चाहे तो अपने पति के पास चली जाओ। उस समय बनू अब्दुल असद ने मेरा लड़का मुझे वापस कर दिया। मैंने अपना ऊंट तैयार किया। लड़के को गोद लिया और मदीने में अपने पति की तलाश के लिए चल पड़ी। मेरे साथ कोई और न था। जब मैं तनीम तक पहुंची तो मेरी मुलाकात उस्मान बिन तलहा से हो गई जो बनी अब्दुलदार में से थे। वह देखते ही बोले, 'अबी उमैय्या की लड़की कहां जा रही हो!? मैंने कहा- मदीने में अपने पति के पास जाना चाहती हूं। उन्होंने कहा- तुम्हारे साथ कोई है? मैंने जवाब दिया-मेरे साथ अल्लाह और इस बच्चे के सिवा कोई नहीं है। वह कहने लगे अल्लाह की क़सम तुम्हें मंज़िल पर पहुंचना आसान नहीं है। उन्होंने ऊंट की नकेल अपने हाथ में ले ली और मुझे ले कर आगे बढ़े। अल्लाह की क़सम जिन लोगों से अब तक मेरा वास्ता पड़ा है मैंने किसी को भी उनसे अधिक शरीफ और रहम दिल नहीं पाया जब कोई मंज़िल आती और रुकना पड़ता तो वह ऊंट के पास आकर सामान उतारते। फिर

किसी पेड़ से उसे बांधते और किसी पेड़ की छाया में लेट जाते। जब शाम होती और चलने का समय आता तो उठते, ऊंट को तैयार करते सामान लादते फिर वहां से कुछ दूर हट जाते और मुझसे कहते कि बैठ जाओ जब मैं अच्छी तरह बैठ जाती तो आकर उसकी नकेल थाम लेते और इसी तरह दूसरी मंज़िल तक पहुंचाते। इस तरह उन्होंने मुझे मदीना पहुंचाया। जब उनकी नजर बनी अम्र बिन औफ के गांव 'कुबा' पर पड़ी तो मुझसे कहने लगे कि तुम्हारे पति इसी गांव में हैं। (अबु सलमा रज़ी० वहीं ठहरे थे) अब तुम अल्लाह का नाम लेकर वहां चली जाओ। यह कहकर उन्होंने मुझे विदा किया और ख़ुद मक्का के लिए वापस हो गए।

वह कहती थीं कि इस्लाम में किसी घराने को वह तकलीफें नहीं उठानी पड़ीं जो अबु सलमा के घर वालों ने उठाई हैं, और मैंने किसी व्यक्ति को उस्मान बिन तलहा से ज़्यादा शरीफ और बहादुर नहीं देखा। ☆

☆ उस्मान बिन तलहा रज़ी० हुदैबिया की सुलह के बाद इस्लाम लाए। मक्का की विजय के समय अल्लाह के रसूल सल्ल० ने काबा की कुंजी उनके हवाले की।

जब सुहैब रज़ी० ने हिजरत का इरादा किया तो कुरैश के कुफ़्फार ने उनसे कहा कि तुम एक भिखारी की हैसियत से हमारे पास आए थे, हमारे यहां रह कर तुम इतने मालदार बन गए अब तुम चाहते हो कि अपने सारे सामान तथा माल व जान के साथ यहां से निकल जाओ। अल्लाह की क़सम यह नहीं हो सकता। सुहैब रज़ी० ने उनसे कहा कि अगर मैं यह माल व दौलत तुम्हारे हवाले कर दूं तो क्या तुम मुझे जाने दोगे? उन्होंने कहा– हां। सुहैब रज़ी० ने जवाब दिया कि मैं यह सारा माल तुम्हें देता हूं। जब अल्लाह के रसूल सल्ल० को इसकी सूचना मिली तो आपने फरमाया– सुहैब फायदे में रहे। सुहैब फायदे में रहे।

इस मौके पर जिन लोगों ने मदीना हिजरत की उनमें हज़रत उमर रज़ी०, हज़रत तलहा, हज़रज जैद बिन हारिस, हज़रत अब्दुलर्रहमान बिन औफ, हज़रत जुबैर बिन अलअवाम, हज़रत अबु हुज़ैफा, हज़रत उस्मान बिन अफ्फान, आदि शामिल थे। इसके बाद हिजरत का एक सिलसिला कायम हो गया और रसूल अल्लाह सल्ल० के साथ मक्का में दो

आदमियों को छोड़कर (हज़रत अबुबक्र रज़ी0, हज़रत अली रज़ी0) सिर्फ वही बाक़ी बचा जो किसी मजबूरी से नहीं जा सका या वह जो किसी आज़माइश अथावा फितना में पड़ गया।

रसूल अल्लाह सल्ल0 के खिलाफ कुरैश की साज़िश

जब कुरैश ने देखा कि मदीना में अल्लाह के रसूल के इतने अधिक समर्थक व मददगार हो गए हैं और वहां कोई ज़ोर नहीं चल सकता तो उन्होंने सोचा कि अगर आप मदीना गए तो फिर आप पर उनका कोई बस नहीं चल सकेगा। यह सोचकर वह सब लोग 'दारुल नदवा' में (जो असल में कुसैई बिन किलाब का घर था और कुरैश अपने सारे महत्वपूर्ण मामले यहीं तय करते थे) जमा हुए और इस समस्या पर विचार किया गया। इस मौके पर कुरैश के सब प्रमुख सरदार मौजूद थे।

आख़िर में इस बात पर सभी सहमत हुए कि हर कबीले से एक बहादुर ऊंचे वंश का जवान चुना जाए और वह सब मिलकर एक बारगी अल्लाह के रसूल सल्ल0 पर हमला करें। इस तरह यह ख़ून सारे क़बीलों में बंट जाएगा और किसी एक पर इसकी ज़िम्मेदारी न होगी, और बनी अब्द मनाफ सारी कौम से जंग का ख़तरा मोल न लेंगे। इसके बाद अलग–अलग हो गए। अल्लाह पाक ने अपने प्यारे रसूल सल्ल0 को इस साज़िश से आगाह कर दिया। आपने हज़रत अली रज़ी0 को हुक्म दिया कि वह आपकी चादर ओढ़ कर आपके बिस्तर पर सो जाएं। आपने यह भी फरमाया कि तुमको कोई नुक़सान बिल्कुल न पहुंचेगा।

इधर यह पूरी पार्टी आपके दरवाज़े पर हमले के लिए पूरी तरह तैयार खड़ी थी। आप बाहर आए और थोड़ी सी मिट्टी अपने हाथ में ले ली। उसी समय अल्लाह ने आपकी ताक में खड़े कुरैश की निगाह ख़त्म कर दी। आप यह मिट्टी उनके सरों पर फेंकते हुए और सूरः यासीन की आयतें 'फअग़शैना हुम फुहम ला युबसिरून' तक तिलावत करते हुए साफ़ उनके सामने से गुज़र गए और किसी को पता भी न चला।

इस बीच किसी आंने वाले ने पूछा कि तुम लोग किस चीज़ के इंतेज़ार में खड़े हो ? उन्होंने कहा– मुहम्मद (सल्ल0) के इंतेज़ार में।

उसने कहा कि ना मुरादों वह तो जा चुके हैं। उन लोगों ने अंदर झांक कर देखा कोई व्यक्ति बिस्तर पर लेटा सो रहा है। उनको विश्वास हो गया कि हो न हो यह मुहम्मद (सल्ल0) हैं। सुबह हुई तो हज़रत अली रज़ी0 बिस्तर से उठे। यह देखकर कुरैश लज्जित हुए और निराश होकर वापस हो गए।

रसूल अल्लाह सल्ल0 की मदीना हिजरत

रसूल अल्लाह सल्ल0 हज़रत अबुबक्र रज़ी0 के पास गए, और फ़रमाया कि अल्लाह ने मुझे यहां से हिजरत करने की इजाज़त प्रदान की है। हज़रत अबुबक्र रज़ी0 ने कहा– या रसूल अल्लाह मैं आपके साथ चलना चाहता हूं। आपने फ़रमाया– हां, तुम ही मेरे साथ चलोगे। हज़रत अबुबक्र रज़ी0 यह सुनकर ख़ुशी से रो पड़े। इसके बाद उन्होंने दो सवारियां पेश कीं। उन्होंने अब्दुल्लाह बिन उरैक़ित को गाइड के तौर पर मेहनताने पर साथ ले लिया।

विचित्र विरोधाभास

कुरैश अल्लाह के रसूल सल्ल0 से कठोर दुश्मनी के बावजूद आपकी अमानतदारी, सच्चाई और आपकी उदारता एवं विशालता पर पूरा भरोसा करते थे। पूरे मक्का में अगर किसी को अपनी चीज़ खोने या लुट जाने का डर होता था तो वह अपनी चीज़ अल्लाह के रसूल सल्ल0 के पास रखता था। इस तरह आपके पास अनेक धरोहर जमा हो गयी थीं। आपने हज़रत अली रज़ी0 को इसका ज़िम्मेदार बनाया कि वह उस समय तक मक्का में रहें जब तक यह अमानतें आपकी तरफ से अदा न कर दी जाएं। कुर्आन में अल्लाह पाक का इरशाद है।:–

अनुवाद:– "हमको मालूम है कि इन (काफ़िरों) की बातें तुम्हें रंज पहुंचाती हैं (मगर) यह तुम्हें झूठा नहीं कहते बल्कि ज़ालिम अल्लाह की आयतों से इन्कार करते हैं।" (सूर: अनआम–33)

हिजरत से एक सबक़

अल्लाह के रसूल सल्ल0 की हिजरत से सबसे पहली बात यह साबित यह होती है कि दावत (प्रचार) व विश्वास आस्था की ख़ातिर हर

प्यारी से प्यारी चीज़ को बिना झिझक कुर्बान किया जा सकता है लेकिन दावत और आस्था को किसी प्यारी चीज़ को हासिल करने के लिए छोड़ा नहीं जा सकता।

मक्का अल्लाह के रसूल सल्ल0 और आपके साथियों की जन्म–भूमि होने के अलावा उनके लिए बड़ा आकर्षण रखता था क्योंकि इसी शहर में अल्लाह का घर 'काबा' है जिसकी मुहब्बत उनकी नस–नस में रच बस गई थी, लेकिन इनमें से कोई एक बात भी उनके रास्ते में रूकावट न बन सकी। मानव स्वभाव की एक सच्ची झलक हमें अल्लाह के रसूल सल्ल0 के उस वाक्य में मिलती है जो आपने हिजरत करते समय मक्का नगरी को सम्बोधित करते हुए कहा था। आपने कहा, " तू कितना अच्छा शहर है और मुझे कितना प्यारा है। अगर मेरी क़ौम मुझे यहां से न निकालती तो मैं तेरे सिवा किसी और जगह वास न करता।"

यह अल्लाह के इस फरमान पर अमल था।

अनुवादः– "ऐ मेरे बन्दों जो ईमान लाए हो, मेरी ज़मीन विशाल है, तो मेरी ही इबादत करो। (सूरः अन्कबूत–56)

ग़ारे सौर की तरफ

अल्लाह के रसूल सल्ल0 और हज़रत अबुबक्र मक्का से छिपते–छिपते रवाना हुए। अबुबक्र रज़ी0 ने अपने लड़के अब्दुल्लाह को निर्देश दिया कि वह ज़रा ख़बर रखें कि लोग उनके बारे में क्या साज़िश रचते हैं और अपने गुलाम आमिर बिन फुहैरा को आदेश दिया कि दूध पहुंचा दिया करें। उनकी बेटी असमा खाना पहुंचाया करती थीं।

अनोखा प्यार

मुहब्बत की किरन जन्नत की वह रोशनी है जिससे आत्मा रोशन होती है। वह आदिकाल से जल रही है और अपने आशिक से किसी समय ग़ाफिल नहीं होती और उसके लिए छोटे से छोटे ख़तरे को महसूस कर लेती है। इस सफर में अल्लाह के रसूल सल्ल0 के साथ हज़रत अबुबक्र रज़ी0 का कुछ यही हाल था। इस लिए इस बात का उल्लेख मिलता है कि जब अल्लाह के रसूल सल्ल0 ग़ार की तरफ

रवाना हुए तो अबुबक्र रज़ी0 चलने में कभी आपसे आगे रहते कभी पीछे चलने लगते। अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने इसको महसूस कर लिया और कहा कि अबुबक्र क्या बात है कभी तुम मेरे पीछे चलते हो और कभी आगे? उन्होंने कहा– या रसूल अल्लाह मुझे जब यह ख़्याल आता है कि कोई हमारा पीछा तो नहीं कर रहा है तो मैं पीछे चलने लगता हूं फिर किसी घात का ख़तरा होता है तो आगे आ जाता हूं। जब दोनों ग़ार तक पहुंच गए तो हज़रत अबुबक्र ने कहा–या रसूल अल्लाह सल्ल0 आप ज़रा ठहरें मैं ग़ार को देखभाल लूं और साफ कर लूं। इसके बाद वह ग़ार के अन्दर गए उसे साफ करके सूराख़ आदि बन्द करके बाहर आए। उस समय उनको याद आया कि एक छेद बाक़ी रह गया है जिसे वह ठीक से नहीं देख सके फिर उन्होंने कहा या रसूल अल्लाह सल्ल0 आप ज़रा ठहरें मैं उसको देख लूं। फिर उसके अन्दर जाकर इत्मीनान किया। जब यक़ीन हो गया तो कहा यह रसूल अल्लाह सल्ल0 अब आप अन्दर उतर आएं अतएव आप ग़ार के अन्दर उतरे।

आसमानी मदद

जब दोनों ग़ार में उतर गए तो अल्लाह ने मकड़ी को भेजा उसने गुफा और ग़ार के मुहाने पर जो पेड़ था उसके बीच एक जाल बुन दिया और अल्लाह के रसूल सल्ल0 को छिपा लिया। इसी के साथ अल्लाह ने दो जंगली कबूतरियों को भेज दिया जो ऊपर फड़फड़ाती रहीं फिर आकर वहां बैठ गयीं। (इब्न कसीर खण्ड 2 पृ0 240)

मानव इतिहास का सबसे नाज़ुक पल

इधर मुशरिकों ने अल्लाह के रसूल सल्ल0 का पीछा किया। यह मानवता के इतिहास का सबसे निर्णायक पल था, या तो एक ऐसी बदनसीबी सामने थी जिसकी कोई सीमा नहीं या एक ऐसी खुशनसीबी का दरवाज़ा खुलना था जिसकी कोई सीमा न थी। इंसानियत ने बेचैनी से अपनी सांस रोक ली थी और हैरत से उन जासूसों और पीछा करने वालों को फटी हुई आंखों से देख रही रही थी जो उस समय ग़ार के मुहाने पर खड़े थे और सिर्फ इतनी देर बाक़ी थी कि उनमें से कोई नीचे

देख ले, लेकिन अल्लाह की कुदरत, उसकी महिमा बीच में आ गई और वह धोखा खा गए। उन्होंने देखा कि गुफा का मुख मकड़ी के जाले से बन्द है तो वह सोच भी न सके कि अन्दर कोई हो सकता है।

इस घटना की तरफ इशारा करते हुए अल्लाह पाक फरमाता है।:--

अनुवादः– ''तो अल्लाह ने उन पर तस्कीन (सकून) उतारी और उनकी ऐसे लश्करों से मदद दी जो तुमको नज़र नहीं आते थे। (सूरः तौबा–40)

इस पल हज़रत अबुबक्र की निगाह ऊपर उठी तो उन्हें मुशरिकों के पैर नज़र आए। हज़रत अबुबक्र ने कहा– 'या रसूल अल्लाह सल्ल0 अगर इनमें से किसी ने एक क़दम भी आगे बढ़ाया तो हमें देख लेगा।' आपने जवाब दिया– 'उन दो के बारे में तुम्हारा क्या गुमान है जिनका तीसरा अल्लाह है। इसी सिलसिले में यह आयतें उतरीं।

अनुवादः–'(उस समय) दो ही लोग थे जब वह दोनों ग़ार में थे उस समय पैग़म्बर अपने साथी को तसल्ली देते थे, कि ग़म न करों अल्लाह हमारे साथ है। (सूरः तौबा– 40)

आपका सुराक़ा ने पीछा किया

अल्लाह के रसूल सल्ल0 तथा अबुबक्र ने ग़ारे सौर में तीन रातें गुज़ारी फिर दोनों आमिर बिन फुहैरा और अब्दुल्लाह बिन उरैक़ित के साथ, जिनको आपने रास्ता बताने के लिए साथ रखा था, समुन्द्र तट की तरफ चले। इधर कुरैश ने यह एलान कर दिया था कि जो व्यक्ति अल्लाह के रसूल सल्ल0 को गिरफ्तार करके लाएगा उसे सौ ऊंटनियां इनाम में दी जाएंगी। सुराक़ा बिन मालिक इनाम की लालच में आपका पीछा करने पर तैयार हो गया। एक घोड़े पर सवार होकर आपके पद चिन्हों की मदद से उसने आप सल्ल0 का पीछा शुरू किया, लेकिन उसके घोड़े को अचानक ठोकर लगी और वह गिर पड़ा लेकिन सुराक़ा ने अब भी हार न मानी और आगे बढ़ता रहा। दूसरी बार उसके घोड़े ने फिर ठोकर खाई और वह गिरा, फिर सवार हुआ और पीछा शुरू किया। यहां तक कि यह लोग उसको सामने नज़र आ गए और तब तीसरी बार

घोड़े ने सख़्त ठोकर खाई और उसके दोनों अगले पैर ज़मीन में धंस गए। सुराक़ा गिर पड़ा इसी के साथ आंधी के रूप में वहां से धुआं भी उठा।

सुराक़ा ने जब यह देखा तो समझ गया कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 अल्लाह की हिफाज़त में हैं और उन पर विजय पाना कठिन है। सुराक़ा ने ज़ोर से आवाज़ दी और कहा कि मैं, सुराक़ा बिन जशाम हूं। मुझे बात करने का मौक़ा दीजिए। मुझसे आप लोगों को कोई नुकसान नहीं पहुंचेगा। अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने हज़रत अबुबक्र से कहा इससे पूछो कि वह हमसे क्या चाहता है? सुराक़ा ने कहा कि आप एक तहरीर (लिखित) मुझे दे दें जो हमारे आपके बीच एक निशानी के तौर पर रहे। आमिर बिन फुहैरा ने हड्डी या झिल्ली पर एक तहरीर लिख कर उसके हवाले कर दी।

एक भविष्यवाणी

अल्लाह के रसूल सल्ल0 हिजरत पर मजबूर हैं मक्का से निकाले जा रहे हैं। दुश्मन हर तरफ घात में हैं। आपका पीछा किया जा रहा है। ऐसी दशा में आपकी निगाह उस दिन की तरफ जाती है जिस दिन आपके गुलाम किस्रा का ताज और कैसर का तख़्त अपने पैरों से रौंदेंगे और ज़मीन के ख़ज़ानों के मालिक होंगे। आपने इस घटाटोप अंधेरे में उस रोशनी की भविष्यवाणी की जिसकी पौ निकट भविष्य में फटने वाली थी। सुराक़ा से कहा–सुराक़ा! उस वक़्त तुम्हारा क्या हाल होगा जब किस्रा के कंगन तुम अपने हाथ में पहनोगे?।

कुर्आन पाक में अल्लाह का इरशाद है।:–

अनुवादः– "वही तो है जिसने अपने पैग़म्बर को हिदायत और दीने हक़ देकर भेजा ताकि उसको (दुनियां के) तमाम दीनों पर ग़ालिब करे गरचे काफिर ना खुश ही हों।" (सूरः तौबा–33)

कमज़ोर निगाह तथा कम अक़्ल के लोगों ने इसे अनहोनी बात समझी लेकिन आपकी निगाह दूर को क़रीब से देख रही थी।

"बेशक अल्लाह ख़िलाफ़ वादा नहीं करता" और ऐसा ही हुआ।

जब हज़रत उमर रज़ी0 के सामने किस्रा के कंगन, उसका पटका और ताज हाज़िर किया तो उन्होंने सुराका को बुलाया और उनको यह पहनाया, और अल्लाह के रसूल सल्ल0 की भविष्यवाणी शब्द ब शब्द पूरी हुई।

खुश किस्मत इंसान

अल्लाह के रसूल सल्ल0 और हज़रत अबुबक्र रज़ी0 अपने सफर के दौरान "उम्मे माबद अल्खुज़ाया" के पास से गुज़रे। उनके पास एक बकरी थी जिसका दूध चारा पानी की कमी की वजह से सूख गया था। अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने उसके थनों पर हाथ फेरा, अल्लाह का नाम लिया और दुआ की। उसी वक़्त थन से दूध जारी हो गया। आपने दूध उम्मे माबद और अपने साथियों को पिलाया यहां तक कि सबने ख़ूब जी भर के पिया। फिर आपने पिया और दोबारा दुहा यहां तक कि बर्तन पूरा भर गया। जब अबु माबद अपने काम से वापस आए तो उम्मे माबद ने उनसे सारा हाल कह सुनाया और आपकी तारीफ की। यह सुनकर अबु माबद बोले– 'अल्लाह की कसम मुझे यह कुरैश के वही साहब मालूम होते हैं जिनकी कुरैश को तलाश है।'

गाइड ने दोनों को साथ लेकर सफर जारी रखा यहां तक कि आप और हज़रत अबुबक्र मदीना के करीब 'कुबा' तक पहुंच गए। यह बात 12 रबिउल अव्वल सोमवार के दिन की है, और उसी से इस्लामी कलैण्डर हिजरी सन शुरू होता है। (यह 24 सितम्बर सन 622 ई की बात है। अनुवाद)

अध्याय नौ

मदीना–इस्लाम से पहले

मक्का–मदीना के समाज का फर्क

मदीना अर्थात यसरब को अल्लाह ने अपने रसूल सल्ल0 की हिजरत का घर, इस्लाम की दावत का असल केन्द्र तथा इस्लाम के अभ्युदय के बाद पहला इस्लामी समाज का पालना बनाया। इस शहर के महत्व को समझने के लिए हमें इस्लाम से पहले यहां रहने वाले लोगों की सामाजिक, आर्थिक, सामरिक दशा तथा उनके जीवन–स्तर का अध्ययन करना होगा। उस समय मदीना में विभिन्न धर्म और संस्कृति के लोग रहते थे। जबकि मक्का में एक रंग, एक धर्म के लोग रहते थे।

यहूद

यहूद अरब प्रायद्वीप और फिर मदीना में पहली सदी ई0 में आए। मशहूर यहूदी विद्वान डा0 इस्राइल वेल्फेन्सन ने अपनी किताब ' तारीखुल यहूद फी बेलादिल अरब' में लिखा है।–

"सन् 70 ई0 में जब यहूदियों तथा रोमियों के बीच लड़ाई की वजह से फिलस्तीन और जेरुशलम बर्बाद हो गए तो यहूद दुनिया के विभिन्न इलाकों में बिखर गए उसी वक्त यहूद की बहुत सी टोलियां अरब आयीं, जैसा कि यहूदी इतिहासकार जोज़ीफस का कहना है जो खुद भी इस लड़ाई में शामिल था और कई मौकों पर उसने यहूदी टुकड़ियों का नेतृत्व भी किया। अरबी स्रोत भी इसका समर्थन करते है।"

मदीना में यहूद के तीन कबीले आबाद थे। 1– 'क़ीनक़ा' जिनमें लड़ने वाले सात सौ जवान थे। 2– 'नजार' इसमें भी लड़ने वाले सात सौ जवान थे। 3– 'कुरैजा" जिसमें लड़ने वाले जवानों की संख्या सात से नौ सो की बीच थी। इस तरह कुल मिलाकर इनमें बालिगों की संख्या 2 हज़ार से अधिक थी ☆ इन क़बीलों के आपस में सम्बन्ध अच्छे न थे और कभी–कभी लड़ाईयां भी होती थीं। डा0 वेलफेन्सन लिखते हैं।

"बनी क़ीनक़ा और बाक़ी यहूद में दुश्मनी चली आती थी जिसकी वजह यह थी कि बनी क़ीनक़ा बनी ख़जरज के साथ 'बोआस' की लड़ाई में शामिल थे, और नजीर व बनी कुरैजा ने बनी क़ीनक़ा को बहुत बेरहमी से मारा काटा था और उनमें बुरी तरह फूट डाली थी। यद्यपि उन्होंने क़ैद किए गए सभी यहूद का 'फिदया' ☆ (Blood Wit) अदा कर दिया था तो भी बोआस की लड़ाई के बाद यहूदी क़बीलों में आपसी रंजिश चली आ रही थी। जब क़ीनक़ा तथा अन्सार के बीच लड़ाई हुई तो अन्सार के मुक़ाबले उनका किसी यहूदी ने भी साथ न दिया।"

☆1 यह अनुमान सीरत इब्न हिशाम की संख्याओं आधारित है।

☆2 इस्लामी शरीअत (आचार संहिता) में फिदया ऐसे बदल को कहते हैं जिसके द्वारा इन्सान अपने आपको किसी ऐसी तकलीफ या नुक़सान से छुड़ाए और सुरक्षित करें जो उसके लिए अपरिहार्य बन चुका हो। इमाम राग़िब के अनुसार 'फिदया' उस माल को कहते है जो इन्सान अपनी इबादत में क़सूर अथवा कमी के लिए अदा करता है।

कुर्आन ने भी यहूद की आपसी रंजिश की तरफ इशारा किया है।

अनुवादः– "और जब हमने तुमसे वचन लिया कि तुम आपस में ख़ून न बहाओगे और अपनों को अपने वतन से न निकालोगे। फिर तुमने इक़रार किया और तुम मानते हो, फिर तुम ही अपनों को क़त्ल करते हो और अपने एक वर्ग को उनके घरों से निकालते हो, उन पर चढ़ाई करते हो, गुनाह और ज़ुल्म के तौर पर, और अगर वह तुम्हारे पास क़ैद होकर आएं तो तुम फिदिया देते हो, हालांकि उनका निकाल देना भी तुम पर हराम है।" (सूरः बकर 84–86)

यहूदी मदीना की विभिन्न बस्तियों में रहते थे जो उन्हीं के लिए निर्धारित थीं। बनू क़ीनक़ा को जब बनू कुरैजा और बनू नजीर ने मदीना की उपनगरी से भगाया तो वह शहर के अन्दर एक ख़ास मोहल्ले में रहने लगे बनु नजीर मदीना से दो तीन मील की दूरी पर बहतान की घाटी की तरफ एक ऊंचे हिस्से में रहते थे जो खजूरों और खेतों से मालामाल था। बनू कुरैजा मदीना के दक्षिण में कुछ मील की दूरी पर मेहज़ोर के इलाके में रहते थे।

यहूद की बस्तियों में क़िले तथा मज़बूत इमारतें बनी हुयीं थीं। यद्यपि उन्हें यहूदी हुकूमत बनाने का मौक़ा नहीं मिला हालांकि वह

क़बीले के सरदारों के निगरानी में आराम से रहते थे। इस तरह वह बद्दुओं के हमले से बचे रहते थे और हर यहूदी किसी न किसी अरब सरदार के संरक्षण में रहता था।

धार्मिक पक्ष

यहूदी अपने को एक निश्चित धर्म और आसमानी शरीअत का अधिकारी समझते थे। उनके अपने मदरसे थे जिसे वह मिदरास कहते थे और जहां वह अपने धार्मिक तथा सांसारिक मामले, इतिहास तथा अपने नबियों के हालात पढ़ते-पढ़ाते थे और विचार-विमर्श करते थे। उनकी अपनी विशिट इबादतगाहें थीं जहां वह इबादत करते और मिल बैठकर विचार करते। उनके धर्म की आचार संहिता का कुछ अंश उनकी धर्म की किताबों से लिया था तथा कुछ उनके पुरोहितों और धर्माधिकारियों (Rabbis) ने अपनी तरफ से बना लिए थे। वह अपनी ईदें अलग मनाते थे। कुछ ख़ास दिनों जैसे अशरा ☆ के दिन रोज़ा रखते थे।

☆ मोहर्रम महीने की दसवीं तारीख़।

अर्थ व्यवस्था

दूसरी क़ौमों से उनका अधिकांश आर्थिक लेन-देन, गिरवी और ब्याज पर आधारित था। मदीना के खेतिहर इलाके में इसके लिए अनुकूल माहौल हासिल था। गिरवी रखने का बंदोबस्त माल तक सीमित न था। मजबूरी की हालत में औरतें और बच्चे भी गिरवी रख दिए जाते थे। अतएव काब बिन अल-अशरफ के क़त्ल के सम्बन्ध में इमाम बुख़ारी लिखते हैं।

अनुवाद:- "मुहम्मद बिन मुस्लेमा रज़ी० ने काब से कहा कि हम चाहते हैं कि तुम एक वसक़ या दो वसक़ (एक ऊंट या दो ऊंट) ग़ल्ला हमें कर्ज़ दो। उसने कहा शर्त यह है कि तुम मेरे पास कुछ गिरवी रखो। उन्होंने पूछा कि तुम क्या चीज़ चाहते हो? काब ने कहा कि तुम मेरे पास अपनी औरतों को गिरवी रख दो। उन्होंने कहा कि हम अपनी औरतों को कैसे तुम्हारे पास गिरवी रख दें जब कि तुम अरबों में सबसे अच्छे व ख़ूबसूरत इन्सान हो। उसने कहा तब अपने बेटों को गिरवी रख दो। इस

पर उन्होंने कहा कि हम तुम्हारे पास अपने बेटों को कैसे रख दें कि आगे उन्हें ताना दिया जाए कि वह एक या दो वसक़ के बदले गिरवी रखे गए थे। यह हमारे लिए बड़े शर्म की बात होगी। हम तुम्हारे पास हथियार गिरवी रख सकते है।"

गिरवी रखने की इस व्यवस्था में गिरवी रखने वालों तथा जिसके पास गिरवी रखा जाए दोनों के बीच अच्छे सम्बन्धों का बाक़ी न रह जाना एक स्वाभाविक बात है। धीरे-धीरे मदीना की अर्थ व्यवस्था पर यहूदियों का एकाधिकार हो गया और वह मनमानी करने लगे। चोर बाज़ारी और भण्डारण बढ़ने लगा। इन वजहों से मदीना की जनता आम तौर पर उनकी धांधली से नफरत करने लगी थी क्योंकि अरब ऐसी हरकतों से दूर रहते हैं।

यहूदियों की विस्तारवादी नीति तथा लोलुपता का इशारा हमें De lacy O' Leary की किताब Arabia Befor Muhammad में मिलता है। वह लिखते हैं:–

"इन बद्दुओं ☆ तथा नई बस्तियों में रहने वाले यहूदियों के बीच सातवीं सदी ई० में सम्बन्ध बहुत ख़राब हो गए थे क्योंकि यहूदियों ने अपनी खेती के इलाक़े इन बद्दुओं की चारागाहों तक बढ़ा लिए थे।"

☆औस व ख़ज़रज तथा दूसरे अरब क़बीलों की तरफ इशारा है जो मदीना और उसके आस पास रहते थे।

औस व ख़ज़रज (मदीना के अरब निवासी) तथा यहूदियों के सम्बन्ध निजि लाभ और शोषण पर निर्भर थे। यहूद इन दोनों क़बीलों को लड़ाने पर भी अपने लाभ के लिए बहुत खर्च करते थे जिसके फलस्वरूप यह दोनों क़बीले बर्बाद हो रहे थे। यहूद का एकमात्र मक़सद यह रहता था कि मदीना की अर्थ व्यवस्था पर उनका कब्ज़ा बना रहे।

धार्मिक एवं सांस्कृतिक पक्ष

अरब के यहूद की भाषा स्वाभाविक रूप से "अरबी" ही थी, लेकिन वह कुछ 'इबरानी' युक्त हो गई थी। उन्होंने इबरानी भाषा को पूरी तरह छोड़ा नहीं था। वह अपनी इबादतों और शिक्षा कार्यों में उसका प्रयोग करते थे। यहूद के धार्मिक पक्ष के बारे में डा० इस्राईल वेलफेन्सन ने

अपनी किताब में लिखा है।

" इसमें कोई शक नहीं कि यहूदियों को अरब में अपनी धार्मिक सत्ता को फैलाने के साधन मौजूद थे और वह अगर चाहते तो प्राप्त एकाधिकार से कहीं अधिक विस्तार कर सकते थे, लेकिन यहूदियों का इतिहास जानने वाला हर व्यक्ति जानता है कि यहूदियों ने दूसरी कौमों को अपना दीन स्वीकार करने पर कभी आमादा (तैयार) नहीं किया और कुछ वजहों से धर्म का प्रचार यहूदियों के लिए मना रहा है।"

लेकिन यह तय है कि औस व ख़ज़रज तथा अन्य अरब क़बीलों से सम्बन्ध रखने वाले अनेक व्यक्तियों ने यहूदी धर्म अपनी इच्छा से, रिश्तेदारी या यहूदी माहौल में पालन पोषण की वजह से अपना लिया था। अरब के यहूद में सब प्रकार पाए जाते थे। मशहूर यहूदी व्यापारी और शायर "काब बिन अल–अशरफ" क़बीला "तय" का एक व्यक्ति था। उसके बाप ने नजीर में शादी की थी। इस तरह काब का पालन पोषण एक यहूदी के रूप में हुआ। इब्न हिशाम लिखते हैं:–

"उसका वंशज क़बीला 'तय' फिर 'बनी नबहान' से था। उसकी मां बनी नजीर से थी।"

अरबों में एक रस्म यह थी कि जिसका लड़का जीवित न रहता था वह नज़र मानता था कि अगर वह जीवित रहा तो उसको यहूदियों के सुपुर्द कर देगा कि वह उसे अपने में शामिल कर लें। इस तरह अनेक अरब यूं भी यहूदी बन गए। "सुनन अबु दाऊद" में है कि:–

" जिस औरत का बच्चा ज़िन्दा न रहता था वह नज़र मानती थी कि अगर बच्चा ज़िन्दा रहा तो इसे यहूदी बना देगी। अतः जब बनू नजीर को देश निकाला हुआ तो उनमें से अन्सार के लड़के भी थे। इस लिए वह कहने लगे कि हम अपने बेटों को नहीं छोड़ेंगे। इस पर यह आयत उतरी– अनुवादः– "दीन में कोई ज़ोर–ज़बर्दस्ती नहीं है।"

औस व ख़ज़रज

औस ख़ज़रज का वंश यमन के 'अज़द' क़बीला से है। जहां से यसरब की तरफ हिजरत की लहरें समय–समय पर उठती रहीं। इसके

कई कारण थे। यमन का अशान्त वातावरण, हब्श का हमला, मआरिब बांध के टूट जाने से सिंचाई व्यवस्था में व्यवधान आदि। इस तरह औस व ख़ज़रज मदीना में, यहूदियों के बाद आए। ☆ औस मदीना के दक्षिण पूर्व में आबाद हुए जो 'अवाली' का इलाक़ा कहलाता है। ख़ज़रज मध्य तथा उत्तरी इलाके में आबाद हुए जो मदीना का निचला भाग है, इसके बाद पश्चिम में 'हर्रतुल वबरा' तक और कुछ नहीं है।

☆ मशहूर ओरियन्टलिस्ट सेडयू के अनुसार औस व ख़ज़रज ने सन् 300 ई० में यसरब को अपना वतन बनाया और सन् 492 ई० में उनका यसरब पर पूर्ण अधिकार हो गया।

ख़ज़रज में चार क़बीले शामिल थे। 1–मालिक, 2–अदी, 3–माज़िन, 4–दिनार। यह सबके सब बनू नज्जार से सम्बन्ध रखते थे जिन्हें 'तैमुल्लात' कहा जाता है। बनू नज्जार के क़बीले मदीना के उस बीच के हिस्से में आबाद हुए जहां इस समय 'मस्जिदे नबवी' सल्ल० मौजूद है। औस मदीना के उपजाऊ खेतिहर इलाक़ों में आबाद हुए तथा यहूद के बड़े क़बलों के पड़ोसी बने। ख़ज़रज जहां ठहरे वह अधिक हरा भरा इलाक़ा न था उनका सिर्फ एक बड़ा यहूदी क़बीला क़ीनक़ा ही पड़ोसी था।

औस व ख़ज़रज के व्यक्तियों की निश्चित संख्या मालूम करना कठिन है लेकिन समकालीन परिस्थितियों तथा उनकी फौजी ताकत से इसका अनुमान लगाया जा सकता है। मक्का की विजय के दिन उनके लड़ने वालों की संख्या 4 हज़ार थी।

हिजरत के समय मदीना की सत्ता अरबों के ही हाथों में थी। यहूद के क़बीलों में फूट थी और वह अपने प्रतिद्वन्दी के मुक़ाबले में संगठित न थे। उनके कुछ क़बीले औस के साथ संधि किए हुए थे और कुछ ख़ज़रज के साथ। लड़ाई के समय वह अरबों की अपेक्षा यहूदियों से अधिक सख़्ती करते थे। क़ीनक़ा, बनी नज्जार, बनी क़ुरैज़ा की आपस की अनबन के फलस्वरूप अपने खेत छोड़कर उद्योग धन्धे में लगने पर मजबूर हुए थे।

इसी तरह औस व ख़ज़रज में भी बहुत सी लड़ाईयां हुयीं। इस कड़ी में पहली लड़ाई 'समेर' थी और आख़िरी 'बोआस' की थी जो

हिजरत से पांच साल पहले हुई थी। यहूद, औस और ख़ज़रज को आपस में लड़ाने की साज़िशें करते, और फूट डालते। उनका मक़सद था कि अरब उनकी तरफ़ से ग़ाफ़िल (बेफ़िक्र) रहें। अरब इस बात को महसूस करते थे इस लिए अरब उन्हें 'लोमड़ी' के नाम से याद करते थे।

इस कड़ी में इब्न हिशाम ने इब्न इस्हाक़ के हवाले से जो कुछ लिखा है उससे इस पर रोशनी पड़ती है। वह लिखते हैं— एक बार एक वरिष्ठ यहूदी 'शाम बिन क़ैस' ने एक जगह औस व ख़ज़रज को इस्लाम लाने के बाद एक सभा में बैठे आनन्द से बातें करते हुए सुना। उसे यह देखकर बड़ा दुख हुआ। उसने एक यहूदी नवयुवक को जिसके अन्सार से सम्बन्ध थे इशारा किया कि वह इस बैठक में शामिल हो जाए फिर किसी बहाने बोआस और उससे पहले की लड़ाईयों का ज़िक्र छेड़ दे और उन मौक़ों पर कहे हुए शेर पढ़े ताकि दोनों क़बीलों के ज़ख़्म ताज़ा हो जाएं और उनमें आपस में ठन जाए।

इस साज़िश से दोनों क़बीलों में ठन गई वह भड़क उठे। क़रीब था कि तलवारें मियानों से निकल आएं कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 मुहाजिरों के साथ आए और आपने अपने इरशाद से उनके ईमान की चिनगारी को दहकाया और उनकी धार्मिक भावना को जगाया। औस व ख़ज़रज के लोगों को अपनी भूल का अहसास हो गया उनकी आंखों से आंसू बह निकले। वह आपस में गले मिले और ऐसा लगा मानो कुछ हुआ ही न था।

प्राकृतिक व भौगोलिक दशा

हिजरत के समय यसरब विभिन्न भागों में बंटा हुआ था जिनमें यहूदी और अरब क़बीले रहते थे। हर इलाक़ा किसी न किसी के हिस्से में था। इन इलाक़ों की दो क़िस्में थीं। 1—खेतिहर भूमि तथा आबादी, 2—वह इलाक़े जिनमें गढ़ियां थीं इन्हें 'आताम' कहा जाता था यह क़िला बन्द मुहल्ले थे। यहूद के इन 'आताम' की कुल संख्या 59 थी। डा0 वेल्फ़ेन्सन के अनुसार:—

"यसरब में 'आताम' (गढ़ियों) का बड़ा महत्व था जहां दुश्मन के

हमले के समय क़बीले के लोग पनाह लेते थे और ख़ास तौर पर औरतों, बच्चों और विकलांग लोगों को उस वक़्त ठिकाना मिलता था जब मर्द लड़ने के लिए चले जाते थे। यह गढ़ियां गोदाम के तौर पर भी इस्तेमाल होती थीं जिनमें गल्ले और फल रखे जाते थे क्योंकि वह खुली जगहों पर लूट ली जा सकती थी इसके अलावा इनमें माल व हथियार भी रखे जाते थे। यह दस्तूर था कि सामान से लदे हुए व्यापारिक क़ाफ़िले गढ़ियों के क़रीब ही उतरते थे और इन्हीं गढ़ियों के दरवाज़ों पर बाज़ार भी लगता था। समझा जाता है कि इन गढ़ियों में इबादत गाहें और 'मदारिस' (यहूदी पाठशालाएं) भी होते थे, क्योंकि जो क़ीमती माल पर्याप्त मात्रा में वहां रहता था उससे इसी बात का पता चलता है। वहां दीनी किताबें भी रहती थीं। विचार-विमर्श के लिए वहां यहूदी सरदार जमा होते। जहां वह किसी अहम मुद्दे पर फैसला या किसी समझौते के समय पवित्र ग्रंथों की क़समें खाते थे।"

"इबरानी भाषा में (आताम) का अर्थ बन्द कर देने के होंगे। दीवारों के साथ जब यह शब्द आता है तो उसका अर्थ उन खिड़कियों से है जो बारह से बन्द लेकिन अन्दर से खोली जा सकती हैं। इसका प्रयोग चहार दिवारी या विशाल सुरक्षात्मक दीवार के लिए भी होता था। इस तरह हम मान सकते हैं कि यहूद 'आताम' को छोटे क़िले के अर्थ में प्रयोग करते थे। इनमें बाहर से रोशनदान होते थे जो बाहर से बन्द और अन्दर से खोले जाते थे।" (अल-यहूद फी बिलादिल अरब 116-117)

यसरब इन के मुहल्लों और क़िला बन्दियों का नाम था जो वस्तुतः क़रीब-क़रीब की बस्तियों का एक झुरमुट था जिनसे शहर बन गया था। क़ुर्आन पाक में इसकी तरफ इशारा इस तरह आया है।:-

अनुवादः-'जो कुछ दिया अल्लाह ने अपने रसूल को बस्तियों वालों से" (सूरः हशर-7) दूसरी जगह आया है

अनुवादः- 'वह तुमसे इकट्ठे नहीं लड़ते मगर यह क़िलाबन्द बस्तियों में या दीवारों के पीछे हों।' (सूरः हशर- 14)

मदीना की भौतिक रचना में लावा की चट्टानों का बड़ा महत्त्व है जिन्हें यहां 'हर्रा' कहते हैं। हर्रा वह लावा पदार्थ है जो ज्वालामुखी के

फूटने के समय उससे निकल कर ठंढा होने के बाद आड़े तिरछे और नोकीले कठोर, काले पत्थरों के रूप में मीलों तक जमा हो जाता है। इन पर न पैदल चलना आसान है और न ऊंटों और घोड़ों का गुज़रना। मदीना के दो हर्रें मशहूर हैं। एक पश्चिम में है। जिसे 'हर्रतुल्वबरा' कहते हैं दूसरा पूरब में है जिसे 'हर्रा-ए-वाकिम' कहते हैं। मुजद्दुद्दीन फिरोज़बादी ने अपनी किताब में अनेक हर्रों का विवरण दिया है जो मदीना के आस-पास फैले हुए हैं। हर्रतुल्वबरा और हर्र-ए-वाकिम ने मिलकर मदीना को एक किला बन्द शहर बना दिया है। जिस पर सिर्फ उत्तर की तरफ से हमला किया जा सकता है, और यही वह दिशा है जहां अहज़ाब की लड़ाई में ख़न्दक़ खोद कर इसे सुरक्षित कर दिया गया था। दक्षिण में घने नख़लिस्तान और घनी आबादी है। इस तरफ से भी बाहरी हमला एक कठिन काम है। इस तरह मदीना एक क़ुदरती गढ़ है जिसका प्राचीन समय में बड़ा सामरिक महत्व था।

मदीना के पूर्व में स्थित हर्र-ए-वाक़िम, हर्रतुल्वबरा से अधिक आबाद था। जब अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने यसरब की हिजरत की उस समय हर्र-ए-वाक़िम में यहूदियों के प्रमुख क़बीले रहते थे जैसे बनू नज्जार, बनू कुरैज़ा आदि। उनके साथ औस की प्रमुख शाखाएं बनू अब्दुल अशहल, बनू ज़फर, बनू मआविया, बनू हारिसा भी वहीं रहते थे। बनी अल-अशहल के इलाक़े में एक मुहल्ले का नाम वाक़िम था जिसके नाम पर हर्र-ए-वाक़िम का नाम पड़ा।

धार्मिक और सामाजिक दशा

मदीना की अरब आबादी अधिकांश मामलों में कुरैश ही के अधीन रहती थी। मदीना वासी कुरैश को 'काबा का मुतवल्ली' (संरक्षक) धार्मिक पथ-प्रदर्शन तथा विश्वास एवं व्यवहार में अनुकरणीय समझते थे। वह अरब प्रायद्वीप में फैली हुई बुत परस्ती के अधीन तो थे ही लेकिन विशेषकर उन्हीं बुतों को पूजते थे जिन्हें कुरैश और हिजाज वासी पूजते थे, सिर्फ क़बीलों के कुछ एक क्षेत्रीय बुतों को छोड़कर। मनात मदीना वासियों का सबसे प्यारा व पुराना बुत था। औस व ख़ज़रज इसको

अत्यन्त पवित्र समझते थे और इसे अल्लाह के शरीक ठहराते थे। यह बुत कुदैद पर्वत के सामने "मुशल्लल" पर स्थापित था जो मक्का और मदीना के बीच, समुन्द्र तट की तरफ एक जगह है। 'लात' तायफ वासियों का प्यारा बुत था। 'उज्जा' मक्का वालों का कौमी बुत था इस लिए इन शहरों के लोग अपने-अपने इन बुतों से भावनात्मक सम्बन्ध रखते थे। मदीना वासियों में से जो कोई लकड़ी या किसी चीज़ का बुत अपने घर में रखता तो उसे 'मनात' ही के नाम से पुकारता जैसा कि बनी सलमा के सरदार अम्र बिन अलजमूह ने इस्लाम लाने से पहले बना रखा था।

इमाम अहमद रह० ने हज़रत आयशा रज़ी० के हवाले से "इन्नसफा वल्मरवा मिन शआएरिल्लाहि" का सार में नकल किया है कि उन्होंने फरमाया- 'अन्सार इस्लाम लाने से पहले मनात के नाम पर तलबिया (लब्बैक अर्थात मैं हाज़िर हूं।) पढ़ते थे और जिसकी वह मुशल्लल के पास पूजा करते थे और उसके नाम पर हज शुरू करने वाला सफा व मरवा की 'सई' ☆ को सही नहीं समझता था। जब लोगों ने अल्लाह के रसूल सल्ल० से इस बारे में पूछते हुए कहा कि या रसूल अल्लाह हम अज्ञानता के युग में सफा व मरवा के तवाफ (परिक्रमा) में हरज समझते थे तो अल्लाह पाक ने यह आयत नाज़िल की। "इन सफा वल मरवा"

हम मदीना में किसी और बुत के बारे में नहीं जानते कि वह 'लात' 'मनात' या 'उज्जा' व 'हुबल' की तरह मशहूर हुआ हो और लोग उसकी इबादत करते और उसके लिए मदीना से बाहर से आते हों। कुछ ऐसा लगता है कि मक्का की तरह मदीना में बुतों की बाहुल्यता न थी। क्योंकि मक्का के हर घर में एक ख़ास बुत होता था। मक्का में बुतों को लोग फेरी में बेचने के लिए निकलते थे। मक्का बुत परस्ती में मदीना से आगे था।

☆ हज का एक अमल जिसमें सफा व मरवा पहाड़ियों के बीच हाजी तेज़ चलते हैं।

मदीना वासी साल के दो दिनो में खेलकूद का त्योहार मनाते थे। अल्लाह के रसूल सल्ल० जब मदीना पहुंचे तो आपने मदीना वासियों से फरमाया- 'अल्लाह पाक ने तुम्हें इन दो दिनों से बेहतर ईद और बक़रीद

के दिन अता किए हैं।' हदीस के कुछ विद्वानों ने इन दो दिनों के बारे में बताया कि वह नवरोज़ और मेहरजान के दिन थे, जिन्हें शायद उन लोगों ने ईरान वासियों से लिया था।

औस व ख़ज़रज की कुलीनता को कुरैश भी मानते थे। उनका वंश 'कहतान' की शाखा से था। जिसमें कुरैश शादी विवाह भी करते थे। हाशिम बिन अब्द मनाफ ने सलमा बिन्त अम्र बिन ज़ैद से शादी की थी जो बनी अदी बिन अल—नज्जार से थीं जो ख़ज़रज की एक शाख़ा है। इसके बावजूद कुरैश अपने को मदीने के अरब क़बीलों से बेहतर समझते थे। बद्र की लड़ाई के दिन जब उत्बा बिन रबिया, शैबा बिन रबिया और वलीद बिन उत्बा ने मुसलमानों को ललकारा, तो अन्सार के कुछ नौजवान निकले। उनसे उन्होंने पूछा—तुम कौन हो? जवाब मिला— हम अन्सार हैं। इस पर उन्होंने कहा हमें तुमसे मतलब नहीं फिर उनमें से एक आदमी ने आवाज़ दी— ऐ, मुहम्मद! (सल्ल0) हमारे मुक़ाबले पर हमारे बराबर लोग भेजिए। इस पर अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने फ़रमाया— उबैदा बिन अल—हारिसक! तुम बढ़ो, हमज़ा! तुम बढ़ो, अली तुम खड़े हो। जब यह लोग उनके निकट गए और अपने नाम बताए तो कुरैश ने कहा—हाँ। यह शरीफ हमारी जोड़ के हैं।

इसका कारण यह है कि कुरैश खेती के पेशे को (जिसके मदीना वासी आदी थे) गिरी निगाह से देखते थे। इसका इशारा अबु जहल के उस वाक्य में भी मिलता है जो उसने आख़िरी वक़्त अब्दुल्लाह बिन मसऊद से कहा था।— " काश एक किसान के अलावा किसी ने मुझे क़त्ल किया होता।"

आर्थिक दशा एवं नागरिक जीवन

मदीना एक खेतिहर इलाक़ा था इस लिए मदीना वासी अधिकतर खेती और बाग़बानी ☆ पर निर्भर थे। वहां की मुख्य पैदावार खजूर तथा अंगूर थे। खेतों में खाद्यान्न तथा सब्ज़ियां पैदा की जाती थीं। अकाल और सूखा के समय लोगों की अधिकतर ज़रूरत खजूरों से पूरी होती थीं।☆ खजूर का मदीना वासियों के जीवन में बड़ा महत्व था। खाद्यान्न

के अलावा वे उससे उद्योग का कच्चा माल, ईंधन तथा निर्माण कार्य के लिए लकड़ी और जानवरों की खाद्य सामग्री प्राप्त करते हैं।

1☆ हदीस से पता चलता है कि मदीना में ऐसे घने बाग़ भी थे कि गोरैया जैसी छोटी चिड़िया भी घुस कर निकल नहीं नही पाती थीं। अबु तलहा अन्सारी के किस्से में है कि वह अपने बाग़ में नमाज़ पढ़ रहे थे कि एक गोरैया चिड़िया बाग़ से बाहर निकलने के लिए इधर–उधर उड़ने लगी जिससे उनकी नमाज़ में ग़फलत हो गई जिसकी वजह से उन्होंने उस बाग़ को सदक़ा (दान) कर दिया।

2☆ खजूर के सम्बन्ध में अरबी में इतने अधिक शब्द पाए जाते है कि इसी से उसकी व्यापकता साफ हो जाती है।

मदीना में खजूरों के इतने प्रकार थे कि उनकी गिनती करना भी कठिन है। मदीना वासियों को खजूर उत्पादन का दीर्घकालीन अनुभव था और वह खजूर की उन्नतिशील किस्में पैदा करते थे।

मदीना में व्यापार भी होता था लेकिन उतने बड़े पैमाने पर नहीं जितना कि मक्का में था क्योंकि मक्का वासियों का मुख्य व्यवसाय पानी की कमी के कारण व्यापार करना जिसके लिए उन्हें लम्बे–लम्बे सफर करना पड़ते थे।

मदीना के कुछ उद्योग यहूदियों से ही जुड़े थे जिन्हें वे सम्भवतः यमन से लाए थे। कीनक़ा के लोग प्रायः सोने चॉदी का कारोबार करते थे। यहूद मदीना में सबसे अधिक मालदार थे उनके घर माल व दौलत तथा सोने चॉदी से भरे हुए थे।

यहां की मिट्टी लावा पदार्थ से बनी थी अतः बहुत उपजाऊ थी। यहां की घाटियों में बाढ़ का पानी फैला जाता था और खेतों तथा बग़ीचों की सिंचाई इस तरह खुद हो जाती थी। अक़ीक़ की घाटी बहुत मशहूर थी जो मदीना वासियों के लिए मनोरंजन का केन्द्र थी। यहां पानी बहुत मात्रा मे था और बाग़ अधिक थे। मदीने में कुएं भी आसानी से खोदे जा सकते थे। बाग़ों में आम तौर पर कुएं होते थे। बाग़ के चारों तरफ चहार दिवारी होती थी ऐसे बाग़ को वहां 'हायत' कहते थे। मदीना के बहुत से कुएं अपने पानी की मिठास और पर्याप्त मात्रा के लिए मशहूर थे। वहां नहरों और रहट का बन्दोबस्त भी था जिससे वह अपने बाग़ों की सिंचाई करते थे।

जौ तथा उसके बाद गेहूं प्रमुख खाद्यान्न थे। सब्ज़ियां खूब पैदा

होती थीं। खेती के मामलों की कई क़िस्में थीं जैसे 'मुज़ावना' 'मुहाक़ला' 'मुख़ावरा' 'मुआवमा' ☆ इनमें से कुछ को इस्लाम ने बाक़ी रखा और कुछ को मना कर दिया या उसमें सुधार कर दिया।

☆ 'मुज़ावना' पेड़ में लगी हुई खजूरों को नक़द खजूरों से बेचने को कहते हैं। 'मुहाक़ला' ढेर में लगे हुए गल्ले को नकद गल्ले अर्थात जौ को जौ के बदले और गेहूं को गेहूं के बदले तौल कर लेने को कहते हैं। 'मुख़ावरा' ज़मीन की पैदावार की तिहाई या चौथाई पर मामला करने को कहते हैं। इसे 'मज़ारआ' भी कहते हैं। फ़र्क़ सिर्फ़ यह है कि 'मज़ारआ' में बीज मालिक के होते हैं और 'मुख़वरा' में बीज किसान के होते हैं। 'मुआवमा' कई साल के लिए फसलों को बेच देने को कहते हैं। जैसे पेड़ के फल दो तीन साल के लिए बेच दिए जाते।

मक्का और मदीना में एक ही तरह के सिक्के चलन में थे। जिनका वर्णन विस्तार के साथ पहले मक्का के अध्याय में आ चुका है। मक्का वालों की अपेक्षा मदीना वासियों को नापतौल के पैमानों की अधिक ज़रूरत पड़ती थी क्योंकि खाद्यान्न और फल उनकी असल पूंजी थी। मदीना में प्रयोग होने वाले पैमाने यह थे। मुद, सआ, फरक़, अरक़, वसक़, वज़न के पैमाने थे। दिरहम, शिक़ाक, दानिक़, क़िरात, नवात, रतल, क़िन्तार, औक़िया।

मदीना की मिट्टी उपजाऊ थी लेकिन खाद्यान्न के मामले में वह आत्मनिर्भर न था। अतः वहां वाले बाहर से भी ग़ल्ला आयात करते थे। वह मैदा, घी और शहद शाम से लाते थे। तिरमिज़ी में आया है कि मदीना वासी खजूर और जौ खाते थे। अमीर लोग शाम से आने वाले "ज़ाफ़ित" (अर्थात शहरों तक सामग्री पहुंचाने वाला) से अपने लिए मैदा ख़रीद लेते थे लेकिन परिवार के अन्य लोग खजूरें और जौ ही खाते थे।

यहूदियों का स्वभाव तथा उनका इतिहास हर जगह लगभग एक जैसा रहा है। यहूदी मदीना में भी अरबों से अधिक धनी थे। अरब स्वभाव से आड़े दिनों के बारे में अधिक सोचने के आदी न थे। वह मेहमान की सेवा तथा उदार प्रवृत्ति को अधिक महत्व देते थे। धन जमा करना उनकी आदत में न था। परिणाम स्वरूप उन्हें यहूद से प्रायः क़र्ज़ लेना पड़ता था जो अधिकतर सूदी या गिरवी होता था।

मदीनावासियों के पास ऊंट, गायें और बकरियां भी थीं। सिंचाई काम के लिए भी ऊंट से काम लेते थे। इनके पास चरागाहें भी थी

जिनमें 'जुग़ाबा' और 'गाबा' अधिक मशहूर थे। यहां से लोग लकड़ियां हासिल करते और यहां जानवरों को चराते थे। घोड़े जंग में प्रयोग में आते थे। यद्यपि मक्का की अपेक्षा मदीना में घोड़े कम पाए जाते थे। बनू सलीम घोड़े के लिए मशहूर थे जिन्हें वह बाहर से मांगते थे।

मदीना में कई बाज़ार भी थे जिनमें सबसे मशहूर बनी क़ीनक़ा का बाज़ार था। यह सोने चाँदी के ज़ेवरों तथा कपड़ों के लिए मशहूर था। उन दिनों मदीना में सूती और रेशमी कपड़े, रंगीन ग़लीचे तथा बेलबूटेदार पर्दे प्रायः पाए जाते थे। इत्र तथा कस्तूरी के बेचने वाले भी थे। इसी तरह अंबर और पारे के व्यापारी भी पाए जाते थे। ख़रीदने बेचने के अनेक तरीक़ों में से कुछ को इस्लाम ने बाक़ी रखा और कुछ को रोक दिया। औस व ख़ज़रज के कुछ लोग भी सूदी कारोबार करने लगे थे लेकिन यहूद की अपेक्षा बहुत कम।

मदीना के जन–जीवन में वहां के वासियों के सुरूचिपूर्ण स्वभाव के कारण ख़ासी तरक्क़ी हो चली थी। दो मंज़िला मकान बनने लगे थे और कुछ मकानों के साथ साग सब्ज़ी के बग़ीचे भी होते थे। मदीना वासी मीठे पानी के आदी थे जिसे उन्हें कभी दूर से भी लाना पड़ता था। बैठने के लिए कुर्सी का प्रयोग भी होता था शीशे और पत्थर के प्याले प्रयोग में आते थे। विभिन्न तरह के चिराग़ (दीपक) प्रयोग होते थे। घर और खेत के कामों में छोटी टोकरियां और बैग काम में लाए जाते थे। मालदारों–विशेषकर यहूद के घरों में पर्याप्त फर्नीचर पाया जाता था। तरह–तरह के ज़ेवर भी प्रयोग होते थे जैसे कंगन, बाजूबन्द, पायल, कड़े, कान के बुन्दे और बालियां, अंगूठियों और सोने अथवा यमनी दानों के हार आदि।

औरतों में बुनने और कातने की आम प्रथा थी। मुख्य कुटीर उद्योग सिलाई, रंगाई, राजगीरी, ईटा बनाना, पत्थर काटना था। हिजरत से पहले यह धन्धे मदीना में प्रचलित थे।

एक पेचीदा व विकासशील समाज

इस तरह यह बात साफ हो जाती है कि रसूल अल्लाह सल्ल0 तथा मुहाजरीन ने मक्का से यसरब नाम के किसी गाँव की तरफ सफर

नहीं किया था बल्कि वह एक शहर से दूसरे शहर की तरफ आए थे। यद्यपि यह दूसरा शहर पहले शहर की अपेक्षा ज़िंदगी के अनेक मैदानों में भिन्न था और अपेक्षाकृत मक्का से कुछ छोटा भी था, लेकिन वहां का जनजीवन मक्का की अपेक्षा अधिक पेचीदा था और अल्लाह के रसूल सल्ल0 को जिन समस्याओं का सामना करना पड़ा वह नाना प्रकार की थीं। क्योंकि वहां अनेक धर्म, जाति और संस्कृति के लोग रहते थे जिन पर क़ाबू पाना और मदीना वासियों को एक आस्था और एक दीन के रंग में रंगने का कठिन काम अल्लाह का कोई ऐसा रसूल ही कर सकता था जिसे अल्लाह का समर्थन हासिल हो और जिसे अल्लाह ने सूझ–बूझ, दूरदृष्टि, निर्णय शक्ति और इंसानियत के बिखरे हुए ढेर को जमा करने तथा परस्पर विरोधी शक्तियों व विचारधाराओं को सिसकती मानवता को फिर से पुख़्ता करने के काम में एक दूसरे का पूरक और मददगार बनाने की अपार क्षमता प्रदान की थी, और जो एक मनमोहक व्यक्तित्व का मालिक था। कुर्आन पाक में आता है।

अनुवादः– "वही है जिसने अपनी मदद और मुसलमानों के ज़रिए आपकी पुश्तपनाही (रक्षा) कर और उनके दिल मिला दिए कि अगर आप दुनिया की सारी दौलत भी ख़र्च कर देते तब भी उनके दिलों को नहीं जोड़ सकते थे, लेकिन अल्लाह ही ने उनमें और सहमति पैदा कर दी। वह ग़ालिब (सर्व–शक्तिमान) और हिकमत वाला है।

(सूरः अन्फाल–62–63)

अध्याय दस
मदीना में

मदीना में अन्सार को यह सूचना हो गई कि अल्लाह के रसूल सल्ल० मक्का से प्रस्थान कर चुके हैं इसलिए वह रोज़ाना फज्र की नमाज़ के बाद शहर के आख़िरी किनारे पर पहुंच जाते और अल्लाह के रसूल सल्ल० की राह देखते रहते और तब तक वहां से न हटते जब तक धूप बहुत तेज़ व बर्दाश्त के बाहर न हो जाती और वह छाया में जाने के लिए मजबूर न होते। यह बहुत गर्मी का दौर था।

अल्लाह के रसूल सल्ल० जिस समय मदीना पहुंचे उस समय अन्सार इन्तेज़ार के बाद अपने घरों में जा चुके थे। सबसे पहले आप पर एक यहूदी की नज़र पड़ी। आपको देखकर उसने ज़ोर से आवाज़ लगाई और अन्सार को आपके आगमन की सूचना दी। अन्सार यह सूचना सुनते ही दौड़ पड़े। उन्होंने देखा कि आप एक खजूर के पेड़ के नीचे विराजमान हैं। आपके साथ हज़रत अबुबक्र रज़ी० थे जो आप ही की अवस्था के मालूम हो रहे थे। इनमें से अधिकांश ने आपको इससे पहले नहीं देखा था। इस लिए इन लोगों ने आप दोनों को घेर लिया और भीड़ बढ़ने लगी। हज़रत अबुबक्र रज़ी० ने महसूस किया कि लोग यह नहीं समझ पा रहे हैं कि इनमें मालिक कौन है और सेवक कौन ? इस लिए उन्होंने एक चादर लेकर आप सल्ल० के सर पर छाया कर दी। इस तरह यह शंका ख़त्म हो गई ।

लगभग पांच सौ अन्सार ने आपका स्वागत किया और निवेदन किया हुज़ूर! तशरीफ ले चलें। आप हर तरह से सुरक्षित हैं। हम आपकी हर बात का पालन करेंगे। अल्लाह के रसूल सल्ल० और हज़रत अबुबक्र रज़ी० इस क़ाफिले के झुरमुट में चले। इधर पूरा मदीना आपके स्वागत के लिए निकल खड़ा हुआ। औरतें मकान की छतों से नए क़ाफिले को देख रही थीं और एक दूसरे से कहती थीं कि देखो इनमें अल्लाह के रसूल सल्ल० कौन हैं? हज़रत अनस रज़ी० कहते हैं कि हमने फिर कभी

ऐसा मन्ज़र नहीं देखा।

लोग रास्तों, चौराहों, मकानों की छतों, खिड़कियों व दरवाज़ों पर जमा हो गए थे। लड़के और नौकर चाकर चारों तरफ़ खुशी से कहते फिरते थे– अल्लाह अकबर! अल्लाह के रसूल आए हैं। अल्लाहु अकबर मुहम्मद सल्ल० आए हैं।

बरआ बिन आज़िब जो उस समय छोटे थे बयान करते हैं कि मैंने मदीनावासियों को किसी चीज़ से इतना खुश होते नहीं देखा, जितना अल्लाह के रसूल सल्ल० के आगमन से। लौंडियां तक पुकारती फिर रही थीं कि अल्लाह के रसूल सल्ल० आ गए। अल्लाह के रसूल सल्ल० आ गए। मुसलमानों ने आपके आगमन से खुश होकर नार–ए–तकबीर बुलन्द किया। ऐसा लगता था मदीना मुस्करा और खुशी से इठला रहा हो।

अनस इब्न मालिक जो उस समय छोटे थे कहते हैं कि जिस दिन अल्लाह के रसूल सल्ल० मदीना आए मैं हाज़िर था। सच यह है कि मैंने कोई दिन उससे अधिक शुभ और सुन्दर नहीं देखा जिस दिन अल्लाह के रसूल सल्ल० हमारे यहां (मदीना) पधारे।

मस्जिदे कुबा और मदीने का पहला जुमा

अल्लाह के रसूल सल्ल० ने कुबा में चार दिन निवास किया और वहां एक मस्जिद की बुनियाद रखी। जुमा के दिन आप वहां से आगे चले। जुमा बनी सालिम बिन औफ की बिरादरी में पड़ा अतः जुमा की नमाज़ आपने उन ही की मस्जिद में अदा की। जुमा की यह पहली नमाज़ थी जो आपने मदीना में पढ़ी।

अबु अय्यूब अन्सारी के घर

जब अल्लाह के रसूल सल्ल० शहर से गुज़रे तो लोगों ने रास्ते में टोलियां बनाकर आपसे विनती की कि आप उनके यहां ठहरें। कभी–कभी लोग आपकी ऊंटनी की नकेल अपने हाथ में ले लेते। आप फरमाते– इसको जाने दो। यह अल्लाह की तरफ से मामूर (तय) है, ऐसा कई बार हुआ। जब आप बनी अलनज्जार के मुहल्ले से गुज़रे तो बच्चियों और बांदियों ने आपके स्वागत में जो शेर पढ़े उनका मतलब यह है। "हम

बनी अलनज्जार की लड़कियां हैं। हमारी ख़ुश किस्मती कि मुहम्मद सल्ल0 आज हमारे पड़ोसी हैं।

जब आप बनी मालिक बिन अल–नज्जार के घर तक पहुंचे तो ऊंटनी एक जगह पर जहां इस समय मस्जिदे नबवी का दरवाज़ा है, खुद ही ठहर गई। उस समय इस जगह खजूर का एक खलियान था जो बनी अल–नज्जार के दो अनाथ लड़कों का था और वह आपके नान्हिाली रिश्तेदार भी थे।

अल्लाह के रसूल सल्ल0 ऊंटनी से उतरे। अबु अय्यूब अन्सारी ने फौरन आपका सामान उतरवाया और उठाकर ले गए। अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने यहीं वास किया। अबु अय्यूब अन्सारी रज़ी0 ने आप सल्ल0 की मेहमान दारी तथा आव–भगत और सम्मान तथा श्रद्धा में कोई कसर उठा न रखी। मकान के ऊपरी हिस्से में अल्लाह के रसूल सल्ल0 से ऊंचे होकर रहना उनका गवारा न हुआ। वह नीचे आ गए और आप सल्ल0 से निवेदन किया कि आप ऊपर रहें, वह और उनके घरवाले नीचे रहेंगे। आपने फरमाय–अबु अय्यूब! हमको और हमारे मिलने वालों को इसी में ज़्यादा राहत होगी कि हम नीचे रहें।

अबु–अय्यूब अन्सारी कुछ खुशहाल लोगों में न थे, लेकिन आज अपने घर में आपके आगमन से उनको अपार ख़ुशी थी और अपनी प्रसन्नता व्यक्त करने में वह स्वयं को असमर्थ पा रहे थे। श्रद्धा–सेवा और सुविधा के आदाब व उपाय स्वयं सिखा देती है। अबु अय्यूब अन्सारी कहते हैं कि हम अल्लाह के रसूल सल्ल0 के लिए रात का खाना तैयार करके भेजते अगर आप का बचा हुआ खाना वापस आता तो मैं और उम्मे अय्यूब उस तरफ से जहां आपने खाया होता वह बचा हुआ खाते और बरकत हासिल करते। एक बार मटका जिसमें हम पानी रखते थे टूट गया। मैंने और उम्मे अय्यूब ने अपनी चादर से, जिसके अलावा हमारे पास ओढ़ने की कोई चीज़ न थी, उस पानी को सुखाया कि कहीं नीचे न टपकने लगे और आप सल्ल0 को तकलीफ हो।

मस्जिदे नबवी तथा मकानों का निर्माण

अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने उन दो लड़कों को बुला भेजा जो उस खलियान के मालिक थे और उनसे वह जगह मस्जिद के निर्माण के लिए खरीदना चाही। दोनों लड़कों ने निवेदन किया– या रसूल अल्लाह सल्ल0 यह हमारी तरफ से हदिया (भेंट) है लेकिन अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने उसे इस तरह स्वीकार नहीं किया और किसी न किसी तरह कीमत देकर वह ज़मीन हासिल की और वहां मस्जिद बनवायी। मस्जिद के निर्माण कार्य में आपने खुद हिस्सा लिया। आप ईटें पहुंचाते थे और मुसलमान आपकी पैरवी करते थे। इस मौके पर आप फरमाते थे– ऐ अल्लाह! असल बदला तो आख़िरत (परलोक) का बदला है, बस अन्सार और मुहाजरीन पर रहम फरमा। मुसलमान बहुत ख़ुश थे वह शौक़ से शेर पढ़ते और अल्लाह का शुक्रिया अदा करते।

अल्लाह के रसूल सल्ल0 अबु अय्यूब अन्सारी के घर सात महीने ठहरे, जब आपकी मस्जिद और मकान बन गए तो आप उसमें चले गए। मुहाजरीन आपके बाद लगातार मदीना आते रहे। यहां तक कि मक्का में सिर्फ दो ही तरह के लोग बचे। या तो वह जो किसी मुसीबत में पड़ गए या वह जो दुश्मनों की कैद में थे। दूसरी तरफ अन्सार का कोई घर ऐसा न बचा जहां लोगों ने इस्लाम क़बूल न किया हो।

मुहाजिरों व अन्सारियों में भाईचारा

अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने मुहाजरीन व अन्सार के बीच एक दूसरे के प्रति सहयोग व रहम दिली की बुनियाद पर भाई चारे का एक समझौता भी कराया। अन्सार मुहाजिरोंन के साथ भाई चारे के लिए इस तरह एक दूसरे से आगे बढ़ने की कोशिश करते थे कि कुर्आ अंदाज़ी (लाटरी) की नौबत आ जाती थी। वह मुहाजरीन को अपने मकानों, घर के असासों, माल व दौलत, ज़मीन–जायदाद हर चीज़ में अधिकार दे देते थे और उनको अपने पर प्राथमिकता देते थे।

एक अन्सारी अपने मुहाजिर भाई से कहता–देखो मेरा आधा माल जितना होता हो तुम ले लो। मेरे पास दो बीवियां हैं इनमे से जो तुमको

पसन्द आए बताओ तो मैं उसको तलाक़ देकर तुम्हारे हवाले करूं। मुहाजिर जवाब देता– अल्लाह तुम्हारे घर और माल व असबाब में बरकत दे तुम मुझे बस बाज़ार का रास्ता बता दो।

अन्सार का काम त्याग था, मुहाजरीन के पास सन्तोष, तुष्टि तथा स्वाभिमान की दौलत थी।

यहूद से अमन समझौता

इन्हीं दिनो अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने मुहाजरीन तथा अन्सार के लिए एक लिखित समझौता तैयार कराया जिसमें यहूद से अमन शान्ति की बात थी और उनके अपने दीन पर रहने तथा माल व जायदाद की सुरक्षा का ज़िम्मा लिया था, और उनके अधिकार तथा कर्तव्य का उल्लेख किया गया था।

अज़ान का हुक्म

अल्लाह के रसूल सल्ल0 को मदीना में जब कुछ इत्मिनान हासिल हुआ और इस्लाम में कुछ पुख्तगी आयी तो आपने नमाज़ के लिए सूचना व बुलावे के वह तरीक़े जो यहूद व नसारा (ईसाई) में प्रचलित थे जैसे शंख घंटा–घड़ियाल अथवा मशाल आदि नापसन्द फरमाए। उस समय तक मुसलमान बिन किसी दावत व एलान के नमाज़ के समय खुद ही जमा हो जाते थे। इस मौक़े पर अल्लाह ने मुसलमानों को अज़ान से गौरवान्वित किया और सपने में कुछ सहाबियों को इसकी तरफ इशारा कराया गया। इस लिए आपने इसी अज़ान को निर्धारित कर दिया तथा शरअई तौर पर यह जारी हो गई। यह ख़िदमत हज़रत बिलाल बिन रेबाह हब्शी रज़ी0 के हवाले हुई। वह अल्लाह के रसूल सल्ल0 के मुअज़्ज़िन (अज़ान कहने वाला) के पद पर सुशोभित हुए और कयामत तक के लिए मुअज़्ज़िनों के इमाम क़रार पाए।

दोहरी नीति वाले पाखंडियों का सर उठाना

मक्का में निफाक़ न था।☆ वहां पर इस्लाम कमज़ोर और विवश था। उसमें हालात को बदलने की कोई ताक़त नहीं थी। वह किसी को नफा या नुकसान भी नहीं पहुंचाया करता था, बल्कि इस्लाम लाने का

मतलब ही वहां यह था कि हर तरह के ख़तरे और जोखिम को सहन किया जाए। दुश्मनी मोल ली जाए, और दुश्मनों को जानते बूझते हुए जोश दिलाया जाए। इसकी हिम्मत वही कर सकता था जो अपने वचन का सच्चा और इरादे का पक्का होता। जिसका ईमान मज़बूत होता और वह अपनी ज़िन्दगी को ख़तरे में डालने पर आमादा होता। वहां दो बराबर ताक़तें न थीं। मुश्रिक ताक़तवर और छाये हुए थे और मुसलमान मज़लूम (उत्पीड़ित्त) व कमज़ोर थे। कुर्आन पाक में आता है।

अनुवादः– और (उस समय को) याद करो जब तुम ज़मीन (मक्का) में कम और कमज़ोर समझे जाते थे और डरते रहते थे कि लोग तुम्हें उड़ा न ले जाएं (अर्थात बेघर बार न कर दें) (सूरः अन्फाल–26)

☆ दोहरी नीति तथा ढोंग को 'निफाक़' कहते हैं तथा इस पर चलने वाले को "मुनाफ़िक" कहते है। कुर्आन की वह सभी सूरतें जिनमें निफाक़ अथवा मुनाफ़िकों का उल्लेख आया है, मदीना में नाज़िल हुई है। (अनुवाद)

जब इस्लाम मदीना आया, उसकी जड़ें कुछ मज़बूत हुई और हज़रत मुहम्मद सल्ल0 तथा उनके साथियों ने कुछ संतोष की सांस ली तो हालात ने करवट ली और (पाखण्ड) निफाक़ ने सर उठाया। यह एक स्वभाविक बात थी जिसे टाला नहीं जा सकता था। क्योंकि निफाक़ हमेशा वहीं पैदा होता है जहां दो विरोधी दावतें तथा नेतृत्व मौजूद हों। ऐसे समय यह वर्ग अनिश्चितता की स्थिति में दोनों दावतों के बीच हिचकोले खाता रहता है और चिंतित रहता है कि किस दावत को अपनाए और किसे छोड़ दे। कभी वह किसी एक कैम्प में जाता है और कभी दूसरे कैम्प में। क्योंकि सांसारिक माया मोह उसे किसी एक कैम्प में ठहरने नहीं देती, और उसे अपने पुराने बन्धनों से अलग नहीं होने देती। कुर्आन पाक में इस हाल का चित्रण इस तरह किया गया है।:–

अनुवादः–"और लोगों में कुछ ऐसा भी है जो किनारे पर (खड़ा होकर) अल्लाह की इबादत करता है। अगर उसको कोई (दुनियावी) फायदा पहुंचे तो उसकी वजह से संतुष्ट हो जाए, और अगर कोई आफत पड़े तो मुंह के बल लौट जाए। (अर्थात फिर काफिर हो जाए) उसने दुनिया में नुक़सान उठाया और आख़िरत में भी, यही तो साफ नुक़सान

है।" (सूरः हज)

इसी वर्ग की विशेषता एक दूसरी जगह इस तरह बयान की गई है।:–

अनुवादः–"बीच में पड़े लटक रहे हैं न इनकी तरफ (होते हैं) न उनकी तरफ।" (सूरः निसा 143)

यह मुनाफ़िक़ीन (पाखण्डी) जिनका नेतृत्व अब्दुल्लाह बिन उबई बिन सलूल के हाथ में था, औस व ख़ज़रज तथा यहूद से सम्बन्ध रखते थे। बोआस की जंग के बाद सब ने एक मत होकर अब्दुल्लाह बिन उबई को अपना सरदार चुना था। इस्लाम के मदीना में प्रवेश के समय अब्दुल्लाह बिन उबई की ताजपोशी की पूरी तैयारी थी। जब उसने देखा कि लोग बड़ी संख्या में तेज़ी के साथ इस्लाम कुबूल कर रहे हैं तो यह बात फांस बन कर उसके दिल में चुभ गई। वह तिलमिला उठा। इब्न हिशाम लिखते हैं कि जिस समय अल्लाह के रसूल सल्ल० मदीना पधारे, अब्दुल्लाह उबई बिन सलूल मदीना वासियों का सरदार था। औस व ख़ज़रज के आगमन से पहले उसके अलावा कभी भी किसी पर एक मत न हो सके थे और इन दोनों क़बीलों के किसी एक व्यक्ति को अपना सरदार बनाने पर राज़ी न थे। उसकी क़ौम ने उसकी ताजपोशी के लिए कौड़ियों का एक ताज भी तैयार किया था, और उसे बादशाह बनाने का विचार था। इसी बीच अल्लाह ने हज़रत मुहम्मद सल्ल० को यहां भेज दिया और जब उसकी क़ौम उसको छोड़कर मुसलमान हो गई तो उसके मन में जलन भड़क उठी। उसे महसूस हुआ कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने उसको उसकी सरदारी से वंचित कर दिया। उसने जब देखा कि उसकी क़ौम किसी भी हालत में इस्लाम को छोड़ने वाली नहीं तो वह भी अपनी इच्छा से मुसलमान हो गया लेकिन इस्लाम के प्रति उसके अन्दर द्वेष पाखण्ड की भावना बनी रही।

ऐसे सभी लोग जिनके दिल में कोई चोर था और जो नेतृत्व के इच्छुक थे, इस्लाम से दुश्मनी पर उतर आए। वह इस नए दीन से घुटन महसूस करने लगे जिसने उनकी तमाम योजनाओं पर पानी फेर दिया था और जिसने मदीने का रंग बदल कर मुहाजिर तथा अन्सार को एक धागे

में पिरो दिया था और जो हज़रत मुहम्मद सल्ल0 पर जान निछावर करते और उनकी मुहब्बत को अपने बाप बेटों और बीवियों की मुहब्बत पर प्राथमिकता देते थे। यह देखकर मुनाफ़िक़ों के दिल जलन से भर गए और वह हज़रत मुहम्मद सल्ल0 के ख़िलाफ़ साज़िश रचने लगे। इस तरह मदीना में इस्लामी समाज के अन्दर ही एक विरोधी वर्ग पैदा हो गया जिसकी तरफ से होशियार रहना मुसलमानों के लिए ज़रूरी हो गया क्योंकि यह वर्ग आस्तीन के साँप की तरह था और इस्लाम तथा मुसलमानों के लिए खुले दुश्मनों से ज़्यादा ख़तरनाक था। यही वजह है कि कुर्आन पाक में बार–बार इनका उल्लेख आया है और इनकी करतूतों से पर्दा उठाया गया है। इस्लाम का इनके साथ कई तरह का सम्बंध रहा है इस लिए सीरत की किताबों में इनका उल्लेख अपरिहार्य रूप से आता है और इस किताब में भी आएगा।

यहूद की दुश्मनी की शुरूआत

शुरू में यहूद में इस्लाम के प्रति जलन और बदले की भावना तटस्थता एवं ख़ामोशी लिए हुए थी। पहले वह मुसलमानों तथा मुशरिकों के प्रति तटस्थता की नीति पर चलते रहे। बल्कि इस्लाम की तरफ उनका झुकाव कुछ अधिक ही था। क्योंकि रिसालत, नुबूवत और आख़िरत के दिन पर ईमान तथा अल्लाह पाक की ज़ात व सिफ़ात एवं तौहीद की आस्था में वह मुसलमानों से बहुत करीब थे। हालांकि उनकी यह आस्था भी, लम्बे समय तक जाहिल क़ौमों के पड़ोस में रहने तथा बुत परस्ती के माहौल में ज़िंदगी बिताने की वजह से बहुत कमज़ोर पड़ चुकी था और वह कुछ एक नबियों के प्रति ज़रूरत से ज़्यादा श्रद्धा व सम्मान प्रकट करने लगे थे।

आशा यह की जाती थी कि अगर वह इस्लाम का साथ नहीं देंगे तो कम से कम ख़ामोश तो ज़रूर रहेंगे। क्योंकि इस्लाम उनके धार्मिक ग्रन्थों को पुष्टि करता है और हज़रत मुहम्मद सल्ल0 बनी इस्राईल के तमाम नबियों पर ईमान की दावत देते हैं। कुर्आन पाक में आता है।:–

अनुवादः– "सब अल्लाह पर और उसके फरिश्तों पर, और उसकी

किताबों पर और उसके पैगम्बरों पर ईमान रखते हैं (और कहते हैं) हम उसके पैगम्बरों में से किसी को कुछ अन्तर नहीं करते।" (सूरः बक्र-285)

लेकिन ऐसा नहीं हुआ। अगर ऐसा हो सकता तो आज न सिर्फ इस्लाम बल्कि विश्व-इतिहास का रुख दूसरा होता और इस्लामी दावत को उन कठिनाईयों और परेशानियों का सामना न करना पड़ता जो इस्लाम व यहूदी धर्म के टकराव से पैदा हुयीं थी। यह परेशानियां शुरूआतीं मुसलमानों और ताकतवर यहूदियों के आपसी टकराव से पैदा हो गयीं थीं। इस हालत की दो वजह थी। एक- यहूदियों की जलन तथा बदले से ओत-प्रोत तंग सोच की भावनाएं, दूसरे- अनेक झूठे अक़ीदे, उनका दुराचरण और उनकी बुरी आदतें जिनकी कुर्आन में अनेक स्थलों पर आलोचना की गई है और उनके उस लम्बे इतिहास का पर्दाफाश किया है, जो नबियों से लड़ाई लड़ने, उनके पैग़ाम व दावत का विरोध करने, उनके शहीद करने के दुस्साहस, सरकशी, हक़ की राह रोकने, अल्लाह पाक पर आरोप बान्धने, दौलत से इश्क़, मना होने के बावजूद सूद ब्याज के कारोबार से दिलचस्पी, नाजायज़ तौर पर दूसरे लोगों का माल खाने, हराम माल का शौक़, तौरेत में अपनी इच्छानुसार फेर बदल, जीवन के प्रति बहुत अधिक लगाव और उनकी अनेक क़ौमी व नसली विशेषताओं से भरी हुई थी।

अगर हज़रत मुहम्मद सल्ल0 की जगह कोई दूसरा राजनीतिक नेता होता तो इस पेचीदा स्थिति का जायज़ा लेकर उसके अनुसार क़दम उठाता। वह अगर यहूदियों के साथ चाटुकारता और खुशामद का मामला न करता तो कम से कम उनको भड़काने और उनकी दुश्मनी मोल लेने से अवश्य सावधान रहता, लेकिन आप रिसालत के प्रचार, हक़ और सच्चाई का दो टूक ऐलान, सत्य और असत्य में फ़र्क तथा फसाद व भ्रष्टाचार के निवारण पर अल्लाह की तरफ से भेजे गए थे और आपको इसका ज़िम्मेदार बनाया गया था कि आप दुनिया की तमाम क़ौमों को जिनमें यहूद व नसारा भी शामिल हैं, इस्लाम की दो टूक दावत दें। भले ही इसके लिए आपको बड़ी से बड़ी क़ीमत चुकानी पड़े, और तरह-तरह की मुश्किलों का सामना करना पड़े। यही वह रास्ता है जिस पर सारे

नबी हमेशा काम करते रहे, और यही विशेषता राजनीति तथा नबूवत की राहों को अलग करती हैं और नबियों तथा राष्ट्रीय नेताओं में यही अहम फर्क हैं।

यहूदियों की ज़िंदगी, उनके धार्मिक विश्वास तथा उनके आचरण पर इन बातों से बड़ी ठेंस पहुंची और वह इस्लाम व मुसलमानों की दुश्मनी पर उतारु हो गए उन्होंने अपना पुराना दृष्टिकोण बदल दिया और चोरी छिपे तथा खुलकर दोनों तरह से इस्लाम के विरोध पर उतर आए। यहूदी विद्वान इस्राईल वेल्फेन्सन ने बहुत साफ लिखा है।

"अगर रसूल की शिक्षाएं सिर्फ मूर्तिपूजा के विरोध तक सीमित रहतीं और यहूदियों से उनकी रिसालत स्वीकार करने को न कहा जाता तो यहूदी और मुसलमानों में कोई झगड़ा पैदा न होता, और यहूदी श्रद्धापूर्वक रसूल की शिक्षाओं को देखते, उनका समर्थन करते और जान व माल से उनकी सहायता करते। यहां तक कि आप इन बुतों को टुकड़े–टुकड़े कर देते और मूर्तिपूजा ख़त्म हो जाती जो सारे अरब में फैली हुई थी, लेकिन इसकी शर्त यही थी कि वह उनसे और उनके दीन से कोई सम्बन्ध न रखते और न उनको अपनी रिसालत स्वीकार करने पर मजबूर करते, क्योंकि यहूदी विचारधारा किसी ऐसी चीज़ के सामने नर्म नहीं पड़ सकती जो उसको दीन से हटाना चाहती हो वह बनी इस्राईल के सिवा किसी और नस्ल के किसी नबी को मानने पर राज़ी नहीं हो सकती।"

(तारीख़ अलयहूद फिबिलादिल अरब –123)

यहूद में इस बात ने और आग भड़का दी कि उनके कुछ एक धार्मिक नेता जैसे अब्दुल्लाह बिन सलाम जिनका वह बड़ा सम्मान करते थे, मुसलमान हो गए। यहूद सोच भी न सकते थे कि उन जैसा व्यक्ति मुसलमान हो जाएगा। इसने उनके सीने में जलन की आग व हसद और भड़का दी। ☆

☆ यहूद के जो लोग मुसलमान हुए और जिन्हें हज़रत मुहम्मद सल्ल० के साथ का सौभाग्य प्राप्त हुआ उनकी संख्या 39 तक पहुंचती है।

यहूद ने सिर्फ इस्लाम के विरोध पर ही बस नहीं किया बल्कि वह

मूर्तिपूजा करने वालों को उन मुसलमानों पर खुली प्राथमिकता देने लगे जो तौहीद के अक़ीदे में उनके शरीक थे। आशा यह की जाती थी कि जब कुरैश ने मज़हब और अल्लाह के रसूल के लाए हुए दीन की तुलना होगी और इनमें चयन व प्राथमिकता का सवाल उठेगा तो यहूद मुसलमानों से अपने विरोध के बावजूद शिर्क व बुतपरस्ती पर इस्लाम से प्राथमिकता स्वीकार करेंगे, लेकिन इस्लाम दुश्मनी ने उनको इसकी इजाज़त न दी। एक बार जब यहूदी धार्मिक नेता कुरैश के सरदारों से मिलने मक्का गए तो कुरैश के सरदारों ने कहा कि आप लोग सबसे पहले अहले किताब हैं और हमारे तथा मुहम्मद सल्ल० के बीच जो मतभेद चल रहा है वह आपको मालूम है। आप क्या कहते हैं। हमारा मज़हब बेहतर है या उनका? उन्होंने जवाब दिया –आप लोगों का दीन उनके दीन से बेहतर है आप ज़्यादा हक़ पर हैं।

डा० वेल्फेन्सन ने इस घटना पर टिप्पणी करते हुए लिखा है।:–

"लेकिन एक बात जिस पर असल में इनकी निंदा की जा सकती है और जिससे एक अल्लाह पर ईमान रखने वाले हर व्यक्ति को तकलीफ पहुंचेगी चाहे वह यहूदी हो या मुसलमान, वह यहूदियों और कुरैश के बुत परस्तों के बीच हुई वह वार्ता है जिसमें यहूदियों ने कुरैश के मज़हब को इस्लाम के पैग़म्बर के लाए हुए दीन पर प्राथमिकता दी थी। फौज सम्बन्धी ज़रूरतों ने क़ौमों के लिए बहाना ढूंढकर दुश्मन पर विजय हासिल करने के लिए धोखेबाज़ी के अनेक तरीकों को उचित ठहराया है, लेकिन इस सबके बावजूद यहूदियों को यह बड़ी भूल कदापि न करनी चाहिए थी और कुरैश के ज़िम्मेदारों के सामने यह न कहना चाहिए था कि बुतों की पूजा इस्लामी तौहीद से बेहतर है। भले ही इसकी वजह से उनके मक़सदों की पूर्ति न होती। क्योंकि बनी इस्राईल जो सदियों तक बुत परस्त क़ौमों के मुक़ाबले में अपने पूर्वजों के नाम पर तौहीद का झंडा ऊंचा किए रहे और जिन्होंने इतिहास के विभिन्न समयों में इस आस्था के लिए अन गिनत तकलीफें सहन कीं और मारकाट के दुख झेले, उनका आज यह कर्तव्य था कि वह मुश्रिकों को हराने के लिए और उन्हें नीचा दिखाने के लिए अपने जीवन का बलिदान दे और

उस पर अपनी प्यारी से प्यारी चीज़ को निछावर कर दें।"

कुर्आन पाक में आता है कि :–

अनुवादः– "भला तुमने उन लोगों को नहीं देखा जिनको किताब से हिस्सा दिया गया है कि बुतों और शैतान को मानते हैं और कुफ्फार के बारे में कहते हैं कि यह लोग मोमिनों की अपेक्षा सीधे रास्ते पर हैं।"

(सूरः निसा–51)

क़िबला में बदलाव

अल्लाह के रसूल सल्ल० और तमाम मुसलमान अब तक बैतुल मुक़द्दस की तरफ मुंह करके नमाज़ पढ़ते थे। मदीना आने के बाद एक वर्ष चार महीने तक नमाज़ इसी रुख़ पर पढ़ी जाती रही। अल्लाह के रसूल सल्ल० की इच्छा थी कि काबा को मुसलमानों का क़िबला बना दिया जाए। अरब मुसलमान भी दिल से यही चाहते थे, वह किसी और जगह को काबा के मुक़ाबले का नहीं समझते थे। बैतुल मुक़द्दस की तरफ मुँह करके नमाज़ पढ़ना और उसे अपना क़िबला स्वीकार करना उनके लिए एक कठिन इम्तेहान था लेकिन वह "हमने सुना और उसका पालन किया" तथा "हम ईमान लाए जो कुछ है हमारे रब की तरफ से" पर ईमान रखते थे और इसके सिवा उनके मुँह से कुछ और नहीं निकला। वह अल्लाह के रसूल सल्ल० की आज्ञा का पालन तथा अल्लाह के सामने झुक जाने के अलावा कुछ और न जानते थे। चाहे वह उनकी इच्छा और पसन्द के अनुकूल हो या न हो। जब अल्लाह ने उनके दिलों का इम्तेहान ले लिया और उन्होंने तक़वा और आज्ञापालन का पूरा परिचय दे दिया तो क़िबला के बदलाव का आदेश कुर्आन पाक में इस तरह आयाः–

अनुवादः–"और इसी तरह हमने तुमको एक बीच की उम्मत बनाया है ताकि तुम लोगों पर गवाह बनो और पैग़म्बर तुम पर गवाह बनें और जिस क़िबला पर तुम (पहले) थे उसको हमने इसी मतलब से ठहराया था ताकि मालूम करें कि कौन हमारे पैग़म्बर का ताबेदार रहता है और कौन उल्टे पॉव फिर जाता है, और यह बात अगरचे भारी है लेकिन उन

पर नहीं जिनको अल्लाह ने राह दिखा दी है।" (सूरः बक्र 143)

मुसलमानों ने अल्लाह और रसूल अल्लाह सल्ल0 की इताअत करते हुए अपना रुख़ उसी समय काबा की तरफ कर लिया और वह क़यामत तक लिए मुसलमानों का क़िबला बना दिया गया। मुसलमान चाहे दुनिया के किसी हिस्से में हो अपना मुँह उसी तरफ करके नमाज़ पढ़ते हैं।

मदीना के मुसलमानों से कुरैश की छेड़छाड़

जब मदीना में इस्लाम के क़दम जम गए और कुरैश ने देखा कि इसकी लोकप्रियता दिन दूनी रात चौगुनी बढ़ रही है और उन्होंने महसूस किया कि अगर यह हालात कुछ दिन और बाक़ी रह गए तो बागडोर उसके हाथ से निकल जाएगी और तब यह उसका कुछ न बिगाड़ सकेंगे। यह देख कर उन्होंने पूरी तैयारी से चारों तरफ से उसका विरोध करना शुरू कर दिया, लेकिन मुसलमान अल्लाह के इस हुक्म पर डटे रहे "अपने हाथ रोके रखो और नमाज़ क़ायम करो" जिसका मक़सद यह था कि उनकी नज़र में ज़िंदगी की राहतें बेक़ीमत हो जाएं और आज्ञापालन, मन की दासता का विरोध तथा त्याग व बलिदान का कठिन काम उनके लिए आसान हो जाए।

लड़ाई की इजाज़त

जब मुसलमानों की ताक़त कुछ और बढ़ी और उनके बाजू मज़बूत हो गए तो उस समय उनको लड़ाई की इजाज़त दे दी गई, लेकिन यह सिर्फ इजाज़त थी इसको फर्ज़ (अनिवार्य) नहीं ठहराया गया था।

अनुवादः– "जिन मुसलमानों से (अनायास) लड़ाई की जाती है उसको इजाज़त है वह भी लड़े क्योंकि उन पर ज़ुल्म हो रहा है और अल्लाह उनकी मदद करेगा। यक़ीनन वह उनकी मदद पर क़ादिर है।" (सूरः हज–39)

अब्दुल्लाह बिन जहश का सरिया और ग़ज़व–ए–अबवा ☆

अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद सल्ल0 ने विभिन्न क़बीलों और इलाक़ों में छापे के लिए टुकड़ियां भेजना शुरू कीं। यह छापे या

टुकिड़यां एक तरह की झड़प के समान होते थे और इनमें विधिवत लड़ाई न होती थी। इनका मक़सद मुश्रिकों को डराना और इस्लाम की शान व शौकत का प्रदर्शन करना था।

☆ सरिया उस झड़प (Raids) को कहते हैं जिसमें हज़रत मुहम्मद सल्ल० खुद मौजूद न थे, लेकिन आपके समय में आपके इशारे पर यह छापे डाले जाते थे। ग़ज़वा (Expedition) वह लड़ाई जिसमें हज़रत मुहम्मद सल्ल० खुद मौजूद होते थे। (अनुवाद)

यहां हम विशेषकर अब्दुल्लाह बिन जहश के सरिया का उल्लेख करेंगे। क्योंकि इसके सम्बन्ध में कुर्आन पाक की एक आयत भी उतरी और इससे इस बात की पुष्टि भी होती है कि कुर्आन पाक मुसलमानों की किसी ग़लती या कोताही का साथ नहीं देता बल्कि वह विभिन्न क़ौमों तथा वर्गों के सम्बन्ध में कोई फैसला देने या राय क़ायम करने में इन्साफ का तराज़ू है जिस पर हर काम को तौला जाएगा। यह घटना संक्षेप में इस तरह है।

अल्लाह के रसूल सल्ल० ने अब्दुल्लाह बिन जहश को सन् दो हिजरी में आठ मुहाजिरों के साथ एक चढ़ाई पर भेजा। आपने उनको एक लेख (ख़त) भी दिया और कहा कि इस लेख को अभी न देखें, जब दो दिन का सफर पूरा कर लें तब इसको खोल कर पढ़ें और फिर जो कुछ इसमें है उसका पालन करें, लेकिन अपने किसी साथी को उसके पालन करने पर मजबूर न करें।

जब अब्दुल्लाह बिन जहश ने दो दिन का सफर पूरा कर लिया तो यह ख़त खोलकर देखा, उसमें लिखा हुआ था। " जब यह ख़त तुम देख लेना तो आगे बढ़कर मक्का और तायफ के बीच नख़लिस्तान में उतर जाना और वहां से कुरैश की गतिविधियों पर नज़र रखना और उनकी ख़बरें हमारे पास भेजते रहना।" अब्दुल्लाह बिन जहश ने ख़त पढ़कर कहा– "आक़ा का हुक्म सर ऑखों पर।" उन्होंने अपने साथियों से कहा– अल्लाह के रसूल सल्ल० ने मुझे यह हुक्म दिया कि आगे नख़लिस्तान में उतर कर वहां से कुरैश की सरगर्मियों पर नज़र रखूं और इसकी ख़बरें आपको पहुंचाता रहूं। मुझे आपने यह भी हुक्म दिया है कि किसी और को इस पर मजबूर न करूं। अब तुम में जिसको शहादत का

शौक है वह हमारे साथ आए और जो यह नहीं चाहता वह वापस लौट जाए। मुझे हर हाल में अल्लाह के रसूल सल्ल0 के हुक्म का पालन करना है इसके बाद वह आगे बढ़े और उनके सभी साथी उनके साथ रहे एक आदमी ने पीछे रहना गवारा न किया।

आगे चलकर वह और उनके सब साथी नखलिस्तान में ठहरे। इतने में कुरैश का एक काफिला वहां से गुज़रा उसमें अमर बिन अलहज़रमी भी था। कुरैश इस काफिले को देखकर डर से गए। उनका पड़ाव भी करीब ही था। इतने में अक्काशा बिन महासिन ने जिनका सर मुँडा हुआ था अपना सर उठाकर देखा। कुरैश ने जब उनको देखा तो संतुष्टि जताई और कहा कि इनसे डरने की ज़रूरत नही कि यह तो "उमरा"☆ वाले हैं। यह रजब ☆ सन 2 हिजरी के आख़िरी दिन की घटना है। इसके बाद मुसलमानों ने आपस में सलाह की और यह तय पाया कि अगर तुमने इन कुफ्फार को इस रात में छोड़ दिया, तो यह काबा में दाख़िल हो जाएंगे और तुमको वहां जाने से बाज़ रखेंगे और तुम इनसे लड़ते हो तो पवित्र महीने में जंग करना पड़ेगी। इस बात ने उन लोगों को चिंता में डाल दिया और वह इस तरह कोई कदम उठाने से डरे लेकिन फिर सबका मत हुआ कि उनमें से जितने सम्भव हो सकें उनको मौत के घाट उतार दिया जाए और उनके माल व असबाब पर कब्ज़ा कर लिया जाए। अतएव वाकिद बिन अब्दुल्लाह अलतमीमी ने पहला तीर चलाया और अम्र बिन अलहजरमी को मार दिया, दो आदिमयों को कैदी बना लिया गया। अब्दुल्लाह बिन जहश और उनके साथी उस काफिले तथा दो कैदियों को लेकर वापस हुए।

☆1 अरब रजब के महीने में उमरा (काबा की परिक्रमा) करने को प्राथमिकता देते थे।

☆2 रजब उन चार पवित्र महीनों में पहला महीना है जिनमें जंग करना मना था अज्ञानता के युग तथा इस्लाम के शुरूआती दौर में अरब इस पर कार बन्द थे। शेष तीन महीने ज़ीकादा, ज़िल हिज्जा और मोहर्रम के हैं। विद्वानों का मत है कि यह आयत सूरः बराअत की इस आयत से मन्सूख हो चुकी है। अनुवादः- फिर जब अदब के महीने बीत जाएं तो उन मुशरिकों को जहां पाओ क़त्ल करो और उनको गिरफ्तार करो। (9:5)। सईद बिन अल मुसैब से पूछा गया "क्या मुसलमान पवित्र महीने में कुफ्फार से जंग कर सकते हैं?" उन्होंने जवाब दिया 'हां' इस्लामी लड़ाईयों में इसी का पालन होता था इतिहास में कहीं नही मिलता कि हर साल एक महीना रजब अथवा तीन महीने ज़ीकादा, ज़िल हिज्जा व मोहर्रम में जंग बन्द कर

जब मदीना में अल्लाह के रसूल सल्ल0 के सामने उनकी हाज़िरी हुई तो आपने फरमाया–"मैंने तुमको पाक महीने में जंग करने के लिए तो नहीं कहा था फिर आपने उनमें से किसी चीज़ को लेने से इन्कार कर दिया जो वह माल ग़नीमत में लाए थे। अल्लाह के रसूल ने जब यह फरमाया तो उनके हाथ पैर फूल गए और वह घबराए कि अब मौत यकीनी है। मुसलमानों ने भी बहुत खरी–खरी सुनाई। कुरैश ने कहा कि लो मुहम्मद सल्ल0 ने पाक महीने में भी जंग और मारकाट जायज़ कर दी। इस मौके पर कुर्आन की यह आयत उतरीः–

अनुवादः (ऐ! मुहम्मद सल्ल0) लोग तुमसे इज्ज़त वाले महीनों में लड़ाई करने के बारे में पूछते हैं कह दो कि इनमें लड़ना बहुत गुनाह है, और अल्लाह की राह से रोकना और उससे कुफ्र करना तथा मस्जिदे हरम (काबा) में जाने से रोकना और वहाँ से लोगों को निकाल देना अल्लाह के नज़दीक इससे भी ज़्यादा गुनाह और फितना व मारकाट से भी बढ़कर हैं। (सूरः बक्र–217)

अल्लामा इब्न अल कैयम ज़ाद अल मआद में लिखते हैं कि

"अल्लाह पाक ने अपने दोस्तों और दुश्मनों में इन्साफ का मामला फरमाया और अपने प्यारे भक्तों की, उनके इस काम में कि वह पाक महीने में गुनाह कर बैठे, समर्थन नहीं किया। बल्कि उसको बहुत बड़ी बात ठहराया और साथ ही यह भी बता दिया कि उसके दुश्मन मुश्रिक अकेले एक पाक महीने में गुनाह करने से कहीं अधिक निंदा के पात्र और सज़ा के लायक हैं, ख़ासकर इस हाल में कि उसके प्यारे भक्तों ने इसमें बहाने से काम लिया था या यह कहना चाहिए कि उनसे इस मामले में इस तरह की चूक हुई थी, जिसको अल्लाह पाक उनके तौहीद की आस्था, उसके प्रति समर्पण तथा अल्लाह के रसूल सल्ल0 के साथ हिजरत व अल्लाह के लिए त्याग व बलिदान की बदौलत माफ करने वाला है।"

हज़रत मुहम्मद सल्ल0 ने ग़ज़्व–ए–अलअबवा में जिसको "बवात" भी कहा जाता है खुद हिस्सा लिया। यह आपका पहला ग़ज़्वा है,

लेकिन इसमें जंग की नौबत नहीं आई इस लिए आप सल्ल0 वापस आए। इसके बाद अनेक सरिया और ग़ज़वे हुए ।

रमज़ान के रोज़े फर्ज़ होना

जब इस्लाम मुसलमानों के दिलों में अच्छी तरह समा गया उन्हें नमाज़ से लगाव पैदा हो गया, उनके अन्दर शरीअत (इस्लामी शिक्षा) पर चलने और अल्लाह के आदेशों के पालन की भावना घर कर गई और वह उसके प्रतिपालन की प्रतीक्षा में रहने लगे तो अल्लाह ने रोज़े का हुक्म दिया यह हिजरत के दूसरे साल की बात है। इस मौके पर कुर्आन की यह आयत उतरीः—

अनुवादः—"मोमिनो! तुम पर रोज़े फर्ज़ किए गए हैं जिस तरह तुमसे पहले लोगों पर फर्ज़ किए गए थे ताकि तुम परहेज़गार बनो।

(सूरः बक्र—183)

दूसरी आयत यह उतरी हैः—

अनुवादः— "(रोज़ों का महीना) रमज़ान का महीना है जिसमें कुर्आन (पहले पहल) उतरा, जो लोगों को रास्ता दिखाता है, जिसमें हिदायत की खुली निशानियां हैं, और जो सच—झूठ को अलग अलग करने वाला है, तो जो कोई तुम में से इस महीने में मौजूद हो, उसे चाहिए कि पूरे महीने के रोज़े रखे।

(सूरः बक्र—185)

अध्याय ग्यारह

बद्र की फैसलाकुन जंग

हिजरत के दूसरे साल रमज़ान ही में बद्र की वह निर्णायक ऐतिहासिक जंग हुई जिसमें इस्लाम और उसकी दावत के भविष्य का फैसला हुआ, जिस पर पूरी इंसानियत की किस्मत निर्भर थी। उसके बाद से आज तक मुसलमानों को जो भी कामयाबियां मिलीं और उनकी जितनी सलतनतें क़ायम हुई वह सब उसी फतह का प्रतिफल है जो बद्र के मैदान में मुट्ठी भर लोगों को हासिल हुई। कुर्आन में इस जंग को "फैसले का दिन" (यौमुल फुर्कान) कहा गया है।:–

अनुवादः–"अगर तुम अल्लाह पर और उसकी मदद पर ईमान रखते हो तो सच–झूठ में फर्क करने के दिन (अर्थात जंग बद्र में) जिस दिन दोनों फौजों में मुठभेड़ हो गई, अपने बन्दे (मुहम्मद सल्ल0) पर नाज़िल फरमाई। (सूरः अन्फाल–41)

उस जंग की पृष्ठ भूमि यह है कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 को यह ख़बर मिली कि अबु सुफियान शाम (सीरिया) से कुरैश के एक बड़े व्यापारी क़ाफिले को लेकर मक्का जा रहा है। जिसके साथ बड़ा माल है। यह वह समय था जब मुसलमानों और मुश्रिकों में लड़ाई का सिलसिल जारी था, और कुरैश ने इस्लाम की बढ़ती हुई ताक़त के मुक़ाबले, हक़ की राह में रुकावटें डालने और मुसलमानों के लिए अनेक तरह की कठिनाईयां पैदा करने में कोई कसर न छोड़ी थी। उन्होंने अपने सभी आर्थिक साधन, जंग का व अन्य ज़रूरी सामान इसके लिए लगा रखे थे। उनके जंगी दस्ते मदीना की सीमाओं और चारगाहों तक पहुंच जाते थे। जब अल्लाह के रसूल सल्ल0 को यह सूचना मिली कि इस्लाम का घोर विरोधी अबु सुफियान इतने बड़े क़ाफिले के साथ आ रहा है तो आपने लोगों (सहाबा) को आगे बढ़कर उसका सामना करने का हुक्म दिया, लेकिन किसी विशेष तैयारी के साथ नहीं क्योंकि यह एक व्यापारी क़ाफिला था कोई सेना की टुकड़ी न थी। उधर अबु सुफियान को यह

ख़बर पहुंची कि अल्लाह के रसूल सल्ल० इस क़ाफ़िले के मुक़ाबले के लिए मदीना से चल चुके हैं तो उसने फ़ौरन अपना एक सन्देश वाहक मक्का भेजा और याचना की कि वह उसकी मदद करें, और मुसलमानों को आगे बढ़ने से रोकें। जब यह फ़रियाद और पुकार मक्का पहुंची तो कुरैश ने पूरी तैयारी शुरू कर दी और बुहत तेज़ी के साथ एक विशाल सेना लेकर मुक़ाबले के लिए निकल पड़े। उनके सरदारों में से कोई सरदार बाक़ी नहीं बचा जो इसमें शामिल न हुआ हो। उन्होंने आस–पास के क़बीलों को भी उसमें शामिल कर लिया। यह लश्कर बड़े गुस्से में बदले की भावना से ओत–प्रोत चल पड़ा।

अन्सार की वफ़ादारी

जब अल्लाह के रसूल सल्ल० को यह सूचना मिली कि यह विशाल सेना प्रस्थान कर चुकी है तो आपने अपने साथियों से सलाह की। आप वास्तव में अन्सार की प्रतिक्रिया जानना चाहते थे क्योंकि आप से इसी बात पर बैअत की थी कि वह मदीना में आपकी पूरी मदद करेंगे। हज़रत मुहम्मद सल्ल० ने जब मदीना से प्रस्थान करने का इरादा किया तो आपने यह मालूम करना चाहा कि इस समय अन्सार का क्या विचार है। सबसे पहले मुहाजिरों ने अपनी बात कही और बहुत अच्छी तरह अपनी हिमायत का आपको विश्वास दिलाया। आपने दोबारा सलाह की। मुहाजिरों ने पुनः आपका समर्थन किया। जब तीसरी बार आपने पूछा तो अन्सार को अहसास हुआ कि आप उनकी प्रतिक्रिया जानना चाहते हैं। इस लिए साद बिन मआज़ ने फ़ौरन इसका जवाब दिया और निवेदन किया कि या रसूल अल्लाह सल्ल० शायद आप यह सोच रहे हैं कि अन्सार ने सिर्फ़ अपने वतन में आपकी मदद का ज़िम्मा लिया है। मैं अन्सार की तरफ़ से यह बात कह रहा हूं कि आप जहां चाहें चलें, जिससे चाहें सम्बन्ध जोड़ें और जिससे चाहें ख़त्म करें, हमारे माल व दौलत में से जितना चाहें लें और हमको जितना चाहें दें, क्योंकि आप जो कुछ लेंगे वह हमें उससे कहीं अधिक प्यारा होगा जो आप छोड़ेंगे। आप कोई हुक्म देंगे तो हम उसका पालन करेंगे। अल्लाह की क़सम अगर

आप चलना शुरू करें यहां तक कि "बर्क ग़िमदान"☆ तक पहुंच जाएं तब भी हम आपके साथ चलते रहेंगे, और अल्लाह की क़सम अगर आप समुन्द्र में प्रवेश करेंगे तो हम भी आपके साथ उस समुन्द्र में कूद जाएंगे।

☆ सीरत इब्ने हिशाम में "बर्कलग़िमाद" का शब्द आया है यह यमन के इलाके में एक स्थान का नाम है। एक कथन यह भी है कि वह हिज (दायरे समूद) का एक दूर स्थित हिस्सा है। सुहेली कहते हैं कि मैंने तफ़सीर की कुछ किताबों में देखा है कि वह हब्शा का शहर है। कुछ भी हो वह मदीना से दूर स्थित कोई स्थान था।

मिकदाद रज़ी0 ने कहा— हम आपसे ऐसा न कहेंगे जैसा मूसा अ0 की क़ौम ने मूसा अ0 से कहा था।— "जाओ तुम और तुम्हारा रब दोनों, मिलकर जंग करो, हम तो यहां बैठे रहेंगे।" हम आपके दायें लड़ेंगे, आपके बायें लड़ेंगे और आपके सामने जाकर लड़ेंगे। आप के पीछे लड़ेंगे।

अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने यह वाक्य सुने तो आपका चेहरा ख़ुशी से दमकने लगा। आपको अपने मानने वालों से यह बात सुनकर बहुत ख़ुशी हुई। आपने फरमाया— चलो और बशारत (ख़ुश ख़बरी) हासिल करो।

नौ जवानों में जेहाद का शौक

जब मुजाहिदीन (जेहाद करने वाले) बद्र के मैदान की तरफ चले तो एक नव जवान सहाबी उमर बिन अबी वक्कास रज़ी0 जिनकी उमर 16 वर्ष की थी, मुजाहिदों के साथ हो लिए। उन्हें डर था कि कहीं अल्लाह के रसूल सल्ल0 उन्हें छोटा समझकर वापस न कर दें। इस लिए वह आपकी निगाह से बच रहे थे। उनके बड़े भाई साद बिन अबी वक्कास रज़ी0 ने उनसे छिपने की वजह पूछा तो उमैर ने कहा कि मुझे डर है कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 मुझे कमसिन समझकर वापस ने कर दें। मैं इस जेहाद में शामिल होना चाहता हूं शायद अल्लाह पाक मुझे भी शहादत नसीब फरमाए। उनको जिसका डर था वही हुआ अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने इस विचार से कि वह अभी जंग करने की उम्र में नहीं पहुंचे हैं उनको वापस करना चाहा तो वह रोने लगे। यह देखकर अल्लाह के रसूल सल्ल0 बहुत प्रभावित हुए, और आपने उन्हें शामिल

होने की इजाज़त दे दी। उन्होंने इसी जंग में शहादत पाई और उनकी कामना पूरी हुई।

दोनों की सैन्य शक्ति में बड़ा फर्क

अल्लाह के रसूल सल्ल0 तेज़ी के साथ मैदान जंग की तरफ चले आपके साथ 313 मुसलमान (सहाबी) थे। मुसलमानों के पास सिर्फ दो घोड़े और 70 ऊंट थे। एक–एक ऊंट पर दो–दो, तीन–तीन सहाबी बारी बारी से बैठते थे, इसमें सेनापति और साधारण सिपाही में कोई भेद–भाव नहीं था। इसमें खुद अल्लाह के रसूल सल्ल0 हज़रत अबुबक्र व हज़रत उमर रज़ी0 व कई अन्य प्रमुख सहाबी शामिल थे। जिहाद का झण्डा हज़रत मुसअब बिन उमैर रज़ी0 को, मुहाजरीन का झण्डा हज़रत अली रज़ी0 को और अन्सार का झण्डा हज़रत साद बिन मआज़ रज़ी0 को दिया गया।

जब अबु सुफियान को यह सूचना मिली कि इस्लामी लश्कर (सेना) प्रस्थान कर चुका है तो वह नीचे समुन्द्र तट की तरफ आ गया और यह इत्मिनान करके कि अब उसे कोई ख़तरा नहीं और क़ाफिला भी सुरक्षित है, उसने कुरैश को यह सन्देश भेजा कि तुम लोग वापस लौट जाओ क्योंकि तुम क़ाफिले की सुरक्षा के लिए आए थे और यह मक़सद पूरा हो चुका है। यह सुनकर उन लोगों ने वापस जाने का इरादा किया लेकिन अबु जहल की ज़िद ने उनको वापस जाने से रोक दिया। वह इस पर किसी तरह तैयार न था कि बिना जंग किए वापस जाया जाए। कुरैश के लश्कर में सिपाही की संख्या एक हज़ार से अधिक थी और उसमें एक से एक अनुभवी वीर बांकरे शामिल थे। अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने उन्हें देखकर फरमाया–मक्का ने आज अपने जिगर के टुकड़ों को तुम्हारे सामने डाल दिया है।

कुरैश की सेना ने बद्र पहुंचकर घाटी के एक तरफ पड़ाव डाला। मुसलमानों ने दूसरी तरफ। इस बीच हुबाब बिन अल मुन्ज़ेर रज़ी0 अल्लाह के रसूल सल्ल0 के पास आए और कहा या रसूल अल्लाह सल्ल0! क्या यहां हमने पड़ाव अल्लाह के हुक्म से डाला है और इसमें

कोई बदलाव हमारे लिए जायज़ नहीं? या इस का सम्बन्ध सामरिक नीति से है? आपने फरमाया नहीं। यह रण कौशल की बात है इसमें दुश्मन को धोखा में डालने की तमाम बातें की जा सकती हैं। उन्होंने कहा या रसूल अल्लाह सल्ल0 तब तो यहां पड़ाव डालना उचित नहीं है। उन्होंने एक दूसरी जगह की तरफ इशारा किया जो हालात की नज़र से अधिक सुरक्षित थी। अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने अपनी सहमति जताई। उसके बाद आप अपने सभी साथियों के साथ उस जगह की तरफ चले और वहां पहुंचकर पड़ाव डाला जो पानी से ज़्यादा करीब थी। अल्लाह के रसूल सल्ल0 और उनके साथी रात तक सबसे पहले पानी तक पहुंच गए और उसके हौज़ तैयार कर लिए। आप सल्ल0 ने कुफ्फार को भी उससे पानी पीने की इजाज़त दी। उसी रात पानी भी बरसा जो मुश्रिकों को बहुत भारी पड़ा, और उनका आगे बढ़ना रुक गया, लेकिन मुसलमानों के लिए यह रहमत की बारिश साबित हुई जिसने रेत को और जमा दिया। इस तरह अल्लाह ने मुसलमानों के लिए अनुकूल वातावरण तैयार कर दिया और उनके दिलों को इत्मिनान नसीब हुआ।

कुर्आन पाक में आता है।

अनुवादः—"और तुम पर आसमान से पानी बरसा दिया ताकि तुमको इससे पाक कर दे और तुम्हारे दिलों को मज़बूत कर दे और इससे तुम्हारे पॉव जमाए रखे।" (सूरः अन्फाल—11)

हज़रत मुहम्मद सल्ल0 सेनापति के रूप में

इस मौके पर आपका आसाधारण एवं अद्वितीय नेतृत्व ☆ अपनी चरम सीमा पर था आपकी व्यूह रचना, दुश्मन की ताकत का सही अन्दाज़ा, उसके पड़ाव तथा टुकड़ियों की सही जानकारी यह वह चीज़ें हैं जिनमें आपके नेतृत्व का सही अनुमान लगाया जा सकता है।

जंग की तैयारी

आप सल्ल0 के लिए मैदाने जंग के सामने एक टीले पर एक छप्पर डाल दिया गया। वहां से आप मैदान में आए और हाथ के इशारे से बताने लगे कि इन्शा अल्लाह (अल्लाह ने चाहा) यहां फलां आदमी

मारा जाएगा, यहां फलां आदमी मारा जाएगा। अतएव एक जगह भी उसके विपरीत नहीं हुआ, और आपका कहना शब्द ब शब्द सही हुआ।

जब दोनों सेनाएं आमने सामने हुयीं तो अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने कहा, "ऐ अल्लाह! यह कुरैश के लोग आज पूरे घमण्ड के साथ आए हैं यह तुझसे लड़ाई पर तुले हुए हैं और तेरे रसूल को झूठा ठहरा रहे है।"

वह जुमा (शुक्रवार) की रात थी और रमज़ानुल मुबारक की 17 तारीख़। सुबह हुई तो कुरैश की टुकड़ियां सामने आ चुकी थीं और दोनों पक्ष आमने सामने थे।

अल्लाह से दुआ

अल्लाह के रसूल सल्ल0 व्यूह रचना करने के बाद अपने शिविर में हज़रत अबुबक्र रज़ी0 के साथ वापस आए और अल्लाह से गिड़गिड़ा कर दुआ की। आप ख़ूब जानते थे कि अगर आज मुसलमानों के भाग्य का फ़ैसला संख्या व शक्ति के आधार पर होगा तो परिणाम साफ है। मुसलमान कम और कमज़ोर थे। दुश्मनों का पलड़ा भारी था। दोनों की संख्या और बल का कोई जोड़ न था। आपने यह देखकर मुसलमानों के पलड़े पर वह पासंग रख दिया जो सबसे भारी था और उससे मुसलमानों का पलड़ा भारी हो गया। आपने सृष्टि के निर्माता उस महाशक्ति के सामने अपनी फरियाद रखी जिसके फैसले और हुक्म कोई टाल नहीं सकता और मुसलमानों के लिए अल्लाह की मदद और समर्थन की सिफारिश फरमाई। आपने फरमाया– "ऐ अल्लाह! अगर आज तूने मुझसे जिस चीज़ का वादा किया है वह पूरा फरमा। ऐ अल्लाह! तेरी मदद की ज़रूरत है।" आप दोनों हाथ उठाकर दुआ फरमा रहे थे यहां तक चादर आपके कन्धे से गिर पड़ी। हज़रत अबुबक्र रज़ी0 आपको ढारस दे रहे थे और इत्मिनान दिला रहे थे। उनसे आपका रोना देखा न जाता था।

मुसलमानों का वास्तविक परिचय

अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने इस नाजुक घड़ी में अपनी छोटी सी सेना के लिए जिन संक्षिप्त शब्दों में अल्लाह से याचना की वह आपके आत्म विश्वास, आपकी बेचैनी, सब्र और विनय का परिचायक था। इन

शब्दों द्वारा मुसलमानों का वास्तविक परिचय, दुनिया में असल स्थान तथा उनकी वास्तविक क़ीमत और उनकी उपयोगिता व ज़रूरत का सही सही चित्रण पेश किया गया था और यह इस बात का एलान था कि यह उम्मत जिस सीमा की रक्षा के लिए तैनात की गई है वह सच्चे दिल से अल्लाह की इबादत, उसके आदेशों का पूरी तरह पालन और उसकी तरफ सच्चे मन से लोगों को बुलाने के साथ उसकी इबादत और उसकी पूरी इताअत का मोर्चा है।

बद्र की कामयाबी ने जिसने सभी अन्दाज़ों को ग़लत साबित कर दिखाया। आप सल्ल0 के शब्दों को सदा के लिए साकार कर दिया और प्रमाण पेश कर दिया कि आपकी बात शब्द ब शब्द सही थी। वास्तव में मुसलमानों की सही, सच्ची और बोलती हुई तस्वीर यही है।

फिर अल्लाह के रसूल सल्ल0 सेना के सामने आए और अल्लाह के रास्ते में जिहाद व शहादत का शौक दिलाया। इसी बीच उत्बा बिन रबिया उसके भाई शैबा और उसका बेटा वलीद सामने आ गए और मुसलमानों को ललकारा। उनकी ललकार के जवाब में अन्सार के तीन नौजवान निकले जिन्हें देखकर उन्होंने पूछा– तुम कौन लोग हो?

जवाब मिला– हम अन्सार में से हैं।

वह कहने लगे– शरीफ लोग हो लेकिन हमारे जोड़ के नहीं हो।

हमारे मुक़ाबले के लिए हमारे चचेरे भाईयों में से (कुरैश) किसी को भेजो। यह सुन कर अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने कहा– उबैदा बिन अलहारिस, हमज़ा, अली! तुम तीनों इनके मुक़ाबले के लिए जाओ।

उनको देखकर उन्होंने कहा–हाँ, अब बराबर की जोड़ी है।

सबसे पहले उबैदा ने जो उन तीनों में बड़े थे, उत्बा को ललकारा। हमज़ा ने शैबा को और अली ने वलीद बिन उत्बा को ललकारा। हज़रत हमज़ा और हज़रत अली रज़ी0 ने देखते ही देखते उन दोनों का काम तमाम कर दिया। उबैदा और उत्बा में कुछ लड़ाई हुई। कोई फैसला न होता देखकर हज़रत अली और हज़रत हमज़ा अपनी तलवारें लेकर उत्बा पर हमला किया और उसका काम तमाम करके हज़रत उबैदा को ज़ख़्मी हाल में वापस लाए और उन्होंने बाद में शहादत पायी। इसी वक़्त दोनों

सेनाओं में जंग छिड़ गई और वे एक दूसरे से लड़ने लगे। अल्लाह के रसूल सल्ल० ने फरमाया– "चलो बढ़ो उस जन्नत की तरफ जिसकी चौड़ाई आसमानों और ज़मीन के बराबर है।"

पहला शहीद

उमैर बिन अलहमाम अंसारी ने यह वाक्य सुना तो कहने लगे– या रसूल अल्लाह वह जन्नत आसमानों और ज़मीनों के बराबर है? आपने फरमाया– 'हाँ'। कहने लगे– "वाह! वाह!" आपने फरमाया– "यह तुम क्या कह रहे हो?" उन्होंने कहा– "नहीं, या रसूल अल्लाह और कोई बात नहीं। यह मैं इस लिए कह रहा हूं कि शायद मेरी किसमत में भी यह जन्नत हो।' आप ने फरमया–'हां, हां। तुम्हें यह जन्नत नसीब होगी।' इसके बाद उन्होंने अपने तरकश से कुछ खजूरें निकालीं और खाने लगे। फिर अचानक कहने लगे कि अगर मैंने खजूरों का ख़त्म करने का इन्तेज़ार किया तो बहुत देर हो जाएगी। इतना जीने की ताब नहीं। यह कहकर जो खजूरें रह गई थीं फेंक दीं और लड़ाई के मैदान में कूद पड़े और शहादत पाई। यह बद्र की लड़ाई के पहले शहीद थे।

दूसरी तरफ इस्लाम के मुजाहिद सीसा पिलाई हुई दीवार की तरह दुश्मनों के लश्कर के मुक़ाबले में डटे हुए थे। उनमें सब्र था। साहस था और उनके दिल अल्लाह की याद में डूबे रहते थे। अल्लाह के रसूल सल्ल० ने लड़ाई में भरपूर हिस्सा लिया। आप दुश्मन से सबसे अधिक करीब थे और आपसे अधिक बहादुर वीर कोई दूसरा नज़र न आता था। अल्लाह ने मुसलमानों की मदद के लिए फरिश्ते भेजे और उन्होंने मुश्रिकों को तहस नहस कर दिया। कुर्आन पाक में अल्ललाह का इरशाद है।:–

अनुवादः– "जब तुम्हारा परवर दिगार फरिश्तों को इरशाद फरमाता था कि मैं तुम्हारे साथ हूँ। तुम मोमिनों को तसल्ली दो कि साबित क़दम रहें। मैं अभी–अभी काफिरों के दिलों में रौब व हैबत डाले देता हूँ तुम भी उनके सर मारकर उड़ा दो और उनका पोर पोर मारकर तोड़ दो।"

(सूरः अन्फाल–12)

जिहाद का शौक़

जिहाद के शौक़ में और शहादत के शौक़ में आज सगे भाईयों और करीबी दोस्तों में रस्साकशी हो रही थी। अब्दुर्रहमान बिन औफ रज़ी० बयान करते हैं कि बद्र की लड़ाई में, मैं अपनी टुकड़ी में था कि अचानक मेरी निगाह उठी। मैंने देखा कि मेरे दाएं और बाएं दो कमसिन नौजवान हैं। इन दोनों को अपने पास देखकर मुझे कुछ चिन्ता हुई। मैं सोच ही रहा था कि उनमें से एक ने अपने साथी से छुपाते हुए मेरे कान में चुपके से कहा–चचा! मुझे ज़रा अबुजहल को दिखा दीजिए। मैंने कहा–तुम्हारा इससे क्या मतलब है? उन्होंने कहा कि मैंने अल्लाह से अहद किया था कि जहां कहीं भी उसको देख लूंगा उसे ज़रूर ठिकाने लगा दूंगा या अपनी जान दे दूंगा। दूसरे ने भी मेरे कान में चुपके से यही बात कही। हज़रत अब्दुर्रहमान कहते हैं कि मैंने अबुजहल की तरफ इशारा ही किया था कि दोनों बाज़ की तरह उस पर झपटे और उसे वहीं ढेर कर दिया। यह दोनों जियाले 'अज़रा' के सपूत थे। जब अबुजहल मारा गया तो अल्लाह के रसूल सल्ल० ने फरमाया– यह अबुजहल है, इस उम्मत का फिरऔन।

कामयाबी

इस लड़ाई में मुसलमानों को कामयाबी हुई और कुफ्फार की हार। कामयाबी पर अल्लाह के रसूल सल्ल० ने फरमाया– " अल्लाह का शुक्र है जिसने अपना वादा पूरा किया, अपने बन्दे की मदद फरमाई और अकेले सारी पार्टियों को परास्त दी।"

कुर्आन पाक में आया है।–

अनुवादः–" और अल्लाह ने बद्र की लड़ाई में भी तुम्हारी मदद की थी और उस समय भी तुम बे सरोसामान थे। पस अल्लाह से डरो, और उन एहसानों का याद करो ताकि शुक्र करो।"

(सूरः आल–ए –इमरान–123)

आपने आदेश दिया कि सारे मृतकों को वहां स्थित अन्धे कुएं में डाल दिए जाएं। वह सब उसमें डाल दिए गए। आपने वहां खड़े होकर

कहा, " ऐ कुएं वालों! क्या तुमको तुम्हारा रब का कहना सच नज़र आया? मैंने तो अपने रब का वादा बिल्कुल हक़ पाया है।"

इस लड़ाई में कुफ़्फार के 70 बड़े नामी सरदार मारे गए और 70 कैदी बनाए गए। मुसलमानों में कुरैश के 6 और अन्सार के 8 सहाबी शहीद हुए।

जंगे बद्र का नतीजा

जंग ख़त्म होने के बाद अल्लाह के रसूल सल्ल0 मदीना वापस आए। इस जंग की वजह से मदीना और आस–पास दुश्मनों पर मुसलमानों का रौब व दबदबा बन गया और मदीनावासी बड़ी संख्या में इस्लाम लाए।

कामयाबी की खुशख़बरी लेकर अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने जिन दो लोगों को पहले मदीना भेजा था उनमें एक अब्दुल्लाह बिन रवाहा थे। उन्होंने मदीनावासियों को कामयाबी की खुशख़बरी इन शब्दों में सुनाई," ऐ अन्सार के लोगो! अल्लाह के रसूल सल्ल0 की सलामती और कुफ़्फार की गिरफ्तारी व क़त्ल तुम्हे मुबारक हो।" कुरैश के जो सरदार लड़ाई में मारे गए थे वह उनमें से एक–एक के नाम का एलान करते और घर जाकर यह खुशख़बरी सुनाते। बच्चे उनके साथ तराने गाते और खुशियां मनाते। कुछ लोग यह ख़बर सुनकर यक़ीन करते और कुछ चिन्तित होते और अल्लाह के रसूल सल्ल0 के आने का बेसब्री से इन्तेज़ार करते। क्योंकि उन्हें यक़ीन नहीं होता था, और जब अल्लाह के रसूल सल्ल0 मदीना तशरीफ लाए। इसके बाद अल्लाह के रसूल सल्ल0 के गुलाम शुकरान की निगरानी में कैदियों को लाया गया। हज़रत मुहम्मद सल्ल0 जब "रोहा" पहुंचे तो मुसलमानों ने आगे बढ़कर आपकी अगवानी की और कामयाबी के लिए बधाई दी।

मक्का के मुश्रिकों के घरों में हाहाकार मच गया जो लोग मारे गए थे उनके घरों में रोना पिटना मच गया। इस्लाम के दुश्मनों के दिलों पर इस्लाम का रौब बैठ गया। अबु सुफियान ने मन्नत मानी कि जब तक अल्लाह के रसूल सल्ल0 और मुसलमानों से उसकी दोबारा लड़ाई न

होगी तब तक वह अपने सर पर पानी की एक बूंद भी नहीं डालेगा। बद्र में कामयाबी से मक्का के मुसलमानों ने इत्मीनान की सांस ली और वह अपने अन्दर ताकत व इज़्ज़त महसूस करने लगे।

ईमान का रिश्ता ख़ून के रिश्ते से अधिक मज़बूत

बद्र की लड़ाई में अबु अज़ीज़ बिन उमैर बिन हाशिम भी कैदी बनाकर लाए गए। यह मसअब बिन उमैर रज़ी0 के सगे भाई थे। मुसअब बिन उमैर मुसलमानों का झण्डा लेकर चलते थे और उनके भाई कुफ्फार का झण्डा। लड़ाई के मैदान में जब मुसअब अपने भाई के पास से गुज़रे तो उस समय एक अन्सारी उनके हाथ बान्ध रहे थे। मुसअब ने अन्सारी से कहा ज़रा अच्छी तरह कसना। इसकी मॉ बड़ी मालदार है उससे फिदिया की अच्छी रक़म मिलने की उम्मीद है। अबु अज़ीज़ ने यह सुनकर अपने भाई मुसअब की तरफ मुँह करके कहा– "भाई! तुम भाई होकर यह सलाह दे रहे हो?" मुसअब ने कहा– "तुम मेरे भाई नहीं हो। भाई वह है जो तुम्हारे हाथ बान्ध रहा है।"

कैदियों के साथ मुसलमानों का सुलूक

अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने कैदियों के साथ अच्छा सुलूक करने की नसीहत फरमाई। अबु अज़ीज़ बयान करते हैं कि जब वह मुझे बद्र से कैदी बनाकर लाए तो मुझे अन्सार के एक ख़ानदान में जगह मिली। वह दोनों वक़्त अपने खानों में से रोटी तो मुझे देते और ख़ुद खजूर पर गुज़ारा करते। यह अल्लाह के रसूल सल्ल0 की नसीहत का असर था। कि किसी को कहीं से रोटी का एक टुकड़ा भी मिल जाता तो मुझे लाकर देता। मुझे शर्म महसूस होती और मैं उसे लौटा देता लेकिन वह ज़बर्दस्ती मुझे देता और ख़ुद उसे हाथ भी न लगाता।

इन्हीं कैदियों में अल्लाह के रसूल सल्ल0 के चचा अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब और आपके चचेरे भाई अकील बिन अबी तालिब और आप सल्ल0 की बेटी ज़ैनब के पति अबुल आस बिन अल–रबीय भी थे। उनके साथ कोई विशिष्ट बर्ताव न करके आम कैदियों जैसा ही बर्ताव किया गया।

बच्चों की शिक्षा के बदले कैदियों की रिहाई

रसूल अल्लाह सल्ल० ने इन कैदियों के साथ अच्छा बर्ताव किया और उनका फिदिया स्वीकार किया। जो जितना मालदार होता उसी के अनुसार उससे फिदिया लिया जाता। जिनके पास देने के लिए कुछ न होता आप उसे छोड़ देने का आदेश देते। कुरैश ने बहुत से क़ैदी फिदिया देकर आज़ाद कराए। कुछ ऐसे क़ैदी भी थे जिनका फिदिया नहीं हो सका। आपने उनके लिए सुझाव दिया कि वह अन्सार के बच्चों को लिखना पढ़ना सिखाएं। एक क़ैदी पर दस मुसलमानों को पढ़ाने की ज़िम्मेदारी अनिवार्य की गयी। ज़ैद बिन साबित रज़ी० ने इसी तरह शिक्षा हासिल की थी। शिक्षा के महत्व तथा उसकी गरिमा का जो भाव आपके इस सुझाव में निहित है उसकी विवेचना की ज़रूरत नहीं।

अन्य लड़ाईयां

जैसा कि ऊपर गुज़रा कि अबु सुफियान ने क़सम खाई थी कि जब तक मुसलमानों से बदला नहीं ले लेगा अपने सर पर पानी की एक बूंद भी नहीं डालेगा। वह अपनी क़सम पूरी करने के लिए कुरैश के दो सौ सवारों के साथ निकला, और बनी अल–नज्जार के सरदार सल्लाम बिन मिशकम से इजाज़त चाही। उन्होंने न सिर्फ इजाज़त दी बल्कि उनकी ख़ूब आव–भगत भी की, और मदीना के हालात का उन्हें ज्ञान कराया तथा साथ में कुछ लोगों को भेजा जिन्होंने अन्सार में से दो आदमियों को शहीद कर दिया।

अल्लाह के रसूल सल्ल० ने सहाबा कराम के साथ उनका पीछा किया लेकिन अबु सुफियान और उनके साथी मुसलमानों के पहुंचने से पहले निकल भागे और अपने पीछे बड़ी मात्रा में खाद्यान्न जिसमें अधिकतर सत्तू था, छोड़ गए। इसीलिए इस लड़ाई को "गज़वा–ए–सवीक़" भी कहा जाता है।

"बनू क़ीनक़ा" पहले यहूदी थे जिन्होंने अल्लाह के रसूल सल्ल० के साथ समझौते को तोड़ा, आपसे लड़ाई की और मुसलमानों को दुख पहुंचाया। अतएव अल्लाह के रसूल सल्ल० ने उनको घेर लिया और 15

रातें इसी हाल में गुज़ारी यहां तक कि उन्होंने परास्त स्वीकार कर ली और आपके फैसले पर राज़ी हो गए। उनके सरदार अब्दुल्लाह बिन उबई की सिफारिश पर आपने घेरा उठा लिया। यह सात सौ लोग थे अधिकांश सुनारी व दुकानदारी करते थे।

यहूदियों का सरदार काब बिन अलअशरफ आपको बराबर तकलीफें पहुंचाता था और मुसलमान औरतों के बारे में भद्दी कविताएं लिखा करता था। बद्र की लड़ाई के बाद उसने मक्का के कुफ्फार को हज़रत मुहम्मद सल्ल0 और मुसलमानों के ख़िलाफ भड़काना शुरू किया। इसी हाल में वह मदीना पहुंचा तो अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने फरमाया-- काब बिन अलअशरफ ने अल्लाह और उसके रसूल को बहुत तकलीफ पहुंचाई है। इसका कोई इन्तेज़ाम कर सकता है ? अन्सार के कुछ लोग उसी समय खड़े हो गए और उसका काम तमाम कर दिया।

अध्याय बारह

उहद की लड़ाई

बद्र में हार, कुरैश के बड़े–बड़े सरदारों का मारा जाना और उनकी फौज का तितर–बितर होकर मक्का की तरफ भाग जाना। यह ऐसी बात थी जिसका मक्का वासियों पर बहुत बुरा असर पड़ा। इस लिए वह सब जिनके बाप–बेटे और भाई रिश्तेदार मारे गए थे, जमा होकर अबु सुफियान के पास गए, और उससे तथा उसके साथियों से सलाह की और उन्हीं के पैसे से अल्लाह के रसूल सल्ल0 के ख़िलाफ एक नई लड़ाई की तैयारी शुरू की। कवियों ने अपनी कविताओं से उनके स्वामिमान को उभारा। यह सब बदले की भावना से ओत प्रोत थे।

हिजरत के तीसरे साल शव्वाल के महीने के बीच में कुरैश की सेना ने अपनी पूरी साज–सज्जा के साथ प्रस्थान किया। इनके साथ कुरैश को अपना सरदार मानने वाले अन्य क़बीलों के लोग भी थे। उनके साथ औरतें भी भेजी गई थी ताकि मर्द उनकी वजह से भाग न सकें। कुरैश के सरदार अपनी पत्नियों के साथ थे। इस लश्कर ने मदीना के सामने पड़ाव डाला।

अल्लाह के रसूल सल्ल0 की राय थी कि मुसलमान मदीना में ही रहें और उनसे कोई छेड़–छाड़ न करे। अगर वह खुद हमला करें तो उनसे लड़ाई लड़ें। आप शहर छोड़ कर बाहर निकलकर उनसे मुक़ाबला नहीं करना चाहते थे। अब्दुल्लाह बिन उबई की भी यही राय थी, लेकिन कुछ मुसलमानों ने जो बद्र की जंग में शामिल नहीं हो सके थे वह कुछ ज़्यादा उत्साह में आप से कहने लगे– "या रसूल अल्लाह सल्ल0 आप बाहर निकलकर दुश्मनों का मुक़ाबला करें। कहीं वह यह न सोचें कि हम कायरता और कमज़ोरी की वजह से बाहर नहीं निकल रहे हैं।" उनकी यह बातें सुनकर आप घर के अन्दर गए और कवच धारण करके बाहर आए। इस पर उन लोगों को पछतावा हुआ और कहने लगे– या रसूल अल्लाह सल्ल0! हमने आपको इच्छा के ख़िलाफ इस काम पर आमादा

किया है। हमें ऐसा नहीं करना चाहिए अगर आप चाहें तो यहीं रहें और यहीं रहकर मुक़बला करें।" अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने फ़रमाया– " नबी की यह शान नहीं कि हथियार उठाने के बाद लड़ाई से पहले हथियार रख दे।" आप एक हज़ार सहाबा (साथियों) को लेकर मुक़ाबले के लिए चले। मदीना से कुछ ही दूर पहुंचे थे कि अब्दुल्लाह बिन उबई एक तिहाई आदमियों के साथ आप को छोड़कर वापस चला गया। उसने कहा कि मेरी बात तो इन्होंने ठुकरा दी और इन नौजवानों की मान ली।

उहद पहाड़ के पहलू में

हज़रत मुहम्मद सल्ल0 ने पेश क़दमी करके मदीना से तीन किलो मीटर दूर स्थित उहद पहाड़ के पहलू में पड़ाव डाला। आप और आपकी सेना ने इस तरह पोज़ीशन ली कि उहद पहाड़ ठीक आप सल्ल0 की पीठ की तरफ पड़ता था। ☆ आपने निर्देश दिया कि जब तक मैं आदेश न दूं कोई लड़ाई शुरू न करे, और फिर आपने लड़ाई की विधिवत तैयारी। आपके साथ उस समय 700 लोग थे। तीर अंदाज़ी का नेतृत्व अब्दुल्लाह बिन जुबैर को दिया गया। उनकी संख्या पचास थी। उन्हें आपने साफ निर्देश दिए कि वह तीर अन्दाज़ी द्वारा घुड़सवारों को आगे बढ़ने से रोकें और इसका ध्यान रखें कि वह हमारे पीछे से न आ जाएं। चाहे लड़ाई का पासा हमारे हक़ में हो या विपक्ष में। आपने उन्हें यह भी निर्देश दिया कि वह अपनी पोजीशन किसी भी हाल में न छोड़ें और उस जगह से न हटें भले ही चिड़ियां मुसलमानों के लश्कर को उचक ले जाएं। अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने इस मौके पर दोहरी कवच पहनी और इस्लामी लश्कर का झण्डा मुसअब बिन उमैर को दिया।

नौजवानों का जोश

अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने ग़ज़वा–ए–उहद में कुछ नव युवकों को उनकी कम उम्र की वजह से वापस कर दिया। उनमें समुरा बिन जुन्दुब और राफ़े बिन खदीज भी थे। उनकी उम्र 15 वर्ष से ज़्यादा न थी। राफे के पिता ने आपसे निवेदन किया– " या रसूल अल्लाह! मेरा लड़का राफे बड़ा तीर अन्दाज़ है।" आपने बाप की सिफारिश सुन ली

और राफे को जंग में हिस्सा लेने की इजाज़त दे दी। फिर समुरा को आपके सामने लाया गया जो राफे की ही उम्र के थे। समुरा ने निवेदन किया—या रसूल अल्लाह सल्ल0 आपने राफे को इजाज़त दे दी और मुझे वापस कर दिया, हालांकि अगर मेरी राफे से कुश्ती हो तो मैं उनको पछाड़ सकता हूँ। दोनों में कुश्ती हुई और समुरा ने राफे को चित कर दिया। इस तरह उनको को भी जंग में हिस्सा लेने की इजाज़त मिल गई।

लड़ाई की शुरूआत

लड़ाई शुरू हुई और दोनों पक्ष एक दूसरे से गुथ गए। हिन्द बिन्त उत्बा औरतों में मौजूद थी। औरतें दफ बजा—बजा कर मर्दों को लड़ाई के लिए उकसाती थी। यहाँ तक कि घमासान जंग शुरू हो गयी। अबु दुजाना हज़रत मुहम्मद सल्ल0 से तलवार लेकर मैदान जंग में कूद पड़े। जो कोई उनके सामने आता उनकी तलवार से बचकर न निकलता।

हमज़ा और मुसअ़ब बिन उमैर रज़ी0 की शहादत

हज़रत हमज़ा ने भी इस लड़ाई में अपनी बहादुरी के जौहर दिखाए और बड़े—बड़े सरदारों को मौत के घाट उतारा। किसी को उनके सामने ठहरने की ताक़त न थी। मगर ज़ुबैर बिन मुतइम का गुलाम वहशी उनकी घात में था। वह भाला फेंक कर अपने दुश्मन को मारने में माहिर था। ज़ुबैर ने उससे वादा किया था कि अगर वह हमज़ा रज़ी0 को क़त्ल कर देगा तो उसको इसके इनाम में आज़ाद कर देगा। उसका चचा तुएमा बद्र की लड़ाई में मारा गया था। इसका ग़म भी उसके दिल में था। दूसरी तरफ हिन्दा उसे हज़रत हमज़ा के क़त्ल पर उकसा रही थी। वह उनकी शहादत से अपना कलेजा ठंडा करना चाहती थी। वहशी ने अपना भाला तान कर पूरी ताक़त से हज़रत हमज़ा पर हमला किया। भाला उनकी नाक से पार निकल गया। हज़रत हमज़ा तड़पकर गिर पड़े और शहीद हो गए। मुसअ़ब बिन उमैर अल्लाह के रसूल सल्ल0 की रक्षा करते हुए लड़ते रहे, और लड़ते—लड़ते जान दे दी। मुसलमानों ने इस लड़ाई में सरफरोशी बलिदान का हक़ अदा कर दिया और हर इम्तेहान में पूरे उतरे।

मुसलमानों की कामयाबी

अल्लाह ने मुसलमानों की मदद की। कुफ्फार को मुँह की खानी पड़ी। उनकी औरतें जो मर्दों को गैरत दिलाने आयी थीं, मैदाने जंग से भागने लगीं।

मुसलमानों के खिलाफ लड़ाई का पासा कैसे पलटा ?

जब कुफ्फार और उनकी औरतें भागने लगीं तो उन्हें भागते देखकर तीर अन्दाज़ों ने अपनी पोजीशन छोड़ दी और लश्कर से आ मिले उन्हें कामयाबी का पूरी यकीन था। वहां पहुंच कर उन्होंने नारा लगाया—"माले ग़नीमत, माले ग़नीमत।" उनके लीडर ने अल्लाह के रसूल सल्ल0 की बात उन्हें याद दिलाई लेकिन जोश में किसी ने उनकी बात न सुनी, और पूरा यकीन करते हुए कि अब मुश्रिकों को वापस आना नहीं है, उन्होंने अपनी जगह छोड़ दी, और मुसलमानों के पीछे से घुड़सवारों की फौज का रास्ता खुल गया। कुफ्फार का झण्डा जो लोग संभाले हुए थे मारे गए। झण्डे के करीब आने की कोई हिम्मत नहीं कर रहा था। इसी बीच कुफ्फार ने पीछे आकर आवाज़ लगाई कि मुहम्मद (सल्ल0) शहीद हो गए। यह सुनकर मुसलमानों का लश्कर अचानक पीछे की तरफ मुड़ा और कुरैश को दोबारा हमला करने का मौक मिल गया। इस मौक़े से उन्होंने पूरा फायदा उठाया। मुसलमानों के लिए यह कठिन परीक्षा की घड़ी थी। इस बीच दुश्मन हज़रत मुहम्मद सल्ल0 तक पहुंच गए। उनमें अब्दुल्लाह बिन कुम्या और उत्बा बिन अबी वक्कास आगे आगे थे। उस समय एक पत्थर आपके लगा और आप दाएं पहलू पर ग़ार में गिर गए। सामने वाला आपका एक दाँत ज़ख्मी हो गया। सर पर चोट आई और होंट से ख़ून बहने लगा। ख़ून बहकर चेहरे पर आ गया। आप उसे पोंछते जाते और कहते— वह कौम कैसे कामयाब हो सकती है जिसने अपने नबी के चेहरे को ख़ून से तर कर दिया, जो उनको उन के रब की तरफ बुलाता है।

मुसलमानों को ख़बर न थी कि आप किस जगह हैं। हज़रत अली रज़ी0 ने आपको सहारा दिया और हज़रत तलहा बिन उबैद उल्लाह ने

आपको उठाया, अतएव आप खड़े हो गए।

असल में यह भागना न था बल्कि जंग की कूटनीति थी जिसे हर सेना को समय पड़ने पर अपनाना पड़ती है, और तब वह संभल कर हमला करती है। मुसलमानों को इस लड़ाई में जिस आज़माईश से गुज़रना पड़ा, उन्हें जो जानी नुकसान उठाना पड़ा, और अल्लाह के रसूल सल्ल0 के जो अहम साथी और मुसलमानों की ताकत के स्रोत इस लड़ाई में शहीद हुए वह सब असल में उन तीर अन्दाज़ों की चूक का नतीजा थे जिन्होंने हज़रत मुहम्मद सल्ल0 के निर्देश के बावजूद अपनी पोज़ीशन छोड़ दी।

कुर्आन पाक में आता है।–

अनुवादः–"और अल्लाह ने अपना वादा सच्चा कर दिया अर्थात उस समय जबकि तुम काफिरों को उसके हुक्म से क़त्ल कर रहे थे, यहां तक कि जो तुम चाहते थे अल्लाह ने तुमको दिखा दिया इसके बाद तुमने हिम्मत हार दी और (पैग़म्बर के) हुक्म में झगड़ा करने लगे और उसकी नाफरमानी की। कुछ तो तुम में से दुनिया के तलबगार थे, कुछ आख़िरत के तालिब। उस समय अल्लाह ने तुमको उनके मुक़ाबले से फेर दिया ताकि तुम्हारी आज़माईश करे और उसने तुम्हारा क़सूर माफ कर दिया और अल्लाह मोमिनों पर बड़ी दया करने वाला है।"

(सूरः आले इमरान–152)

जान निछावर करने की नई मिसाल

उहद की लड़ाई में हज़रत मुहम्मद सल्ल0 के प्यारे साथियों ने आप पर जान निछावर करने की अद्वितीय मिसालें पेश कीं। अबु उबैदा बिन अल–जर्राह ने हैल्मेट (लौह की टोप) की एक कड़ी जो अल्लाह के रसूल सल्ल0 की ठोढ़ी में धंस गई थी, को अपने दॉतों से पकड़ कर निकाला तो उसी के साथ आप का एक दॉत भी गिर पड़ा। दूसरी कड़ी निकाली तो दूसरा दॉत भी उसी के साथ आ गया। अबु दुजाना ढाल बन कर आपके सामने खड़े हो गए। तीर उन पर गिरते रहे लेकिन वह

अडिग खड़े रहे। यहां तक कि उनकी पीठ छलनी हो गई। साद बिन अबी वकास उसी जगह खड़े खड़े आपकी रक्षा में दुश्मन पर तीर चलाते रहे। आप एक एक तीर उनको अपने हाथ से देते और कहते– "तुम पर मेरे माँ–बाप कुर्बान हों, इसी तरह तीर चलाते रहो।"

कतादा–बिन–अल नोमान की ऑख पर ऐसी चोट आई कि ऑख निकल कर उनके गाल पर आ गई। अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने अपने हाथों से उसे उसी जगह कर दिया। वह ऑख ऐसी अच्छी हुई कि उसकी रोशनी पहली ऑख से भी तेज़ हो गई।

कुफ्फार आप सल्ल0 की तलाश में थे, लेकिन कुदरत को कुछ और मंजूर था। जब उन्होंने आप सल्ल0 पर घेरा डाला तो लगभग दस आदमी आपके सामने आ गए और सब एक एक करके आप पर कुर्बान हो गए। फिर तलहा बिन उबैद उल्लाह ने अपना हाथ सामने कर दिया और उस से तीरों को रोकना शुरू कर दिया। उनका पूरा हाथ लहू लुहान हो गया। अल्लाह के रसूल सल्ल0 वहीं एक चट्टान पर चढ़ना चाहते थे लेकिन चोट की वजह से कमज़ोरी अधिक थी और चढ़ना कठिन हो रहा था यह देखकर हज़रत तलहा आपके नीचे बैठ गए। उनका सहारा लेकर आप उस चट्टान पर चढ़ गए। नमाज़ का समय करीब आया तो आपने बैठ कर नमाज़ पढ़ी।

यह वह घड़ी थी जब लोग हार कर इधर–उधर जाने लगे थे लेकिन अनस बिन अन–नज़र (जो अल्लाह के रसूल सल्ल0 के सेवक अनस बिन मालिक के चचा हैं) ने उस समय भी हार नहीं मानी और आगे बढ़ते रहे। साद बिन मआज़ उनको रास्ते में मिले और पूछा–किधर का इरादा है? कहने लगे– साद! मुझे जन्नत की खुशबू उहद पहाड़ के उस तरफ साफ महसूस हो रही है। अनस बिन अन–नज़र मुहाजरीन व अन्सार के कुछ लोगों के पास से गुज़रे और देखा कि वह हाथ धरे बैठे हैं। उन्होंने कहा–तुम लोग यहां बैठे क्या कर रहे हो? वह लोग कहने लगे– अल्लाह के रसूल सल्ल0 शहीद हो गए। अनस बिन अन–नज़र ने कहा फिर आपके बाद ज़िन्दा रहने से क्या फायदा? उठो और जिस पर अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने जान दी उसी पर तुम भी जान दे दो। यह

कह कर वह आगे बढ़े। दुश्मन से दो–दो हाथ किए और कुर्बानी दे दी।

उनके भतीजे अनस बिन मालिक रज़ी0 कहते हैं कि उस दिन हमने उनके बदन पर 70 घाव गिने। ज़ख़्मों की अधिकता से उनको पहचानना मुश्किल हो रहा था। सिर्फ उनकी बहन ने उनकी उंगली के एक पोर से उनको पहचाना जिस पर बचपन की निशानी थी। ज़ियाद बिन अस्सकन पॉच अन्सारियों के साथ अल्लाह के रसूल सल्ल0 की रक्षा करते हुए लड़ रहे थे। लोग एक एक करके शहीद होते जा रहे थे। यहां तक कि ज़ियाद ज़ख़्मों से चूर और निढाल हो कर गिर गऐ। अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने कहा– उनको मेरे करीब लाओ। लोगों ने उठाकर उनको आपके सामने लिटा दिया। आपने उनके सर को अपने पैरों पर रख लिया। इसी हालत में उनकी जान निकली।

अम्र बिन अलजमोह एक पैर से विकलांग थे। उनके चार बेटे थे, सब जवान थे और अल्लाह के रसूल सल्ल0 पर जान निछावर करने को हर समय तैयार रहते थे। जब अल्लाह के रसूल सल्ल0 ग़ज़व–ए–उहद के लिए निकले तो अम्र ने भी साथ जाने का इरादा किया। इस पर उनके बेटों ने कहा कि अल्लाह ने आपके लिए छूट दी है। आप न जाएं तो अच्छा है। हम लोग आपकी तरफ से काफी हैं। आप पर जिहाद फर्ज़ नहीं है। अम्र अल्लाह के रसूल सल्ल0 के पास गए और कहा कि मेरे बच्चे मुझे जिहाद में हिस्सा लेने से रोक रहे हैं, और अल्लाह की क़सम मेरी इच्छा है कि मैं शहादत पाऊं और जन्नत में इसी तरह लंगड़ाता हुआ चलूं। अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने उनसे फरमाया– अल्लाह ने तुम्हे जिहाद की छूट दी है और उनके बेटों से कहा– क्या हर्ज है कि तुम इनको जिहाद में जाने दो। अन्ततः वह उहद की जंग में शामिल हुए और शहादत पायी।

ज़ैद बिन साबित बयान करते हैं कि उहद की जंग में अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने मुझे साद बिन रबी की तलाश में भेजा और फरमाया कि अगर वह नज़र आ जाएं तो मेरा सलाम कहना और कहना कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने पूछा है कि इस समय तुम्हें क्या महसूस हो रहा है? वह कहते हैं कि मैं शहीदों की बीच उन्हें तलाश कर रहा था कि एक

जगह वह मुझे नज़र आए। मैं उनके पास गया देखा तो आख़िरी सांस चल रही थी। उनके बदन पर बरछा, तलवार और तीर के 70 घाव थे। मैंने कहा—साद! अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने तुम्हें सलाम कहा है और फरमाया है कि मुझे बताओं इस समय तुम्हारा क्या हाल है। जवाब मिला— अल्लाह के रसूल सल्ल0 से सलाम कहना और कहना कि मुझे इस समय जन्नत की खुशबू महसूस हो रही है और मेरी क़ौम अन्सार से यह कहना कि अगर दुश्मन अल्लाह के रसूल सल्ल0 तक पहुंच गए और तुम्हारे दम में दम रहा तो अल्लाह पाक के लिए तुम्हारे पास कोई जवाब न होगा। यह कहते हुए उनकी आंख बंद हो गई।

अब्दुल्लाह बिन जहश ने उहद की जंग के बारे में कहा— ऐ अल्लाह! मुझे तेरी क़सम कि मैं कल दुश्मन का मुक़ाबला करूं वह मुझे क़त्ल कर दें। फिर मेरा पेट चाक कर दें और मेरी नाक काट डालें। फिर तू मुझ से पूछे कि यह सब किसके लिए था? और मैं जवाब दूं—तेरे लिए।

मुसलमानों का दोबारा जमाव

जब मुसलमानों ने अल्लाह के रसूल सल्ल0 को पहचान लिया तो उन्हें नया जीवन मिल गया। वह एक बार फिर उठ खड़े हुए। आप सल्ल0 उनको लेकर दोबारा घाटी की तरफ बढ़े। रास्ते में ओबै बिन ख़लफ ने आपको देखा। देखते ही कहने लगा— मुहम्मद (सल्ल0)! अगर तुम सलामत रहे तो मेरी ख़ैर नहीं। अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने फरमाया— इसको जाने दो, लेकिन जब वह बिल्कुल करीब आ गया तो आप सल्ल0 ने एक सहाबी से भाला लेकर उसकी गर्दन में मारा। भाला लगते ही वह घोड़े से गिर पड़ा।

इस मौक़े पर हज़रत अली रज़ी0 अपनी ढाल में पानी भर कर लाए और आप सल्ल0 के चेहरे पर लगे ख़ून को धोया। आपकी बेटी हज़रत फातिमा रज़ी0 उसको धोती रहीं और हज़रत अली0 अपनी ढाल से पानी डालते रहे। जब हज़रत फातिमा ने देखा कि पानी से ख़ून किसी तरह बन्द नहीं हो रहा है बल्कि और अधिक बढ़ने लगा तो उन्होंने चटाई का

टुकड़ा लेकर, उसे जलाया और उसकी राख घाव पर बांध दी। इससे ख़ून का बहना थम गया।

हज़रत आयशा रज़ी० और उम्मे सुलैम रज़ी० इस लड़ाई में चमड़े की डोल में पानी लातीं और घायलों को पिलातीं। जब डोल खाली हो जाती तो वापस जाकर उन्हें दोबारा भर लातीं और घायलों की प्यास बुझातीं। उम्मे सुलैम डोलों में पानी भरकर उनको देती जाती थी।

हिन्द बिन्त उत्बा ने कुछ अन्य औरतों के साथ मुसलमान घायलों को काटना और लाशों के नांक कान काटना शुरू किए। वह हज़रत हमज़ा रज़ी० का जिगर निकाल कर उसे चबाने लगी लेकिन वह उसके गले से उतर न सका और उसने उसे फ़ौरन उगल दिया।

जब अबु सुफियान वापस होने लगा तो पहाड़ पर खड़े होकर तेज़ आवाज़ से उसने नारा लगाया—लड़ाई का मामला डावाडोल है, आज इसकी जीत कल उसकी, हुबल का नाम ऊंचा रहे। अल्लाह के रसूल सल्ल० ने फरमाया— उमर! खड़े होकर इसका जवाब दो, और कहा कि अल्लाह बहुत बड़ा है। उसके सिवा कोई नहीं। हमारे शहीद जन्नत में हैं और तुम्हारे दोज़ख (नरक) में हैं। यह सुन कर अबु सुफियान बोला— हमारे पास उज़्ज़ा है तुम्हारे पास नहीं। अल्लाह के रसूल सल्ल० ने फरमाया—इसका जवाब दो। सहाबा ने पूछा—हम क्या कहें। आपने फरमाया— कहो कि अल्लाह हमारा संरक्षक है तुम्हारा कोई संरक्षक नहीं। जब वह अपनी तरफ चला और मुसलमान अपनी तरफ जाने लगे तो उसने आवाज़ लगाई। अगले साल बद्र में फिर हमारा मुक़ाबला है। अल्लाह के रसूल सल्ल० ने एक सहाबी से फरमाया— कहो हाँ यह तारीख़ हमारे तुम्हारे बीच तय है।

आख़िर में लोग अपने शहीदों को दफनाने लगे। अल्लाह के रसूल सल्ल० पर हज़रत हमज़ा की शहादत का बहुत असर था। हज़रत हमज़ा आपके चचा और रज़ाई भाई थे और हमेशा आपके लिए जान निछावर करने को तैयार रहा करते थे।

एक औरत का सब्र

साफिया बिन्त अब्दुल मुत्तलिब रज़ी0 हज़रत हमज़ा की सगी बहन थीं। जब वह अपने भाई को देखने आई तो अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने उनके लड़के से कहा–उन्हें वापस कर दो ताकि उनकी नज़र उनके छोटे भाई की बोटी–बोटी लाश पर न पड़े। ज़ुबैर बिन अल–अव्वाम ने जाकर कहा–अम्मां! अल्लाह के रसूल सल्ल0 का हुक्म है कि आप वापस जाएं। कहने लगीं–क्यों? मुझे मालूम है कि मेरे भाई का अंग–अंग काट डाला गया है लेकिन यह सब अल्लाह की राह में है इस लिए मैं इंशा अल्लाह सवाब की नियत रखूँगी और सब्र अपनाऊंगी। इसके बाद वह वहां आई। अपने भाई को देखा। इन्ना लिल्लाह पढ़ा। उनके लिए दुआ की। इसके बाद अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने उन्हें दफनाने का हुक्म दिया और वह उहद की ही शहादतगाह में दफनाए गए।

मुसअब बिन उमैर तथा अन्य शहीदों का कफन–दफन

मुसलमानों के झण्डा वाहक मुसअब बिन उमैर इस्लाम से पहले कुरैश के बड़े लाडले नौजवान थे। सुन्दरता और राजसी कपड़ों के लिए वह बहुत मशहूर थे। उन्हें दफन करने के लिए सिर्फ एक चादर मिल सकी जो इतनी छोटी थी कि सर छिपाया जाता तो पैर खुल जाते और पैर छिपाए जाते तो सर खुल जाता। अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने फरमाया– इनका सर छिपा दो और पैरों पर घास डाल दो।

अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने दो–दो शहीदों को एक चादर में दफन करने का हुक्म दिया। फिर फरमाया– कुर्आन पाक का जिसे अधिक ज्ञान हो उसे पहले कब्र में उतारो, और फिर फरमाते मैं कयामत के दिन इनका गवाह बनूंगा। आपने उनको उसी तरह दफन करने का हुक्म दिया। न उनकी जनाज़े की नमाज़ हुई ने गुस्ल दिया गया। ☆

☆ शहीदों को गुस्ल न देने के बारे में कोई विवाद नहीं। उनको खून में लुथड़ा हुआ उस तरह दफन कर दिया जाता है कि अल्लाह के सामने इसी तरह पहुंचे। जनाज़े की नमाज़ के बारे में विद्वानों का मत भेद अवश्य है। इमाम मालिक, शाफई और अहमद रह0 का मत है कि शहीदों की नमाज़े जनाज़ा पढ़ना ज़रूरी नहीं है, इमाम अबु हनीफा रह0 (तथा अन्य विद्वान इमाम औजाई, सुफियान, सौरी, इस्हाक बिन राहवे आदि) का मत है कि शहीदों की नमाज़े

जनाज़ा पढ़ी जाए। इमाम अहमद रह0 से भी इसकी एक रवायत मिलती (कथन) है। उनकी दलील में यह उल्लेख आते हैं जिनमें उहद में शहीदों पर नमाज़े जनाज़ा पढ़ने का वर्णन है। खुद अक़्बा बिन आमिर से इमाम बुख़ारी ने बयान किया है कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 एक दिन उहद पधारे और आपने वहां के शहीदों पर ऐसी नमाज़े जनाज़ा पढ़ी जैसी मरने वालों पर पढ़ी जाती है।

हज़रत मुहम्मद सल्ल0 के प्रति अपार प्रेम व श्रद्धा

मुसलमान मदीना पहुंचे तो रास्ते में बनी दीनार की एक औरत के घर के पास उनका गुज़र हुआ। उस औरत के पति, भाई और बाप सब इस लड़ाई में शहीद हुए थे जब मुसलमानों ने उनको यह ख़बर सुनाई तो उन्होंने सबसे पहले यह कहा कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 की ख़ैरियत बताओ। उन लोगों ने जवाब दिया–ऐ फलां की माँ! अल्लाह का शुक्र है, अल्लाह के रसूल सल्ल0 सही सलामत हैं कहने लगीं कि मुझे आपको दिखाओ। मैं आपको खुद देखना चाहती हूं। लोगों ने आपकी तरफ इशारा किया। उन्होंने पास आकर आप सल्ल0 को देखा और कहा–आप सलामत हैं तो हर मुसीबत हेच है।

स्वामिभक्ति का एक उदाहरण

इधर कुफ़्फ़ार एक दूसरे पर आरोप–प्रत्यारोप लगाने लगे और कहने लगे तुमने कुछ करके न दिया। तुमने एक तरफ तो उनकी ताकत कमज़ोर कर दी और फिर उन्हें पूरी तरह पराजित किए बिना छोड़ दिया। दूसरी तरफ अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने हुक्म दिया कि दुश्मनों का पीछा किया जाए। यह वह समय था जब कि मुसलमान ज़ख़्मों से चूर–चूर हो रहे थे। दूसरे दिन रविवार को सुबह पुकार की गई कि लोग दुश्मन का पीछा करने के लिए निकल खड़े हों। साथ ही यह भी एलान किया गया कि इसमें वही लोग शामिल होंगे जो कल की लड़ाई में शामिल थे। एक मुसलमान भी ऐसा न था जो किसी न किसी चोट या तकलीफ से पीड़ित न हो, लेकिन वह सब के सब अल्लाह के रसूल सल्ल0 के साथ निकल पड़े। एक व्यक्ति भी पीछे न रहा। जब सब लोग मदीना से आठ मील दूर स्थित हमरुल असद तक पहुंच गए तो अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने वहां पड़ाव किया। आप तमाम मुसलमानों के साथ

सोमवार, मंगलवार और बुद्ध तीन दिन वहाँ ठहरे। इसके बाद मदीना वापस आए।

कुर्आन पाक में स्वामिभक्ति की इस भावना का चित्रण इस तरह किया गया है।

अनुवादः– "जिन्होंने घायल होने पर भी अल्लाह और रसूल अल्लाह सल्ल0 के हुक्म को माना, उनमें नेक और परहेज़गार हैं उनके लिए बड़ा सवाब है। जब उनसे लोगों ने आकर बयान किया कि कुफ़्फार ने तुम्हारे मुकाबले के लिए बड़ी सेना जमा की है तो उनसे डरो, तो उनका ईमान और ज़्यादा हो गया और कहने लगे हमको अल्लाह काफी है और वह अच्छा कारसाज़ है, और फिर वह अल्लाह की नेअमतों और उसके फज़्ल के साथ प्रसन्नचित वापस आए। उनको किसी तरह का नुकसान न पहुंचा और अल्लाह की खुशनूदी के ताबे रहे, और अल्लाह बड़े फज़्ल का मालिक है। यह डराने वाला तो शैतान है जो अपने दोस्तों को डराता है तो अगर तुम मोमिन हो तो उनसे मत डरना और मुझ से डरते रहना।

(सूरः आले इमरान–172–175)

जान से ज़्यादा प्यारे

हिजरत के तीसरे वर्ष क़बीला अज़ल और क़ारा ने अल्लाह के रसूल सल्ल0 से प्रार्थना की कि उनको कुछ ऐसे लोग दिए जाएं जो उनको दीन की शिक्षा दे सकें। आपने सहाबा कराम रज़ी0 में 6 लोगों का एक शिष्टमण्डल इस काम के लिए भेजा जिसमें आसिम बिन साबित, ज़ुबैद बिन अदी रज़ी और ज़ैद बिन दसिन्ना भी थे। जब वह असफान और मक्का के बीच स्थित 'रजीय' पहुंचे तो इन क़बीलों ने उनके साथ गद्दारी की। साथ ही यह भी कहा कि हम अल्लाह के सामने वादा करते हैं कि हम किसी को जान से न मारेंगे। कुछ मुसलमानों ने कहा कि हमें मुश्रिकों की किसी प्रतिज्ञा पर यक़ीन नहीं है। उन्होंने मुक़ाबला किया और शहीद हुए। ज़ैद बिन दसिन्ना, ख़ुबैब बिन अदी और अब्दुल्लाह बिन तारिक रज़ी0 ने हथियार रख दिए, और उन्हें बन्दी बना लिया गया। अब्दुल्लाह बिन तारिक़ रास्ते में शहीद किए गए। ज़ैद और खुबैब को उन लोगों ने कुरैश के हाथ बेच दिया। ख़ुबैब को हुजैर बिन अबी एहाब ने ख़रीदा ताकि अपने बाप एहाब के बदले में क़त्ल कर सकें। ज़ैद को सफवान बिन उमैया ने अपने बाप उमैया बिन खलफ का बदला लेने के लिए ख़रीदा। ज़ैद रज़ी0 को हरम से बाहर क़त्ल के लिए ले

जाया गया। उस समय कुरैश के बहुत से लोग जमा थे **जिनमें अबु** सुफियान भी था उसने हजरत ज़ैद से कहा– ज़ैद! मैं तुमसे क़सम दिलाकर पूछता हूँ क्या तुम यह पसन्द करोगे कि तुम आराम से अपने घर वालों में हो और तुम्हारी जगह मुहम्मद (सल्ल0) हों। उन्होंने जवाब दिया– मुझे तो यह भी सहन नहीं है कि मैं अपने घर में आराम से हूँ और मुहम्मद सल्ल0 को एक कांटा भी चुभे। अबु सुफियान ने इस पर कहा– मैंने किसी को किसी से इतनी मुहब्बत करते नहीं देखा जितनी मुहब्बत मुहम्मद (सल्ल0) के साथी करते हैं इसके बाद ज़ैद रज़ी0 को शहीद कर दिया गया।जब यह लोग खुबैब रज़ी0 को सूली पर चढ़ाने के लिए लाए तो उन्होंने कहा कि अगर इसमें कोई हर्ज न समझो तो मुझे दो रकअत नमाज़ पढ़ लेने की इजाज़त दे दो। उन लोगों ने कहा कि हां पढ़ लो। उन्होंने इत्मिनान से दो रकअत नमाज़ पढ़ी। फिर उनको सम्बोधित करते हुए कहा कि अगर मुझे यह शक न होता कि तुम लोग इसको डर समझोगे तो मैं अभी और नमाज़ पढ़ता। इसके बाद उन्होंने अरबी में दो शेर पढ़े जिसका मतलब है।

" जब मैं इस्लाम के लिए कत्ल किया जा रहा हूँ तो मुझे इसकी परवाह नहीं कि अल्लाह की राह में किस पहलू पर गिर कर जान दूंगा। यह जो कुछ है सिर्फ अल्लाह के लिए अगर वह चाहेगा तो इस टुकड़े–टुकड़े शरीर पर बरकत नाज़िल करेगा।"

यह शेर पढ़ते हुए सच की राह में शहीद हुए।

बेयर मऊनाः–

अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने आमिर बिन मालिक की प्रार्थना पर उनमें इस्लाम के प्रचार के लिए एक दल भेजा जिसमें 70 चुने हुए सहाबा शामिल थे। यह लोग चले और बेयर मऊना में पड़ाव किया। यहां बनी सुलैम के क़बीला उसैया, राल और ज़कवान ने मिलकर पूरे क़ाफ़िले को घेर लिया जब उन्होंने यह देखा तो तलवारें खींच लीं और लड़कर सब के सब शहीद हो गए। सिर्फ काब बिन ज़ैद बाक़ी बचे जिन्होंने ग़ज़वा–ए–ख़न्दक़ में शहादत पाई।

एक शहीद के आख़िरी शब्द जिसे सुनकर उनके क़ातिल मुसलमान हो गए

इसी लड़ाई (सरिया) में हराम बिन मिल्हान भी शहीद हुए। उन्हें जब्बार बिन सलमा ने क़त्ल किया। हराम बिन मिल्हान ने आख़िरी समय जो शब्द **कहे** वही जब्बार के मुसलमान होने की वजह बने। जब्बार ख़ुद बयान करते हैं कि मुझे जिस चीज़ ने इस्लाम की तरफ़ खींचा वह यह बात है कि मैं ने उनके एक आदमी के दोनों कन्धों के बीच एक भाला मारा। मैंने देखा कि वह सीना के पार हो गया है। उसी वक़्त उनके मुंह से यह शब्द निकले– "काबा के रब की क़सम मैं कामयाब हो गया।" मैंने अपने दिल में कहा कैसी कामयाबी ? क्या मैंने उनको क़त्ल नहीं किया ? बाद में मैंने उनके शब्दों का मतलब जानना चाहा तो लोगों ने बताया कि उनका मतलब शहादत से था। मैंने कहा अल्लाह की क़सम वह कामयाब रहे।

बनी अन–नज़ीर का देश निकाला

अल्लाह के रसूल सल्ल0 क़बीला अन–नजीर के पास बनी आमिर के दो मरने वालों की बदले के लिए मदद चाहने गए। उनके और बनी आमिर के बीच समझौता था। उन्होंने इस मौक़े पर तो आपसे बहुत मीठी बातें की और उम्मीद दिलाई लेकिन अन्दर अन्दर आपके ख़िलाफ़ साज़िश में लगे रहे। एक बार अल्लाह के रसूल सल्ल0 उनके एक घर की दीवार की छाया में लेटे थे। आपको देखकर यह लोग आपस में कहने लगे कि इससे अच्छा मौक़ा फिर तुम्हारे हाथ न लगेगा। अगर एक आदमी ऊपर चढ़कर एक भारी पत्थर लुढ़का दे तो हम सब को छुटकारा मिल जाएगा। आप सल्ल0 के साथ उस समय हज़रत अबुबक्र सिद्दीक़, हज़रत उमर और हज़रत अली आदि भी थे।

अल्लाह ने आपको उनके नापाक इरादों से आगाह कर दिया। आप उसी वक़्त उठ ख़ड़े हुए और मदीना के लिए चल पड़े। मदीना आकर आप ने जंग की तैयारी की उनके मुकाबले के लिए चले और आगे बढ़कर उनके क़बीले में पड़ाव किया। यह रबीउल अव्वल सन् चार

हिजरी की घटना है। आपने 6 रातों तक उनका घेराव किया। उनके दिलों में अल्लाह ने इतना रोब डाला कि उन्होंने आपसे खुद ही प्रार्थना कि आप उनको यहां से देश से निकाला कर दें, लेकिन उनकी जान की की माफी दे दें। ऊंट जितने ले जा सकें, उन्हें ले जाने की इजाज़त होगी। हथियार व अवश्य न ले जा सकेंगे, आप सल्ल0 ने उनकी यह प्रार्थना मान ली, और वे सारा सामान जो ऊंटों पर जा सकता था अपने साथ ले गए। लोगों ने देखा कि एक आदमी अपना पूरा का पूरा घर खुद अपने हाथों से गिरा रहा है और जितना सामान ऊंट पर आ सकता है लाद कर जा रहा है। इस घटना की तरफ इशारा करते हुए कुर्आन पाक में अल्लाह पाक का इरशाद है।:–

अनुवादः–"वही तो है जिसने कुफ्फार, अहले किताब को हशरे अव्वल के समय उनके घरों से निकाल दिया। तुम्हारे ख़्याल में भी न था कि वह निकल जाएंगे और वह लोग यह समझे हुए थे उनके किले उनको अल्लाह के अज़ाब से बचा लेंगे मगर अल्लाह ने उनको वहां से आ लिया जहां से उनको गुमान भी न था, और उनके दिलों में दहशत डाल दी कि अपने घरों को खुद अपने हाथों और मोमिनों के हाथों से उजाड़ने लगे, तो ऐ बसीरत की आंखें रखने वालों इस से सबक लो।" (सूरः हशर–2)

ग़ज़व–ए–जातुर्रेक़ा

हिजरत के चौथे साल अल्लाह के रसूल सल्ल0 और उनके साथी जिसमें अबु मुसा अल–अश–अरी रज़ी0 भी थे, नज्द के एक नखलिस्तान में चढ़ाई के इरादे से उतरे इन सब 6 लोगों के बीच सवारी के लिए सिर्फ एक ऊंट था। जिसकी वजह से पैदल चलने के कारण लोगों के पैर छिल गए और उंगलियों के नाखुन तक गिर गए। इसकी वजह से लोगों ने अपने पैरों पर पट्टियां और चिथड़े बॉध लिए थे। इसी लिए इस का नाम "ग़ज़व–ए–जातुर्रेक़ा" अर्थात पट्टियों वाला ग़ज़वा पड़ा। दोनों पक्ष एक दूसरे से क़रीब हुए लेकिन लड़ाई की नौबत न आई। लोग एक दूसरे से डरे हुए थे। इस मौके पर अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने सलात् ख़ौफ (डर के समय पढ़ी जाने वाली नमाज़) भी पढ़ी।

इस समय तुम्हें कौन बचा सकता है ?

जब अल्लाह के रसूल सल्ल0 ग़ज़व–ए–ज़ातुर्रेक़ा से वापस हुए तो दोपहर को आपने ऐसी जगह आराम फरमाई जहां बबूल के बहुत से पेड़ थे। आप बबूल के एक पेड़ के नीचे आराम करने लगे और अपनी तलवार उसी पेड़ पर लटका थी। बाक़ी लोग अन्य पेड़ों के नीचे लेट गऐ। हज़रत जाबिर रज़ी0 बयान करते हैं कि इसी बीच हमारी ऑख लग गई अभी हम थोड़ा सोए ही थे कि महसूस हुआ कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 हमें आवाज़ दे रहे हैं। हमने देखा कि एक बद्दू आपके पास बैठा हुआ है। आप सल्ल0 ने फरमाया कि मैं सो रहा था कि इसने तलवार उठाई। मेरी ऑख खुली तो यह तलवार मेरे सर पर खींचे हुए था। इसने मुझसे कहा कि इस वक़्त तुम्हें कौन बचा सकता है? मैंने कहा– 'अल्लाह', अब यह तुम्हारे सामने बैठा हुआ है। आपने उस बद्दू को कोई सज़ा नहीं दी।

कुछ ग़ज़वे जिन में लड़ाई नहीं हुई

हिजरत के चौथे वर्ष शाबान के महीने में अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने बद्र की तरफ जाने का इरादा किया। अबुसुफियान ने तारीख़ तय की थी आपने वहां पहुंचकर पड़ाव किया और 8 रातें वहां रहे। अबु सुफियान भी मुक़ाबिले के लिए निकला लेकिन उसने लौट जाना ही उचित समझा। उसने अपने आदमियों से कहा कि यह अकाल और सूखे का दौर है मेरा लौटने का इरादा है, और तुम लोगों को भी लौट चलना चाहिए। अतः इस तरह लड़ाई टल गई और अल्लाह ने मुसलमानों को उनसे बचा लिया।

दौमतुल–जन्दल के ग़ज़वा में भी लड़ाई की नौबत नहीं आई और आप मदीना वापस आ गए।

अध्याय तेरह

गज़व–ए–ख़न्दक़

ख़न्दक की जंग जिसे गज़व–ए–अहज़ाब भी कहते हैं, शव्वाल सन् पाँच हिजरी में हुई। यह एक फैसले की जंग थी जिसमें मुसलमानों को भी बहुत ज़्यादा कठिनाई का सामना करना पड़ा, और जिसके परिणाम बड़े दूरगामी साबित हुए। कुर्आन पाक में इरशाद है।

> अनुवाद:– "जब वह तुम्हारे ऊपर और नीचे की तरफ से तुम पर चढ़ आए और जब आंखें फिर गईं, और दिल (आंतक के मारे) गलों तक पहुंच गए और तुम अल्लाह की निस्बत तरह–तरह के गुमान करने लगे। वहां मोमिन आज़माए गए और ज़ोर से झिंझोड़े गए।" (सूरः अल–अहज़ाब 10–11)

इस लड़ाई को बढ़ावा देने वाले यहूदी थे। बनी अन–नज़ीर तथा बनी वायल के कुछ लोग मक्का गए और कुरैश से मिलकर उनको हज़रत मुहम्मद सल्ल० के ख़िलाफ उकसाना चाहा। कुरैश को इस तरह की लड़ाईयों का अनुभव था। वह बहुत पहले से इसे भुगते हुए थे इसलिए उनकी हिम्मत न पड़ती थी लेकिन यहूदियों ने उनके सामने हालात कुछ इस तरह पेश किए कि कुरैश ने उनकी बात मान ली। यहूदियों ने कहा कि हम सब लोग आपके साथ होंगे और जब तक इस दीन को जड़ से ख़त्म न कर देंगे दम न लेंगे। कुरैश ने लड़ाई की तैयारियां शुरू कर दीं। यहूदियों का प्रतिनिधि मण्डल वहां से चलकर क़बीला गतफान में आया और उन्हें भी इस लड़ाई में भाग लेने को कहा। उनके क़बीलों में घूम फिर कर मदीना पर हमले की नई योजना विस्तार के साथ उनके सामने रखी और उन्हें यह भी बताया कि कुरैश इस जंग के लिए तैयार हैं।

इन कोशिशों के फलस्वरूप उनमें एक फौजी समझौता हो गया जिसमें मुख्यतः कुरैश, यहूद और गतफान शामिल थे। उन्होंने एक मत हो कर कुछ शर्तें भी निर्धारित कीं। एक शर्त यह भी कि इस मिली जुली

सेना में ग़तफ़ान के 6 हज़ार सिपाही होंगे। इसके बदले में यहूद ग़तफ़ान को ख़ैबर के बग़ीचों की पूरे साल की फ़सल दिया करेंगे। अन्ततः कुरैश ने चार हज़ार लड़ाकू जवान इसके लिए जमा किए। ग़तफ़ान के 6 हज़ार। कुल दस हज़ार की सेना का सेनापति अबु सुफ़ियान को बनाया गया।

मुसलमानों की हिकमत

जब अल्लाह के रसूल सल्ल0 को यह सूचना मिली कि यह लोग इस तरह एक होकर मदीना पर हमला करना चाहते हैं और मुसलमानों के नाम व निशान को हमेशा के लिए ख़त्म करने का पक्का इरादा कर चुके हैं तो आप ने पूरी गम्भीरता के साथ इसका नोटिस लिया और लड़ाई के लिए तैयार हो गए। मुसलमानों ने मदीना में किला बन्द रहकर सुरक्षात्मक लड़ाई को प्राथमिकता दी। उस समय उनकी सेना में 3 हज़ार मुजाहिद थे।

इस मौके पर सलमान फ़ारसी रज़ी0 ने मदीना के सामने ख़न्दक़ खोदने की सलाह दी। लड़ाई की इस विधि से ईरानी भली प्रकार परिचित थे। हज़रत सलमान ने अल्लाह के रसूल सल्ल0 से कहा— या रसूल अल्लाह! ईरान में जब हम को घुड़ सवार लश्कर के हमले का ख़तरा होता था तो हम लोग इसके मुक़ाबले के लिए ख़न्दक़ें खोदते थे। आपने उनकी राय पसन्द की और मदीना के उत्तर पश्चिम में स्थित मैदान में ख़न्दक़ें खोदने का हुक्म दिया। यही वह खुला हिस्सा था जहां से दुश्मन हमला कर सकता था। ☆

आपने ख़न्दक़ खोदने का काम इस तरह बांटा कि हर दस सहाबी के ज़िम्मे चालीस हाथ पड़ा। ख़न्दक़ की लम्बाई लगभग पॉच हज़ार हाथ थी। गहराई सात से दस हाथ तक और चौड़ाई सामान्यतः नौ से ऊपर थी।

अल्लाह के रसूल सल्ल0 ख़न्दक़ खोदने में मुसलमानों के साथ ख़ुद भी शामिल हुए। सबने मिलकर पूरी हिम्मत के साथ यह काम पूरा किया। सर्दी अधिक थी। खाने के लिए उन्हें इतना ही राशन मिल पाता

था जिससे वह ज़िंदा रह सकें। हज़रत अबु तलहा रज़ी0 कहते हैं कि हमने अल्लाह के रसूल सल्ल0 से भूख की शिकायत की और अपना पेट खोल कर दिखाया जिस पर एक पत्थर बन्धा हुआ था। यह देखकर अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने अपने पेट का कपड़ा हटाया और हमने देखा कि उसमें दो पत्थर बन्धे हुए हैं। ☆ इस पर भी सब खुश थे। अल्लाह का शुक्र अदा करते थे और मैदाने जंग के गीतों के साथ अल्लाह की बड़ाई बयान करते थे और शिकायत का एक शब्द उनकी ज़बान पर न आता था।

☆1 खुदाई का काम मदीना के उत्तर पूर्व से शुरू होकर उत्तर पश्चिम तक समाप्त हुआ। इसका पूर्वी किनारा हर्र–ए–वाकिम से मिलता था और पश्चिमी किनारा बहतान की घाटी से मिलता था। ☆2 अरब से यह प्रथा थी कि भूख की दशा में लोग अपने को सीधा रखने के लिए पेट पर पत्थर बांध लेते थे। –शरह मिशकात

हज़रत अनस रज़ी0 बयान करते हैं कि एक बार अल्लाह के रसूल सल्ल0 ख़न्दक़ के निकट आए (आपने देखा कि मुहाजरीन व अनसार सुबह सवेरे कठोर ठंडक में ख़न्दक़ खोदने में लगे हैं। उनके पास गुलाम व कर्मचारी न थे जो यह काम करते। आपने उन्हें इस हाल में देखकर कहा:–

अनुवाद:– "ऐ अल्लाह! ज़िंदगी तो आख़िरत की ज़िंदगी है। पस माफ फरमा अन्सार व मुहाजिरों को" यह सुनकर उसके जवाब में उन्होंने कहा:–

अनुवाद:– "हम वह हैं जिन्होंने मुहम्मद सल्ल0 से जेहाद पर उस समय तक के लिए बैअत की है जब तक हमारी जान में जान है।"

वह बयान करते हैं कि एक मुट्ठी जौ कहीं से मिल जाते तो उसका मलीदा बना लिया जाता और उसमें थोड़ी से चर्बी मिला ली जाती हालांकि उसका मज़ा बदल चुका होता।

ख़न्दक़ की खुदाई में एक जगह एक बड़ी चट्टान आ गई जिस पर कुदाल काम नहीं कर रही थी। लोगों ने हज़रत मुहम्मद सल्ल0 को इसकी सूचना दी। आपने उसे देखा और ख़ुद कुदाल उठाकर

बिस्मिल्लाह कहकर उस पर एक ऐसी चोट मारी की एक तिहाई भाग टूट गया। आपने फ़रमाया– 'अल्लाहु अकबर: मुझे शाम की कुंजियां दी गई।' इसके बाद दूसरा तिहाई भाग भी आपने तोड़ डाला और फरमाया– 'अल्लाहु अकबर! मुझे फारस की कुंजियां दी गई, अल्लाह की क़सम मैं मदाइन का सफेद महल अपनी आंखों से देख रहा हूं।' फिर तीसरी बार आपने बिस्मिल्लाह कहकर उस पर चोट लगाई और बाक़ी हिस्सा भी टुकड़े हो गया। आप सल्ल0 ने फरमाया– 'अल्लाहु अकबर मुझे यमन की कुंजियां दी गई, अल्लाह की क़सम मैं इस समय इसी जगह सनआ शहर के दरवाज़े देख रहा हूँ।' आप यह उस समय फ़रमा रहे थे जब मुसलमानों को अपने ज़िंदा रहने का भी यक़ीन नहीं था। एक तरफ उन्हें भूख परेशान किए जा रही थी दूसरी तरफ जान लेवा ठंडक और तीसरे दुश्मन का ख़तरा सर पर था।

आपके कुछ चमत्कार

इस ग़ज़वा में आपके कई चमत्कार ज़ाहिर हुए। जब मुसलमानों को ख़न्दक़ खोदने में कठिनाई होती और कोई चीज़ रुकावट डालती तो आप किसी बर्तन में पानी मांगते और अपना थोड़ा से लोआबे दहन (थूक) उसमें डाल देते और जो कुछ अल्लाह आपसे कहलाता आप दुआ करते। जब यह पानी उस पत्थर पर छिड़का जाता तो वह रेत की तरह नर्म हो जाता। खाने में ऐसी बरकत होती कि थोड़ा सा खाना बहुत सारे लोगों के लिए काफी हो जाता।

जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ी0 कहते हैं कि हम ख़न्दक़ की खुदाई कर रहे थे कि एक बड़ा पत्थर आ गया। सब लोग अल्लाह के रसूल सल्ल0 के पास गए और आपसे बताया। आपने फरमाया कि मैं उतरता हूँ फिर आप ऐसी हालत में खड़े हुए कि आपके पेट पर एक पत्थर बन्धा हुआ था। उस समय हालत यह थी कि तीन दिन से हमारे मुँह में कोई चीज़ न गई थी। आपने कुदाल उठाई और उस पत्थर पर मारी। पत्थर रेत की तरह भर भरा कर गिर गया। मैंने आपसे थोड़ी देर के लिए घर जाने की इजाज़त मांगी। घर पहुंचकर मैंने अपनी पत्नी से कहा कि मैंने

अल्लाह के रसूल सल्ल0 को इस हाल में देखा कि जिसके देखने की ताब नहीं। क्या तुम्हारे पास कुछ खाने पीने का सामान है? उन्होंने कहा–हॉं कुछ जौ है, और एक बकरी का बच्चा है। मैंने बकरी के बच्चे को ज़िबह किया जौ को पीसा और एक डेगची में गोश्त चढ़ा दिया। जब मैं आप के पास जाने लगा तो आटा गुथ चुका था। डेगची चूल्हे पर थी, और तैयार होने के करीब थी। मैंने आपके पास वापस आकर कहा– मैंने थोड़े बहुत खाने का बंदोबस्त किया है आप और दो–एक आदमी चलकर खा लें। आपने पूछा– कितना खाना होगा? मैंने सब कुछ बता दिया। आपने फरमाया– यह तो बहुत है और अच्छा है। अपने घर में कहना कि डेगची चूल्हे पर से उस समय तक न उतारें और न तन्दूर से रोटियां निकालें जब तक मैं न आ जाऊं। फिर आपने फरमाया– लोंगों बिस्मिल्लाह! और सभी मुहाजिर व अन्सार खड़े हो गए।

मैं अपने घर पहुंचा और अपनी पत्नी से कहा कुछ ख़बर भी है। अल्लाह के रसूल सल्ल0 सारे आदमियों को लेकर आ रहे हैं। कहने लगीं–क्या खाने के बारे में आपसे कुछ पूछा? मैंने कहा हॉं। मेरी कुटिया पर पहुंचकर आपने फरमाया, "लोगों! अन्दर दाख़िल हो और भीड़ न लगाओ।" आप रोटी के टुकड़े करके उस पर गोश्त रखते जाते और अपने साथियों को देते जाते थे। फिर कपड़ा हटाकर उसी तरह रोटी तोड़ते और गोश्त लेते रहे और साथियों को देते रहे। यहां तक कि सब ने खूब पेट भर कर खाना खाया उसके बाद भी खाना बच रहा। फिर आपने जाबिर रज़ी0 की पत्नी से कहा– अब तुम खाओ और दूसरों को दो क्योंकि सब लोग इस समय भूख और फाक़े में हैं।

एक दूसरी जगह आया है कि हज़रत जाबिर रज़ी0 कहते हैं कि मैं आपके पास गया और धीरे से निवेदन किया– या रसूल अल्लाह सल्ल0 हमने एक जानवर ज़िबह किया है और हमारे पास थोड़ा सा जौ है उसे पीस लिया है आप और कुछ लोग चलिए। आपने सस्वर कहा– ख़न्दक़ वालो! जाबिर ने एक भोज का बन्दोबस्त किया है।

कड़े इम्तेहान

कुरैश ने आगे बढ़कर मदीना के बाहर पड़ाव डाला। उनकी सेना 10 हज़ार थी। ग़तफ़ान भी अपने क़बीलों के साथ उसी जगह ठहरे। अल्लाह के रसूल सल्ल0 तीन हज़ार की सेना लेकर उनके मुक़ाबले के लिए चले। दोनों सेनाओं के बीच ख़न्दक़ थी। मुसलमानों और बनी कुरैज़ा के बीच मदीना की सुरक्षा का एक समझौता था, लेकिन बनी अन–नजीर के सरदार हुइये बिन अख़तब के बहकावे में आकर बनी कुरैज़ा इस समझौते से फिर गए। जिसके फलस्वरूप पूरे शहर में ख़ौफ का माहौल फैल गया। मुनाफ़िक़ों ने भी पॉव निकाले। अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने सोचा कि इस समय क़बीला ग़तफ़ान से इस बात पर सुलह कर लेना उचित है कि मदीना के फलों का एक तिहाई हिस्सा हमेशा उनको दिया जाएगा। आपके मन में यह विचार अन्सार के ऊपर जंग के बढ़ते हुए बोझ को देखकर आया। आप उन्हें और परीक्षा में नहीं डालना चाहते थे लेकिन औस व ख़ज़रज के दोनों सरदार साद बिन मआज़ और साद बिन एबादा रज़ी0 के इरादे और साबित क़दमी को देख कर आपने अपनी यह राय बदल दी। उन्होंने निवेदन किया कि जिस समय हम शिर्क से ग्रसित थे न हम अल्लाह की इबादत करते थे और न उनको पहचानते थे। तब तो खजूर का एक दाना भी (आतिथ्य सत्कार और क्रय विक्रय के अलावा) हम उन्हें देने पर तैयार न थे और अब जब हम मुसलमान हो गए और अल्लाह ने हमें आप और इस्लाम से गौरवान्वित किया तो क्या हम अपना माल उनको दे देंगे। अल्लाह की क़सम हमें इसकी कोई ज़रूरत नहीं। हमारे पास उनके लिए तलवार के सिवा और कुछ नहीं है। यहां तक कि अल्लाह उनके और हमारे बीच फ़ैसला कर दे। यह सुनकर आपने इरशाद फरमाया," जैसी तुम्हारी राय हो।"

घुड़सवारों का मुक़ाबला

अल्लाह के रसूल सल्ल0 और आप की सेना ने वहां पर पड़ाव किया। दुश्मन ने उन्हें घेर लिया था लेकिन लड़ाई की नौबत नहीं आई। यह ज़रूर हुआ कि दुश्मन के कुछ घुड़सवार तेज़ी के साथ आगे बढ़े।

अचानक उन्हें रास्ते में ख़न्दक़ दिखाई दी तो वह ठहर गए। वह आपस में कहने लगे। यह नया तरीक़ा व जाल है। अरब इस तरीक़े को नहीं जानते हैं। वह सोचने लगे कि ख़न्दक़ को किस तरह पार करें। यह सोचते हुए वह वहां पहुंचे जहां ख़न्दक़ की चौड़ाई सबसे कम थी। वहां पहुंचकर उन्होंने अपने घोड़ों को एड़ लगाई तो घोड़े ख़न्दक़ पार करके मदीना की तरफ पहुंच गए। इस दस्ते में अरब का मशहूर शहसवार अम्र बिन अब्दूद भी था जिसका मुक़ाबला एक हज़ार घुड़सवारों से किया जाता था। उसने एक जगह ठहर कर आवाज़ लगाई, है कोई मुक़ाबला करने वाला। यह ललकार सुनकर हज़रत अली रज़ी0 सामने आए और कहा– अम्र तुमने अल्लाह से वादा किया था कि कुरैश का कोई व्यक्ति तुम्हें दो बातों की तरफ बुलाएगा तो तुम एक ज़रूर मान लोगे। उसने जवाब दिया हॉ! हज़रत अली रज़ी0 ने कहा– ठीक है मैं तुम्हें अल्लाह की, उसके रसूल की और इस्लाम की दावत देता हूं। उसने कहा कि मुझे इसकी कोई ज़रूरत नहीं। हज़रत अली ने कहा तो फिर मैं तुम्हें मुक़ाबले की दावत देता हूँ। कहने लगा क्यों मेरे भतीजे! अल्लाह की क़सम मैं तुम्हें क़त्ल नहीं करना चाहता। हज़रत अली ने कहा– लेकिन अल्लाह की क़सम मैं तुम्हें ज़रूर क़त्ल करना चाहता हूँ।

यह सुनकर अम्र का ख़ून गरम हो गया, वह अपने घोड़े से उतर पड़ा। उसकी कूचें काट दीं उसके चेहरे पर गुस्से में एक तमांचा मारा। फिर इसी हालत में हज़रत अली की तरफ बढ़ा, मुक़ाबला शुरू हुआ। थोड़ी देर दोनों ने अपने जौहर दिखाए। फिर हज़रत अली ने उसे ठिकाने लगा दिया। उनके दूसरे शहसवारों में नौफ़िल बिन मुग़ीरा भी था, यह देखकर बाक़ी घुड़सवार भाग निकले और ख़न्दक़ पार कर के भाग गए।

मॉ का अपने बेटे को जिहाद पर भेजना

हज़रत आयशा रज़ी0 जो बनी हारिसा के किले में मुसलमान औरतों के साथ थीं, उस वक़्त तक पर्दा का हुक्म नहीं हुआ था, बयान करती हैं कि साद बिन मआज़ उधर से गुज़रे। वह एक इतना छोटा कवच पहने हुए थे कि उनका पूरा हाथ उससे बाहर था। वह रजज़ (वीर

रस के गीत) पढ़ते जाते थे। उन की माँ ने देखकर कहा–बेटे! तुमने बहुत देर कर दी। जल्दी जाओ। हज़रत आयशा ने उनसे कहा–ऐ! साद की माँ, कितना अच्छा होता कि साद का कवच इससे बड़ा होता। मैदाने जंग में इसी खुले हाथ पर एक तीर ऐसा लगा कि उससे हाथ की नस कट गई और साद रज़ी0 बनी कुरैज़ा के ग़ज़वा में शहीद हुए।

कुदरती मदद

मुश्रिकों ने मुसलमानों को चारों तरफ से घेर लिया और लगभग एक महीने तक घेरे रखा। इस बीच मुसलमानों को अनेक मुसीबतें झेलनी पड़ीं। मुनाफिक़ों का ढोंग भी सामने आ गया। अतएव कुछ लोगों ने अल्लाह के रसूल सल्ल0 से मदीना वापस जाने की इजाज़त चाही और यह बहाना किया कि उनके घर खुले रह गए हैं।

अल्लाह के रसूल सल्ल0 और आपके साथी इसी परेशानी में थे कि अचानक नूएम बिन मसऊद ग़तफ़ानी आपके पास आए और कहा कि "या रसूल अल्लाह! मैं इस्लाम ला चुका हूँ लेकिन मेरी क़ौम को मेरे मुसलमान होने का पता नहीं है आपकी जो आज्ञा हो।" आपने फरमाया–तुम अकेले आदमी हो। तुम वहीं रह कर हमारी मदद करो। क्योंकि जंग हीला व कूटनीति का नाम है। नुएम बिन मसऊद रज़ी वहां से वापस बनी कुरैज़ा के पास आए और उनसे कुछ ऐसी बातें कीं कि उन्हें खुद अपनी नीति पर शक पैदा हो गया। वह सोचने लगे कि अपने पड़ोसी मुहाजरीन व अन्सार से दुश्मनी तथा दूर स्थित ग़तफ़ान के क़बीलों से सम्पर्क बनाए रखना कहां तक उचित है। नुएम ने उन्हें सलाह दी कि वह कुरैश और ग़तफ़ान की हिमायत में लड़ने से पहले उनके कुछ सरदारों को बन्धक बनाकर अपने पास रख लें ताकि उनकी पोजीशन सुरक्षित रहे। बनी कुरैज़ा ने इस अच्छी सलाह के लिए नुएम के प्रति आभार व्यक्त किया तब नुएम कुरैश के सरदारों के पास गए और उनके प्रति अपनी सहानुभूति व्यक्त की और कहा कि यहूद अपने किए पर पछता रहे हैं और सोच रहे हैं कि कुरैश के कुछ सरदारों को वह बन्धक बना लें ताकि उनकी पोज़ीशन मज़बूत रहे। उनका इरादा है कि वह इन

सरदारों को मुहम्मद (सल्ल0) के हवाले कर देंगे, और वह उनके सर तलवार से उड़ा देंगे।

वहां से नुएम ग़तफान के पास गए और उन्हें भी उसी तरह समझाया जैसे कुरैश को समझाया था। नतीजा यह हुआ कि कुरैश और ग़तफ़ान एक दूसरे से चौकन्ना और होशियार हो गए, और उनके दिलों में यहूद की तरफ से बड़ा मनमुटाव पैदा हो गया। सभी सम्बन्धित दलों में फूट पड़ गयी, और प्रत्येक व्यक्ति एक दूसरे से भयभीत रहने लगा। अतएव जब अबुसुफियान और क़बीला ग़तफान के लोगों ने एक फ़ैसलाकुन जंग की शुरूआत करनी चाही तो यहूद टाल मटोल करने लगे। उन्होंने कुछ सरदारों को बन्धक बनाना चाहा। उनका यह इरादा देख कर कुरैश और ग़तफान समझ गए कि नुएम जो कुछ कह रहे थे सच निकला और उन्होंने यहूद की मांग को ठुकरा दिया। दूसरी तरफ यहूद (बनी कुरैज़ा) के अन्दर भी बदगुमानी पैदा हो गई। इस तरह उन सब की ताकत कमज़ोर पड़ गई और उनके इरादे धुमिल पड़ गए, और उनमें फूट पड़ गई।

अल्लाह का करना कुछ ऐसा हुआ कि ठंड और रात में ऐसी तेज़ हवाएं चली कि दुश्मनों के ख़ेमें उखड़ गए और चूल्हे पर से डेगचियां उलट गई। यह मंज़र देख कर अबुसुफियान ने कहा-- लोगों! अब यह ठहरने की जगह नहीं रही। हमारे खच्चर और घोड़े मर गए। बनी कुरैज़ा ने हमारे साथ विश्वासघात किया, इस आन्धी ने जो क़यामत ढाई है वह भी तुम लोग देख रहे हो। डेगचियां उड़ी जा रही हैं। आग जलना मुश्किल है। हमारा कोई ख़ेमा सुरक्षित नहीं है। अब यहां से वापस चला जाना ही ठीक है। यह कह कर वह अपने ऊंट पर बैठा और चल पड़ा।

जब ग़तफान को यह सूचना मिली कि कुरैश कूच कर गए तो वह भी अपने अपने ठिकानों की तरफ चल पड़े। हुज़ैफा बिन अल यमान जिन्हें अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने दुश्मन का भेद लेने के लिए भेजा था उस समय लौटे जब आप नमाज़ पढ़ रहे थे। नमाज़ पढ़ चुकने के बाद उन्होंने आपको सब हाल बताया। सुबह हुई तो आप मुसलमानों के साथ मदीना वापस आए। इस घटना का कुर्आन में इस तरह वर्णन आया है।

अनुवादः— "मोमिनों! अल्लाह की उस मेहरबानी को याद करो जो (उसने) तुम पर (उस समय) की जब फौजें तुम पर (हमला करने को) आई तो हमने उन पर हवा भेजी और ऐसे लश्कर (नाज़िल किए) जिनको तुम देख नहीं सकते थे और जो काम तुम करते हो अल्लाह उनको देख रहा है। (सूरः अहज़ाब— 9)

"और जो काफ़िर थे उनको अल्लाह ने फेर दिया वह अपने गुस्से में (भरे हुए थे) कुछ भलाई हासिल न कर सके, और अल्लाह मोमिनों को लड़ाई के बारे में काफी हुआ और अल्लाह ताक़तवर और ज़बर्दस्त है।" (सूरः अहज़ाब—25)

इस तरह जो बादल बड़े ज़ोर से उठा था वह गरज चमक कर बिन बरसे निकल गया, और मदीना का आसमान साफ हो गया। अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने फरमाया— इस साल के बाद से अब कुरैश तुम पर चढ़ाई न करेंगे बल्कि तुम ही उन पर हमला करोगे।

ग़ज़व—ए—ख़न्दक़ में मुसलमानों के अधिक से अधिक सात आदमी शहीद हुए और मुश्रिकों के चार आदमी क़त्ल किए गए।

अध्याय चौदह

ग़ज़्व–ए–बनी कुरैज़ा

बनी कुरैज़ा की गद्दारी

अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने मदीना आकर मुहाजिरों व अन्सार के बीच एक समझौता कराया जिसके अनुसार यहूदियों के जान व माल की सुरक्षा के साथ उनके धर्म की रक्षा की ज़मानत दी गई थी। कुछ शर्तें उनके हक़ में थीं और कुछ उन पर आयद की गई थीं। इस समझौते की अहम बातें इस तरह थीं।

यहूदियों में से जो हमारा साथ देगा उसके साथ सहयोग और समानता का मामला किया जाएगा न उन पर ज़ुल्म होगा न उनके ख़िलाफ किसी की मदद की जाएगी। मदीना का कोई मुश्रिक़ कुरैश की जान व माल की रक्षा नहीं करेगा। यहूद जब तक लड़ाई में शामिल रहेंगे मुसलमानों के साथ लड़ाई का ख़र्च भी सहन करेंगे। यहूद के क़बीले मुसलमानों के साथ एक क़ौम की तरह रहेंगे। यहूदियों को धर्म की आज़ादी रहेगी और मुसलमानों को अपने धर्म की। वह अपने गुलामों और अपने मामलों के बारे में खुद फैसला ले सकेंगे।

इस समझौते के अनुसार जंग के दौरान उन पर एक दूसरे की मदद करना ज़रूरी होगा। जायज़ बातों तथा अल्लाह के आदेशों की सीमा के अन्दर रहते हुए एक दूसरे के प्रति सद्भावना रखनी होगी। यसरब (मदीना) पर हमला हुआ तो दोनों मिलकर मदीना की रक्षा करेंगे।

लेकिन इन साफ शर्तों के बावजूद बनी अन–नज़ीर के सरदार हुअई बिन अख़तब ने बनी कुरैज़ा को मुसलमानों के साथ गद्दारी और कुरैश के साथ दोस्ती पर तैयार कर लिया। हालांकि उनके सरदार काब बिन असद का कहना था कि मैं ने मुहम्मद (सल्ल0) में सच्चाई और वफादारी के सिवा और चीज़ नहीं देखी। अन्ततः काब बिन असद ने भी अपना वचन तोड़ दिया।

अल्लाह के रसूल सल्ल0 को जब इस विश्वासघात की सूचना

मिली तो आपने औस व खज़रज के दो सरदारों साद बिन मआज़ और साद बिन एबादा को अन्सार के कुछ लोगों के साथ इस ख़बर की सच्चाई जानने के लिए भेजा। उन लोगों ने वहां जाकर जो कुछ सुना था उससे ख़राब हाल पाया। उन लोगों ने अल्लाह के रसूल सल्ल० के लिए अनुचित शब्दों का प्रयोग किया और कड़क कर कहने लगे। कैसा अल्लाह का रसूल? हमारे और मुहम्मद (सल्ल०) के बीच कोई समझौता नहीं है। उन्होंने गद्दारी के साथ-साथ पूरी लड़ाई की तैयारी भी शुरू कर दी। ☆ यह हालत खुले हुए हमले और आमने-सामने की लड़ाई से कहीं ज़्यादा ख़तरनांक थी।

☆ मान्टगोमरी वाट की किताब (Cambridge History Of Islam) में है कि मदीना में बनी क़ुरैज़ा का बड़ा क़बीला बाक़ी रह गया था। मदीना के घेरे के समय यह मुसमलानों के साथ दोस्ती करते थे लेकिन अन्दर-अन्दर वह मुश्रिकों से मिल चुके थे।

क़ुर्आन ने इसका चित्रण इस तरह किया गया है।

अनुवाद:- "जब वह तुम्हारे ऊपर और नीचे की तरफ पर चढ़ आए।' (सूर: अहज़ाब-10)

मुसलमानों के लिए यह बड़ी कठिन घड़ी थी और इस विश्वासघात को स्वाभाविक रूप से बहुत महसूस किया गया। इसका अन्दाज़ा हमें साद बिन मआज के उस वाक्य से हो सकता है जो उनके मुँह से ग़ज़्व-ए-ख़न्दक़ के मौक़े पर उस समय निकला था जब उनके हाथ में एक तीर लगने से हाथ की एक नस कट गई थी। उन्होंने कहा था- ऐ अल्लाह! मुझे उस समय तक मौत न दे जब तक मेरी आँखें बनी क़ुरैज़ा की तबाही देख कर ठंडी न हो जाएं।"

बनी क़ुरैज़ा की तरफ प्रस्थान

अल्लाह के रसूल सल्ल० जब मुसलमानों के साथ ग़ज़्व-ए-ख़न्दक़ से वापस हुए और मदीना पहुंचकर जब सबने अपने हथियार रख दिए तो आपके पास हज़रत जिब्रील आए और कहा- 'या रसूल अल्लाह क्या आपने हथियार रख दिए। आपने फरमाया- 'हाँ'। इस पर हज़रत जिब्रील ने कहा कि फरिश्तों ने अभी अपने हथियार नहीं रखे। अल्लाह ने आपको यह हुक्म दिया है कि बनी क़ुरैज़ा की तरफ रवाना

हों। मैं भी वहीं का इरादा कर रहा हूँ कि उनमें खलबली पैदा कर दूँ। अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने इस पर एक मुनादी करने वाले को बुलवाया और हुक़्म दिया कि वह लोगों में जाकर एलान करे कि हर उस व्यक्ति को जो सुनने और मानने वाला है यह चाहिए कि अस्र की नमाज़ बनी कुरैज़ा में पढ़ें। अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने बनी कुरैज़ा में पहुंच कर उन्हें घेर लिया और घेरा 25 दिन--रात जारी रहा यहां तक कि वह इससे तंग आ गए। अल्लाह ने उनके दिलों में खौफ पैदा कर दिया।

अबु लुबाबा का पश्चाताप

इस बीच बनी कुरैज़ा ने आपके पास यह संदेश भेजा कि आप हमारे पास बनी अम्र बिन औफ़ को भेज दीजिए ताकि हम उनसे अपने मामले में सलाह कर सकें। उनकी प्रार्थना पर आपने अबु लुबाबा को वहां भेज दिया। उन्हें देखते ही सब लोग खड़े हो गए। औरतें और बच्चें दहाड़ें मार कर रोने लगे। यह देखकर उनका दिल कुछ पसीज गया। इसके बाद यह सब लोग कहने लगे– 'अबु लुबाबा! क्या मुहम्मद (सल्ल0) के फैसले को मान लिया जाए? उन्होंने कहा– 'हॉ' और इसी के साथ अपने गले पर हाथ फेर कर उसकी तरफ इशारा किया। अबु लुबाबा कहते हैं कि अभी मेरे क़दम भी वहां से न हटे थे कि मुझे महसूस हुआ कि मैंने अल्लाह और उसके रसूल सल्ल0 की ख़्यानत की है। अतः वह फौरन उल्टे पॉव वापस हुए और आपके सामने हाज़िर होने के बजाय मस्जिदे नबवी के एक खम्बे से अपने को बांध दिया और एलान कर दिया कि मैं उस समय तक इस जगह से न हटूंगा जब तक अल्लाह मेरे कुसूर को माफ न करेगा। उन्होंने अल्लाह से वादा किया कि भविष्य में वह बनी कुरैज़ा के इलाक़े में क़दम भी न रखेंगे और उस जगह को भी न देंखेंगे जहां उनके मन में अल्लाह और उसके रसूल के बारे में दुर्भावना पैदा हुई थी। जब अल्लाह ने उन की तौबा कुबूल की तो यह आयत उतरीं।

अनुवादः ''और कुछ लोग हैं कि अपने गुनाहों का (साफ) इक़रार करते हैं। उन्होंने अच्छे और बुरे कामों को मिला

जुला दिया था। करीब है कि अल्लाह उन पर मेहरबानी से ध्यान फरमाए। बेशक अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है। (सूरः तौबा–102)

और फौरन लोग उनको खोलने के लिए तेज़ी से आगे बढ़े। उन्होने कहा– नहीं, अल्लाह की क़सम जब तक अल्लाह के रसूल सल्ल0 अपने हाथों से मुझे आज़ाद न करेंगे मैं इसी हालत में रहूँगा। अल्लाह के रसूल सल्ल0 जब फज्र की नमाज़ के लिए आए और उनके पास से गुज़रे तो आपने उनको खोला। अबु लुबाबा खजूर के उस तने से लगभग बीस रात बन्धे रहे। हर नमाज़ के समय उनकी पत्नी आती और नमाज़ के लिए उनको खोल देतीं फिर वह दोबारा अपने को उस तने से बाँध लेते।

साद बिन मआज़ का हक़ व इंसाफ

बनी कुरैज़ा ने अल्लाह के रसूल सल्ल0 के फैसले को मान लिया, लेकिन क़बीला औस के लोग, जिनके दिलों में बनी कुरैज़ा के प्रति नरमी थी, आपके पास आए और कहने लगे– या रसूल अल्लाह! ख़ज़रज के मुक़ाबले में हमारा उनसे समझौता है, और उन्होंने हमारे भाईयों के दोस्तों के साथ मिलकर जो कुछ किया वह आप जानते हैं। उनकी यह बात सुनकर आप सल्ल0 ने फरमाया– "औस के लोगों! क्या तुम इस पर तैयार हो कि तुम्हारा ही कोई आदमी इसका फैसला कर दे।" उन्होंने कहा–'हाँ' हम तैयार हैं।' आपने कहा,"मैं यह काम साद बिन मआज़ के हवाले करना चाहता हूँ।" उनको बुलवाया गया। जब वह आए तो उनके क़बीला वालों ने उनसे कहा–"अबु अम्र! अपने क़बीला वालों के साथ अच्छा बर्ताव करना अर्थात कुछ रियायत करना। जब उन्होंने इस बात पर ज़ोर दिया और कहा कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने तुम्हारे सुपुर्द यह मामला इसी लिए किया है कि तुम इन लोगों (बनी कुरैज़ा) के साथ अच्छा बर्ताव करो तो साद ने कहा– किस्मत से साद को आज यह मौका मिला है। अल्लाह करे कि अल्लाह के हुक्म के सामने मुझे किसी की मलामत (बुरा भला कहना) की परवाह न हो। साद ने कहा–मैं यह फैसला करता हूं कि उनके मर्द क़त्ल कर दिए जाएं। उनका माल बांट लिया जाए। बच्चे और औरतें गुलाम बना ली जाएं। अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने फरमाया–तुमने अल्लाह के हुक्म के मुताबिक फैसला किया है।

इस्राईली मज़हब के मुताबिक सज़ा

फैसला बनी इस्राइल की शरीअत के जंगी नियमों के अनुसार भी था। तौरेत की आयत 11,12,13 में हैं–" और जब तू किसी शहर के पास उससे लड़ने के लिए आ पहुंचे तो पहले उस से सुलह का पैग़ाम कर, तब यूं होगा कि अगर वह तुझे जवाब देकर सुलह मान कर दरवाज़े तेरे लिए खोल दें तो सारे जानदार जो उस शहर में पाए जाएं तेरे अधीन होंगे और तेरी सेवा करेंगे और अगर वह तुझसे सुलह न करें और तुझसे जंग करें तो उसे घेर लो और जब खुदावन्द (The Lord) तेरा ख़ुदा उसे मेरे कब्ज़े में कर देवें तो वहा कि हर मर्द को तलवार की धार से क़त्ल कर, मगर औरतों, बच्चों, जानवरों और जो कुछ उस शहर में हो उसका सारा लूट अपने लिए ले।"

बनी इस्राईल में प्राचीन काल में यही चलन था। तौरेत में आता है–"और उन्होंने मिदयानियों से लड़ाई की जैसा ख़ुदावन्द ने मूसा को फरमाया था, और सारे मर्दों को क़त्ल किया और उन्होंने मिदयान के पॉच बादशाहों– ईवी, राक़िम, सूर, हूर और रूबा को जान से मारा और बेऊर के बेटे बलआम को भी तलवार से क़त्ल किया और बनी इस्राईल ने मिदयान की औरतों और उनके बच्चों को बन्धक बना लिया और उनके सारे शहरों को जिनमें वह रहते थे और उनके सारे क़िलों को फूंक दिया।"

मुसा अ0 के ज़माने में यही कानून चलन में था और उसको उनका समर्थन हासिल था। तौरेत में है।

अनुवादः– "तब मूसा और एहले अज़र पादरी तथा जमाअत के सारे सरदार उनके स्वागत के लिए ख़ेमा से बाहर गए और मूसा लश्कर के रईसों पर और उन पर जो हज़ारों के सरदार थे और उन पर जो सैंकड़ों के सरदार थे जो जंग करके फिरे गुस्सा हुए और उनको कहा कि क्या तुमने सब औरतों को जीत रखा।"

साद बिन मआज़ के उस उचित फैसले को पूरा किया गया और इस तरह मदीना यहूदी साज़िश, षड़यन्त्र और फितना–फसाद से बच

गया, और मुसलमानों को इत्मिनान हो गया कि अब पीछे से उन पर कोई हमला न होगा और किसी अंदरूनी साज़िश को सर उठाने का मौका न मिलेगा।

सलमा बिन अबी अलहक़ीक़ एक यहूदी था जिसने मुसलमानों के ख़िलाफ़ पार्टी बन्दी की थी। ख़ज़रज ने उसे भी क़त्ल कर दिया इससे पहले औस काब बिन अल अशरफ का ख़ात्मा कर चुके थे। काब अल्लाह के रसूल सल्ल0 की अदावत और आपके ख़िलाफ लोगों को उकसाने में सबसे आगे था। इन दोनों के क़त्ल से मुसलमानों को फितना व फसाद के उन सरदारों से छुटकारा मिला जो इस्लाम और मुसलमानों के ख़िलाफ लगातार साज़िश करने में लगे रहते थे, और सबने इत्मिनान की सांस ली।

अल्लाह के रसूल सल्ल0 बनी क़ुरैज़ा से जिस तरह निबटे वह सामरिक नीति तथा अरब के यहूदी क़बीलों के स्वभाव के अनुसार था उनके लिए इस तरह की कड़ी सज़ा की ज़रूरत थी ताकि गद्दारी करने वालों को सदा के लिए सबक़ मिल जाए और आगे आने वाली पीढ़ी इससे सीख ले। आर0बी0सी बाडले ने अपनी किताब The Messenger- The Life fo Muhammad में इस घटना पर रोशनी डालते हुए लिखा है।

" मुहम्मद अरब में अकेले थे। यह देश क्षेत्रंफल में संयुक्त राज्य अमेरिका का एक तिहाई है और इसकी आबादी 50 लाख है। उनका अपना राज्य सेन्ट्रल पार्क से अधिक बड़ा न था। अपनी नीतियों को लागू करने के लिए उनके पास सिर्फ तीन हज़ार की सेना थी जो हथियारों से सुसज्जित न थी अगर वह कमज़ोर होते और ज़ुल्म को सर उठाते ही न दबा देते तो इस्लाम ज़िंदा न रहता। यहूदियों का यह क़त्ले आम एक कठोर क़दम ज़रूर था लेकिन धर्मों के इतिहास में यह पहली घटना न थी। एक मुसलमान की निगाह से यह सबसे उचित था। इसके बाद अरब क़बीलों और यहूदियों को किसी गद्दारी से पहले बार-बार सोचना पड़ा था, इसलिए कि वह इस का अंजाम देख चुके थे और देख चुके थे कि मुहम्मद सल्ल0 अपने फैसला लागू करने की ताकत रखते हैं।"

सर स्टैनले पोल ने **Seceltion from Koran** के परिचय में लिखा है'

"यह याद रखना चाहिए कि उन लोगों का जुर्म गद्दारी था वह भी एक घेरे के दौरान। जिन लोगों ने इतिहास में यह पढ़ा है कि वेलिंग्टन की फौज जिस रास्ते से गुज़री उसकी निशानदही भागे हुए सिपाहियों और लूटमार करने वालों की लाशें करती थी जो पेड़ों पर टांग दी जाती थीं, उन्हें एक गद्दार क़बीले के एक सरसरी फैसले के अनुसार क़त्ल किए जाने पर हैरत नहीं होना चाहिए।"

मदीना में यहूदियों के इस आख़िरी मोर्चे को ख़त्म करने से एक फायदा यह हुआ कि ढोंग का कैम्प कुदरती तौर पर कमज़ोर पड़ गया और मुनाफ़िक़ों की गतिविधियां मन्द पड़ गयीं। वह हताश और निराश हो गए। डा0 इस्राईल वेल्फेन्सन ने ग़ज़व–ए–क़ुरैज़ा पर रोशनी डालते हुए लिखा है।

"जहां तक मुनाफ़िक़ों का सम्बन्ध है बनी क़ुरैज़ा की लड़ाई के बाद उनकी आवाज़ मन्द पड़ गई, और उसके बाद उनकी कथनी व करनी से कोई ऐसी बात ज़ाहिर न हुई जो अल्लाह के रसूल सल्ल0 और आपके साथियों (सहाबा) के फैसले के ख़िलाफ होती जैसा कि इससे पहले आशा की जा रही थी।

सख़ावत व रहमदिली

अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने नज्द की तरफ़ कुछ सवारों को एक मुहिम पर भेजा। यह लोग वापस आए तो अपने साथ बनी हनीफा के सरदार सुमामा बिन उसाल को क़ैदी बनाकर लाए और उनको मस्जिद के एक खम्भे से बान्ध दिया गया। जब अल्लाह के रसूल सल्ल0 उधर से गुज़रे तो आपने उनसे पूछा– "सुमामा कुछ कहना तो नहीं है? उन्होंने कहा– ऐ मुहम्मद (सल्ल0)!अगर आप क़त्ल करेंगे तो ऐसे व्यक्ति को क़त्ल करेंगे जिसकी गर्दन पर ख़ून है। अगर अहसान करेंगे तो एक शुक्रगुज़ार पर एहसान करेंगे, और अगर आपको माल व दौलत चाहिए तो बताएं। आप जो भी मांग रखेंगे वह पूरी की जाएगी। आप यह सुनकर

आगे बढ़ गए। दूसरी बार जब आपका उधर से गुज़र हुआ तो आपने उससे सही सवाल किया और उसने वही जवाब दिया और आपने पहले जैसा रुख अपनाया। तीसरी बार जब आप उधर से गुज़रे तो आपने आदेश दिया कि सुमामा को छोड़ दो। अतः उसे छोड़ दिया गया। इसके बाद सुमामा ने मस्जिद के करीब एक खजूर के बाग में जाकर स्नान किया और आपके पास आकर मुसलमान हो गया और कहने लगा – अल्लाह की क़सम एक समय था कि मुझे आपके चेहरे से अधिक कोई चेहरा बुरा न लगता था लेकिन आज आपका चेहरा मुझे हर चीज़ से अधिक प्यारा है और अल्लाह की क़सम आपके दीन से अधिक ज़मीन पर मुझे किसी अन्य चीज़ से नफरत न थी लेकिन आज आपका दीन मुझे सभी धर्मों से अधिक प्यारा है।

मेरा किस्सा यह है कि मैं उमरा की नियत से जा रहा था कि आपके सवारों ने मुझे गिरफ्तार कर लिया। इस पर अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने उन्हें बधाई दी और उमरा अदा करने की हिदायत की। जब सुमामा कुरैश से मिले तो उन्होंने कहा–सुमामा! तुम बेदीन हो गए। सुमामा ने जवाब दिया–नहीं! अल्लाह की क़सम मैं तो ईमान लाया हूँ, तुम्हारे पास यमामा ☆ के गेहूँ का एक दाना भी उस समय तक न पहुंचेगा जब तक अल्लाह के रसूल सल्ल0 की मंजूरी न होगी। इसके बाद वह अपने इलाके में वापस आ गए और ऊंटों के काफिले को जो गेहूँ लेकर जाते थे मक्का जाने से रोक दिया जिसके फलस्वरूप कुरैश को फाक़ा की नौबत आ गई, और उन्होंने अल्लाह के रसूल सल्ल0 के पास प्रार्थना भेजी कि सुमामा को अनाज के निर्यात की इजाज़त दे दें, आपने उनकी यह प्रार्थना स्वीकार कर ली।

ग़ज़्व–ए–बनी अलमुस्तलिक तथा इफ्क की घटना

इसके बाद दूसरे ग़ज़्वे, ग़ज़्व–ए–बनी लैहान तथा ग़ज़्व–ए–ज़ी–क़िर्द पेश आए लेकिन इनमें लड़ाई नहीं हुई। शाबान सन् 6 हिजरी में हज़रत मुहम्मद सल्ल0 को यह ख़बर मिली कि बनी अलमुस्तलिक लड़ाई के लिए जमा हो रहे हैं यह ख़बर पाकर आप भी

मुक़ाबले के लिए चले। मुनाफ़िक़ों की इतनी बड़ी संख्या आपके साथ हो गई कि इससे पहले किसी ग़ज़वा में न थी। उनका सरदार अब्दुल्लाह बिन अबी इब्न सलूल भी साथ था।

मुसलमानों की विजय ने इस गिरोह का पित्ता पानी कर दिया। मुसलमानों की किस्मत का आसमान उठान पर था। मुसलमानों की लगातार कामयाबी की ख़बरें मक्का के कुफ़्फ़ार, मदीना तथा उनके आस–पास बसने वाले यहूदियों और मुनाफ़िक़ों के लिए गहरी चिन्ता का कारण बनी हुयी थीं। वह यह समझ चुके थे कि मैदाने जंग में अब मुसलमानों को अधिक सेना और साज–सज्जा के बल बूते हराया नहीं जा सकता। इस लिए उन्होंने अन्दरूनी बिगाड़ पैदा करना शुरू किया। मुसलमानों में फूट डालने के लिए उन्होंने क़ौमी तथा कबीलों के भेद–भाव को हवा दी। नबी के गरिमापूर्ण पद के अपमान और उस पर से मुसलमानों के यक़ीन को कमज़ोर बनाने की योजना बनाई, और आपके कैम्प के ख़िलाफ़ आरोप लगाने की ख़तरनाक मुहिम चलाने का फ़ैसला किया, लेकिन अब तक मदीना में एक नई सोसाइटी जन्म ले चुकी थी। जिसका प्रत्येक सदस्य एक दूसरे का सम्मान करता। जब वह अपने किसी भाई के बारे में कोई गलत बात सुनता तो पहले अपना जायज़ा लेता। अगर अपने अन्तःकरण को पाक साफ पाता तो फिर जिस प्रकार अपने लिए ऐसी निराधार बात न करता दूसरे के लिए भी न करता। बे शक मुनाफ़िक़ों की यह एक बहुत ख़तरनाक और गहरी चाल थी और उनकी यह चाल बनी अलमुस्तलिक के ग़ज़वा में जिस तरह खुलकर सामने आई इससे पहले कभी न आई थी।

अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने मदीना से चलकर बनी अलमुस्तलिक के सोते के पास जिसे " मुरैसी" भी कहते हैं पड़ाव किया। यह जगह समुन्द्र तट की तरफ़ 'कुदैद' के पास था। यहां लड़ाई हुई और बनी अलमुस्तलिक हार गए। ☆

☆ यह ग़ज़वा राजनीतिक, सामरिक तथा आर्थिक दृष्टि से बड़ा महत्वपूर्ण था क्योंकि इसका मुख्य केन्द्र 'मुरैसी' मक्का की तिजारत के राजमार्ग पर स्थित था जो मक्का से मदीना का एक छोटा रास्ता भी था जिससे मुसाफ़िर और तिजारती क़ाफ़िले गुज़रते थे

इस मौके पर हज़रत उमर रज़ी0 का एक नौकर जो बनी गिफार के कबीले से सम्बन्ध रखता था और जुहैना कबीला का एक व्यक्ति जिसका सम्बन्ध ख़ज़रज से था आपस में लड़ने लगे। तो जुहैनी ने अवाज़ लगाई–'ऐ अन्सारियों'! अजीर ने आवाज़ लगाई'ऐ मुहाजरीन'! अब्दुल्लाह बिन अबी बिन सलूल यह सुनकर बहुत गुस्सा हुआ। उस समय वह अपने आदमियों में बैठा हुआ था उसने कहा– अच्छा! इन मुहाजरीन के हौसले यहां तक पहुंचे। उन्होंने हमारे इलाके में आकर हमसे रस्साकशी की और अपनी संख्या बढ़ाने की कोशिश की। यह तो वैसे ही हुआ कि अपने कुत्ते को ख़ूब खिला पिलाकर मोटा करो तो तुमको ही खाएगा। अल्लाह की कसम जब हम मदीना वापस जाएंगे तो वहां के बड़े लोग दलितों को निकाल कर बाहर करेंगे। फिर उसने अपने आदमियों को सम्बोधित करके कहा– यह सब कुछ तुमने अपने हाथों किया है। तुमने अपने देश में उनको जगह दीं उन्हें अपना माल दिया। अल्लाह की कसम अगर तुम अपने हाथ को ज़रा रोक लेते और इतनी उदारता से काम न लेते तो वह निश्चय ही दूसरा घर देखते।

अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने जब यह बात सुनी तो आपने सेना की वापसी का आदेश दिया ताकि लोग फितना में न पड़ें और शैतान को उन्हें बहकाने का मौका न मिले। यह वापसी आपकी सामान्य आदत से हटकर थी। आपके आदेश पर सब लोग चल खड़े हुए। उस दिन आप बराबर चलते रहे। रात भर चलकर सुबह हुई। सफर जारी रहा और दिन चढ गया। सूरज की गर्मी से लोगों को तकलीफ होने लगी जब आपने पड़ाव किया। लोग इतने थक गए थे कि लेटते ही सो गए। अब्दुल्लाह बिन उबई के लड़के अब्दुल्लाह लश्कर से पहले मदीना पहुंच गए। वह रास्ते में अपने बाप का रास्ता रोक कर खड़े हो गए। अपने बाप को देख कर उन्होंने रास्ते में अपना ऊंट बैठा दिया और कहा– मैं तुम्हे उस समय तक नहीं छोडूंगा जब तक कि अपनी ज़बान से तुम न कह दो कि मैं गिरा हुआ हूँ और मुहम्मद सल्ल0 इज़्ज़त वाले हैं। इसी बीच अल्लाह के रसूल सल्ल0 का उधर से गुज़र हुआ। आपने फरमाया– अब्दुल्लाह! जाने दो। जब तक वह हमारे बीच हैं हम उनके साथ अच्छा सलूक ही करेंगे।

अल्लाह के रसूल सल्ल0 का यह नियम था कि जब आप सफर का इरादा करते तो आप अपनी पत्नियों के नाम कुर्आ (लाटरी) डालते, जिसका नाम निकलता उसको अपने साथ ले जाते। ग़ज़्व–ए–बनी अलमुस्तलिक में कुर्आ में हज़रत आयशा रज़ी0 का नाम निकला। अतः आप उनको अपने साथ ले गए। वापसी पर जब मदीना करीब आया तो आपने पड़ाव किया और रात का कुछ हिस्सा वहीं गुजारा उसके बाद कूच का एलान किया। हज़रत आयशा शौच के लिए गईं तो उनके गले का हार किसी जगह टूट कर गिर गया और उन्हें पता न चला। जब वह ऊंट में वापस आईं तो उनको मालूम हुआ कि उनका हार गायब है वह उसको तलाश करने फिर वहां गईं। इसी बीच कूच का एलान हो गया। जिन लोगों के ज़िम्मे उनकी सवारी थी वह समय से आए और यह समझ कर कि हज़रत आयशा अन्दर होंगी डोली उठाकर चल पड़े। हज़रत आयशा रज़ी0 की उम्र कम थी और उनका शरीर हल्का फुल्का था इस लिए डोली लेकर चलने वालों को तनिक भी सन्देह न हुआ कि वह डोली के अन्दर नहीं हैं। हज़रत आयशा रज़ी0 वापस आईं तो वहां कोई न था। सब जा चुके थे। उन्होंने अपनी चादर ओढ़ी और वहीं लेट गईं।

इस बीच सफवान बिन अलमुअत्तल जो अपनी किसी ज़रूरत से क़ाफिले से पीछे रह गए थे, इधर आ निकले। सफवान ने हज़रत आयशा को देखा तो "इन्ना लिल्लाहि" पढ़ा और कहने लगे यह तो अल्लाह के रसूल सल्ल0 की पत्नी हैं। सफवान ने अपना ऊंट उनके करीब कर दिया और खुद पीछे हट गए। हज़रत आयशा रज़ी0 उसमें सवार हो गईं तो उन्होंने ऊंट की नकेल पकड़ी और तेज़ी के साथ क़ाफिले से जा मिलने के लिए चल पड़े। जब वह क़ाफिले के करीब पहुंचे तो क़ाफिला पड़ाव कर चुका था, लेकिन इस घटना से लोगों में किसी तरह की सनसनी पैदा नहीं हुई, क्योंकि रेगिस्तान में क़ाफिलों के आने–जाने में इस तरह की घटनाएं हो जाती थीं। बहन बेटियों की इज़्ज़त की हिफाज़त उनके ख़मीर में थी और इस तरह के बुरे ख्याल से उनके पैदाईशी गुणों का कोई वास्ता न था वह इस पर इस्लाम लाने से पहले भी उसी तरह डटे थे जैसे इस्लाम लाने के बाद।

आज्ञनता–युग का एक अरब कवि कहता है:–

अनुवाद:– "अगर मेरे पड़ोस की किसी औरत पर मेरी नज़र भी पड़ जाती है तो मैं अपनी निगाहें नीचे कर लेता हूँ। यहां तक कि उसका नशेमन (पर्दा) उसे अपने अन्दर छिपा न ले।"

अल्लाह के रसूल सल्ल0 के सहाबियों का आप के साथ वह सम्बन्ध था जो बाप बेटे के बीच होता है। आप की पत्नियां मोमिनों के लिए माँ का दर्जा रखती हैं उनकी नज़र में आप सबसे अधिक प्यारे थे। सफवान भी दीनदारी और शर्म व हया में नेक नाम थे। यह भी उल्लेख मिलता है उनको औरतों में कोई दिलचस्पी न थी। ☆

☆ इसी तरह की एक घटना उम्म सलमा के सम्बन्ध में बयान की जाती है जब उनको अपने पति के साथ मदीना हिजरत करने से रोक दिया गया, तो वह रोज़ घाटी में जाकर बैठ जाती, और शाम तक रोती रहतीं। लगभग एक वर्ष तक उनका यह हाल रहा, अन्ततः लोगों का दिल पसीज उठा, और उन्होंने उम्म सलमा को मदीना जाने की इजाज़त दे दी, उन्होंने अपना ऊंट तैयार किया और अल्लाह का नाम लेकर उस पर बैठ गई। रास्ते में उन्हें उस्मान बिन तलहा मिले, और उनकी यह हालत देखकर उनकी नकेल थाम कर मदीना तक उनके साथ गए। उम्मे सलमा कहतीं हैं कि उनसे अधिक शरीफ किसी अरब से मेरा सामना नहीं पड़ा। उनका हाल यह था कि जब कोई मंज़िल आती तो वह ऊंट को बिठा कर पीछे चले जाते, मैं उतर जाती तो आते और सामान आदि उतार का उसे किसी पेड़ से बान्ध देते, और जब तक मुझे मदीना नहीं पहुंचा दिया वह बराबर यही करते रहे। यह उस समय की बात है जब उस्मान बिन तलहा इस्लाम नहीं लाए थे, लेकिन सफवान उस घटना से बहुत पहले मुसलमान हो चुके थे और अल्लाह के रसूल सल्ल0 का सत्संग उन्हें प्राप्त था।

इस तरह यह कोई ऐसी बात न थी जिसकी तरफ लोग ध्यान देते, लेकिन अब्दुल्लाह बिन उबई ने मदीना पहुंचकर इस घटना को फैला दिया। उसके और उसके साथियों के लिए यह एक ऐसी चीज़ हाथ लग गई थी जिससे मुसलमान आसानी के साथ फितने में पड़ सकते थे, और हज़रत मुहम्मद सल्ल0 के साथ उनके रिश्ता कमज़ोर तथा आप सल्ल0 के प्रति उनकी श्रद्धा–भक्ति को कम किया जा सकता था। इससे मुसलमानों का एक दूसरे पर भरोसा कमज़ोर पड़ता था। इस साज़िश के कुछ ऐसे सादा दिल मुसलमान भी शिकार हुए जिन्हें अधिक बातें करने का शौक़ था और जो बिना जाँचे परखे बात को दोहराने के आदी थे।

जब हज़रत आयशा रज़ी0 को मदीना में अचानक इसकी ख़बर हुई

तो वह सन्नाटे में आ गई वह बहुत दुखी हुई। उनकी रातों की नींद उड़ गई। अल्लाह के रसूल सल्ल0 के लिए यह एक कठिन घड़ी थी जब आपको पता चला कि बात कहां से चली थी और कहां पहुचं गई, तो आप मस्जिद आए और मिम्बर पर खड़े होकर फरमाया– "ऐ मुसलमानों! मुझे कौन उस व्यक्ति के बारे में कुछ कहने की इजाज़त देता है जिससे मेरे घर वालों के बारे में कुछ कह कर दुख पहुंचाने का मुझे पता चला है। अल्लाह की क़सम मुझे अपने परिवार के बारे में जो कुछ जानकारी है वह सन्तोष जनक है। लोगों ने इस मामले में जिन साहब का नाम लिया है उनके बारे मे भी मुझे अच्छी बात मालूम है। वह जब कभी मेरे घर आते तो मेरे साथ आते थे।"

यह सुनकरर 'औस' के कुछ लोग भड़क उठे और कहने लगे कि जिसने ऐसी बात ज़बान से निकाली है हम उनकी गर्दन उड़ा देंगे। चाहे वह 'औस' का आदमी हो या 'ख़ज़रज' का। अब्दुल्लाह बिन उबई का सम्बन्ध ख़ज़रज से था। यह बात सुनकर "औस' व ख़ज़रज" के क़बीले कटने मरने को तैयार हो गए लेकिन अल्लाह के रसूल सल्ल0 की सूझ बूझ तथा बीच बचाव से मामला ठंडा पड़ गया और बात वहीं ख़त्म हो गई। हज़रत आयशा रज़ी0 को अपनी बेगुनाही का पूरा यक़ीन था उनको पूरा यक़ीन था कि अल्लाह अन्ततः उनको बरी कर देगा लेकिन उनके मन में यह बात नहीं आई थी कि अल्लाह की तरफ से इस के लिए विशेष कर 'वही' नाज़िल होगी। कुछ ही दिनों में कुर्आन पाक की निम्नलिखित आयतें उतरीं और इस तरह सात आसमानों के ऊपर से उनकी बेगुनाही का एलान किया गयाः–

अनुवादः– "जिन लोगों ने आरोप लगाया है तुम ही में से एक जमाअत है इसको अपने हक़ में बुरा न समझना बल्कि वह तुम्हारे लिए अच्छा है। इनमें से जिस व्यक्ति ने गुनाह का जितना हिस्सा लिया उसके लिए उतना वबाल है और उसने उनमें से इस बोहतान का बड़ा बोझ उठाया है उसको बड़ा अज़ाब होगा जब तुम ने वह बात सुनी तो मोमिन मर्दों और औरतों ने क्यों अपने दिलों में नेक गुमान न किया और क्यों न कहा कि यह सरीह (सरा सर)

बोहतान है।" (सूरः नूर–11–12)

इस तरह एक ज़बर्दस्त फ़ितना सदा के लिए ख़त्म हो गया और इस तरह ख़त्म हुआ मानो कुछ हुआ ही न था। मुसलमान पहले की तरह अपने उन अहम कामों को पूरा करने में लग गए जिन पर न सिर्फ़ उनका बल्कि पूरी इंसानियत मानवता का कल्याण निर्भर था।

अध्याय पंद्राह

हुदैबिया का समझौता

अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने सपने में देखा कि आप मक्का में दाखिल हुए और अल्लाह के घर काबा का तवाफ (परिक्रमा) किया। यह एक सच्चा सपना था हालांकि इसमें समय, महीना व साल तय न था। आपने सहाबा कराम रज़ी0 को इस सपने के बारे में बताया। यह खुशख़बरी सुन कर सब लोग बहुत खुश हुए। मक्का और काबा जिनसे उन्हें बहुत अधिक प्यार व लगाव था, मुद्दत हुई उन से छूट चुका था। उनके दिल में तवाफ़ की बड़ी लगन थी और वह बड़ी बेसब्री से उस दिन का इंतेज़ार कर रहे थे, कि जब उन्हें दोबारा तवाफ़ का मौका मिले। मुहाजिरों में मक्का का आकर्षण स्वाभाविक रूप से अधिक था क्योंकि वह वहीं पैदा और बड़े हुए थे, उसकी मुहब्बत उनकी घुट्टी में पड़ी थी और बहुत दिनों से वह वहां नहीं जा सके थे। जब अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने उनको यह ख़बर दी तो उनको इसमें ज़रा भी शक नहीं हुआ कि वह सपना इसी साल सच्चा होगा। इस बात ने उनकी बेचैनी और बढ़ा दी और वह सबके सब आपके साथ चलने के लिए तैयार हो गए। आपने 'उमरह' का एहराम ☆ भी बाँध लिया था ताकि लोगों को पता चल जाए कि आप सिर्फ अल्लाह के घर का दर्शन करने के मक़सद से जा रहे हैं।

☆ दो बिना सिली हुई चादरें जिसे हाजी हज के समय अपने बदन पर डाल लेते हैं। एक लुंगी या तहबन्द की तरह बाँध लेते हैं और दूसरी बदन पर लपेट लेते हैं।

निकलने से पहले आप ने क़बीला खुजाआ के एक मुख़बिर को आगे भेजा ताकि वह क़ुरैश की गतिविधियों का पता दे। जब आप उस्फान ☆ के क़रीब पहुंचे तो उस मुख़बिर ने ख़बर दी कि क़बीला काब बिन लुअई ने आपको आगे बढ़ने से रोकने के लिए लड़ाकू कबीले के लोगों की एक अच्छी ख़ासी फौज जमा कर ली है। उनका इरादा है कि जंग करके आपको अल्लाह के घर तक न पहुंचने दें। आपने आगे

बढ़ना जारी रखा जब आप उस जगह पहुंचे जहां से मक्का की घाटी नीचे ढलुवा है तो आपकी ऊंटनी "कसवा" बैठ गई। लोगों ने यह देखकर कहना शुरू कर दिया, "कसवा अड़ गई, कसवा अड़ गई"। आपने फरमाया– कसवा अड़ी नहीं। न इसका काम है। इसको हाथियों ☆ के रोकने वाले ने रोका है। क़सम उस ज़ात की जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है अगर वह लोग कोई भी ऐसी बात पेश करते हैं जो अल्लाह की गरिमा के अनुकूल हो और मुझसे दया की मांग करते हैं तो मैं उनका सवाल ज़रूर पूरा करूंगा। फिर आपने ऊंटनी को डांटा और वह उठकर खड़ी हो गई लेकिन अपना मुँह मोड़कर हुदैबिया की तरफ चल पड़ी, और हुदैबिया के आख़िरी किनारे पर एक गढ़े के पास जिसमें थोड़ा पानी था रुक गई। लोगों ने आपसे कहा प्यास लगी है। आपने अपने तरकश से तीर निकाला और हुक्म दिया कि उसको उस गड्ढे में डाल दिया जाए। उसको डालते ही उसमें से पानी फूट निकला। सब ने अपनी प्यास बुझाई।

☆1 मक्का और मदीना के बीच एक स्थान है।

☆2 आपका इशारा अब्रहा के हाथी की तरफ था जिसे अल्लाह ने मक्का में दाख़िल नहीं होने दिया।

कुरैश की परेशानी

कुरैश ने जब अल्लाह के रसूल सल्ल० के आने की ख़बर सुनी तो उनमें खलबली मच गई। आपने उचित समझा कि अपने साथियों में से किसी को भेजकर उनको इत्मिनान दिला दिया जाए। अतएव वहां भेजने के लिए आपने हज़रत उमर रज़ी० को बुलवाया। वह आए और कहने लगे या रसूल अल्लाह सल्ल०! मक्का में बनी अदी बिन काब का एक आदमी भी मौजूद नहीं है जो मेरा समर्थन कर सके। आप उस्मान को वहां जाने का हुक्म फरमाएं कि उनका पूरा ख़ानदान वहां मौजूद है। वह सन्देश वाहक का काम अच्छी तरह कर सकते हैं। आपने हज़रत उस्मान रज़ी० को बुलवा कर कुरैश के पास भेजा और फरमाया, "उनसे जाकर कह दो कि हम लड़ाई लड़ने के लिए नहीं आए हैं बल्कि उमरह के इरादे से यहां आए हैं। उनको इस्लाम की दावत भी देना है।" आपने यह

निर्देश दिया कि मक्का में जो मुसलमान मर्द और औरतें हैं उनके पास जाकर उन्हें कामयाबी की खुशखबरी दें और उनको बताएं कि अल्लाह मक्का में अपने दीन को छाने व फैलाने वाला है, यहां तक कि ईमान को ढका–छिपा रखने की ज़रूरत बाकी न रहे।

इम्तिहान की घड़ी

हज़रत उस्मान रज़ी0 मक्का पहुंचकर अबुसुफियान और कुरैश के सरदारों के पास गए और अल्लाह के रसूल सल्ल0 का पैग़ाम उनको पहुंचाया। जब वह अपनी बात कह चुके तो उन्होंने हज़रत उस्मान से कहा," अगर तुम तवाफ़ करना चाहते हो तो तवाफ़ कर लो।" हज़रत उस्मान ने जवाब दिया , 'जब तक अल्लाह के रसूल सल्ल0 तवाफ़ न कर लेंगे मैं तब तक तवाफ़ नहीं कर सकता।'

जब हज़रत उस्मान वापस आए तो मुसलमानों ने कहा, "अबु अब्दुल्लाह! तुम तो बड़े मज़े में रहे। तुमने तो तवाफ़ करके अपनी मनोकामना पूरी कर ली होगी।" हज़रत उस्मान ने कहा, " तुम लोगों को भ्रम है। क़सम है उस जात की जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है अगर मुझे एक साल भी वहां ठहरना पड़ता और अल्लाह के रसूल सल्ल0 हुदैबिया में होते तो मैं उस समय तक तवाफ़ न करता जब तक कि आप तवाफ़ न कर लेते। मुझे तो कुरैश ने तवाफ़ करने को कहा भी था लेकिन मैंने इन्कार कर दिया।

बैअत रिज़वान

इधर अल्लाह के रसूल सल्ल0 को यह सूचना मिली कि हज़रत उस्मान शहीद कर दिए गए। आपने लोगों को बैअत की दावत दी। तमाम लोग उत्साह के साथ आपके चारों तरफ जमा हो गए। उस समय आप एक बबूल के पेड़ के नीचे हुदैबिया में थे। आपने यहां इस बात पर बैअत ली कि कोई साथ न छोड़ेगा। जब सब शपथ ले चुके तो अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने खुद अपना हाथ एक दूसरे पर रखा और कहा, " यह उस्मान की तरफ से है।" कुर्आन पाक में इस बैअत का उल्लेख इस तरह आया है।

अनुवादः– "(ऐ पैग़म्बर!) जब मोमिन तुमसे पेड़े के नीचे बैअत कर रहे थे तो अल्लाह उनसे खुश हुआ और जो (सच्चाई) उनके दिलों में था वह उसने मालूम कर लिया तो उन पर तसल्ली उतारी और उन्हें जल्द कामयाबी प्रदान की।" (सूरः फतह–18)

आपसी बात–चीत और सुलह की कोशिश

अभी यह हालत चल रह रही थी कि अचानक खुज़ाआ क़बीला का बुदैल बिन वरक़ा कुछ आदमियों के साथ वहां पहुंचा और आपसे इन मामलों पर बात करना चाही, और पूछा कि आपके आने का मक़सद क्या है।? अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने फरमाया कि हम लोग किसी लड़ाई लड़ने के लिए नहीं आए हैं। हम सिर्फ उमरह के इरादे से यहां आए हैं। कुरैश को जंग ने पहले ही चूर कर रखा है अगर वह चाहे तो मैं कुछ समय के लिए उनसे अमन समझौता कर लूं और वह मेरे रास्ते से हट जाएं, और अगर वह चाहें तो उस गिरोह में शामिल हो जाएं जिसमें और लोग शामिल हुए। इस तरह उन्हें कुछ आराम का मौक़ा तो मिल ही जाएगा, लेकिन अगर लड़ाई के अलावा उन्हें कोई बात स्वीकार नहीं तो उस ज़ात की क़सम जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है, मैं अपने इस मामले में लड़ाई करूंगा। यहां तक कि मेरा सर बदन से अलग हो जाए या अल्लाह अपने दीन को ग़ालिब फरमाए।

जब बुदैल ने कुरैश को अल्लाह के रसूल सल्ल0 का पैग़ाम पहुंचाया तो उर्वा बिन मसऊद अलसक़फी ने कहा कि उन्होंने बहुत समझदारी का प्रस्ताव रखा है। मेरी यह राय है कि तुम इसको मान लो और मुझे उनसे मिल लेने दो। सबने कहा जाओ बात कर लो। उर्वा अल्लाह के रसूल सल्ल0 से जाकर मिले। आपने उनसे बात शुरू की। बातचीत के समय उर्वा कनखियों से सहाबा कराम रज़ी0 को देखते जाते थे। उसने देखा कि अगर आप थूकते तो कोई न कोई उसको हाथ पर ले लेता और चेहरे पर मल लेता। आप कोई हुक्म फरमाते तो हर व्यक्ति पालन करने के लिए लपकता। वुज़ू फरमाते तो उसके पानी पर आपके भक्त इस तरह टूटते कि लड़ाई का ख़तरा होने [illegible]। आप बात करते

तो सब शान्त हो जाते। श्रद्धा भाव के कारण कोई आपसे निगाहें मिलाने की हिम्मत न करता। उर्वा ने वापस जाकर अपने साथियों से कहा, "मैं बादशाहों के दरबार में गया हूँ, मैंने कैसर व किस्रा और नजाशी की शान व शौकत भी देखी है लेकिन अल्लाह की क़सम मैंने नहीं देखा कि किसी बादशाह के दरबारी ऐसा अदब करते हों जैसा मुहम्मद (सल्ल0) के साथी उनका करते हैं।" उन्होंने जो कुछ देखा था सब कुछ कह सुनाया और कहा कि उनका प्रस्ताव बहुत अच्छा है, तुम लोग इसको मान लो।

समझौता

इस बीच बनी किनाना का एक व्यक्ति मिकरज़ बिन हफ्स भी वहां पहुंचा। दोनों ने आँखों देखा हाल कुरैश को सुनाया। कुरैश ने सुहैल बिन अम्र को अल्लाह के रसूल सल्ल0 के पास भेजा। आपने उनको देखते ही फरमाया– "मालूम होता है कि वह सुलह चाहते हैं।" आपने सुलहनामा का आलेख तैयार करने को कहा। आपने लिखने के लिए हज़रत अली रज़ी0 को बुलवाया।

आपने फरमाया, "लिखो बिस्मिल्ला हिर्रहमानिर्रहीम' सुहैल बोल उठा–जहा तक 'रहमान' का सम्बन्ध है अल्लाह की कसम हम इससे परिचित नहीं है। उसी पुराने दस्तूर के मुताबिक 'बाइस्मुका अल्ला हुम्मा' लिखो। आपने फरमाया कि लिख दो 'बाइस्मुका अल्ला हुम्मा'। इस पर मुसलमान बोल उठे, 'नहीं, हम तो 'बिस्मिल्लाह हिर्रहमानिर्रहीम लिखेंगे।' आपने फरमाया, "बाइस्मुका अल्ला हुम्मा" ही लिखो।

फिर आपने फरमाया कि लिखो, 'यह वह है जिसका अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने समझौता किया।' यह सुनकर सुहैल फिर बोल उठा, अल्लाह की क़सम अगर हमारा इस पर ईमान होता कि आप अल्लाह के रसूल हैं तो हम आपको अल्लाह के घर से रोकते ही क्यों? और आपसे जंग की क्यों करते? आप इसकी जगह मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह लिखें।' आपने फरमाया, "मैं अल्लाह का रसूल हूँ भले ही तुम झुठलाओं' आपने हज़रत अली से कहा, 'इसे मिटा कर मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह लिखो।' हज़रत अली ने कहा, 'अल्लाह की क़सम मुझसे यह काम नहीं हो

सकता।' आपने फरमाया, 'मुझे उसकी जगह दिखाओ।' हज़रत अली ने आपको वह जगह दिखाई तो आपने उसे खुद मिटा दिया।

आगे अल्लाह के रसूल सल्ल० ने लिखाया। "अल्लाह के रसूल ने यह मामला इस पर किया है कि तुम लोग (कुरैश) अल्लाह के घर का तवाफ़ करने के लिए हमारे रास्ते में रुकावट नहीं डालोगे, और हम इसका तवाफ़ कर लें।" सुहैल ने कहा कि हमें डर है कि अरबों में यह चर्चा न होने लगे कि यह समझौता हमने दब कर किया है। आप अगले साल तवाफ़ कर सकते हैं, आपने यह बात भी समझौते में शामिल कर ली।

सुहैल ने कहा कि यह भी ज़रूरी होगा कि अगर हमारे यहां से कोई व्यक्ति आपके यहां चला जाए चाहे वह आप ही के मज़हब पर हो तो आप उसको हमें लौटा देंगे। मुसलमान बोल उठे– यह कैसे हो सकता है कि कोई मुसलमान होकर हमारे पास आए और हम उसे मुश्रिकों के हवाले कर दें।

यह बात हो ही रही थी कि अचानक अबुजन्दल बिन सुहैल बेड़ियों में गिरते पड़ते पहुंचे। वह मक्का की घाटी से आए थे और किसी तरह मुसलमानों के पास पहुंचे थे। सुहैल ने कहा, " ऐ मुहम्मद (सल्ल०) यह पहला व्यक्ति है जिसकी वापसी की मांग मैं आपसे करता हूं।" अल्लाह के रसूल सल्ल० ने फरमाया," अभी तो हमने आलेख भी पूरा नहीं किया।' उसने जवाब दिया, 'अगर ऐसा है तो फिर किसी बात पर आपसे मामला करने पर तैयार नहीं हैं।' आपने फरमाया, " मेरे कहने से इन्हें इजाज़त दे दो।' उसने कहा, ' मैं आपके कहने से इजाज़त नहीं दे सकता।' आपने फरमाया,' अच्छा, जो तुम्हारा जी चाहे करो।' उसने कहा, 'मुझे कुछ नहीं करना है।' यह सुनकर अबु जन्दल बोले, मुसलमानो! मैं मुसलमान होकर आया हूं, और फिर मुश्रिकों को वापस किया जा रहा हूं। क्या तुम लोग देखते नहीं मेरे साथ क्या हो रहा है? 'सुहैल ने अल्लाह के रास्ते में कठोर तकलीफें उठाई थीं। अल्लाह के रसूल सल्ल० ने इस मांग पर उनको वापस कर दिया।

दोनों पक्षों में यह भी समझौता हुआ कि दस साल तक दोनों मार

काट न करेंगे ताकि लोग अमन-शांति के साथ रह सकें और कोई किसी पर हाथ न उठा सकें। दूसरी बात यह तय हुई कि अगर कुरैश से कोई आदमी अपने संरक्षक की इजाज़त के बिना मुहम्मद (सल्ल0) के पास आ निकले तो वह उसको वापस कर देंगें और अगर मुहम्मद (सल्ल0) के साथियों में से कोई कुरैश के पास आ निकले तो वह वापस न करेंगे, और यह कि जो व्यक्ति मुहम्मद (सल्ल0) के समझौते और हिफाज़त में दाख़िल होना चाहे हो सकता है। इसी तरह जो कुरैश के समझौते और हिफाज़त में आना चाहे उसको इसकी इजाज़त होगी।

मुसलमानों का इम्तिहान

जब मुसलमानों ने यह सुलह और वापसी की बात सुनी और उन्होंने देखा कि आपने किस तरह इसको बर्दाश्त किया तो यह बात उनके लिए बहुत तकलीफ वाली साबित हुई और उनकी जान पर बन आई। यहां तक कि हज़रत उमर, हज़रत अबुबक्र के पास आए और कहने लगे,' क्या अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने हमसे यह नहीं फरमाया था कि हम लोग अल्लाह के घर जाएंगे और तवाफ़ करेंगे।' हज़रत अबुबक्र ने कहा, 'हॉ' फरमाया था; लेकिन क्या उन्होंने तुमसे यह कहा था कि तुम इसी साल अल्लाह के घर जाओगे और तवाफ भी करोगे।'

जब समझौता लिखा जा चुका था तो अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने जानवरों की कुर्बानी की और सर मुड़ाया। मुसलमानों के लिए यह कठिन घड़ी थी। मदीना से निकलते समय उन्होंने सोचा भी न था कि उन्हें मक्का जाने और उमरह करने का मौक़ा न मिल सकेगा, लेकिन जब उन्होंने आपको कुर्बानी करते और सर मुड़ाते देखा तो सब उसी समय तेज़ी से खड़े हो गए और आपका अनुसरण करते हुए कुर्बानी करने और सर मुड़ाने लगे। इसके बाद आप मदीना आए। रास्ते में कुर्आन निम्न आयते उतरी।

अनुवादः– "ऐ मुहम्मद (सल्ल0)! हमने तुमको विजय दी सरीह व साफ, ताकि अल्लाह तुम्हारे अगले और पिछले गुनाह बख़्श दे और तुम पर अपनी नेमत पूरी कर दे और तुम्हें सीधे रास्ते पर

चलाए और अल्लाह तुम्हारी ज़बर्दस्त मदद करे। (सूरः फतेह,1–3)

हज़रत उमर रज़ी0 ने पूछा, ' या रसूल अल्लाह क्या यही फतह है?' अपने फरमाया–'हाँ'

कामयाबी या नाकामी

जब आप मदीना आए तो आपके पास कुरैश का अबु बसीर उत्बा बिन उसैद नामी एक आदमी पहुंचा। अबु बसीर के पीछे दो आदमी उसकी तलाश में पहुंचे और उन्होंने समझौता याद दिलाया था। इस लिए आपने उस आदमी को इन दोनों के हवाले कर दिया। वह दोनों उसे साथ लेकर वापस गए लेकिन रास्ते में अबु बसीर किसी तरह बच निकलने में कामयाब हो गए और समुन्द्र तट पर आ गए। दूसरी तरफ अबु जन्दल बिन सुहैल भी किसी तरह कुरैश के चुंगल से निकल आए और अबु बसीर से आ मिले। अब यह होने लगा कि कुरैश का जो भी मुसलमान मक्का से जान व ईमान बचाकर निकलता वह सीधा अबु बसीर से जा मिलता। धीरे–धीरे उनका पूरा गिरोह तैयार हो गया। यह लोग यह करते कि कुरैश का जो भी काफिला शाम की तरफ जाने वाला उन्हें मिलता यह उसका रास्ता रोक कर उसके सामान पर कब्ज़ा कर लेते और सब काफ़िले वालों को कत्ल कर डालते। इससे तंग आकर कुरैश ने अल्लाह का वास्ता और रिश्तेदारी की दुहाई देकर अल्लाह के रसूल सल्ल0 से निवेदन किया कि आप उन लोगों को ज़रूर बुलवा भेजें। अब जो भी आपके पास पहुचेगा वह सुरक्षित रहेगा अर्थात आपके पास ही रहेगा और वह उसे वापस नहीं मागेंगे।

समझौता विजय में कैसे बदला

बाद में घटित बातों ने यह साबित कर दिया कि हुदैबिया का समझौते ने असल में इस्लाम की कामयाबी का एक नया दरवाज़ा खोल दिया और इसके नतीजे में इस्लाम अरब प्रायद्वीप में इतनी तेज़ी के साथ फैला कि इससे पहले कभी ऐसा न हुआ था। इसने फतह मक्का का भी दरवाज़ा खोला और इसी के फलस्वरूप कैसर व किस्रा मकूकस, नजाशी तथा अरब के अमीरों को इस्लाम की दावत दी गई। अल्लाह पाक का इरशाद है।

अनुवाद:– "मगर अजब नहीं कि एक चीज़ तुमको बुरी लगे और वह तुम्हारे हक़ में भली हो और अजब नहीं कि एक चीज़ तुमको भली लगे और वह तुम्हारे लिए हानिकारक हो और (इन बातों को) अल्लाह ही बेहतर जानता है और तुम नहीं जानते।"

इस समझौते का एक अच्छा परिणाम यह हुआ कि कुरैश ने मुसलमानों की हैसियत को स्वीकार किया और उनको उनकी जायज जगह दी, और सबसे बड़ा लाभ यह हुआ कि मुसलमानों को बहुत दिनों के बाद अमन के माहौल में साँस लेने का मौका मिला और पूरी तन्मयता के साथ इस्लाम के प्रचार का सुनहरा मौका हासिल हुआ।

इस समझौते ने मुसलमानों और मुश्रिकों को एक दूसरे से मिलने जुलने और एक दूसरे को समझने का मौक़ा भी प्रदान किया, जिसके नतीजे में इस्लाम के अनेक गुण मुश्रिकों के सामने आए जो अब तक नहीं आए थे। उदाहरण के लिए शिर्क व बुतपरस्ती की बुराई से एक दम छुटकारा, दुश्मनी, इंसानियत पर जुल्म तथा मार–काट से पूरी दुरी। उन्होंने महसूस किया कि मक्का में उन्हीं की तरह पैदा हुए और पले बढ़े लोग किस तरह कुछ ही सालों में एक ऐसे वर्ग के रूप में उभर कर सामने आए जिसमें पारस के गुण पैदा हो गए थे और जिसे बुराईयों, मूर्तिपूजा आदि से कोई सरोकार बाक़ी न रह गया था। इस्लाम की शिक्षाओं तथा नबी के साथ के अलावा कोई चीज़ मक्का वासियों और इन मुहाजिरों के बीच फर्क करने वाली न थी। एक साल के अन्दर जबकि मक्का अभी फतह नहीं हुआ था अरबों की इतनी बड़ी संख्या मुसलमान हुई जितनी पिछले पन्द्रह सालों में नहीं हुई थी। यह इसी समझौते का नतीजा था।

इमाम इब्न शिहाब जुहरी कहते हैं।

" इस्लाम को इससे पहले इतनी बड़ी कोई विजय हासिल नहीं हुई। जब पक्षों में समझौता हुआ, जंग बन्दी का एलान हुआ, लोग बिना किसी डर के एक दूसरे से मिलने लगे, और उनको साथ रहने तथा बात चीत करने का मौक़ा मिला तो जिस समझदार आदमी से इस्लाम के बारे में बात की गई वह मुसलमान हो गया। सिर्फ इन 2 वर्षों में इतने लोग

मुसलमान हुए जितने अब तक हुए थे बल्कि उससे भी कुछ अधिक।"

इब्न हिशाम कहते हैं।

" जुहरी के कथन का सबूत यह है कि अल्लाह के रसूल सल्ल० के साथ हुदैबिया में, जाबिर बिन अब्दुल्लाह के अनुसार 1400 सहाबी थे, लेकिन 2 वर्ष बाद मक्का की विजय के मौके पर अल्लाह के रसूल सल्ल० के साथ 10 हजार सहाबी थे।"

इस समझौते की वजह से उन मुसलमानों को फायदा पहुंचा जो मक्का में अपनी मजबूरी के कारण बाकी रहे गए थे और जिन से कुरैश के नौजवानों की एक बड़ी संख्या मुसलमान हुई। यह सब लोग अबु बसीर के गिरोह से आ मिले और देखते ही देखते मक्का इस्लाम के प्रचार एक बड़ा केन्द्र बन गया। कुरैश इससे चिन्तित हुए। उन्होंने अल्लाह के रसूल सल्ल० से प्रार्थना कि इन लोगों को मदीना बुला लें। अतएव आपने ऐसा ही किया और इस तरह जिस मुसीबत में वह लोग फंसे थे उससे उन्हें छुटकारा मिला। यह सब असल में इस समझौते का नतीजा था। इस मौके पर शांति और समझौते की तरफ आपके झुकाव का एक फायदा यह भी मिला कि अरब के जो नए कबीले अभी इस्लाम नहीं लाए थे इस नए दीन के प्रचारक को नई निगाह से देखने लगे। उनके दिलों में खुद ही इस्लाम के प्रति वह श्रद्धा पैदा हो गई जो इससे पहले न थी। यद्यपि इसके लिए अल्लाह के रसूल सल्ल० और मुसलमानों ने कोई कोशिश नहीं की थी।

खालिद बिन वलीद और अम्र बिन अलआस

हुदैबिया के समझौते ने दिलों को जीत लिया। कुरैश के सेनापति खालिद बिन वलीद इस समझौते के बाद ही मुसलमान हुए। अल्लाह के रसूल सल्ल० ने उन्हें "सैफ उल्लाह" (अल्लाह की तलवार) की पदवी प्रदान की। वह अल्लाह की राह में हर तरह से सफल हुए और अल्लाह ने उनके हाथों से शाम (सीरिया) के क्षेत्र पर कामयाबी दिलायी।

अम्र बिन अलआस, जो एक बड़े सेनापति थे और बाद में मिस्र के विजेता की हैसियत से सामने आए, इसी दौर में मुसलमान हुए यह दोनों हुदैबिया की सुलह के बाद मदीना आए और मुसलमान हुए।

अध्याय सोलह

बादशाहों को इस्लाम की दावत

हुदैबिया के समझौते के बाद हालात स्वाभाविक रूप से शान्त हो गए और इस्लाम की दावत के प्रचार के रास्ते खुल गए। इस मौक़े पर अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने अरब और अरब के बाहर अनेक बादशाहों तथा अमीरों के नाम ख़त लिखवाए और बड़े जतनपूर्ण ढंग से उन्हें इस्लाम की दावत दी। इन ख़तों को ले जाने के लिए आपने प्रत्येक बादशाह के लिए ऐसे प्रतिनिधि चुने जो बादशाह की हैसियत तथा उसके पद की गरिमा के अनुकूल बात कर सकें और वहां की भाषा तथा उस देश के हालात से अच्छी तरह से परिचित हों। ☆

☆ वाकिदी का कथन है कि यह ख़त हुदैबिया के समझौते के बाद ज़िलहिज्जा सन् 6 हिजरी सन् 627 ई0 में भेजे गए। क्योंकि जिन बादशाहों के नाम ख़त लिखे गए उनमें पहला नाम ईरान के सम्राट खुसरो परवेज़ का था जो मार्च सन् 628ई0 में मारा गया। हरकुल को जो ख़त लिखा गया वह भी सन् 627ई0 में, क्योंकि यदि उसका वर्ष 628ई0 मान लिया जाए तो सन् 628 ई0 में हरकुल आरमीनिया के दौरे पर आ चुका था। देखें 'The Arab Conquest of Egypt by Alfred J. Butler (pp 140)' हरकुल इब्नसाद ने अपनी किताब 'तबक़ात' भाग दो के पृष्ठ न0 23 पर तथा सियूती ने अपनी किताब "अलख़सायस–अल–कुबरा' भाग दो के पृष्ठ 11 तथा सियुती ने इस सम्बन्ध में जो कुछ लिखा है उससे पता चलता है कि हज़रत मुहम्मद सल्ल0 के दूतों को भाषा का एक अनोखा ईश्वरीय वरदान हासिल था। उनका कहना है, " उनमें प्रत्येक देश की भाषा जहां वह भेजा गया था खुद बोलने लगा।" लेखक को इस चमत्कार की संभावना पर कोई सन्देह नहीं है क्योंकि हज़रत मुहम्मद सल्ल0 तथा अन्य नबियों की जीवनी में इस तरह की अनेक असाधारण बातें पाई जाती हैं, लेकिन असल में यह बहुत कुछ अल्लाह के रसूल सल्ल0 के विवेक पूर्ण चयन पर भी निर्भर था क्योंकि रोम,फारस, मिस्र और हब्शा (इथोपिया) की भाषाएं चुने गए राजदूतों के लिए कोई अनोखी न थीं क्योंकि उन देशों का सम्पर्क अरब से व्यापार आदि के कारण बराबर बना हुआ था। सवाल सिर्फ चार ऐसे व्यक्तियों के चुनाव का था जो उन चार देशों की भाषा से परिचित हों, और अरब में ऐसे लोगों की कमी न थी। अरब प्रायद्वीप के अन्दर अरब क़बीलों को इस्लाम की दावत अरबी भाषा में दी गई।

आप सल्ल0 के सहाबा ने आप से निवेदन किया कि यह किसी ऐसे ख़त को मान्यता नहीं देते जिस पर मुहर न हो। इस पर अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने इन ख़तों के लिए एक मुहर बनवाई जिसकी परिधि

चॉदी की थी और बीच में इस तरह अरबी में लिखा हुआ था।

(अल्लाह)

(रसूल)

(मुहम्मद)

हज़रत मुहम्मद सल्ल0 के ख़त

उन बादशाहों में जिनके नाम ख़त भेजे गए रोम के राजा हरकुल, ईरान के शहंशाह किस्रा परवेज़, हब्शा के राजा नजाशी और मिस्र के बादशाह मुक़ौकिस का नाम उल्लेखनीय है।

हरकुल को आप सल्ल0 ने ख़त देहियतुल क़ल्बी के हाथ भेजा, और उन्होंने बुस्रा के रईस के माध्यम से इस ख़त को हरकुल तक पहुंचाया। उस ख़त का अनुवाद निम्न है।

"बिस्मिल्ला हिर्रहमानिर्रहीम– मुहम्मद की तरफ़ से जो अल्लाह का बन्दा और रसूल है, यह ख़त हरकुल के नाम है जो रोम का रईसे आज़म है, उनको सलामती हो जो हिदायत (सद्‌मार्ग) की पैरवी करें, इसके बाद मैं तुझको इस्लाम की दावत की तरफ़ बुलाता हूँ। इस्लाम लाओ तुम सलामत रहोगे, अल्लाह तुमको दुगना बदला देगा, और अगर तुमने न माना तो देश वासियों का गुनाह तेरे ऊपर होगा। ऐ अहले किताब! एक ऐसी बात की तरफ आओ जो हममें और तुममें एक समान है वह यह कि हम अल्लाह के सिवा किसी को न पूजें और हम में से कोई किसी को (अल्लाह को छोड़कर) अल्लाह न बनाए, और तुम नहीं मानते तो गवाह रहो कि हम मानते हैं।"

किस्रा परवेज़ के पास आप सल्ल0 ने जो ख़त भेजा उसका अनुवाद इस तरह है।

" बिस्मिल्ला हिर्रहमानिर्रहीम अल्लाह के पैग़म्बर मुहम्मद की तरफ से फारस के रईस–किस्रा के नाम! सलाम है उस व्यक्ति पर जो हिदायत का पैरव हो और अल्लाह व उसके रसूल पर ईमान लाए और वह यह गवाही दे कि अल्लाह सिर्फ एक अल्लाह है और यह कि मुझको तमाम दुनिया का पैग़म्बर नियुक्त करके भेजा है ताकि वह हर ज़िन्दा व्यक्ति

को अल्लाह का ख़ौफ दिलाए। तुम इस्लाम कुबूल करो तो सलामत रहोगे अन्यथा मजूसियों का बवाल तुम्हारी गर्दन पर होगा।

नजाशी के नाम यह ख़त भेजा गया।

" बिस्मिल्ला हिर्रहमानिर्रहीम--मुहम्मद की तरफ़ से जो अल्लाह के रसूल है यह ख़त नजाशी के नाम है जो हब्शा का रईसे आज़म है। सलाम है उस व्यक्ति पर जो हिदायत की पैरवी करे। इसके बाद मैं तारीफ़ बयान करता हूँ तुमसे उस अल्लाह की जिसके सिवा कोई पूज्य नहीं, जो बादशाह है, कुद्दूस है, सलाम है, मोमिन है और संरक्षक है, और गवाही देता हूँ इस बात की कि ईसा इब्ने मरियम, अल्लाह की आत्मा और उसका कलमा हैं जिसको उसने पवित्र मरियम के अन्दर फूंका था जिससे वह गर्भवती हो गई। जैसे उसने आदम को अपने हाथ से बनाया था। मैं तुमको दावत देता हूँ एक अल्लाह पर ईमान लाने की जिसका कोई शरीक नहीं और उसके आज्ञापालन की और सहयोग की, और यह कि तुम मेरा अनुसरण करो और जो कुछ मेरे ऊपर आसमान से उतरा है उस पर ईमान लाओ। बस बेशक मैं अल्लाह का रसूल हूँ और तुमको और तुम्हारे लोगों को अल्लाह की तरफ बुलाता हूँ। मैंने अपना पैग़ाम कह दिया और नसीहत पूरी कर दी। पस यह नसीहत कुबूल करो और सलाम हो उस पर जो हिदायत की पैरवी करे।"

मुकौकिस के नाम लिखे गए ख़त का अनुवाद

" बिस्मिल्ला हिर्रहमानिर्रहीम-- अल्लाह के रसूल मुहम्मद सल्ल० की तरफ से कब्त के रईस मुकौकिस के नाम, उसको सलामती हो जो हिदायत का पैरवी करे। इसके बाद मैं तुमको इस्लाम की दावत देता हूँ। इस्लाम ले आओ सलामत रहेगो। अल्लाह तुमको दुगुना बदला देगा। अगर तुमने न माना तो देशवासियों का गुनाह तुम्हारे ऊपर होगा। ऐ! किताब वालो, एक ऐसी बात की तरफ आओ जो हममें और तुम में समान है वह यह कि अल्लाह के सिवा किसी की इबादत न करें और हम में से कोई किसी को (अल्लाह को छोड़कर) पूज्य न बनाए, और तुम नहीं मानते तो गवाह रहो कि हम मानते हैं।' '☆

☆ इस समय तक इन ख़तों में से पाँच की पाण्डुलिपियों की खोज हो चुकी है इनकी

तस्वीरें भी अनेक इस्लामी पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुकी हैं। फ्रांसीसी विद्वान Barthelem को मिस्र के एक स्थान अख़मीम के एक प्रचीन मन्दिर में सन् 1850 ई0 में हिरन की खाल पर लिखा हुआ एक लेख मिला। अध्ययन और शोध के बाद साबित हुआ कि यह वह ख़त है जो मुकौकिस के नाम भेजा गया था। (देखें एशियाई जनरल सन् 1854 और पत्रिका 'अलहिलाल' मिस्र सन् 1904)। इसी तरह नजाशी और किस्रा के नाम फरमान की असल भी मिल चुकी है।

यह बादशाह कौन थे?

हज़रत मुहम्मद सल्ल0 के इन ख़तों के महत्व को जानने के लिए यह ज़रूरी है कि जिन बादशाहों को यह ख़त लिखे गए थे, उनके पद, उनकी हैसियत, उनकी शान–शौकत और दबदबा तथा राज्यों के विस्तार का ज्ञान हो। अगर कोई आदमी सातवीं सदी ई0 के राजनीतिक इतिहास को नहीं जानता है और उसे इन देशों की जानकारी नहीं है तो वह यह समझ सकता है कि यह ख़त कुछ एक स्थानीय अधिकारियों और रियासतों के राजाओं को लिखे गए हैं जो हर युग में और हर जगह पाए जाते हैं।

इसके विपरीत जो आदमी उस युग की राजनीति में इन बादशाहों के महत्व को जानता है और उनके इतिहास, आचरण, ताकत और बहादुरी तथा उनके महत्व को जानता है और उनके एकाधिकार व रोब–दबदबे से परिचित है। वह महसूस करेगा कि यह महान काम वही नबी कर सकता था जिसे अल्लाह ने इस काम के लिए भेजा हो और जिस पर इस दावत व पैग़ाम की पूरी ज़िम्मेदारी हो, जिस पर डर की छाया भी न पड़ी हो और दुनिया बनाने वाले का उसे ऐसा संरक्षण हासिल हो कि बड़े–बड़े राजा महाराजा उसे गुड़िया गुड्डे या बेजान पुतले मालूम होते हों। इस लिए यहां समकालीन इतिहास तथा विश्वसनीय सबूतों की मदद से उनका परिचय कराया जाता है।

सम्राट रोम हरकुल प्रथम (610 से 641ई0)

बाज़नतीनी प्रशासक रोम का सम्राट हरकुल प्रथम एक विशाल राज्य का मालिक था जिसने ईरान के साथ मिलकर उस समय की पूरी सभ्य दुनिया को आपस में बांट रखा था, और जिसका सिक्का आधी

दुनिया में चल रहा था। उसका राज्य यूरोप, एशिया और अफ्रीका के महाद्वीपों के बड़े भाग पर फैला हुआ था। इसका केन्द्र रोम था।

हरकुल कपोडेशिया के एक यूनानी परिवार में पैदा हुआ और कारथेज में उसका पालन–पोषण हुआ। उसके पिता अफ्रीका के एक हाकिम (EXARACH OF AFRICA) के पद पर थे। शुरू में उसमें कोई ऐसी बात न थी जिससे उसकी असाधारण सूझ–बूझ, हौसला मन्दी तथा नेतृत्व की क्षमता का पता चलता। जब फोकस ने सन् 602 ई0 में बाज़नतीनी राज्य के अत्याचारी राजा मौरीस को क़त्ल किया तो ईरानियों को बाज़नतीनी राज्य पर चढ़ाई करने का बहाना मिल गया, क्योंकि मौरीस का ईरान के राजा किस्रा परवेज़ पर बड़ा एहसान था। ईरानियों ने बाज़नतीनी राज्य की ईंट से ईंट बजा दी। विशाल बाज़नतीनी साम्राज्य का चल चलाव था कि हरकुल को कारथेज बुलाया गया। हरकुल ने फोकस को मान कर सन् 610ई0 में शासन की बागडोर अपने हाथ में ले ली। ☆ उस समय पूरा देश बहुत कठिनाई के दौर से गुज़र रहा था। सूखा, संक्रामक रोगों, गरीबी का पूरे देश में राज्य था। देश दिवालिया हो चुका था। हरकुल ने अपनी हुकूमत के शुरूआती कुछ वर्ष भीगी बिल्ली की तरह गुज़ारे लेकिन सन् 616 ई0 में वह अचानक जाग उठा। यह वह साल है जिसमें कुर्आन पाक ने कुछ वर्षों के अन्दर रोम पर विजय की भविष्यवाणी की थी। हरकुल देखते–देखते एक भोगी तथा आराम तलब बादशाह से एक उत्साही एवं स्वाभिमानी वीर सेनापति में बदल गया। उसके अन्दर देशभक्ति की चिंगारी दहक उठी। उसने ईरान पर चढ़ाई की और अपनी छीनी हुई ज़मीन और खोई हुई इज़्ज़त वापस ली। ईरान के मशहूर शहरों पर कब्ज़ा कर लिया। ईरान की राजधानी में अपने झंडे गाड़ दिए और विशाल ईरानी साम्राज्य की इज़्ज़त को मिट्टी में मिला दिया। सासान के सपूतों के सिंहासन की चूलें हिल गयीं। हरकुल 625ई0 में कुस्तुनतुनिया वापस आया और 629ई0 में पवित्र सलीब, जिसे ईरानी उठा ले गए थे, को दोबारा स्थापित करने और अपनी नज़र पूरी करने के लिए बैतुल मुक़दिस (येरूशलम) के लिए रवाना हुआ। लोग श्रद्धा व सम्मान व्यक्त करने के लिए उसके रास्ते में फर्श व कालीन बिछाते थे

तथा फूल बरसाते और गुलाब जल छिड़कते थे। सलीब को दोबारा स्थापित करने तथा हरकुल की कामयाबी की खुशी में वहां जश्न और खुशियां मनायी गयी। यह वह समय था जब हरकुल को अल्लाह के रसूल सल्ल० का ख़त मिला जिसमें उसको इस्लाम कुबूल करने की दावत दी गई थी। ☆

☆1 देखें Decline And Fall of The Roman Empire By Gibbon आर्थर क्रिस्टन सीन की किताब 'ईरान बअहद सासानियान'

☆2 हरकुल को बाद में और किस्रा को पहले ख़त पहुंचने का कारण यह था कि हरकुल के लिए लिखा गया ख़त पहले बस्रा के प्रशासक को दिया गया जो हरकुल तक उसकी सामरिक व्यस्तता के कारण देर से पहुंचा। दूसरे यह कि पाश्चात्य श्रोतों में इसका उल्लेख आया है कि हरकुल को 628ई0 में एक बग़ावत को कुचलने के लिए आरमीनिया जाना पड़ा और इसी लिए वह अपनी नज़र सन् 629 ई0 में पूरी कर सका।

लेकिन इसके बाद ही हरकुल अपनी सुस्ती व गफलत तथा आराम पसन्दी के उसी हाल में आ गया जिसमें पहले था। प्रजा के सुख–दुख से उसे कुछ सरोकार बाक़ी न रहा। यहां तक कि इस्लाम के मुजाहिदों ने एशिया व अफ्रीका में उसका समापन कर दिया और हरकुल का विशाल साम्राज्य सिर्फ यूरोप व एशियाई कोचक तक सिमट कर रह गया। हरकुल अपने समय के महान सम्राटों में से एक था। राज्य विस्तार, सामरिक शक्ति तथा विकास में अगर कोई उसके बराबर था तो वह ईरानी शहंशाह ख़ुस्रो द्वितीय था। हरकुल का निधन 641ई0 में कुस्तुनतुनिया में हुआ, और वह वहीं दफन किया गया।

ख़ुस्रो परवेज़ द्वितीय (590 से 628ई0)

ख़ुस्रो परवेज़ हरमुज़ का चौथा बेटा और ख़ुस्रो प्रथम (नव शेरवां आदिल) का पोता था। उसके बाप के क़त्ल के बाद 590ई0 में वह राज गद्दी पर बैठा। बहराम ने उसके ख़िलाफ बग़ावत की। ख़स्रो की पराजय हुई। उसने सासानी हुकूमत को छोड़कर बाज़नतीनी राजा मौरीस की पनाह मॉगी और अपने राज्य को वापस लेने के लिए उससे मदद चाही। मौरीस (MAURICE) ने विशाल सेना के साथ उसकी मदद की जिसके फ़लस्वरूप बहराम की पराजय हुई। ख़ुस्रो अपने पूर्वजों के राज सिंहासन पर दोबारा काबिज़ हो गया। इस बीच उसके दत्तक पिता (

ADOPTED FATHER) मौरीस को फोकस ने कत्ल कर दिया। खुस्रो ने इसका बदला लेने के लिए 612ई0 में बाज़नतीनी साम्राज्य पर हमला कर दिया और उसकी इस तरह ईंट से ईंट बजा दी कि उसका कोई उदाहरण इससे पहले नहीं मिलता। 615ई0 तक उसकी ख्याति चरम सीमा पर पहुंच गयी। यहां तक कि हरकुल ने ईरानियों को उनके देश से बेदख़ल कर दिया। खुस्रो को अपना देश छोड़कर एक सुरक्षित एवं दूर स्थित जगह में पनाह लेनी पड़ी थी लेकिन जल्दी ही 628ई0 की बग़ावत में उसका काम तमाम हो गया।

ईरान के इतिहासकारों का मत है कि खुस्रो द्वितीय ईरान का सबसे बड़ा और शान–शौकत रखने वाला शहंशाह था। उसके शासन काल में सासानी साम्राज्य अपने विकास, ख़ुशहाली, औपचारिक जीवन, भोग–विलास तथा श्रंगार एवं सौन्दर्य की चरम सीमा पर था। हिन्दुस्तान के उत्तर पश्चिमी राज्यों तक उसका सिक्का चलता था। उसके नाम से पहले लिखा जाता था। "खुदाओं में इन्सान गै़रफानी ☆ और इन्सानों में खुदाए लासानी।☆ उसके नाम का बोलबाला, सूरज के साथ उदय होने वाला, रात की ऑखों का उजाला।" उसके शासन काल में ईरान की तरक्की और शान व शौकत का वर्णन करते हुए विख्यात अरब इतिहासकार तिबरी के शब्द यह हैं।

☆ अरम☆ अद्वितीय

" यह बादशाह सबसे अधिक कठोर, सबसे अधिक दूरदर्शी और सबसे अधिक विवेकशील था। बहादुरी और वीरता, विजय एवं सफलता, धन दौलत की बाहुल्यता तथा भाग्य और समय ने जितना उसका साथ दिया उतना अन्य किसी बादशाह को हासिल नहीं था। इसी कारण उसे 'परवेज़' की पदवी मिली जिसका अरबी में अर्थ है विजयी और इक़बाल मन्द अर्थात भाग्यशाली।"

सभ्यता एवं संस्कृति में नयी चीज़ें निकालने तथा खाने पीने के नए नए तरीके और पकवान बनवाने में खुस्रो अद्वितीय था। इत्र व खुशबू आदि में भी वह अपनी चरम सीमा पर था। उसके शासन काल में तरह तरह के खानों, उच्चकोटि की शराबों और बेहतरीन इत्रों के प्रति लोगों में

एक विशेष लगाव पैदा हो गया था। संगीत तथा गायन कला ने उसके शासन काल में बड़ी तरक्की हुई। खुस्रो को दौलत जमा करने तथा दुलर्भ व सुन्दर वस्तुओं को जमा करने का बड़ा शौक था। जब उसका ख़ज़ाना 607 ई0 में पुराने भवन से तीसफून (मदायन) के नए भवन में ले जाया गया तो उसकी मात्रा 468 मिलियन मिस्काल सोना थी जो 375 मिलियन सोने के फ्रंक के बराबर होता है। उसके राजगद्दी पर बैठने के 13 वें वर्ष उसके ख़ज़ाने में 880 मिलियन मिस्काल सोना मौजूद था। खुस्रो ने 37 वर्ष शासन किया उसके बाद उसका बेटा शेरविया राजगद्दी पर बैठा।

मुक़ौकिस

मुक़ौक़िस इस्कन्दरिया का गवर्नर और मिस्र में बाज़नतीनी साम्राज्य का वाइसराय था। अरब इतिहासकार उसे प्रायः मुक़ौक़िस के नाम से जानते हैं। उसके असली नाम तथा वंशज के बारे में बड़ा मतभेद है। छठी शताब्दी हिजरी के इतिहासकार अबु सालेह ने उसका उल्लेख जुरैज बिन मीना अल–मुक़ौकिस के नाम से किया है। इब्न ख़ल्दून ने लिखा है कि वह क़ब्ती था। मक़रेज़ी ने उसे रोमी बताया है। जब ईरानियों ने मिस्र पर हमला किया तो बाज़नतीनियों द्वारा तैनात किया गया गवर्नर वहां से भाग निकला और भागकर क़बरस (साईप्रस) पहुंचा, जहां उसका निधन हुआ। उसके बाद हरकुल ने उसकी जगह दूसरा गवर्नर नियुक्त किया, जिसका नाम जार्ज था, शायद यही वह व्यक्ति है जिसे अरब जुरैज कहते हैं। कुछ इतिहासकार लिखते हैं कि उसकी नियुक्ति 621ई0 में हुई।

अल्फ्रेड जे0 बटलर ने लिखा है।:–

> "अरबों का विचार था कि ज़ो हाकिम बाज़नतीनी हुकूमत की तरफ से ईरान पर विजय के बाद मिस्र का गवर्नर नियुक्त हुआ उसकी पदवी 'मुक़ौकिस' थी, और वह एक समय में देश का हाकिम और कलिसा (गिरजा) का प्रमुख था। धार्मिक पेशवा भी होता था अतएव उन्होंने जार्ज के लिए यह पदवी पेश की।"

बटलर का यह मत है कि मुक़ौकिस उसका असली नाम नहीं बल्कि पदवी थी जो प्राचीन क़ब्ती भाषा का शब्द है। यह भी मुमकिन है कि ईरानियों के मिस्र पर अधिकार के समय किसी क़ब्ती लाट पादरी ने कलीसा प्रमुख और प्रशासनिक व्यवस्था दोनों अपने हाथ में ले ली होगी। फिर भी चूंकि रोम तथा ईरानवासियों के बीच समझौता 628ई0 में लिखा गया है इसलिए सम्भव है कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 का ख़त मुक़ौकिस के नाम उसी बीच पहुंचा हो जब मिस्र का हाकिम लगभग खुद मुख़्तार था। यही कारण है कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने मुक़ौकिस के नाम के साथ "अज़ीमुल क़ब्त" (अर्थात क़ब्तियों का सरदार) शब्द का प्रयोग किया।

मिस्र बाज़नतीनी साम्राज्य में पैदावार तथा आबादी की निगाह से सब से ऊपर था। यह बाज़नतीनी साम्राज्य का खाद्य भंडार था। मिस्र के विजेता अम्र बिन अलआस रज़ी0 जो अल्लाह के रसूल सल्ल0 के ख़त भेजने के 14 वर्ष बाद यहां विजेता की हैसियत से दाख़िल हुए थे। अमीरूल मोमनीन हज़रत उमर फारूक़ बिन अल–ख़त्ताब रज़ी0 के नाम अपने ख़त में मिस्र की तारीफ में यह शब्द लिखते हैं।

> "मिस्र की धरती बहुत सरसब्ज़ व शादाब है इसकी लम्बाई एक महीने की यात्रा और चौड़ाई 10 दिन की यात्रा के बराबर है।"

अम्र बिन अलआस रज़ी0 ने सन् 20 हिजरी (640ई0) में मिस्र की विजय के बाद जब यह गणना करायी कि जज़िया देने के अधिकारी कौन–कौन लोग हैं तो उनकी संख्या 60 लाख ☆ से अधिक निकली। जिसमें एक लाख रूमी थे। वह अपने ख़त में आगे लिखते हैं।

> "मैंने एक ऐसा शहर जीता है जिसकी तारीफ में सिर्फ इतना लिखता हूँ कि मुझे वहां चार हज़ार अट्टालिकाएं नज़र आयीं जहां 4 हज़ार स्नानघर थे। यहूदियों की संख्या 40 हज़ार थी। रईसों (धनवानों) के लिए 400 मनोरंजन के केन्द्र थे।

☆ विभिन्न देशों में जन सख्या वृद्धि के अनुपात को देखते हुए लेखक को इस संख्या में सन्देह है क्योंकि इस समय मिस्र की जन संख्या 40 मिलियन से अधिक नहीं।

नजाशी

पूर्वी अफ्रीका में लाल सागर के दक्षिण पश्चिम में स्थित इथोपिया (हब्शा) एक प्राचीन देश है। अबीसीनिया की हुकूमत दुनिया की प्राचीनतम हुकूमतों में एक थी। यहूदी हवालों से पता चलता है कि मल्का सबा हब्शा ही में रहती थी और हज़रत सुलेमान अ0 की औलादें आज तक हब्शा की शासक हैं। यहूदियों ने हैकले सुलेमानी ☆ की तबाही के बाद यहां आबाद होना शुरू किया। यह छठी शताब्दी ई0 की बात है लेकिन ईसाई धर्म यहां चौथी शताब्दी ई0 में पहुंच चुका था और जब यमन के यहूदी बादशाह ने अपने यहां ईसाईयों पर अत्याचार शुरू किया तो जस्टीनियन प्रथम ने हब्शा के राजा से ईसाईयों की सहायता करने और ईसाईयों पर होने वाले अत्याचार की रोक थाम के लिए प्रार्थना की। हब्शा के राजा नजाशी ने इसकी मदद की और उसकी सेना ने 525ई0 में यमन पर कब्ज़ा कर लिया और यमन पर हब्शा का लगभग पचास वर्ष तक अधिकार बना रहा। इसी दौर में हब्शा की तरफ से नियुक्त यमन के गवर्नर अब्रहा ने काबा पर चढ़ाई की और 'आमुलफील' अर्थात हाथी वाला साल की घटना हुई।

☆सुलेमान का मन्दिर

अबीसीनिया की राजधानी एक्सम (AXUM) थी यह एक आज़ाद और अपना बंदोबस्त खुद करने वाला राज्य था जो न किसी के अधीन था और न किसी को टैक्स आदि देता था। बाज़नतीनी साम्राज्य से इसका सम्बन्ध सिर्फ ईसाई धर्म की बुनियाद पर था। इस का सुबूत इस बात से मिलता है कि बाज़नतीनी शासक जस्टीनियन ने ज्यूलियन नाम के एक व्यक्ति को हब्शा में अपना राजदूत नियुक्त किया। ☆ De Lacy O'leary ने अपनी किताब 'Arabia Before Muhammed' में लिखा है:-

> "हब्शा 525ई0 से लेकर इस्लाम के अभ्युदय तक पूर्वी लाल सागर तथा अफ्रीका के पूरे व्यवसाय पर काबिज़ रहा बल्कि शायद वह हिन्दुस्तान के व्यवसाय पर भी काबिज़ था।"

☆ A History fo Abissinia By Jones & Monroe (Oxford 1935 pp 63)

हब्शा के बादशाह को हमेशा नजाशी कहा जाता था। यह ज़रूर है कि जिस नजाशी को अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने ख़त भेजा था उसे सुनिश्चित करने में विभिन्न मत हैं। इस सम्बन्ध में हमारे सामने अबीसीनिया के दो बादशाहों के नाम आते हैं। एक वह जिसके शासन काल में मक्का के मुसलमानों ने हज़रत जाफर बिन अबी तालिब रज़ी0 के नेतृत्व में हब्शा के लिए हिजरत की थी। यह नबूवत के पॉचवें साल की बात है। यह बात आम ज्ञान के विपरीत है कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने उस समय यह ख़त भेजा हो क्योंकि उस समय के हालात इसके अनुकूल नहीं थे और न ही इस काम का अभी समय आया था। इस बात का कोई पता नहीं मिलता कि हिजरत से पहले आपने किसी बादशाह को ख़त भेजा हो और उसे इस्लाम कुबूल करने की दावत दी हो। अधिक से अधिक जो बात मिलती है वह यह कि इस मौके पर आपने हब्शा के बादशाह से इन मुसलमानों को पनाह देने की फरमाईश की। इब्न हिशाम तथा अन्य लेखकों ने इस बारे में जो कुछ लिखा है उससे इतना ज़रूर अन्दाज़ा होता है कि ईमान उस नजाशी के दिल में उतर चुका था और वह इस बात को मानता था कि ईसा इब्न मरियम अल्लाह के बन्दे और उसके रसूल हैं, और उसके शब्द हैं जिसे उसने मरियम पर उतारा था।

हाफिज़ इब्ने कसीर के अनुसार जिस नजाशी को आप सल्ल0 ने यह ख़त भेजा था वह उन मुस्लिम नजाशी के बाद गद्दी पर बैठा जिनके समय में हज़रत जाफर तथा उनके साथी हब्शा गए थे। इब्ने कसीर के कथानुसार "यह बात उस समय पेश आयी जब आप सल्ल0 ने मक्का की विजय से पहले दुनिया के बादशाहों को ख़त लिखे और उन्हें इस्लाम की दावत दी।" मेरे विचार से यही कथन अधिक सही है। यही वह नजाशी था जिस ने इस्लाम कुबूल किया। अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने खुद मुसलमानों को उसके निधन की सूचना दी और उसके लिए दुआ की।

उब्बी ने वाकिदी तथा दूसरे सीरते लिखने वालों के हवाले से लिखा है कि यह वही नजाशी है जिसके लिए आपने दुआ की। यह बात

तबूक से वापसी के बाद रजब सन् 9 हिजरी की है। इस तरह वाकिदी का कथन सही मालूम पड़ता है।

इन बादशाहों का ख़तों के साथ मामला

हरकुल, नजाशी तथा मुक़ौकिस इन तीनों ने आपके ख़तों का आदर किया। इनकी तरफ से जवाब में श्रद्धा व सत्कार की भावना थी। नजाशी और मुक़ौकिस ने आप सल्ल0 के सन्देश वाहकों का बड़ा सत्कार किया। मुक़ौकिस ने आप सल्ल0 के लिए कुछ तोहफा भी भेजा। इनमें दो बान्दियां भी थी जिन में से एक का नाम 'मारिया' था। अल्लाह के रसूल सल्ल0 के सुपुत्र हज़रत इब्राहीम उन्हीं की कोख से पैदा हुए थे।

किस्रा परवेज़ ने ख़त सुनते ही फाड़ डाला औरा बोला, "मेरा गुलाम होकर मुझको यूँ लिखता है।" हज़रत मुहम्मद सल्ल0 को इसकी ख़बर मिली तो आपने फरमाया," अल्लाह उसके देश के टुकड़े–टुकड़े कर डाले।"

किस्रा ने यमन के हाकिम बाज़ान को आदेश किया कि आपको हाज़िर किया जाए। उसने बाबव्या को आपके पास भेजा और कहलवाया कि शहंशाह किस्रा ने बाज़ान को निर्देशित किया है कि किसी को भेज कर आपको वहां हाज़िर कराया जाए। उन्होंने मुझे इस लिए भेजा है कि आप मेरे साथ चलें। अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने उनको यह ख़बर दी कि अल्लाह ने किस्रा पर उसके बेटे शेरवया को थोप दिया है जिसने उसको क़त्ल कर दिया है। आपकी यह सूचना शब्द ब शब्द सही निकली। किस्रा की राजगद्दी पर उसका लड़का कुबाज़ जिसकी पदवी 'शेरवया' थी काबिज़ हुआ, और उसके इशारे पर किस्रा 628ई में क़त्ल किया गया। किस्रा की मौत के बाद देश टुकड़े–टुकड़े हो गया और शासक परिवार के हाथ में सल्तनत एक खिलौना बन गयी। शेरवया 6 महीने से अधिक हुकूमत न कर सका। किस्रा की राजगद्दी पर चार साल के अन्दर एक के बाद एक 10 राजा बैठे। सल्तनत की चूलें हिल गयीं। आखिर में यज्दगर्द पर सबकी सर्वसम्मति बनी और वह राजगद्दी पर बैठा। यह सासानी वंशज का आखिरी प्रशासक था और उसी को

इस्लामी सेना का सामना करना पड़ा था। जिसने आखिर में सासानी साम्राज्य का समापन किया। इस तरह इस सल्तनत, जिसका 400 साल तक दुनिया में डंका बजता रहा था, का चिराग़ बुझ गया। यह घटना 637 ई0 की है। इस तरह अल्लाह के रसूल सल्ल0 की भविष्यवाणी 8 वर्ष के अन्दर पूरी हो गयी। ☆

☆ किसा के नाम लिखा गया जो ख़त मिला है उसमें चाक (फाड़ने) का निशान अब भी मौजूद है जो बीच में ऊपर से नीचे की तरफ झुकता हुआ है और जिसे सिला गया है। यह ख़त शीशे में फ्रेम किया हुआ लेबनान सरकार के भूतपूर्व मंत्री हेनरी फिर औन के पास सुरक्षित है। (डा0 इजुद्दीन इब्राहीम)

अल्लाह ने मुसलमानों को ईरान का वारिस व शासक बना दिया। ईरान वासियों को इस्लाम की हिदायत दी। उनमें दीन व शिक्षा के बड़े बड़े इमाम और इस्लाम के असाधारण व्यक्तित्व वाले लोग पैदा हुए और अल्लाह के रसूल सल्ल0 की यह बात सही साबित हुई।

अनुवादः– "अगर ज्ञान सुरैया (नक्षत्र) पर भी होगा तो कुछ ईरानी सपूत उसे हासिल करके रहेंगे।"

हरकुल और अबुसुफियान के बीच संवाद

हरकुल ने अल्लाह के रसूल सल्ल0 के बारे में सही जानकारी हासिल करने की कोशिश की और किसी ऐसे आदमी की तलाश की जो आप सल्ल0 के बारे में सही जानकारी दे सके। संयोग से उन दिनों अबु सुफियान कारोबार करने वहां आए हुए थे। उन्हें शाही दरबार में लाया गया बादशाह के सवाल एक प्रबुद्ध, अनुभवी, धर्मों व नबियों के इतिहास व जीवनी की पूरी जानकारी रखने वाले व्यक्ति के सवाल थे जिनका जवाब अबु सुफियान ने पुराने अरबों की तरह सही–सही दिया। यह संवाद इस तरह है।

हरकुल : उनका नसब (वंशज) कैसा है?

अबु सुफियान : वह हम में उच्च नसब समझे जाते हैं।

हरकुल : क्या जो बात वह कहते हैं उनसे पहले भी किस ने कही थी।

अबु सुफियान : नहीं।

हरकुल : इस ख़ानदान में कोई बादशाह गुज़रा है?
अबु सुफियान : नहीं।
हरकुल : क्या उनका अनुसरण प्रभावशाली व्यक्तियों ने किया है अथवा कमज़ोरों ने?
अबु सुफियान : कमज़ोर लोगों ने।
हरकुल : क्या कोई उनके दीन में दाख़िल होने के बाद दीन को न पसन्द करके फिर जाता है?
अबु सुफियान : नहीं।
हरकुल : क्या उनके इस दावे से पहले भी तुमने कभी उन पर झूठ का अनुभव किया है?
अबु सुफियान : नहीं।
हरकुल : क्या वह वादे को तोड़ते भी हैं?
अबु सुफियान : अभी तक तो नहीं, लेकिन अब जो नया समझौता हुआ है उसमें देखें वह वादे पर जमे रहते हैं या नहीं।
हरकुल : तुम लोगों ने उनसे कभी लड़ाई भी की ?
अबु सुफियान : हां।
हरकुल : क्या परिणाम रहा?
अबु सुफियान : जंग का पांसा हमारे और उनके बीच पलटता रहा। कभी हम विजयी होते हैं कभी वह।
हरकुल : वह क्या शिक्षा देते हैं?

अबु सुफियान : कहते हैं कि एक अल्लाह की इबादत करो, किसी और को अल्लाह का शरीक़ न बनाओ, नमाज़ पढ़ो, पाक दामनी अपनाओ, सच बोलो, रहम दिल बनो, दयालुता अपनाओ।

हरकुल ने अनुवादक से कहा, 'इनसे कहो कि हमने तुम से उनके नसब के बारे में पूछा, तो तुमने बताया कि वह तुम में शरीफ घराने के हैं। पैग़म्बर हमेशा अच्छे खानदानों में पैदा होते हैं। मैंने तुमसे पूछा कि इस ख़ानदान में किसी और ने भी नबूवत का दावा किया था, तुमने कहा नहीं। अगर इससे पहले किसी ने यह दावा किया होता तो मैं कहता कि

उसी की नक़ल कर रहे हैं।

मैंने तुमसे पूछा क्या उनके ख़ानदान में कोई बादशाह गुज़रा है, तुमने कहा नहीं। अगर कोई बादशाह गुज़रा होता तो मैं कहता कि आपने ख़ानदान की बादशाहत चाहते हैं। मैंने पूछा कि क्या तुमने उनके इस दावे से पहले कभी झूठा पाया है, तुमने कहा 'नहीं' मैं जानता हूँ कि यह सम्भव नहीं है कि वह लोगों से झूठ न बोलें और अल्लाह पर झूठ बांधें। मैं ने तुमसे पूछा कि रईस और प्रभावशाली लोग उनके अनुयायी है या कमज़ोर और गरीब। तुमने कहा कमज़ोर और गरीब, पैग़म्बरों के (शुरूआती) अनुयायी हमेशा ग़रीब लोग ही होते हैं। मैंने तुमसे पूछा कि उनके अनुयायी बढ़ते जाते हैं या घटते जाते हैं तुमने कहा कि बढ़ते जाते हैं। ईमान का यही मामला है कि बढ़ता जाता है यहां तक कि कमाल को पहुंच जाए। मैंने तुमसे पूछा कि कोई उनके दीन से नाराज़ होकर फिर भी जाता है, तुमने कहा नहीं, ईमान का यही हाल होता है, जब दिलों को उसकी मिठास हासिल हो जाती है तो वह निकलता नहीं।

मैंने तुमसे पूछा कि क्या वह वादे को तोड़ते तो नहीं हैं, तुमने कहा नहीं। पैग़म्बर वादे को नहीं तोड़ते, और मैंने तुमसे पूछा कि वह क्या सिखाते हैं, तुमने बताया कि वह तुमको यह सिखाते हैं कि एक अल्लाह की इबादत करो, उसके साथ किसी को शामिल न करो, और तुमको बुतों की पूजा करने से रोकते हैं। नमाज़ पढ़ने, सच्चाई और पाकी की शिक्षा देते हैं। अगर तुम्हारा कहना सच है तो निकट भविष्य में इस समय जहां मेरे पैर हैं यहां तक उनका कब्ज़ा हो जाएगा। मुझे यह ज़रूर ख्याल था कि एक पैग़म्बर आने वाला है लेकिन यह ख़्याल न था कि वह अरब में पैदा होगा। अगर मैं वहां जा सकता तो उनसे मुलाकात के लिए जाता और अगर मैं उनके पास होता तो उनके पॉव धोता।

हरकुल ने अपने दरबारियों और सल्तनत के कार्यकर्ताओं को महल में बुलवाया और महल के दरवाज़े बन्द करवा दिए। फिर मौजूद लोगों को सम्बोधित करते हुए उसने कहा, "ऐ रोम वासियों! क्या तुम भलाई और अच्छाई चाहते हो? और चाहते हो कि तुम्हारा देश बाकी रहे। अगर ऐसा है तो तुम इस नबी की हाथ पर ईमान लाओ।" लोग तेज़ी से दरवाज़े

की तरफ भागे तो उनको बन्द पाया। जब हरकुल ने उन्हें नाराज़ देखा और उनके ईमान लाने से निराश हो गया तो उसने हुक्म दिया कि उनको वापस लाओ और कहा कि अभी मैंने जो बात कही थी वह इस लिए कि अपने दीन पर तुम्हारे जमे रहने का इम्तिहान लूं, और अब मैं तुम्हारी मज़बूती देखकर संतुष्ट हूँ। दरबारियों ने उसके सामने सर झुका दिए और उससे खुश हो गए।

इस तरह हरकुल ने नजात का यह सुनहरा मौक़ा खो दिया और उसने छुटकारे की हमेशा रहने वाली दौलत पर अपनी पल दो पल की सल्तनत को प्राथमिकता दी। जिसका नतीजा यह हुआ कि हज़रत उमर फारूक़ रज़ी० के शासन काल में उसको इससे भी हाथ धोना पड़ा।

अरीसी कौन थे?

'यरीसीन' या 'अरीसीन' का शब्द अल्लाह के रसूल सल्ल० के सिर्फ उस ख़त में आया है जो हरकुल के नाम भेजा था। आप के किसी अन्य ख़त में यह शब्द नहीं आया है। हदीस तथा शब्दकोष के विद्वानों का इस शब्द के असल अर्थ के बारे में बड़ा मतभेद है। मशहूर कथन यह है कि 'अरीसीन' 'अरीसी' का बहुवचन है जो सेवकों तथा काश्तकारों (किसानों) के लिए आता है।

इब्न मन्ज़ूर ने 'लेसानुल अरब' में शब्दकोष के विद्वान सालब के हवाले से इसे काश्तकारों का पर्यायवाची बताया है। इब्नुल एराबी के कथन का हवाला देते हुए भी इसके यही अर्थ लिखे हैं, और अबु उबैदा का कथन नक़ल किया है कि, 'मेरे नज़दीक अरीस सरदार और बड़े को कहते हैं जिसके आदेशों का पालन किया जाए और जब वह इताअत (आज्ञा पालन) चाहे तो उसकी इताअत की जाए।"

यहां सवाल यह उठता है कि यदि अरीसीन का अर्थ काश्तकार है तो इस शब्द का प्रयोग किस्रा परवेज़ के ख़त में भी आना चाहिए था क्योंकि सासानी साम्राज्य में बाज़नतीनी साम्राज्य की अपेक्षा किसान अधिक थे और ईरान की राष्ट्रीय आय तथा आर्थिक संसाधन अधिकतर कृषि पर निर्भर थे जैसा कि अज़हरी ने इसकी तरफ इशारा किया है।

इब्न मन्जूर ने अज़हरी के हवाले से लिखा है कि:–

"ईराक़वासी जो किस्रा के दीन पर थे, काश्ताकार थे, रोमवासी कारीगर थे, और उद्योग धन्धे करते थे इसलिए वह मजूसी को अरीसीन कहते थे। अरीस से सम्बन्ध बताते हुए जिसका अर्थ है काश्तकार। अरब भी ईरानियों को "फलाहीन" अर्थात काश्तकार के लक़ब से याद करते थे। "

लेखक इस कथन को प्राथमिकता देता है कि अरीसीन से मतलब मिस्र के अरीयूस (Arius 236-280) के अनुयायी है, जो ईसाई धर्म के एक वर्ग विशेष का संस्थापक था। अरीयूस वह आदमी है जिसने तौहीद का नारा बुलन्द किया और सृष्टा तथा सृष्टि (ईसाईयों के धर्म में 'बाप' 'बेटे') के बीच फर्क करने का अपील की। उसने इस विषय पर वाद–विवाद का दरवाज़ा खोल दिया और ईसाई समाज में सदियों तक यह बहस चलती रही। उसके विचारों का सारांश यह है कि अल्लाह की यह शान नहीं कि वह ज़मीन पर ज़ाहिर हो इस लिए उसने हज़रत मसीह अ0 को ताकत और ईशवाणी से भर दिया। अल्लाह एक और हमेशा रहने वाला है। उसने अपनी ज़ात (अपने से प्रत्यक्ष रूप) से किसी को पैदा नहीं किया 'बेटा' खुद 'अल्लाह' नहीं है बल्कि रब की मन्शा और हिक्मत का एक रूप है।

James Mackinon ने अपनी किताब 'From Christ To Constantine' में लिखा है।:–

"अरीयूस इस बात पर बल देते थे कि अकेले अल्लाह की ज़ात क़दीम है वह आदि है। उसमें कोई शामिल नहीं है। वही है जो 'बेटे' को वजूद (अस्तित्व) में लाया। इसलिए 'बेटा आदि नही है अल्लाह हमेशा से बाप नहीं है। अतएव एक दौर ऐसा गुज़रा है कि बेटा का अस्तित्व ही न था। बेटा अपना एक निश्चित अस्तित्व रखता है जिसमें अल्लाह उसका शरीक नहीं, क्योंकि 'बेटा' परिवर्तन से प्रभावित भी होता है। इस लिए उसको अल्लाह नहीं कहा जा सकता, हालांकि वह अपने आप में परिपूर्ण है। बहरहाल उसका एक पूर्ण अस्तित्व है।"

दूसरी तरफ़ इस्कन्दरिया का गिरजा चौथी शताब्दी ई0 में हज़रत मसीह अ0 को अल्लाह मानता था, और उस के नज़दीक "बाप" और "बेटे" में कोई फर्क न था। अरीयूस को, जो इस आस्था को नहीं मानता था, पादरियों की एक सभा ने 321ई0 में इस्कन्दरिया के गिरजा से बेदख़ल कर दिया। उस सभा का लाट पादरी अलेक्ज़ण्डर था। अरीयूस शहर छोड़ कर चला गया लेकिन उसके निकल जाने से झगड़ा ख़त्म नहीं हुआ। बादशाह कुस्तुनतीन ने इस विवाद को ख़त्म करने की कोशिश की लेकिन वह उसमें कामयाब नहीं हुआ। 325ई0 में उसने नीक़िया (Nicaea) में एक सभा बुलाई जिसमें 2030 पादरी शामिल हुए। बादशाह का झुकाव मसीह अ0 को अल्लाह मानने की तरफ था इस लिए उसने अरीयूस के ख़िलाफ फैसला दिया। इसके बावजूद अधिकांश प्रतिनिधियों का समर्थन अरीयूस को हासिल था और सिर्फ 318 पादरी बादशाह के पक्ष में थे, फिर भी उसने अरीयूस को इलीरिया में देश निकाला कर दिया। उसके सारे लेख जला दिए गए। जिसके पास उसका कोई लेख मिलता उसे कड़ी सज़ा दी जाती, लेकिन इन बातों से लोगों में अरीयूस की लोक प्रियता ख़त्म न की जा सकी।

आख़िर में कुस्तुनतीन को ही अपना रुख़ नर्म करना पड़ा और उसने इस आस्था पर लगी पाबन्दी उठा ली। अपने सबसे बड़े विरोधी अलेक्ज़ेण्डर की मौत और उसके उत्तराधिकारी अथेनेसियूस के देश निकाले के बाद अरीयूस इस्कन्दरिया फिर वापस आ गया। करीब था कि कुस्तुनतीन उसको मिस्र के गिरजाघर का प्रमुख नियुक्त कर दे और अरियनिज़्म कुबूल कर ले लेकिन अरीयूस की अचानक मौत ने उसको यह मौक़ा नहीं दिया।

जान विलियम ड्रेपर ने अपनी किताब 'History of Conflict Between Religion And Science' में लिखा है कि चौथी शताब्दी ई0 में 13 मसीही सभाओं ने अरीयूस के ख़िलाफ फैसला दिया था, 15 ने उसका समर्थन किया था। 17 सभाओं ने जो राय प्रकट की थी वह उसकी राय के बहुत करीब

थी। इस तरह 45 सभाएं इस प्रकरण पर विचार–विमर्श के लिए आयोजित हुयीं। वास्तविकता यह है कि मसीही दुनिया में चौथी शताब्दी से पहले तसलीस की आस्था का कोई चलन नहीं मिलता। न्यू कैथोलिक ईसाइक्लोपीडिया में आता है कि :–

"तसलीस ☆ की आस्था आधुनिक संरचना और उसके भेद से पर्दा सिर्फ 19वीं सदी के बीच में ही उठ सका। अगर कोई विशुद्ध तौहीद की आस्था की बात करता तो इसका मतलब यह है कि चौथी सदी के अन्तिम चरण तक लौट जाता है। मसीही दुनिया में 'एक अल्लाह की तीन अभिव्यक्तियों' की भावना उसी ऐतिहासिक युग में पैदा हुई थीं। (खण्ड 14 पृष्ठ 295)

☆एक पूज्य की तीन अभिव्यक्तियां। अर्थात हज़रत ईसा अ0 (बेटा), हज़रत मरियम (माँ) और अल्लाह (बाप) तीनों को पूज्य मानना (अनुवाद)

तसलीस की यह आस्था हज़रत ईसा मसीह अ0 की खुली शिक्षा के साथ सदा टकराती रही है। कभी इसका पलड़ा भारी होता कभी उसका। बाज़नतीनी साम्राज्य के पूर्वी भाग में ईसाईयों की बहुत बड़ी संख्या अरीयूस की आस्था को मानती थी। यहां तक कि महान थियोडोसियस ने कुस्तुनतुनिया में ईसाईयों की एक सभा बुलाई जिसने हज़रत ईसा मसीह अ0 के ईश्वरत्व (Divinity) और उनके अल्लाह का बेटा होने की आस्था को विधिवत मान लिया और इसके एलान के बाद अरीयूस आस्था की दावत ख़त्म हो गयी और यह आन्दोलन आँखों से ओझल हो गया। फिर भी ईसाईयों का एक वर्ग उससे जुड़ा रहा और यह लोग 'अरीसिया' अथवा 'अरीसीन' के नाम से मशहूर हुए।

इसीलिए यही कथन सच मालूम पड़ता है कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने अपने ख़त में जो 'अरीसीन' का शब्द प्रयोग किया है उससे तात्पर्य यही वर्ग है क्योंकि उस समय की मसीही दुनिया में जिसकी बाग डोर बाज़नतीनी साम्राज्य के हाथ में थी और जिसका शासनाध्यक्ष हरकुल था, यही वर्ग अपेक्षाकृत तौहीद का मानने वाला था।

प्राचीन काल के कुछ एक महान विद्वानों ने भी यही धारणा व्यक्त की है। इमाम तहाबी ने अपनी किताब "मुश्किलुल–आसार" में लिखा है।

"कुछ एक प्रकाण्ड विद्वानों ने लिखा है कि हरकुल के लोगों में एक वर्ग था जिसको 'अरीसिया' कहते थे। यह अल्लाह को एक तथा हज़रत ईसा अ० को उनका बन्दा मानता था। ईसाई मसीह अ० के ईश्वरत्व के बारे में जो कुछ कहते थे, यह वर्ग उसको नहीं मानता था। यह मसीह अ० के दीन पर जमे थे और इंजील में जो कुछ था उसे मानते थे, ईसाई इससे आगे बढ़कर जो कुछ कहते थे यह वर्ग उस पर ईमान न रखता था। अगर यह बात सही है तो इस वर्ग को 'अरीस्यून' या 'अरीसीन' दोनों कहना उचित है जैसा कि हदीस के विद्वानोंका विचार है।"

कुछ इसी तरह का मत "मुस्लिम शरीफ" के टीकाकार इमाम नुवी ने पेश किया है। वह कहते हैं:–

" दूसरा कथन यह है कि वह (अरीसीन) यहूद व नसारा (ईसाई) हैं, जो अब्दुल्लाह बिन अरीस के मानने वालों में थे, जिससे 'अरूसियत' को जुड़ा बताया जाता है।" ☆

☆ यह मत सही नहीं मालूम होता है क्योंकि इस्लाम के अभ्युदय से 300 वर्ष पहले अरीस का वजूद था और इसका नाम भी कोई अरबी इस्लामी नाम नहीं था।

अरब शासकों के नाम ख़त

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अरब के शासकों में बहरीन☆ के शासक मुन्ज़िर बिन सावा, ओमान के शासकों जेफर बिन अलजुलन्दा☆ अब्द बिन अलजुलन्दा अज्दी, यमामा के शासक हौज़ा बिन अली☆ तथा हारिस बिन शम्मर–अल–ग़स्सानी के नाम ख़त भेजे। मुन्ज़िर बिन सावा और जुलन्दा के दोनों बेटों जेफर और अब्द ने इस्लाम कुबूल कर लिया। हौज़ा बिन अली ने अल्लाह के रसूल सल्ल० से प्रार्थना की कि उसको सत्ता में शामिल किया जाए, आपने उसे स्वीकार नहीं किया और इसके बाद जल्दी ही उसकी मौत हो गई।

☆1 बहरीन नज्द के उस भाग को कहते हैं जिसका नाम अब 'अलअहसा' है। हज़रत अबु उबैदा के नेतृत्व में जो लश्कर भेजा गया था और जिसमें विशाल मछली के हाथ आने की घटना घटित हुई, वह इसी तरफ भेजा गया था और सही हदीसों में इस मौके पर 'अलबहरीन' ही का शब्द आता है। अब यह नाम खाड़ी देशों में एक देश को दिया जाता है इसके अधिकतर वासी बनी अब्द–अल–क़ैस, बनी बक्र बिन वायल तथा बनी तमीम के कबीलों से हैं।

जब यह ख़त भेजे गए उस समय वहां का शासक मुन्ज़िर बिना साबा था जो बनी तमीम के कबीले का था।

☆1 इतिहासकारों के बयान से पता चलता है कि अल–जुलन्दा किसी व्यक्ति विशेष का नाम न था, वह एक लक़ब था जिसका अर्थ ओमानवासियों की भाषा में सरदार या धार्मिक पेशवा था।

☆ ईसाई धर्म का मानने वाला था। अल्लाह के रसूल सल्ल० ने सलीत बिन अम्र को इसी के पास भेजा था। उन दिनों यमामा की सीमाएं पूर्व में बहरीन से और पश्चिम में हेजाज से जा मिलती थीं। बनू हनीफा इसी भाग में आबाद थे उन्हीं में मुसैलिमा पैदा हुआ जिसका लक़ब नबूवत का झूठा दावा करने की वजह से 'किज़्ज़ाब' पड़ गया।

अध्याय सत्रह

ख़ैबर की जंग

अल्लाह का इनाम

अल्लाह ने हुदैबिया में बैअत रिज़वान में शामिल लोगों को जिन्होंने अल्लाह और उसके रसूल सल्ल0 की इताअत (आज्ञा पालन) की थी, विजय श्री तथा बहुत सारी दौलत की भविष्यवाणी दी थी। क्योंकि उन्होंने अल्लाह के हुक्म को अपनी कामना व विवेक पर प्राथमिकता दी थी। कुर्आन पाक में आता है:–

अनुवाद:–"(ऐ पैग़म्बर) जब मोमिन तुमसे पेड़ के नीचे बैअत कर रहे थे अल्लाह उन से खुश हुआ और जो (सद्भावना) उनके दिलों में थी वह उसने मालूम कर लिया। उन पर तसल्ली नाज़िल फरमायी, उन्हें जल्दी विजय दिलाई और बहुत सी दौलत जो उन्होंने हासिल की, और अल्लाह ग़ालिब हिकमत वाला है।" (सूर: अल् फतेह,18–19)

यह इशारा ख़ैबर की कामयाबी की तरफ था, ख़ैबर एक यहूदी कालोनी थी जिसमें अनेक मज़बूत किले थे। ☆ ख़ैबर यहूदियों का सामरिक अड्डा और अरब प्रायद्वीप का आख़िरी किला था यहां के यहूदी मुसलमानों के ख़िलाफ साजिश रचने में लगे रहते थे, और इस बात को कभी न भूलते थे कि उनके दूसरे भाईयों के साथ क्या हुआ है, वही सब कुछ उनके साथ भी पेश आ सकता है। वह क़बीला ग़तफान के साथ मिलकर मदीना पर हमला करने की साज़िश कर रहे थे। ☆ अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने भी निश्चय कर लिया था कि अब उनसे और उनकी साज़िशों से छुटकारा पाना है और इस तरफ से इत्मिनान हासिल करना है। ख़ैबर मदीना के उत्तर पूर्व में 70 मील की दूरी पर स्थित है।

☆ इनमें नायेम, कमूस आशिक आदि किले मशहूद थे। याकूबी ने लिखा है कि उन दिनों ख़ैबर में 25 हज़ार जवान मौजूद थे।

☆1 W. Monto Gomery Watt. ने अपनी किताब Muhammed

Prophet And Statesman में लिखा है कि ख़ैबर के यहूद और विशेषकर क़बीला बनी अलनज़ीर के वह सरदार जिनको रसूल अल्लाह सल्ल0 ने मदीना से देश निकाला कर दिया था,आप सल्ल0 के ख़िलाफ अपने दिल में घोर बदले की भावना रखते थे, यही लोग थे जो अरब के दूसरे क़बीलों को धन व दौलत देकर उकसाते और मुसलमानों से जंग करने के लिए तैयार करते थे और यही मूल कारण था जिसकी वजह से अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने ख़ैबर पर चढ़ाई की।" (पृ0 189) इस जंग का मक़सद सिर्फ यहूदियों की उस ताकत को तोड़ना ही नहीं था जो ख़ैबर में जमा हो गयी थी बल्कि हेजाज़ व नज्द के बीच उत्तर में एक शक्तिशाली क़बीला ग़तफान की तरफ से भी इत्मिनान हासिल करना था जो अरब क़बीलों में बहुत ही लड़ाकू क़बीला था।

नबी के नेतृत्व में इस्लामी लश्कर

अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने हुदैबिया से निकल कर मदीना में ज़िलहिज्जा का पूरा महीना और मुहर्रम का हिस्सा गुज़ारा और उसके बाद ख़ैबर की तरफ प्रास्थान किया। आमिर बिन अलअक़बा रज़ी0 लश्कर के साथ थे और शेर पढ़ते थे। इन शेरों का मतलब इस तरह है।

अर्थः– ऐ अल्लाह! अगर तू मार्गदर्शन न करता तो न हम हिदायत पाते, न ख़ैरात देते न रोज़ा रखते।

हम वह लोग हैं कि जब कोई क़ौम हम पर चढाई करती है और फसाद पर आमादा होती है तो हम उससे साफ इन्कार कर देते हैं। तू हमारे ऊपर सकीना ☆ नाज़िल फरमा और मुक़ाबले के समय हमारे क़दमों को जमाए रख।

अल्लाह के रसूल सल्ल0 जिस लश्कर को लेकर ख़ैबर आए उसमें 1400 जवान और 200 घोड़े थे जो लोग हुदैबिया में पीछे रहे थे आप सल्ल0 ने उन्हें इस जंग में शामिल होने की इजाज़त नहीं दीं। लश्कर के साथ 20 औरतें भी थीं जिनके ज़िम्मे मरीज़ों का इलाज घायलों की मरहम पट्टी, तथा खाना पानी का बंदोबस्त करना था।

आपने यहूद और क़बीला ग़तफान के बीच स्थित 'रज़ी'में पड़ाव किया ताकि इन दोनों के बीच संचार व्यवस्था को काट दिया जाए, और यही हुआ। आपके लिए ख़ैबर का रास्ता साफ़ हो गया।

अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने लश्कर के लिए रसद का बंदोबस्त करने का आदेश दिया तो सिर्फ सत्तू हासिल किया जा सका। इस

लिए उसी पर सन्तोष किया गया जब आप ख़ैबर पहुंचे तो आपने हाथ उठाकर अल्लाह से दुआ की। ख़ैबर की विजय का सवाल किया, और ख़ैबर तथा वहां के लोगों की बुराईयों से पनाह मांगी। आप की आदत थी कि जब कभी आप किसी ग़ज़वा का इरादा करते तो रात को हमला न करते, बल्कि सुबह का इन्तेज़ार करते, अगर अज़ान की आवाज़ आपके कानों में आती तो आप ठहर जाते और हमला न करते। इसी तरह आपने यहां भी रात गुज़ारी। सुबह आप सल्ल० हमले की नियत से आगे बढ़े। रास्ते में ख़ैबर के किसान मज़दूर अपने फावड़े और झाबे लिए नज़र आए। आपको देखकर उन लोगों ने नारा लगाया "मुहम्मद (सल्ल०) और लश्कर आ गया।" और वह वहां भाग खड़े हुए। यह देखकर आप सल्ल० ने फरमाया, "अल्लाह की शान, ख़ैबर बर्बाद हुआ। हम जब किसी क़ौम पर हमला करते हैं तो उनकी सुबह बुरी होती है। जिन्हें पहले ही डराया और आगाह किया जा चुका है।"

कामयाब सेनापति

हज़रत मुहम्मद सल्ल० ने सबसे पहले ख़ैबर के क़िलों को एक–एक करके जीतना शुरू किया इन क़िलों में एक क़िला ऐसा था जहां मशहूर यहूदी घुड़सवार मरहब का सिंहासन था उसे हज़रत अली रज़ी० ने फतह किया। यह क़िला मुसलमानों के लिए अजेय साबित हो रहा था और उनका बस इस पर नहीं चल रहा था। हज़रत अली रज़ी० की उस समय आखें उठी हुई थी। अल्लाह के रसूल सल्ल० ने इरशाद फरमाया, "कल झण्डा वह व्यक्ति लेगा जिसे अल्लाह और उसके रसूल से मुहब्बत है, उसके द्वारा यह क़िला फतह होगा।" यह सौभाग्य हासिल करने के लिए बड़े–बड़े सहाबी उम्मीदवार थे।

आप सल्ल० ने हज़रत अली रज़ी० को बुलवाया, उनकी ऑखों में तकलीफ थी, वह आए तो आपने अपना थूक उनकी ऑखों में लगाया और उनके हक़ में दुआ की। वह उसी वक्त ऐसे अच्छे हुए कि मानो उनको दर्द ही न था। आपने झण्डा उनके हवाले किया उन्होंने कहा, "क्या यहूदियों से उस वक्त तक जंग करूँ जब तक कि वह मुसलमान

न हो जाएँ?" अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने फरमाया, "यहां से प्रस्थान करके उनके सामने पड़ाव डालो, फिर उनको इस्लाम की दावत दो, और अल्लाह का इस सिलसिले में उन पर जो हक़ है उससे उनको आगाह करो। अल्लाह की क़सम अगर तुम्हारे द्वारा अल्लाह उनके किसी एक आदमी को भी हिदायत दे दे तो यह तुम्हारे लिए लाल ऊंटों से भी अच्छा है। ☆

☆ अरब में लाल ऊंट बहुत क़ीमती समझे जाते थे और यह एक दुलर्भ चीज़ थी।

हज़रत अली रज़ी0 का यहूदी घुड़सवार से मुक़ाबला

हज़रत अली रज़ी0 इस्लाम का झण्डा लेकर सेना के साथ क़िले पर पहुंचे तो एक मशहूर यहूदी घुड़सवार मरहब वीर रस की कविता पढ़ता हुआ मुक़ाबले के लिए आगे आया। उससे आप के दो–दो हाथ हुए। हज़रत अली रज़ी0 ने उस पर तलवार की ऐसी चोट की कि तलवार उसके लौह–टोप व सर को काटती हुए दाढ़ तक उतर गयी, और मुसलमानों की विजय हुई। ☆ मुहम्मद बिन मुस्लेमा ने भी इस जंग में अपनी बहादुरी के जौहर दिखाए और अनेक योद्धाओं को मौत की घाट उतारा।

☆ कुछ विद्वानों ने यह घटना नायेम की विजय के सम्बन्ध में और कुछ ने क़िला क़मूस की विजय के सम्बन्ध में नकल की है। बुख़ारी में क़िले का नाम अंकित नहीं। इब्ने हिशाम ने मुहम्मद बिन मुस्लेमा को मरहब को हराने वाला बताया है लेकिन सही मुस्लिम में हज़रत अली रज़ी का नाम आया है।

मेहनत कम, मज़दूरी ज़्यादा

ख़ैबर के एक हब्शी गुलाम ने जो अपने मालिक की बकरियां चराने पर नियुक्त था। यह देखा कि ख़ैबर वासी हथियार उठाए हुए हैं और जंग के लिए तैयार हैं तो उसने पूछा कि आप लोगों का क्या इरादा है? उन्होंने कहा, कि हम उस व्यक्ति से जंग करने जा रहे हैं जो नबी होने का दावा करता है। नुबूवत की बात ने उसके दिल पर ख़ास प्रभाव डाला और वह अपनी बकरियों के रेवड़ के साथ अल्लाह के रसूल सल्ल0 की सेवा में हाज़िर हुआ और पूछा कि क्या कहते हैं? और किस चीज़ की दावत दे रहे हैं? आपने जवाब दिया कि, "मैं इस्लाम की तरफ बुलाता हूँ

और यह कि मैं अल्लाह का रसूल हूँ और अल्लाह के सिवा किसी की इबादत न करो। गुलाम ने कहा कि अगर मैं यह गवाही दूँ और अल्लाह पर ईमान ले आऊं तो मुझे क्या मिलेगा? आपने फरमाया, "अगर तुम्हारी इस आस्था पर मौत आई तो तुम्हारे लिए जन्नत है।" वह यह सुनकर इस्लाम ले आया और फिर कहने लगा, "ऐ अल्लाह के नबी मेरे पास यह बकरियां अमानत हैं। इनका क्या होगा ? आपने फरमाया, "तुम इनको मैदान में ले जाकर छोड़ दो। अल्लाह तुम्हारी यह अमानत अदा कर देगा।" उसने यही किया।

अल्लाह का करना कि यह बकरियां खुद ही अपने मालिक के पास चली गयीं, और उस यहूदी को पता चल गया कि उसका गुलाम मुसलमान हो गया है। इस मौके पर अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने खड़े होकर लोगों को सम्बोधित किया। उनको नसीहत दी और दुश्मन से जंग का शौक दिलाया। जब दोनों पक्ष मैदाने जंग में उतरे तो इस्लाम के शहीदों में वह गुलाम भी था। मुसलमान उसे उठाकर अपने ख़ेमे में ले गए। कुछ लोगों का कहना है कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने शामियाना पर नज़र डाली फिर अपने सहाबियों को सम्बोधित करते हुए कहा, " अल्लाह ने इस गुलाम के साथ बड़ा करम फरमाया और इसको ख़ैबर पहुंचाया। मैं ने देखा कि इसके सिरहाने जन्नत की दो हूरें (सुन्दरियां) मौजूद हैं, हालांकि उसने अल्लाह के लिए एक सजदा भी नहीं किया था।"

आपके साथ मैं इसलिए नहीं आया था

एक एराबी (बद्दू) हज़रत मुहम्मद सल्ल0 के पास आया। ईमान लाया और आपकी पैरवी कुबूल की और कहा कि मैं भी आपके साथ हिजरत करूंगा आपने सहाबा से कहा कि उसे अपने साथ रखें और उसका ध्यान रखें। ख़ैबर की जंग के मौके पर आपने कुछ माले ग़नीमत बांटा। यह एराबी उस वक़्त चारागाह गया हुआ था। जब वह वापस आया तो उसको उसका हिस्सा दिया गया। उसने कहा कि यह क्या है? सहाबा ने उसे बताया कि यह तुम्हारा हिस्सा है जो अल्लाह के रसूल

सल्ल0 ने तुम्हें दिया है। वह इसे लेकर अल्लाह के रसूल सल्ल0 की सेवा में हाज़िर हुआ और पूछा कि या रसूल अल्लाह सल्ल0! यह क्या चीज है? आप ने फरमाया," यह तुम्हारा हिस्सा है।" उसने कहा कि मैं इसके लिए आपके साथ नहीं आया था, मैंने तो आपकी पैरवी इस लिए की थी कि मुझे इस जगह (अपने गले की तरफ इशारा करते हुए उसने कहा) "दुश्मन का कोई तीर लगे, मेरी मौत हो जाए और मैं जन्नत में पहुंच जाऊं।" आपने फरमाया," अगर तुम्हारी नियत सही है तो अल्लाह ऐसा ही करेगा।"

ख़ैबर की जंग के शहीद जब अल्लाह के रसूल सल्ल0 के पास लाए गए। तो उसमें वह खुशनसीब भी था। आपने पूछा–क्या यह वही व्यक्ति है ? सहाबा ने जवाब दिया– 'जी हाँ' । आपने फरमाया, अल्लाह के साथ उसने सच्चाई का मामला किया तो अल्लाह ने भी उसकी इच्छा को पूरा कर दिखाया। अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने अपने जुब्बे (आवरण) में उसे कफन दिया फिर उसकी नमाज़े जनाज़ा ☆ पढ़ी, और उसके हक़ में दुआ की–"ऐ अल्लाह! तेरा यह बन्दा तेरे रास्ते में हिजरत के लिए निकला था। यह तेरी राह में शहीद हुआ है और मैं इस का गवाह हूँ।"

☆ मुर्दे के दफनाने से पहले पढ़ी जाने वाली नमाज़। विस्तार के लिए लेखक की किताब "हिन्दुस्तानी मुसलमान एक दृष्टि में पृ0 47 देखें

इस तरह एक–एक करके ख़ैबर के किलों को मुसलमान जीतते गए और लगातार कई–कई दिन लड़ाई और घेराबन्दी में गुज़रने लगे। यहां तक कि इससे तंग आकर यहूदियों ने अल्लाह के रसूल सल्ल0 के सामने सुलह की पेशकश की, लेकिन आपका इरादा उनको वहां से बेदख़ल करने का था। यहूदियों ने कहा– हमको आप इसी जगह रहने और अपनी खेती बाड़ी की देख भाल करने की इजाज़त दे दीजिए। क्योंकि हम इस पेशे में आप लोगों से अधिक माहिर हैं। अल्लाह के रसूल सल्ल0 और आपके साथियों को खेती का अनुभव न था अगर वह यह काम अपने हाथ में ले लेते तो सारा वक्त इसी में लग जाता। इस लिए आप सल्ल0 ने उन यहूदियों को ख़ैबर में रहने की इजाज़त इस

शर्त पर दे दी कि कुल पैदावार का आधा मुसलमानों को मिलेगा और आप जब तक चाहेंगे समझौते को बनाए रखेंगे।

मज़हबी रहम दिली

खैबर की जंग में जो माले ग़नीमत मुसलमानों के हाथ लगा उसमें तौरेत की अनेक प्रतियां भी थीं। यहूदियों ने प्रार्थना की कि वह उन्हें दे दी जाएं। अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने आदेश दिया कि यह सब प्रतियां उनको दे दी जाएं। यहूदी विद्वान डा0 इस्राईल वेलफेन्सन ने इस घटना के बारे में लिखा है।

> " इस घटना से हम अनुमान लगा सकते हैं कि धार्मिक किताबों के प्रति अल्लाह के रसूल के दिल में कितनी इज़्ज़त थी। आपकी इस रवादारी (उदारता) का यहूदियों पर बड़ा असर पड़ा। वह आपके इस अहसान को कभी नहीं भूल सकते कि आपने उनके पवित्र ग्रंथों के साथ अपमान का कोई सुलूक नहीं किया। यहूदियों को वह घटना भली तरह याद थी कि जब रोमन वालों ने येरूशलम को सन् 70 ई0 पूर्व में फतह किया तो उन्होंने उन पवित्र ग्रंथों को आग लगा दी और उनको पॉव से रौंदा। इसी तरह स्पेन में, मतवाले ईसाईयों ने यहूदियों पर अत्याचार के दौरान तौरेत की प्रतियां जला दीं। यह वह महान फर्क है जो इन विजेताओं और इस्लाम के नबी के बीच हमें नज़र आता है।"

जाफर बिन अबी तालिब का आना

इसी जंग मे हज़रत मुहम्मद सल्ल0 के चचेरे भाई जाफर बिन अबी तालिब और उनके साथी आप सल्ल0 से आकर मिले। आप सल्ल0 बहुत खुश हुए और बड़े शौक से आपने उनका स्वागत किया। उनके माथे को चूमा और फरमाया," अल्लाह की क़सम मैं नहीं जानता कि किसी चीज़ से ज़्यादा मैं खुश हूँ– ख़ैबर की कामयाबी से या जाफर के आने से।"

यहूदियों की एक और साज़िश

इसी जंग में अल्लाह के रसूल सल्ल0 को ज़हर दिया गया। सलाम बिन मिशकम की यहूदी पत्नी ज़ैनब पुत्री हारिस ने आपको ज़हर

मिलाकर एक भूनी हुई बकरी भेंट दी। पहले उसने पूछा कि बकरी का कौन सा हिस्सा आप सल्ल० को अधिक पसन्द है। आपने कहा, 'दस्त' (अगली टांग)। यह सुनकर उसने दस्त में विशेष रूप से ज़हर मिलाया। आपने जब दस्त का कुछ हिस्सा तोड़कर खाना शुरू किया तो ख़ुद उस गोश्त ने आपको सूचित किया कि उसमें ज़हर मिला है। इस लिए उसी वक़्त आप सल्ल० ने लुक़्मा (निवाला) उगल दिया। इसके बाद आपने यहूदियों को जमा किया और फ़रमाया कि अगर मैं तुमसे कुछ पूछूं तो क्या तुम सही सही जवाब दोगे? उन्होंने कहा 'हाँ'। आपने फ़रमाया कि क्या तुमने इस बकरी में ज़हर मिलाया है। उन्होंने जवाब दिया कि हमने सोचा कि अगर आप झूठे हैं तो आपसे छुट्टी मिल जाएगी और अगर सचमुच नबी हैं तो ज़हर आप पर असर न करेगा। इसके बाद उस औरत को आपके पास लाया गया उसने भी अपना अपराध स्वीकार कर लिया और कहा कि मैंने आप सल्ल० की जान लेने का इरादा किया था। आपने फ़रमाया कि अल्लाह मुझ पर तुम्हें काबू नहीं दे सकता। सहाबा ने इजाज़त चाही कि उस औरत को क़त्ल कर दें। आपने फ़रमाया, 'नहीं'। उस समय आप सल्ल० ने उससे कुछ नहीं कहा और उसे कोई सज़ा न दी। बाद में जब उस ज़हर खाने की वजह से बश्र बिन अलबरा बिन मारूर का निधन हो गया जो उस खाने, जिसमें ज़हर था, शामिल थे, तो उस यहूदी औरत को क़त्ल कर दिया गया।

ख़ैबर की जंग का असर

ख़ैबर की जंग में मुसलमानों की शानदार जीत का अरब के उन क़बीलों पर जो अभी तक इस्लाम नहीं लाए थे, बहुत अच्छा प्रभाव पड़ा। उन्हें ख़ैबर में यहूदियों की फ़ौजी ताक़त, उनकी दौलत, अनाज की बाहुल्यता, हथियारों की अधिकता, क़िलों की मज़बूती और उनके अजय होने का पूरा ज्ञान था, और वह जानते थे कि उसमें मरहब और हारिस अबी ज़ैनब जैसे अनुभवी योद्धा मौजूद थे। उनके यह सारे अन्दाज़े ग़लत साबित हुए जिसका उनके जोश और बाद की घटनाओं पर गहर असर पड़ा।

डा0 ईस्राईल वेल्फ़ेन्सन ने लिखा है:–

"बे शक इस्लामी विजय के इतिहास में ख़ैबर की विजय का बड़ा महत्व है यही वजह है कि अरब के तमाम क़बीले बहुत बे सब्री से उसके नतीजों का इन्तिज़ार कर रहे थे और इसका फ़ैसला अन्सार व यहूदियों की तलवार की झनकार पर होना था। अल्लाह के रसूल सल्ल0 के बहुत से दुश्मन जो अरब के विभिन्न शहरों और देहातों में थे, इस जंग से बड़ी उम्मीदें लगाए बैठे थे।"

जब रसूल अल्लाह सल्ल0 ख़ैबर विजय कर चुके तो आप सल्ल0 ने 'फ़दक' ☆ की तरफ ध्यान दिया। यहूदियों ने अल्लाह के रसूल सल्ल0 से उत्पादन के आधे–आधे बंटवारे पर समझौता करना चाहा। आप सल्ल0 ने उनका यह समझौता मान लिया इससे जो कुछ हासिल होता उसे आप अपने और मुसलमानों के हित में जहां उचित समझतें बांट देते।

☆ हिजाज के ऊपरी भाग में स्थित एक राज्य और एक आबाद कस्बा था। इस कस्बे में यहूदी आबाद थे। जिनका सम्बन्ध बनी मुर्रा और बनी साद बिन बक्र के क़बीलों से था।

इसके बाद आप वादी–अल–कुरा गए। यह ख़ैबर और तैमा के बीच स्थित एक कालोनी थी, जिसे यहूद ने इस्लाम से पहले बसाया था। यहां अरब के कुछ लोग भी आकर बस गए थे। उनको अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने इस्लाम की दावत दी और उनसे कहा कि यदि वह इस्लाम कुबूल कर लेंगे तो उनकी जान व माल सुरक्षित रहेगा और उनका हिसाब अल्लाह के ज़िम्मे होगा। यहूद ने लड़ने का निश्चय किया। अतएव इस जंग में कई मुक़ाबले हुए लेकिन ज़ुबैर बिन अल अब्बास जैसे लोगों की बहादुरी की वजह से दूसरे ही दिन यहूद ने हथियार डाल दिए, और जो कुछ उनके पास था मुसलमानों के हवाले कर दिया। मुसलमानों को इस तरह बड़ी मात्रा में माल व दौलत मिला। अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने इस सारी दौलत को सहाबा में बांट दिया। खेत और खजूर के बाग यहूद के पास रहे। जब तैमा के ☆ लोगों को ख़ैबर, फदक और वादी अलकुरा के विजय की सूचना मिली तो उन्होंने आपसे समझौता कर लिया। अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने उनका प्रस्ताव स्वीकार कर लिया और उनकी ज़मीनें उन्हीं की कब्ज़े में रहने दीं और आप

मदीना वापस आए।

☆ वादी अल कुरा के उत्तर में सीरिया के निकट स्थित एक कस्बा

मुहाजिरों की शराफ़त

मदीना के अन्सार ने अपने माल में मक्का से आए मुहाजिरों को हिस्सा दिया था। अब जब कि ख़ैबर की विजय के बाद मुहाजिर मदीना वापस आए तो उनके पास अपनी खुद की जायदाद हो गई थी। इस लिए उन्होंने अन्सार को उनकी चीज़ें और बाग़ वापस कर दिए। ख़ैबर में उन्हें भी बाग मिले थे। अनस बिन मालिक की माँ उम्मे सुलैम ने अल्लाह के रसूल सल्ल0 को उस ज़माने में कुछ खजूर के पेड़ भेंट किए थे जिसे आपने अपनी आज़ाद की गई बान्दी (सेविका) उम्मे एमन को दे दिया था। जब आपको फ़दक के बाग़ मिले तो आपने उम्म सुलैम को एक खजूर के पेड़ के बदले फ़दक के दस खजूर के पेड़ वापस किए।

अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने ख़ैबर के बाद भी विभिन्न स्थानों के लिए अनेक सरिये (हमलावर दल) भेजे जिनका नेतृत्व आपके प्रमुख साथी सहाबा कर रहे थे। इनमें से कुछ सरियों में जंग हुई और कुछ में जंग की नौबत नहीं आई।

छूटे हुए उमरह की पूर्ति

दूसरे साल सन् 7 हिजरी में अल्लाह के रसूल सल्ल0 तथा आपके साथी सहाबा कराम कज़ा उमरह की पूर्ति (अर्थात पहले छुटी हुई मक्का की तीर्थ यात्रा) की नियत से मक्का गए। कुरैश ने कोई विरोध नहीं किया। आप तीन दिन वहां ठहरे और उमरह किया। इस बात की तरफ कुर्आन पाक में इस तरह इशारा आया है।:–

अनुवादः– "बेशक अल्लाह ने अपने पैग़म्बर को सच्चा (और) सही सपना दिखाया कि अल्लाह ने चाहा तो मस्जिदे हरम (काबा) में अपने सर मुंडवा कर और आपने बाल कतरवा कर अमन व अमान से दाख़िल होगे और किसी तरह का ख़ौफ न करोगे। जो बात तुम नहीं जानते थे उसको मालूम थी सो उसने उससे पहले ही जल्द फतह करा दी। (सूरः अल फतह–27)

लड़कियों का समाज में समुचित स्थान

इस्लाम ने अरब वासियों के दिल व दिमाग पर बहुत असर डाला और इससे उनके ज़िंदगी में बहुत बदलाव हुआ। वह लड़की जो अब तक ख़ानदानों तथा रईसों के लिए सर नीचा करने की वजह समझी जाती थी और कुछ क़बीलों में उसे ज़िन्दा दफ़न कर देने तक की रस्म थी, आज ऐसी चहेती बन चुकी थी कि लड़कियों के पालन पोषण में लोगों में होड़ लग जाती थी। मुसलमान सब बराबर थे और सबको समान अधिकार हासिल थे। किसी को किसी पर अगर प्राथमिकता थी तो वह ज्ञान व आचरण के आधार पर थी। अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने जब मक्का से वापसी का इरादा किया तो सैय्यदना हमज़ा रज़ी0 की छोटी बच्ची 'उमामा' चचा! चचा! पुकारती हुई आपके पीछे हो ली। हज़रत अली रज़ी0 ने उसे ले लिया और हज़रत फातिमा के हवाले करते हुए कहा– देखो यह चचा की लड़की है। अब हज़रत अली, ज़ैद और जाफर रज़ी0 के बीच इस बात पर ख़ींचतान होने लगी। हज़रत अली ने कहा–यह मेरी चचेरी बहन है। हज़रत जाफ़र ने कहा कि यह मेरी भी चचेरी बहन है और इसकी ख़ाला मेरी निकाह में है। हज़रत ज़ैद ने कहा कि इस्लाम के रिश्ते से यह मेरी भतीजी है। अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने हज़रत जाफर के हक़ में फैसला दिया क्योंकि बच्ची की ख़ाला उनके घर में थी और ख़ाला माँ की जगह होती है। हज़रत अली से उनकी दिलदारी के लिए आपने फरमाया," तुम सीरत (आचरण) व सूरत दोनों में मुझसे मिलते जुलते हो।" हज़रत ज़ैद से फरमाया, "तुम मेरे भाई मेरे मौला (Client) हो।"

अध्याय अट्ठारह

मूता☆ की जंग

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हारिस बिन उमैर अल अज़्दी रज़ी को अपने ख़त के साथ बुसरा के हाकिम शरहबील बिन अम्र अल गस्सान के पास भेजा। बुसरा बाज़नतीनी साम्राज्य के अधीन था। शरहबील के आदेशानुसार हारिस को पहले बांध दिया गया उसके बाद उन्हें शहीद कर दिया गया। ख़त का विषय कितना ही न पसंद हो और कैसा ही विरोधी हो लेकिन राजदूतों और सन्देश वाहकों के क़त्ल करने का कभी भी दस्तूर न था। हारिस के क़त्ल की घटना ऐसी थी जिसकी अनदेखी नहीं की जा सकती थी। यह राजदूतों व सन्देश वाहकों के लिए खतरे की बात और ख़त व ख़त के लेखक दोनों का अपमान था। इस लिए इस तरह का बर्ताव करने वाले का सर कुचलना और जुल्म का बदला लेना ज़रूरी था ताकि भविष्य मे किसी की ऐसी हिम्मत न हो सके, और इस तरह की दुखद घटना की दोबारा न हो।

☆ मूता पूर्वी जार्डन के नगर किर्क के दक्षिण में 12 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। मदीना और मूता के बीच की दूरी लगभग 1100 किलोमीटर है। इस पूरी दूरी को मुसलमानों ने घोड़ों और ऊंटों से इस तरह पूरा किया कि उन्हें किसी तरह की मदद या सामग्री मिलने की उम्मीद नहीं थी।

बाज़नतीनी भूमि पर पहली इस्लामी फौज

जब हारिस की शहादत की ख़बर अल्लाह के रसूल सल्ल0 को मिली तो आपने एक लश्कर बुसरा भेजने का फैसला किया। यह बात जमादिउल उला सन् 8 हिजरी की है।

3000 हज़ार मुजाहिदों की एक फौज इसके लिए तैयार की गई हालांकि इस लश्कर में बड़े–बड़े अन्सार व मुहाजिर मौजूद थे फिर भी आप सल्ल0 ने ज़ैद बिन हारिस रज़ी0 को उसका नेतृत्व सौंपा। ज़ैद एक आज़ाद किए हुए गुलाम थे। आपने यह निर्देश भी दिया कि अगर ज़ैद शहीद या ज़ख़्मी हो जाएं तो जाफर बिन अबी तालिब को लीडर बनाया

जाए और उनके साथ भी यही हो तो अब्दुल्लाह बिन रवाहा को अमीर नियुक्त किया जाए। पूरी तैयारी के बाद लोगों ने आप सल्ल0 द्वारा नियुक्ति फौज और लीडरों को विदा किया और उनको अपना सलाम पेश किया। उन्हें एक लम्बा और थका देने वाला रास्ता तय करना था और उनका सामना ऐसे दुश्मन से था जिसको उस समय के सबसे बड़े साम्राज्य का संरक्षण हासिल था।

इस्लामी फौज रवाना हुई। आगे चलकर उसने 'मआन' पर पड़ाव किया। यहां मुसलमानों को सूचना मिली कि हरकुल 'बलक़ा' में एक लाख रूमी फौज के साथ पड़ाव किए है और उसके साथ बड़ी संख्या में अरब क़बीले 'लख्म', 'जुज़ाम', 'बलकैन','बहरा', और 'बली' आ मिले हैं। मुसलमानों ने दो रातें 'मआन' में गुज़ारीं और हालात पर गौर करते रहे, आख़िर में यह फैसला हुआ कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 के पास ख़त भेजा जाए और दुश्मन की संख्या से आपको सूचित कर दिया जाए। फिर या तो आप सल्ल0 हमारे लिए कुमक रवाना फरमाएं या मुक़ाबले का हुक्म दें तो उसका पालन किया जाए।

निडर सिपाही

इस मौके पर अब्दुल्लाह बिन रवाहा ने मुजाहिदों को हिम्मत दिलाई और कहा कि– अल्लाह की क़सम आज तुम उस चीज़ को नागवार (अप्रिय) महसूस कर रहे हो जिसके लिए तुम निकले थे और जो तुम्हारी दिली तमन्ना थी। अर्थात शहादत! हम दुश्मन का मुक़ाबला संख्या और ताकत की बुनियाद पर नहीं करते। हम तो उसका मुक़ाबला उस दीन की ताक़त से करते हैं जिससे अल्लाह ने हमको गौरवान्वित किया है। इसलिए चल खड़े हो और याद रखो, दोनों हाल में हमारा फायदा है, जीत हो तब भी और शहादत हो, तब भी। यह सुनकर सब लोग उसी वक्त उठे और रवाना हो गए।

जब इस्लामी लश्कर बलक़ा के करीब पहुंचा तो मशारिफ नामक स्थान पर उनका सामना बाज़नतीनी सेनाओं से हुआ। मुसलमानों ने मूता नामक गॉव में मोर्चा संभाल लिया और जंग शुरू हो गयी।

ज़ैद बिन हारिस ने जंग की शुरूआत की। भालों से उनका पूरा बदन छलनी हो गया और आख़िरकार वह शहीद हुए। उनसे झण्डा जाफर ने ले लिया और लड़ते रहे। जब लड़ाई का दबाव बढ़ा तो घोड़े से उतर गए और उसकी अगली टांगें काट दीं और पैदल लड़ना शुरू किया इतने में उनका दायां हाथ भी कट गया तब उन्होंने झण्डा अपने बाएं हाथ में ले लिया। बायां हाथ भी कट गया तो झण्डे को उन्होंने अपने दोनों कटे हुए ज़ख्मी हाथों में जकड़ लिया और इसी तरह शहीद हो गए। उस समय उनकी उम्र 33 वर्ष की थी। उनके सीने और बाजुओं के बीच 90 घाव थे। यह सब तलवार और भालों के ज़ख्म थे और इनमें कोई घाव पीठ की तरफ नहीं था। इस तरह यह बहादुर जवान जन्नत की नेअमतों के गीत गाते हुआ और दुश्मन व दुनिया के श्रंगार को पैरों तले रौंदता हुए शहीद हुआ।

जाफर की शहादत के बाद अब्दुल्लाह इब्ने रवाहा ने झण्डा अपने हाथ में ले लिया और आगे बढ़े। उन्होंने भी अपना घोड़ा छोड़ दिया। इसी बीच उनके एक चचेरे भाई एक गोश्त लगी हड्डी लेकर आए और कहा कि इसको पेट में डाल लो ताकि कुछ ताकत आ जाए, क्योंकि तुमने कई दिन से कुछ नहीं खाया है। अब्दुल्लाह ने उन्हीं के हाथ से थोड़ा का गोश्त अपने मुँह में लिया, फिर उसको फेंक दिया, तलवार हाथ में ली, आगे बढ़कर दुश्मन से दो–दो हाथ किए और शहीद हो गए।

हज़रत ख़ालिद का नेतृत्व

अब्दुल्लाह इब्ने रवाहा के शहीद हाने के बाद लोगों ने हज़रत ख़ालिद बिन वलीद के नेतृत्व में जंग जारी रखने पर सब ने रज़मंदी जतायी और उन्होंने इस्लाम का झण्डा अपने हाथ में ले लिया। वह बहुत बहादुर और रणनीति के अनुभवी व्यक्ति थे। उन्होंने इस्लामी लश्कर को दक्षिण की तरफ मोड़ लिया। दुश्मन उत्तर की तरफ चला गया। इतने में रात हो गई और लड़ाई बन्द हो गई।

हज़रत ख़ालिद बिन वलीद ने बड़ी संख्या में लोगों को अपने लश्कर की पीछे तैनात कर दिया। उन लोगों ने सुबह के समय इतने

ज़ोर से नारा लगाया कि दुश्मन समझे कि मदीना से कोई नई कुमक आ गई और वह डर गए। आपस में कहने लगे कि जब 3 हज़ार के लश्कर ने यह आफत ढाई तो नई कुमक आ जाने के बाद इनका क्या हाल होगा? यह सोचकर दुश्मनों की हिम्मत टूट गई और उन्होंने लड़ाई का इरादा छोड़ दिया और लड़ाई नहीं हुई।

इधर मुसलमान मैदाने जंग में अपनी बहादुरी के जौहर दिखा रहे थे और उधर अल्लाह के रसूल सल्ल0 मदीना में सहाबा से इस जंग का ऑखों देखा हाल बयान कर रहे थे। अनस बिन मालिक कहते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने ज़ैद, जाफर और अब्दुल्लाह रज़ी0 के शहीद होने की सूचना मदीना ख़बर पहुंचने से पहले ही दे दी थी। आपने फरमाया, " अब ज़ैद ने झण्डा लिया वह शहीद हुए, जाफर ने लिया वह भी शहीद हुए। इब्न रवाहा ने लिया वह भी शहीद हुए। (उस समय आप सल्ल0 की ऑखों से आंसू जारी थे।) आपने फरमाया, "यहां तक कि अल्लाह की तलवारों में से एक तलवार (अर्थात ख़ालिद बिन वलीद) ने झण्डा अपने हाथ में लिया और अल्लाह ने मुसलमानों को कामयाबी दिला दी।

जाफर रज़ी के बारे में आपने फरमाया कि अल्लाह ने उनके दोनों हाथों के बदले उनको पंख दिए हैं जिनसे वह जन्नत में जहां चाहें उड़कर जा सकते हैं। इसीलिए उनका लक़ब जाफर तैय्यार (उड़ने वाला) और ज़िल जिनाहैन (दो परों वाला) पड़ गया। ☆

☆ सही बुख़ारी में है कि हज़रत उमर रज़ी जब हज़रत जाफर के लड़के से मिलते तो कहते दो परों वाले के लड़के तुम पर सलाम हो।

अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने जाफर की पत्नी से कहा कि जाफर के बच्चों को हमारे पास लाना, जब वह आए तो आप सल्ल0 ने उनको अपने चेहरे से लगा लिया और आपकी ऑखों से आंसू जारी हो गए। फिर आपने उनको शहादत की ख़बर सुनाई। जब मैदाने जंग से शहादत की ख़बर आई तो आपने घर वालों से कहा कि जाफर के घर वालों के लिए खाना तैयार करो। इस बात को सुनकर घर वाले दु:खी होंगे और वह खाना पकाने की हालत में नहीं होंगे। आप सल्ल0 भी बहुत दुखी थे।

वापसी के समय जब मुसलमानों का लश्कर मदीने के करीब पहुंचा तो अल्लाह के रसूल सल्ल0 और मुसलमानों ने आगे बढ़कर उसकी अगवानी की। बच्चे भी उनके पीछे-पीछे दौड़ रहे थे। अल्लाह के रसूल सल्ल0 सवारी पर थे। आप सल्ल0 ने फरमाया, कि बच्चों को अपने साथ बिठा लो और जाफर का बच्चा मुझे दे दो जाफर के बच्चे अब्दुल्लाह को लाया गया। आपने उसको अपनी गोद में बिठा लिया।

चूंकि मुसलमान मैदाने जंग से बिन लड़े वापस आने के आदी न थे इस लिए मदीनावासी उन गाज़िओं पर मिट्टी फेंकते थे और कहते थे- "भागने वालो! क्या अल्लाह के रास्ते से भागे हो ?" आपने फरमया- भागने वाले नहीं हैं इन्शा अल्लाह हमला करने वाले हैं।

मूता की जंग और मक्का विजय के बीच

मूता की जंग और मक्का विजय के बीच एक सरिया (चढ़ाई) ज़ात अल सलासिल के नाम से जमादिउल आख़िर सन् 8 हिजरी में हुई। यह स्थान 'वादीउल कुरा' के पीछे था और क़बीला क़ज़ाआ के इलाके में था। इस मौके पर इस्लामी लश्कर ने दुश्मन का पूरी तरह सफाया कर दिया। दूसरा सरिया अल-ख़्ब्त का था। जिसके अमीर अबु उबैदा इब्नुल जर्राह थे। यह रजब सन् 8 हिजरी में भेजा गया था। इसमें अन्सार व मुहाजरीन के 300-300 सिपाही शामिल थे। आपने उनको जुहैना के एक क़बीले की गतिविधियों और उनका सिर कुचलने के लिए भेजा था। रास्ते में में इन मुहाजिरों को अत्याधिक भूख व फाका का सामना करना पड़ा। यहां तक कि पेड़ों के पत्तों से गुज़ारा करना पड़ा। उस समय समुन्द्र ने उनके लिए "अम्बर" नाम की एक बहुत बड़ी मछली प्रदान कर दी जिसने 15 दिन तक उनका काम चलाया। उन्होंने उसका तेल भी निकाला। इससे उनकी सेहत और ताकत बहाल हुई। अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने जब यह सुना तो फरमाया कि यह अल्लाह की तरफ से तुम्हारी मेहमानी थी, आप सल्ल0 ने उसका कुछ गोश्त भी खाया।

अध्याय उन्नीस

मक्का की विजय

जब इस्लाम और मुसलमानों की जड़ें मज़बूत हो गयीं, अल्लाह ने उनका हर तरह से इम्तेहान ले लिया और कुरैश के जुल्म, आरोप रूकावट और अनाचार का घड़ा छलकने लगा तो कुदरत का फैसला हुआ कि अल्लाह के रसूल सल्ल० और मुसलमान मक्का में विजयी बन कर दाख़िल हों। काबा को बुतों की गन्दगी से पाक व साफ करें। मक्का को उसकी पुरानी हैसियत पर वापस लाएं, अल्लाह के घर को पूरी इंसानियत के मार्गदर्शन व उसकी खुशहाली का स्रोत बनाएं और उसकी रहमत को पूरी दुनिया के लिए फैला दें।

बनीबक्र और कुरैश द्वारा समझौता तोड़ना

अल्लाह ने मक्का की कामयाबी के लिए विशेष कारण पैदा कर दिए और खुद कुरैश अप्रत्यक्ष रूप से मक्का की कामयाबी की वजह बनें। एक ऐसी बात हुई जिसने मक्का की विजय को न सिर्फ जायज़ बल्कि ज़रूरी कर दिया।

हुदैबिया समझौते के एक बिन्दु अनुसार जो व्यक्ति अल्लाह के रसूल सल्ल० के संरक्षण में आना चाहे वह ऐसा कर सकता था और जो व्यक्ति कुरैश के संरक्षण में रहना चाहता है वह ऐसा कर सकता था। इस लिए बनीबक्र कुरैश के संरक्षण में रहे और ख़ूज़ाआ ने अल्लाह के रसूल सल्ल० का संरक्षण पसन्द किया।

बनी बक्र और खुज़ाआ में इस्लाम के अभ्युदय से पहले से बहुत पुरानी दुश्मनी थी और बदले की कार्रवाईयों का एक सिलसिला जारी थी। जब हुदैबिया समझौते के बाद यह दोनों कबीले दो विरोधी शिविरों में बंट गए तो बनी बक्र ने मौके का फायदा उठाते हुए खुज़ाआ से अपना हिसाब किताब चुकता करना चाहा। बनी बक्र के कुछ लोगों ने सांठ गांठ करके खुज़ाआ पर उस समय रात में हमला किया जब वह पानी के एक सोते के पास ठहरे हुए थे, दोनों में लड़ाई हुई और खुज़ाआ के अनेक

लोग मारे गए।

कुरैश ने बनी बक्र की हथियारों से मदद की, और रात के अंधेरे का फायदा उठाते हुए कुरैश के बड़े सरदार इस लड़ाई में शामिल हुए। यह लोग खुज़ाआ को खदेड़ते हुए हरम काबा तक पहुंच गए। काबा के करीब पहुंचकर कुरैश के लोगों ने कहा– अब हम हरम में हैं, अपने माबूद (पूज्य) का ख्याल करो। उन्हें जवाब मिला कि आज के दिन कोई माबूद नहीं, बनी बक्र आज बदला चुका लो इसके बाद तुम्हें मौका नहीं मिलेगा।

इस मौके पर अम्र बिन सालिम अलखुज़ाई अल्लाह के रसूल सल्ल0 के पास आए और कुछ शेर पढ़े। आपके और खुजाआ के बीच जो समझौता हुआ था उसका वास्ता देकर आपकी मदद मांगी। उन्होंने आप सल्ल0 को सूचित किया कि कुरैश समझौते से पीछे हट गए हैं, और उन्होंने रात के समय खुजाआ पर चढ़ाई कर दी और नमाज़ की हालत में उन्हें क़त्ल किया गया। अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने यह सुनकर फरमाया, "अम्र बिन सालिम! तुम्हारी मदद ज़रूर की जाएगी।"

रसूल अल्लाह ने ज़रूरी समझा कि इस ख़बर की सच्चाई जान ली जाए। इसलिए आपने उनके पास एक आदमी को इस निर्देश के साथ भेजा कि उनके सामने तीन बातें रखें। एक–यह कि वह खुजाआ के क़त्ल किए गए लोगों का "ख़ूंबहा" (Blood Money) अदा कर दें, दो– अथवा बनी बक्र की शाखा बनूनिफासा जिसने इस समझौते का उल्लघंन किया है और खुजाआ पर हमला किया है, उससे सम्बन्ध तोड़ने का ऐलान करें। तीन– या फिर जैसा उन्होंने किया है वही उनके साथ किया जाएगा। इन शर्तों को कुरैश के सामने रखा गया। उनके सरदारों ने कहा कि हम बराबर का जवाब पसन्द करेंगे। इस तरह ज़िम्मेदारी कुरैश पर जा पड़ी और मुसलमानों की ज़िम्मेदारी ख़त्म हो गयी।

जब अल्लाह के रसूल सल्ल0 को यह ख़बर पहुंची तो अपने फरमाया, "मैं देख रहा हूँ कि अबु सुफियान समझौते की पुष्टि और उसकी अविध बढ़ाने के लिए तुम्हारे पास आए हैं। ऐसा ही हुआ। कुरैश को अपने किए पर पछतावा हुआ और उन्होंने अबु सुफियान को इस समझौते की पुष्टि और उसकी अविध बढ़ाने के लिए आपके पास भेजा।

अल्लाह के रसूल सल्ल0 माँ–बाप से बढ़कर

अबु सुफियान अल्लाह के रसूल सल्ल0 से मिलने मदीना आए तो अपनी लड़की और हज़रत मुहम्मद सल्ल0 की पत्नी हज़रत उम्मे हबीबा रज़ी0 के घर गए और आपके बिस्तर पर बैठना चाहा, लेकिन उम्मे हबीबा ने उनको रोक दिया। अबु सुफियान ने कहा–बेटी! मैं नहीं समझ पाया कि तुमने इस बिस्तर को मेरे लायक नहीं समझा या मुझको इस बिस्तर के लायक नहीं समझा। उम्मे हबीबा ने जवाब दिया कि यह अल्लह के रसूल सल्ल0 का बिस्तर है और आप मुश्रिक व नापाक हैं। मैं यह पसन्द नहीं करती कि आप इस बिस्तर पर बैठें। अबु सुफियान ने कहा अल्लाह की क़सम हम से जुदा होने के बाद तुम बहुत बदल गईं।

अबु सुफ़ियान की परेशानी

वहां से अबु सुफियान अल्लाह के रसूल सल्ल0 के पास गए और आपसे बात–चीत शुरू की, लेकिन आपने कोई जवाब नहीं दिया। फिर वह हज़रत अबुबक्र के पास गए और उनसे निवेदन किया कि वह उनकी तरफ से आपसे बात करें। उन्होंने जवाब दिया कि मैं यह काम नहीं कर सकता। उसके बाद अबु सुफियान ने हज़रत उमर और हज़रत अली रज़ी0 से विनती की, लेकिन उनमें से कोई तैयार न हुए और कहा कि मामला इतना संगीन है कि हम लोग बोल नहीं सकते। अबु सुफियान तब घबराए हुए हज़रत फातिमा के पास गए और कहा–ऐ मुहम्मद (सल्ल0) के बेटी! क्या तुम अपने इस बच्चे को (पाँच वर्षीय हज़रत हसन की तरफ इशारा करते हुए जो खेल रहे थे) इशारा कर सकती हो कि यह इतना कह दे कि मैंने पक्षों में बीच–बचाव करा दिया। ताकि वह क़यामत तक लिए अरबों का सरदार बन जाए। हज़रत फातिमा ने जवाब दिया– मेरा बच्चा अभी इस काबिल नहीं हुआ कि ऐसे अहम मामलों में दख़ल दे, फिर यह कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 को आप सल्ल0 की मर्ज़ी के खिलाफ कोई भी सुलाह सफाई के लिए तैयार नहीं कर सकता। जब हज़रत अली ने अबु सुफ़ियान की परेशानी देखी तो उन्होंने कहा–मैं नहीं समझता कि इस समय कोई चीज़ तुम्हारे काम आ सकती है। तुम बनी

किनाना के सरदार हो, खड़े हो और खुद लोगों में सुलाह–सफाई कराओ और तब अपने घर जाओ। अबु सुफियान ने कहा–क्या तुम्हारे विचार से इससे कुछ फायदा हो सकता है? हज़रत अली ने कहा–मैं तो ऐसा नहीं समझता लेकिन तुम्हारे पास इसके सिवा कोई चारा ही क्या है। यह सुनकर अबु सुफियान मस्जिद में गए और वहां खड़े होकर ऐलान किया, "लोगों! मैं ने सुलाह करा दी।" इसके बाद वह ऊंट पर सवार होकर चल दिए।

जब कुरैश ने यह सुना तो कहने लगे कि तुम तो कोई काम की बात लेकर नहीं आए। यह कार्यवाही न हमारे लिए लाभदायक है न तुम्हारे लिए।

हातिब बिन अली बलतआ का ख़त

अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने लोगों को जेहाद की तैयारी का हुक्म दिया और निर्देश दिया कि सभी बातों को गोपनीय रखा जाए। इसके बाद आपने अपने मक्का प्रस्थान करने का ऐलान किया। आपने अल्लाह से दुआ की ऐ अल्लाह! इनका बंदोबस्त फरमा दे कि कुरैश का कोई जासूस अपना काम न कर सके और हम अचानक कुरैश के सिर पर पहुंच जाएं।

मदीना का इस्लामी समाज एक इन्सानी समाज था और इसमें मानव प्रवृत्तियों, भावनाओ और इच्छाओं की वह झलकियां मौजूद थीं जो किसी सजग समाज में स्वभाविक रूप से पायी जाती हैं। इसके लोग सही काम भी करते थे और उनसे ग़लतियां भी होती थीं। मुमकिन है कि उनके कुछ फैसले अकारण न रहते हों और उनमें वह हक़ पर भी हों। असल में यह उस हर एक मानव समाज की विशेषता है जिसमें आज़ादी व आत्म विश्वास की भावना पैदा हो। अल्लाह के रसूल सल्ल0 उनकी ग़लतियों को माफ कर देते और इस्लाम के प्रचार में उनके कारनामों और उनकी सेवाओं का आपको हमेशा एहसास रहता। हदीस, सीरत (पवित्र जीवनी) और इस्लामी इतिहास के लेखकों ने कुछ ऐसी बातों को सुरक्षित कर दिया है जो अपने आप में खुद इन किताबों की अमानत, सच्चाई

और न्याय पसन्दी का सबूत हैं।

इन घटनाओं में हातिब बिन अली बलतआ की घटना भी है। हातिब उन लोगों में है जिन्होंने मक्का से हिजरत की और जंगे बद्र में शामिल हुए। उल्लेखनीय है कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने जब अपने साथियों से मक्का पर चढ़ाई का इरादा ज़ाहिर किया और ख़ामोशी के साथ उसकी तैयारियां शुरू हो गयीं तो हातिब बिन अली बलतआ ने एक ख़त लिखा जिसमें मक्का वासियों के लिए रसूल अल्लाह सल्ल0 के प्रस्थान की सूचना थी। उन्होंने यह ख़त एक औरत को दिया और कहा कि अगर वह इसे सुरक्षित कुरैश तक पहुंचा दे तो इसके लिए उसे मेहनताना दिया जाएगा। उस औरत ने ख़त अपने बालों के जूड़े में छिपा लिया और रवाना हो गई। अल्लाह के रसूल सल्ल0 को जब अल्लाह की तरफ से इसकी सूचना मिली तो आपने हज़रत अली और हज़रत ज़ुबैर रज़ी0 को उसका पीछा करने के लिए भेजा। आप सल्ल0 ने यह निर्देश दिया कि जब तुम लोग रौज़तुल ख़ाख़ (मदीना और मक्का के बीच एक जगह) के करीब पहुंचोगे तो तुमको वहां एक मुसाफिर औरत मिलेगी। जिसके पास कुरैश के नाम एक ख़त होगा। यह दोनों सहाबी घोड़े दौड़ाते हुए वहां पहुंचे, उसी जगह उन्हें वह औरत मिली। उन्होंने उसको सवारी पर से उतरने को कहा और पूछा कि तुम्हारे पास कोई ख़त है? उसने जवाब दिया कि मेरे पास कोई ख़त नहीं है। उन्होंने उसके सामान की तलाशी ली लेकिन कुछ न मिला।

तब हज़रत अली ने उसे डराया-धमकाया और कहा कि तुम्हारे पास ख़त है और तुम्हें इसको बाहर निकालना होगा। जब उसने देखा कि यह लोग पीछा नहीं छोड़ेंगे तो उसने अपने जूड़े से वह ख़त निकाला और उनके हवाले कर दिया। यह दोनों लोग ख़त लेकर अल्लाह के रसूल सल्ल0 के पास पहुंचे। यह ख़त हातिब का था जिसमें कुरैश को मक्का पर चढ़ाई की सूचना दी गयी थी। आपने हातिब को बुला भेजा। हातिब ने कहा– या रसूल अल्लाह! आप जल्दी न करें, अल्लाह की क़सम मैं अल्लाह और रसूल सल्ल0 पर ईमान रखता हूँ, न मैं ने अपना दीन बदला है न अपनी वफादारी। लेकिन मेरा कुरैश से वैसा सम्बंध नहीं

है जैसा इन मुहाजिरों का है। मैं सिर्फ उनके पक्ष में हूँ। मेरे घर के लोग और बच्चे तो वहां हैं लेकिन उन्हें ख़ानदानी तौर पर कोई संरक्षण हासिल नहीं है।☆

मैंने सोचा कि जब मुझे यह सुविधा हासिल नहीं तो है तो मैं उन पर कोई ऐसा एहसान कर दूं जिससे मेरे ख़ानदान के लोग सुरक्षित रहें। हज़रत उमर ने यह सुनकर कहा– या रसूल अल्लाह सल्ल0! मुझे इजाज़त दें मैं इसी समय इनकी गर्दन उड़ा दूँ, क्योंकि इन्होंने अल्लाह और उसके रसूल सल्ल0 के साथ धोका किया है और यह मुनाफ़िकों में है। अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने फरमाया– वह बद्र में शामिल थे, उमर तुम्हें क्या मालूम कि कहीं अल्लाह ने बद्र वालों को संबोधित करके फरमा दिया हो कि तुम चाहे जो करो मैंने तुम्हारे सब कसूर माफ कर दिए हैं ? यह सुनकर हज़रत उमर रज़ी0 की ऑखों में आंसू आ गए। उन्होंने कहा– अल्लाह और अल्लाह के रसूल सल्ल0 ज़्यादा जानते हैं।

अल्लाह के रसूल सल्ल0 रमज़ान के महीने में मदीने से रवाना हुए। आपके साथ 10 हज़ार सहाबी थे। आप सल्ल0 ने मर–अल–ज़हरान में पड़ाव किया। कुरैश को इसकी बिल्कुल ख़बर नहीं हो पाई। अल्लाह ने उन्हें बेख़बर रखा।

माफीनामा

रास्तें में आपको आपके चचेरे भाई अबु सुफियान मिले, आपने उनसे मुँह फेर लिया क्योंकि उन्होंने आपको बड़ा दुख पहुंचाया था और आपका अपमान किया था। अबु सुफियान हज़रत अली से मिले और इस बात की शिकायत की। हज़रत अली ने कहा कि तुम अल्लाह के रसूल सल्ल0 के सामने आकर वह कहो जो यूसुफ अ0 के भाईयों ने यूसुफ अ0 से कहा था अर्थात " अल्लाह की क़सम अल्लाह ने आपको हम पर बड़ा ठहराया है और बेशक हम दोषी है।" उन्होंने यही किया। उनकी क्षमा याचना सुनकर आपने फरमाया–आज तुम पर कोई आरोप नहीं। अल्लाह तुम्हें मॉफ फरमाए और वह सब रहम करने वालों से अधिक रहीम है। इसके बाद अबु सुफियान बिन हारिस बिन अब्दुल मुत्तलिब बहुत अच्छे,

सच्चे पक्के मुसलमान बनें, लेकिन मुसलमान होने के बाद शर्म के मारे फिर उन्होंने कभी आपसे आँखें नहीं मिलायीं।

अबु सुफ़ियान बिन हरब रसूल अल्लाह के सामने

अल्लाह के रसूल सल्ल० के आदेशानुसार आग के अलाव जलाए गए। इसी बीच अबु सुफियान बिन हरब टोह लेने के लिए उधर से गुज़रे और उनके मुँह से निकला– इस शान का लश्कर और ऐसी रोशनी तो मैं ने इससे पहले कभी नहीं देखी। हज़रत अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब इस लश्कर में मौजूद थे। उन्होंने अबु सुफियान की आवाज़ पहचान ली, और कहा–देखो अल्लाह के रसूल सल्ल० अपनी सेना के साथ यहां मौजूद हैं। कल कुरैश के लिए बुरा दिन होगा। हज़रत अब्बास ने यह सोचकर कि अगर कोई मुसलमान अबु सुफियान को देख लेगा तो उनका काम तमाम कर देगा, उन्हें अपने खच्चर के पीछे बैठा लिया और आपके पास लाए। उन्हें देखकर आपने फरमाया–अबु सुफियान! तुम्हारा भला हो। क्या अभी तक इसका समय नहीं आया कि तुम ईमान लाओ कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं? अबु सुफियान ने कहा– मेरे माँ–बाप आप पर कुर्बान आप कितने उदार और सज्जन हैं। मैं तो सोचता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद होता तो आज मेरे कुछ काम आता। आपने फरमाया, अबु सुफियान! अल्लाह तुमको समझ दे। क्या अब भी समय नहीं आया कि तुम इस बात को मानो कि मैं अल्लाह का रसूल हूँ? अबु सुफियान ने कहा–मेरे माँ–बाप आप पर कुर्बान आप कितने उदार और सज्जन हैं, लेकिन इस मामले में मुझे अभी कुछ शक है। यह सुनकर हज़रत अब्बास बोल उठे, "अल्लाह के बन्दे, इससे पहले कि तुम्हारी गर्दन तलवार से उड़ा दी जाए इस्लाम कुबूल कर लो और गवाही दो कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं, और मुहम्मद (सल्ल०) अल्लाह के रसूल हैं।" यह सुनकर अबु सुफियान ने यह शब्द कहे और मुसलमान हो गए।

आम माफ़ी

अल्लाह के रसूल सल्ल० ने उस दिन माफी, अमन व शांति के दरवाज़े खोल दिए। आपने फरमाया कि जो अबु सुफियान के घर में

दाख़िल जो जाएगा उसको पनाह मिलेगी। जो अपने घर का दरवाज़ा बन्द करेगा वह सुरक्षित है जो मस्जिद हरम में दाख़िल होगा उसके लिए अमन है।

आपने अपनी सेना को निर्देश दिए कि मक्का में दाख़िल होते समय सिर्फ़ उस व्यक्ति पर हाथ उठाएं जो उनके रास्ते में रुकावट पैदा करे। आपने यह भी आदेश दिया कि मक्का वासियों की चल–अचल मनकूला सम्पत्ति में बिल्कुल हस्तक्षेप न किया जाए।

अबु सुफ़ियान ने बढ़ती हुई इस्लामी टुकड़ियां देखीं

अल्लाह के रसूल सल्ल० ने हज़रत अब्बास से कहा कि अबु सुफियान को ऐसी जगह ले जाएं जहां से इस्लामी टुकड़ियां आगे बढ़ते हुए दिखाई दें। यह टुकड़ियां समुन्द्र की लहरों की तरह आगे बढ़ रहीं थीं। क़बीले अपने झण्डों के साथ गुज़र रहे थे। जब कोई क़बीला गुजरता तो अबु सुफियान हज़रत अब्बास से उसका नाम पूछते। जब उन्हें नाम बताया जाता तो कहते कि मुझे इस क़बीले से क्या काम? आख़िर में अन्सार व मुहाजिरो की टुकड़ी के साथ अल्लाह के रसूल सल्ल० पधारे। इस कवचधारी टुकड़ी के लोगों की सिर्फ आँखें दिखाई पड़ती थीं।

अबु सुफियान ने यह नज़ारा देखकर कहा कि अल्लाह की शान, अब्बास! यह कौन लोग हैं? अब्बास ने कहा कि यह अल्लाह के रसूल सल्ल० हैं जो मुहाजिरों और अन्सार के झुरमुट में जा रहे हैं। अबु सुफियान ने कहा 'इनमें से किसी को भी इससे पहले ऐसी शान व शौकत हासिल न थी। अल्लाह की क़सम ऐ अबुल फज़ल! तुम्हारे भतीजे की सत्ता आज कितनी ऊंची है। हज़रत अब्बास ने कहा– अबु सुफियान! यह नुबूवत का चमत्कार है। इसके बाद अबु सुफियान ने बुलन्द आवाज़ से ऐलान किया, ऐ कुरैश के लोगों! यह मुहम्मद सल्ल० इतनी ताक़त के साथ तुम्हारे पास आए हैं, जिसकी तुम कल्पना न करते होगे। अब जो अबु सुफियान के घर में आ जाएगा उसको अमान दी जाएगी। लोग यह सुनकर कहने लगे– अल्लाह तुम से समझे, तुम्हारे घर की हैसियत ही

क्या है हम सब को उसमें पनाह मिल सके। अबु सुफियान ने कहा– जो अपने घर का दरवाज़ा बन्द कर लेगा उसको अमन मिलेगा जो मस्जिदे हरम में चला जाएगा उसको अमन मिलेगा। अतः वह लोग अपने घरों और मस्जिदे हरम में पनाह लेने चल पड़े।

कामयाबी लेकिन रहम

अल्लाह के रसूल सल्ल0 मक्का में इस शान से दाख़िल हुए कि आपका सर बन्दगी व विनय के कारण झुक गया था। मक्का में दाख़िल होते समय आप सूरः फातहा का पाठ फरमा रहे थे और ढोड़ी ऊंटनी के कोहान को छूने को थी। यह 21 रमज़ान शुक्रवार की सुबह होने वाली रात है। मक्का में एक विजयी के तौर से दाख़िल होते समय अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने इन्साफ व बराबरी, विनय और बन्दगी का विशेष ध्यान रखा। हज़रत ज़ैद आपके गुलाम थे, जिन्हें आपने आज़ाद कर दिया। इस मौके पर आपने उनके लड़के उसामा को अपने साथ ऊंटनी पर बिठाया। हालांकि उस समय वहां बनी हाशिम और कुरैश के अनेक जाने माने लोग मौजूद थे। विजय के दिन एक व्यक्ति आपसे बात करते हुए कांपने लगा तो आपने फरमाया–डरो नहीं! इत्मिनान रखो, मैं कोई बादशाह नहीं हूँ। मैं तो कुरैश की एक ऐसी औरत का लड़का हूँ जो गोश्त के सूखे टुकड़े खाया करती थी।

माफी का दिन

जब अन्सार की टुकड़ी के अमीर साद बिन एबादा अबु सुफियान के पास से गुज़रे तो उन्होंने कहा आज घमासान लड़ाई है और ख़ूँरेजी का दिन है। आज काबा में सब जायज़ होगा, आज अल्लाह ने कुरैश को नीचा दिखाया है। इसके थोड़ी देर बाद जब अल्लाह के रसूल सल्ल0 अपनी टुकड़ी के साथ अबु सुफियान के पास से गुज़रे तो उन्होंने आपसे इसकी शिकायत की। आपने साद की कही गई बातों को सुना तो उसे न पसन्द फरमाया। आपने कहा, 'नहीं' आज तो रहम व माफी का दिन है। आज अल्लाह कुरैश को इज़्ज़त देगा और काबा की गरिमा बढ़ाएगा।' इतना ही नहीं, आप सल्ल0 ने हज़रत साद को बुलवाया और उनसे

इस्लामी झण्डा लेकर उनकी बेटे कैस को दे दिया। आपने यह सोचा कि उनके बेटे को झण्डा देने का मतलब यह होगा कि मानो झण्डा उनसे वापस नहीं लिया गया।

इस तरह एक अक्षर के हेरफेर (अर्थात 'अलमलहमा' के स्थान पर 'अलमरहमा' कहकर, अलमलहमा का अर्थ है घमासान जंग और अलमरहमा का अर्थ है रहम और माफ़ी।) से और एक बाप के हाथ से झण्डा लेकर बेटे के हाथ में दे देने से साद बिन एबादा का ज़रा भी दिल तोड़े बिना आपने अबु सुफियान की दिल जोई का सामान ऐसे विवेक पूर्ण ढंग से पैदा कर दिया कि इससे अच्छे ढंग की कल्पना करना कठिन है। आप अबु सुफियान के चोट खाए दिल को तसल्ली भी देना चाहते थे और साद बिन एबादा, जिन्होंने इस्लाम की बड़ी सेवा की थी, के दिल को ठेंस भी नहीं पहुंचाना चाहते थे। यह आपकी जतनपूर्ण व्यवहार कुशलता का एक जीता जागता उदाहरण है।

कुछ झड़पें

इस बीच सफ़वान बिन उमैया, एकरिमा बिन अबी जहल, सुहैल बिन अम्र ने खालिद बिन वलीद के रास्ते में रुकावटें पैदा कीं जिसके फलस्वरूप उनमें और खालिद के साथियों के बीच कुछ झड़पें हुईं। इन झड़पों में लगभग 12 मुश्रिक मारे गए। इसके बाद उन्होंने हार मान ली।

काबा से बुतों की सफाई

जब मक्का में हालात सामान्य हो गए और लोग अपने काम व कारोबार में लग गए तो अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने जाकर काबा का तवाफ किया। उस समय काबा में 360 बुत थे। आपके हाथ में एक कमान थी आप उससे बुतों को कोचते जाते थे और कहते जाते थे—"हक़ आ गया और बातिल मिट गया और बातिल मिटने की चीज़ है" इसी के साथ यह तमाम बुत एक एक करके मुँह के बल गिरते जाते। काबा में कुछ तस्वीरें भी थीं आप सल्ल0 के हुक्म से उनको भी तोड़ दिया गया।

जब आपने तवाफ पूरा कर लिया तो आपने उस्मान बिन तलहा (जिनके पास काबा की कुंजी थी) को बुलवाया। उनसे काबा की कुंजी

ली। दरवाज़ा खोला गया और आप काबा में दाख़िल हुए। इससे पहले मदीना हिजरत करने से पूर्व जब आपने एक दिन यह कुंजी मांगी तो उस्मान ने सिर्फ इन्कार ही नहीं किया बल्कि आपसे गुस्ताख़ी के स्वर में बात की थी। आपने उस वक्त बहुत नरमी से कहा था, "उस्मान! तुम यह कुंजी किसी वक्त मेरे हाथ में देखोगे, तब मैं जिसे चाहूंगा इसे दूंगा।" और इसके जवाब में उस्मान ने कहा था "अगर ऐसा हुआ तो वह दिन कुरैश की बड़ी ज़िल्लत व तबाही का दिन होगा।" और आप सल्ल0 ने फरमाया था, "नहीं, उस दिन वह आबाद और इज़्ज़त वाले होंगे" आपके यह शब्द उस्मान बिन तलहा के दिल में उतर गए और उन्होंने महसूस किया कि जैसा आप सल्ल0 ने फरमाया वैसा ही होगा।

जब आप काबा से बाहर आए तो कुंजी आपके हाथ में थी। आपको देखते ही हज़रत अली खड़े हो गए और निवेदन किया, "अल्लाह आपको सलामत रखे। आप सक़ाया (पानी पिलाने के बंदोबस्त) के साथ हेजाबा (काबा की दरबानी) भी हमें प्रदान करें।" आपने पूछा, " उस्मान बिन तलहा कहाँ हैं?" उनको बुलाया गया। आपने फरमाया, " उस्मान! लो यह तुम्हारी कुंजी है। आज अच्छे सलूक और वफादारी का दिन है। यह कुंजी लो जो तुम्हारे पास हमेशा-हमेशा रहेगी और ज़ालिम के सिवा कोई तुमसे इसको छीन नहीं सकेगा।

अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने जब काबा से निकलने के लिए उसका दरवाज़ा खोला तो कुरैश पूरे हरम में पंक्तिबद्ध खड़े थे और प्रतीक्षा में थे कि अब आप क्या करने वाले हैं। आपने दरवाज़े के दोनों बाज़ू थाम के फरमायाः-

"एक अल्लाह के सिवा और कोई अल्लाह नहीं, उसका कोई शरीक नहीं है, उसने अपना वादा सच्चा किया, अपने बन्दे की मदद की, और सभी जत्थों को अकेले हराया, याद रखो कि बदला और खून बहा सब मेरे क़दमों के नीचे है, सिर्फ काबा की देख-रेख और हाजियों को पानी पिलाने का बन्दोबस्त छोड़कर। ऐ कुरैश के लोगो! अब जेहालत का गुरूर और नसब (वंशज) का घमण्ड अल्लाह ने मिटा दिया। तमाम लोग आदम की नस्ल से हैं और

आदम मिट्टी से बने थे।"

इसके बाद आपने कुर्आन की निम्न आयत पढ़ीः–

अनुवादः– "लोगो! हमने तुमको एक मर्द और एक औरत से पैदा किया और तुम्हारी क़ौम और क़बीले बनाए ताकि एक दूसरे की पहचान करो और अल्लाह के नज़दीक तुममें ज़्यादा इज़्ज़त वाला वह है जो ज़्यादा परहेज़गार है। बेशक अल्लाह सब कुछ जानने वाला (और) सबसे ख़बरदार है।" (सूरः हजरात–13)

नबी–ए–रहमत सल्ल0

इसके बाद अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने उन्हें सम्बोधित करते हुए फरमाया," ऐ कुरैश के लोगो! तुम्हे क्या उम्मीद है कि इस समय मैं तुम्हारे साथ क्या करूंगा।" उन्होंने जवाब दिया, " हम अच्छी उम्मीद रखतें हैं। आप रहम दिल और सज्जन हैं और हमदर्द व सज्जन भाई के बेटे हैं।" आपने कहा मैं तुमसे वही कहता हूँ जो यूसुफ अ0 ने अपने भाईयों से कहा था– " आज तुम पर कोई आरोप नहीं, जाओ तुम सब आज़ाद हो।" इसके बाद हज़रत बिलाल रज़ी को हुक्म दिया कि काबा पर चढ़कर अज़ान दें। कुरैश ने यह एलान सुना और मक्का की घाटी में अज़ान की आवाज़ गूंज उठी। अल्लाह के रसूल सल्ल0 उम्मे हानी (पुत्री अबी तालिब) के घर गए, स्नान किया और शुक्राने की 8 रकआतें फतह की नमाज़ (सलातुल फतह) अदा की।

भाई–भतीजावाद नहीं

बनी मखज़ूम की एक औरत ने जिसका नाम फातिमा था, इस गज़वा में चोरी की। उसकी बिरादरी के लोग उसामा बिन ज़ैद के पास इस विचार से गए कि वह अल्लाह के रसूल सल्ल0 को बहुत प्रिय हैं, और सिफारिश करना चाही। उन्होंने जब इस मामले में अल्लाह के रसूल सल्ल0 से बात की तो आपके चेहरे का रंग बदल गया। आपने फरमाया, "तुम मुझसे अल्लाह द्वारा तय की गयी सीमाओं में से किसी सीमा के बारे में बात करते हो।" ☆ उसामा ने कहा– 'या रसूल अल्लाह! मैं बहुत शर्मिन्दा हूँ, आप मेरे लिए अल्लाह से दुआ करें। मुझसे बड़ी भूल

हुई। अल्लाह मुझे माफ़ करे।" शाम को जब सब लोग जमा हुए तो अल्लाह के रसूल सल्ल ने अल्लाह की बड़ाई बयान करने के बाद फ़रमाया, "तुमसे पहले लोग इस लिए मिट गए कि उनमें से जब कोई शरीफ़ और हैसियत वाला आदमी चोरी करता था तो वह उसको छोड़ देते थे, बूढ़ा और कमज़ोर व्यक्ति चोरी करता था तो उसे सज़ा देते थे। उस ज़ात की क़सम जिसके क़ब्ज़े में मुहम्मद की जान है, अगर फ़ातिमा बिन्त मुहम्मद ने भी चोरी की होती तो मैं उसके हाथ काट देता।"

इसके बाद आपने हुक्म दिया कि इस औरत के हाथ काट दिए जाऐं, इस लिए उसके हाथ काटे गए। फिर सच्चे दिल से उसने तौबा की, उसकी दशा सुधर गई और उसने शादी भी कर ली।

☆ क़ुर्आन व सुन्नत के अनुसार निर्धारित सज़ाएं।

दुश्मनों के साथ अच्छा सुलूक

जब पूरी तरह कामयाबी मिल गयी तो सबको अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने अमान दे दी, सिर्फ 9 लोगों को छोड़कर जिनके क़त्ल का हुक्म हुआ। भले ही वह काबा के पर्दों के अन्दर मिलें। उनमें कोई वह था जो इस्लाम लाने के बाद इस दीन से फिर गया, किसी ने धोखा देकर किसी मुसलमान को क़त्ल किया था, किसी ने आपकी बुराई बयान करने को अपने मनोरंजन का साधन बना लिया था। इनमें अब्दुल्लाह बिन साद बिन अदी सरह भी था जो इस दीन से फिर गया था। एकरिमा बिन अबी सरह भी था जो इस्लाम से नफ़रत और जान के डर से अपना वतन छोड़कर यमन चला गया था। उसकी पत्नी ने उसके फ़रार के बाद अल्लाह के रसूल सल्ल0 से उसके लिए अमान मांगी। आपने यह जानते हुए कि वह सारी दुनिया में आपके घोर दुश्मन का लड़का है, उसको अमान दी, और खुशी से उसका स्वागत करने के लिए उसकी तरफ़ इस तरह लपके कि चादर आपके बदन से हट गयी थी। एकरिमा इस्लाम लाए तो आपको बहुत खुशी हुई। मुसलमानों में उन्हें विशेष स्थान मिला। धर्म–त्याग की लड़ाईयों तथा बाज़नतीनी जंगों में उन्होंने बड़ा काम किया। उन 9 लोगो में आपके प्यारे चचा सैय्यदना हमज़ा के क़ातिल

वहशी भी थे। जिन्हें आपने मुसलमान हो जाने की वजह से माफ कर दिया। इनमें हब्बार–बिन–असवद भी था जिसने आपकी बेटी हज़रत ज़ैनब के पहलू पर बर्छी से हमला किया था, जिससे वह एक चट्टान पर गिर पड़ी और गर्भपात की घटना घटित हुई। इस घटना के बाद वह मक्का से भाग गया था लेकिन बाद में वह मुसलमान हो गया और उसे भी आपने माफ कर दिया। सारा तथा दो अन्य गाने वालियों के सम्बन्ध में, जो आपकी निन्दा में कह गए शेर गाती थीं, भी आपसे अमान चाही गई। आपने उन्हें अमान दी और वह मुसलमान हो गयीं।

हिन्द बिन्त उत्बा से आपका संवाद

मक्का में एक भीड़ आपसे इस्लाम पर बैअत करने के लिए जमा हो गयी। आप उनको लेकर सफा पहाड़ी पर गए और वहां बैठ कर उनसे अल्लाह और रसूल की बात सुनने और उसे मानने की शपथ ली। जब आप मर्दों की बैअत कर चुके तो आपने महिलाओं से बैअत की। इन महिलाओं में अबु सुफियान की पत्नी हिन्द बिन्त उत्बा भी थी। वह पर्दे में थी और सैयृयदना हमज़ा रज़ी0 के साथ उसने जो कुछ किया उसकी वजह से अपने को जाहिर नहीं करना चाहती थी।

आपने फरमाया– इस पर मुझसे बैअत करो कि अल्लाह के साथ तुम किसी को शरीक नहीं ठहराओगी। हिन्द ने कहा– अल्लाह की क़सम आप हमसे इक़रार ले रहे हैं जो अन्य मर्दों से नहीं लिया है। अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने कहा, "और चोरी न करोगी।" हिन्द ने कहा, "मैं ने अबु सुफियान के माल में से अक्सर थोड़ा–थोड़ा लिया है। मैं नहीं जानती थी कि ऐसा करना हलाल है यह हराम।" यह सुनकर अबु सुफियान ने कहा, "जहां तक पिछली बात का सम्बन्ध है तुम उससे बरी हो, तुम्हारे लिए हलाल है।" इस पर अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने फरमाया– "अच्छा! तुम उत्बा की बेटी हिन्द हो?" हिन्द ने कहा, 'हाँ! आप मेरे पिछले कुसूर माफ करें। अल्लाह आप को माफ करे।' आपने फरमाया,"और ज़िना (अवैध शरीरिक संबंध) न करोगी।" हिन्द ने कहा, 'या रसूल अल्लाह क्या कोई शरीफ औरत ज़िना भी कर सकती है।?' आपने फरमाया, "अपनी

औलाद को क़त्ल नहीं करोगी।" यह सुनकर हिन्द ने कहा, 'जब तक वह बच्चे थे हमनें उन्हें पाला, जब बड़े हुए तो आपने उन्हें क़त्ल किया। अब आप जानें और वह जानें। आप सल्ल0 ने कहा– "कोई खुला हुआ बोहतान (आरोप) न बांधोगी।"। हिन्द ने कहा, 'अल्लाह की क़सम, बोहतान बान्धना बहुत बुरी बात है और कभी कभी इसकी अन देखी कर देना ज़्यादा बेहतर है।' आपने फरमाया, "और मेरी ना फरमानी (अवज्ञा) न करोगी। हिन्द ने कहा, 'हाँ, अच्छी बातों में।

हमेशा के साथी

जब अल्लाह ने मक्का के दरवाज़े अपने रसूल सल्ल0 के लिए खोल दिए तो अन्सार ने आपस में एक दूसरे से कहा कि अल्लाह ने अपने रसूल सल्ल के लिए आप सल्ल0 का देश व वतन फतेह फरमा दिया है। अब आप यहां रुक जाएंगे, मदीना वापस न जाएंगे। ऐसा शक अन्सार के दिलों में पैदा हुआ। आपने उनसे पूछा–"तुम लोग क्या बात कर रहे थे?" इस बात को उनके सिवा कोई और नहीं जानता था। अन्सार बहुत शर्मिन्दा हुए और कुछ हिचकिचाहट के बाद साफ–साफ आपसे बता दिया। उनकी बात सुनकर आप सल्ल0 ने फरमाया, "अल्लाह माफ करे, ऐसा कैसे हो सकता है, जीना भी तुम्हारे साथ है और मरना भी तुम्हारे साथ।"

दुश्मन, दोस्त और पापी सन्त बन गए

फजाला बिन उमैर की नीयत खराब हुई और उसने यह योजना बनाई कि जब अल्लाह के रसूल सल्ल तवाफ कर रहे हों, उस समय आप पर हमला करे। इस इरादे से जब वह आपके करीब आया तो आपने उससे कहा, " फजाला"उसने कहा "जी, या रसूल अल्लाह" आपने फरमाया,"इस समय तुम्हारे दिल में क्या आ रहा था।" उसने कहा, "कुछ नहीं, अल्लाह को याद कर रहा था।" आप यह सुन हंसे और फरमाया, "अल्लाह से माफी चाहो।" फिर अपना हाथ उसके सीने पर रखा। उसका दिल शांत हो गया। फजाला बयान करते थे आप सल्ल0 ने अपना हाथ मेरे सीने पर से हटाया भी न था सारी सृष्टि में

मेरे लिए आप सल्ल0 से अधिक प्यारा कोई और न था। वह कहते थे कि इसके बाद मैं अपने घर की तरफ चला, रास्ते में मुझे वह औरत मिली जिससे मैं कुछ बातें किया करता था। उसने कहा, आओ फजाला बैठें, कुछ बात करें। फजाला ने जवाब दिया, अल्लाह और इस्लाम अब इसकी अनुमति नहीं देता।

मूर्तिपूजा पूरी तरह ख़त्म

अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने काबा के चारों तरफ जितने बुत थे उन्हें नष्ट करने के लिए दल भेजे और यह सभी बुत टुकड़े–टुकड़े कर दिए गए। इनमें "लात" "उज्जा" और "मनात" के बुत भी शामिल थे। इसके बाद आपके मुनादी ने मक्का में ऐलान कर दिया कि हर वह व्यक्ति जो अल्लाह और आख़िरत के दीन पर यक़ीन रखता है उसको चाहिए कि अपने घर के हर बुत को तोड़ दे। आपने अपने साथियों में से कुछ लोगों को विभिन्न कबीलों में भेजा और उन्होंने वहां जाकर बुतों को तोड़ने का काम अंजाम दिया।

जरीर बयान करते हैं कि उन दिनों एक बुत ख़ाना था जिसका नाम "जुलखलसा" थी। इसी तरह "अलकाबातुल यमानिया" और "अल काबातुल शामिया" के नाम से बुत ख़ाने थे। अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने मुझ से फरमाया," क्या तुम 'जुलखलसा' को टुकड़े–टुकड़े करके मुझे राहत न पहुंचाओगे? जरीर कहते हैं कि मैं डेढ़ सौ शह सवारों को लेकर वहां गया। उस बुत को भी तोड़ डाला और जितने लोग उस समय वहां थे उनको भी मौत की घाट उतार दिया। जब वापस आकर अल्लाह के रसूल सल्ल0 को इसकी सूचना सुनाई तो आपने हमारे लिए और अहमस, जहां के शह सवार थे, के लिए दुआ की।

फिर आपने मक्का में ख़ड़े होकर ऐलान किया, "किसी व्यक्ति के लिए जो अल्लाह और आख़िरत के दीन पर ईमान ला चुका है, यह जायज़ नहीं है कि इसमें ख़ून बहाए या यहां के किसी पेड़ को काटे। न मुझसे पहले किसी के लिए यहां ऐसा करना जायज़ था और न मेरे बाद जायज़ होगा।" इसके बाद आप मदीना वापस आए।

मक्का विजय का असर

मक्का की विजय का अरबों के दिलों पर गहरा असर पड़ा। अल्लाह ने उनके दिल इस्लाम के लिए खोल दिए, और उन्होंने टोलियों में आ-आ कर इस्लाम कुबूल करना शुरू किया। कुछ ऐसे क़बीले भी थे जो कुरैश के साथ किसी न किसी समझौते से जुड़े बन्धे थे और उसकी पाबन्दी उनके इस्लाम कुबूल करने में रूकावट बन रही थी, कुछ क़बीले कुरैश से डरते थे, उनकी लड़ाई उनके दिलों में घर कर चुकी थी। जब उन्होंने देखा कि कुरैश ने इस्लाम के सामने हथियार डाल दिए हैं तो उनको भी इसका शौक़ पैदा हुआ और इस तरह वह रुकावट दूर हो गयी।

कुछ क़बीलों का यकीन था कि मक्का में कोई ज़ालिम व जाबिर दाख़िल नहीं हो सकता है न उसे बुरी नियत से फतह कर सकता है। उनमें ऐसे लोग भी थे जिनके सामने हाथी वाली घटना हुई थी और उन्होंने अपनी ऑखों से देखा था कि अब्रहा को कैसी मुँह की खानी पड़ी थी। वह कहते थे जाने दो इनके और इनकी क़ौम के पीछे पड़ने की ज़रूरत नहीं। अगर वह विजयी होते है तो यह इस बात का एलान हैं कि वह सच्चे नबी हैं।

फतह मक्का के बाद और कुरैश के इस्लाम लाने के बाद अरब वासी इस्लाम की तरफ जिस तरह आकर्षित हुए कि इससे पहले इसका कोई उदाहरण नहीं मिलता। उनके बड़े-बड़े जत्थे आपके पास आते और इस्लाम कुबूल करते। इसका नक़्शा कुर्आन पाक में इस तरह आया है।

अनुवादः- "जब अल्लाह की मदद आ पहुंची और फतह (हासिल हो गई) और तुमने देख लिया कि लोग जत्थे के जत्थे अल्लाह के दीन में दाख़िल हो रहे हैं।" (सूरः नस्र)

कमसिन अमीर (लीडर)

मक्का से निकलने से पहले आप सल्ल० ने अत्ताब बिन उसैद को मक्का के मामलों और हज बन्दोबस्त की देखभाल के लिए अमीर (लीडर) नियुक्त किया। उनकी उम्र उस समय लगभग 20 वर्ष थी। उस समय

मक्का में अत्ताब से अधिक उम्र वाले अनेक अनुभवी और योग्य लोग मौजूद थे लेकिन अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने अत्ताब का चयन किया जो यह बताता है कि पद और पदवी योग्यता व क्षमता के आधार पर मिलती है। हज़रत अबुबक्र रज़ी0 ने भी अपने शासन काल में उनको इसी पद पर उसी तरह बनाए रखा।

अध्याय बीस

हुनैन की जंग

मक्का की शानदार फतह और उसके बाद बड़ी संख्या में लोगों को मुसलमान होते देखकर इस्लाम दुश्मन बौखला उठे, और उन्होंने इसे रोकने के लिए अपने तरकश का आख़िरी तीर भी चला दिया, लेकिन वह अपनी योजना में कामयाब नहीं हो सके।

हवाज़िन का जमाव

क़बीला हवाज़िन कुरैश के बाद ताक़त में दूसरे नम्बर पर था। उनके और कुरैश के बीच पहले से ही दुश्मनी चली आ रही थी। इस लिए कुरैश को इस्लाम के असर में आते देखकर हवाजिन के लोग इस्लाम विरोध पर और अधिक उतारू हो गए। वह इस कोशिश में लग गए कि इस्लाम की जड़ें काटने का सेहरा उनके सर बन्धे और लोग कहें कि जो काम कुरैश न कर सके हवाजिन ने उसे कर दिखाया।

क़बीले का सरदार मालिक बिन औफ़–अल–नसरी ने जंग का ऐलान किया। हवाजिन के साथ उनकी आवाज़ पर क़बीला सक़ीक, नस्र व जुशम और साद बिन बक्र आगे आए। काब और किलाब ने उनका समर्थन नहीं किया। सबने मिलकर एक साथ अल्लाह के रसूल सल्ल0 के मुकाबले की योजना बनाई। उनके माल व असबाब तथा बीबी बच्चे लश्कर के साथ थे ताकि घर वालों की चिन्ता से उन्हें मैदान से भाग निकलने की कोई गुंजाइश न रहे।

इस जंग में दूरैद बिन अल–सिम्मा भी शामिल था। वह एक वरिष्ठ, अनुभवी और अच्छी सूझ–बूझ रखने वाला व्यक्ति था। हवाजिन का लश्कर 'ऊतास' ☆ में उतरा। हालत यह थी कि ऊंटों की बल बलाहट, गधों, खच्चरों की चीख़–पुकार, बकरियों के मिमयाने और बच्चों के रोने चिल्लाने से लश्कर के अन्दर शोर–शराबे का माहौल था। मालिक बिन औफ ने अपने सिपाहियों को निर्देश दिया कि मुसलमानों को देखते ही

तुम अपनी तलवारों की मियान तोड़ देना और एक पूरी ताक़त से हमला करना।

☆ क़बीला हवाज़िन के इलाक़े में तायफ़ के क़रीब एक जगह है जहां हुनैन की जंग हुई।

दूसरी तरफ़ अल्लाह के रसूल सल्ल0 के साथ मक्का के दो हज़ार मुसलमान थे। जिनमें कुछ लोग नए-नए इस्लाम लाए थे। कुछ को अभी इस्लाम कुबूल करने की नौबत नहीं आयी थी। इसके अलावा आपके साथियों और इस्लाम पर मर मिटने वाले 10 हज़ार सहाबा की फ़ौज थी जो मदीना से आपके साथ निकले थे। इस तरह सामूहिक रूप से यह संख्या अब तक की अन्य किसी जंग की अपेक्षा अधिक थी। कुछ मुसलमान यह बड़ी संख्या देखकर कहने लगे, "आज हम संख्या में कम होने की वजह से पराजित नहीं हो सकते।" अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने सफ़वान बिन उमैया से (जो अभी तक मुसलमान नहीं हुए थे) कुछ कवच और हथियार उधार लिए और हवाज़िन से जंग की नियत से चल पड़े।

आप के साथ लश्कर में कुछ ऐसे लोग भी थे जो नए-नए इस्लाम की परिधि में आए थे। अरब के कुछ क़बीलों की 'ज़ात अनवात' के हरे भरे पेड़ के प्रति बड़ी आस्था व श्रद्धा थी। वे इस पेड़ में अपने हथियार लटकाते थे, कुर्बानियां करते थे और एक दिन उसके नीचे पड़ाव करते थे। इस लिए चलते-चलते जब उन्हें यह पेड़ रास्ते में दिखाई पड़ा तो उन्हें आज्ञानता के युग की पुरानी रस्में याद आ गयीं। वह आपसे कहने लगे, " या रसूल अल्लाह सल्ल0! जैसा उन लोगों का 'ज़ात अनवात' था वैसा ही एक हमारे लिए श्रद्धा का केन्द्र तय कर दीजिए।" आपने फ़रमाया, "अल्लाहु अकबर! उसकी क़सम जिसके कब्ज़े में मुहम्मद (सल्ल0) की जान है, तुमने मुझसे ऐसी फ़रमाइश की है जैसी मूसा अ0 की क़ौम ने मूसा अ0 से की थी और कहा था, 'आप हमारे लिए भी एक माबूद बना दीजिए जैसे उनके बहुत से माबूद हैं।" उन्होंने जवाब दिया कि तुम बड़ी जिहालत की बातें करने वाली क़ौम हो। इसके बाद आपने फ़रमाया, 'बेशक तुम अपनी पहले की क़ौमों की तरह एक-एक बात और तरीक़े की पैरवी करोगे।"

हुनैन की घाटी में

जब मुसलमान हुनैन की घाटी में पहुंचे तो शव्वाल की 10 तारीख़ सन् 8 हिजरी थी। उन्होंने सुबह के धुंधलके में नीचे की तरफ उतरना शुरू किया। हवाजिन उनसे पहले उस घाटी में पहुंच चुके थे और घाटी के तंग रास्तों में छुप कर बैठने के मोर्चे बना लिए थे। मुसलमानों ने सिर्फ इतना देखा कि तलवारें मियान से बाहर हैं और तीरों की उन पर बारिश हो रही है। हवाजिन माने हुए तीर अन्दाज़ थे, उन्होंने भरपूर हमला किया।

अधिकांश मुसलमान इस अचानक हमले से घबरा कर पीछे की तरफ पलटे। कोई किसी को देखता न था कि वह कहां है। यह एक ख़तरनाक और निर्णायक पल था और करीब था कि जंग का पासा मुसलमानों के खिलाफ पलट जाए, और फिर उनको संभलने और अपनी जगह बनाए रखने की गुंजाइश न रहे। यहां जो कुछ हुआ उसमें बहुत कुछ उहद की जंग से मिलता जुलता था। जब यह मशहूर हो गया कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 शहीद हो गए हैं और वहां मुसलमानों के पैर उखड़ गए।

मक्का के अक्खड़ लोग जो आपके साथ इस लश्कर में थे और जिनके दिलों में अभी ईमान न उतरा था, यह परेशानी देखकर तरह तरह की बातें करने लगे। वह कहने लगे कि अब समुन्द्र से इधर उनकी परेशानी का सिलसिला ख़त्म न होगा। कुछ कहने लगे कि आज उनका जादू टूट गया।

कामयाबी और शांति

मुसलमान जो अपनी संख्या पर इतराए थे जब उसका घमंड टूट गया और उन्हें उसकी सज़ा मिल गई तो अल्लाह ने फिर उनकी मदद की और उन्हें हमले की पोजीशन में पहुंचा दिया। अल्लाह के रसूल सल्ल0 उस समय अपने सफेद खच्चर 'शहबा' पर बेख़ौफ होकर बैठे थे, आपके साथ अन्सार, मुहाजरीन और आपके सगे संबंधियों में से थोड़े से लोग बाक़ी रह गए थे। अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब आपके खच्चर की

लगाम थामे थे, अल्लाह के रसूल सल्ल0 कहते जाते थे, " मैं सच्चा पैग़म्बर हूँ, मैं अब्दुल मुत्तलिब का बेटा हूँ।" जब मुश्रिकों की टुकड़ियां आपके सामने आयीं तो आपने एक मुट्ठी मिट्टी लेकर दुश्मनों की आँखों में दूर तक इस तरह फेंक दी कि वह उनकी आँखों में भर गई।

जब आपने देखा कि हर व्यक्ति घबराया हुआ है तो आप सल्ल0 ने अब्बास से कहा कि "अन्सार" और "बबूल के पेड़ वालों" ☆ को आवाज़ दो। अब्बास की आवाज़ सुनते ही उन्होंने कहा, "आ गए! आ गए!" इसके साथ ही जो कोई अब्बास की आवाज़ सुनता फ़ौरन घोड़े से कूद पड़ता और अपनी तलवार व ढाल लेकर अल्लाह के रसूल सल्ल0 के पास पहुंच जाता। देखते-देखते आपके चारों तरफ़ लड़ने वाले वीर बांकरों का एक जत्था जमा हो गया। तैयारी के बाद दुश्मन से मुक़ाबला शुरू हो गया और दोनों पक्ष गुथ गए। आपने एक टीले से लड़ाई का यह मंज़र देखकर फ़रमाया, "अब तन्दूर गर्म हो गया है।" अर्थात ज़ोर की लड़ाई है। इसके बाद आपने कुछ कंकरियां लेकर दुश्मन की तरफ़ फेंक दी। अब्बास रज़ी0 फ़रमाते हैं कि इसके बाद दुश्मन की तेज़ी लगातार मन्द पड़ती गई और वह हारते नज़र आए।

☆ उस पेड़ की तरफ़ इशारा है जिसके नीचे उन्होंने हुदैबिया में (बैअत रिज़वान) शपथ ली थी। अरबी में बबूल के पेड़ को 'समरा' कहते हैं, इसीलिए 'असहाब अल समरा' कहा गया है।

दोनों सेनाएं खूब लड़ीं। हवाज़िन की हार हुई। उनके अनेक क़ैदी जिनके हाथ बंधे हुए थे आपके सामने लाए गए। मुसलमान जीत गए और पूरी घाटी फ़तेह और मदद के फ़रिश्तों से भर गई। क़ुर्आन में आता है।

अनुवादः- अल्लाह ने अनेक मौक़ों पर तुमको मदद दी और (जंग) हुनैन के दिन जब कि तुमको अपनी संख्या पर घंमड था तो वह तुम्हारे कुछ भी काम न आई और इतनी बड़ी दुनिया तुम पर तंग हो गई। फिर अल्लाह ने अपने पैग़म्बर पर और मोमिनों पर अपनी तरफ़ से तसकीन (सुकून) उतारी और (तुम्हारी मदद की फ़रिश्तों के) लश्कर जो तुम्हें दिखाई नहीं देते थे (आसमान से) उतारे और काफ़िरों को अज़ाब दिया और कुफ़्र करने वालों की यही सज़ा है। (सूरः तौबा 26-26)

आख़िरी मुढभेड़

अरबों के सीने में इस्लाम के ख़िलाफ जो आग सुलग रही थी वह हुनैन की जंग के बाद ठंडी पड़ गई। इस जंग ने उनकी रही सही ताक़त भी ख़त्म कर दी, और उनके तरकश के सारे तीर बेकार कर दिए। विरोधियों के परख़च्चे उड़ गए और अब उनके दिल इस्लाम कुबूल करने के लिए खुल गए। इस तरह जंगे हुनैन के बाद कोई बड़ी ताक़त इस्लाम विरोधी के रूप में अरब में बाक़ी नहीं रही।

औतास में

हार के बाद हवाज़िन की एक टुकड़ी ने, जिसमें क़बीले का सरदार मालिक बिन औफ भी था, तायफ में जाकर पनाह ली और वहां अपने को क़िला बन्द कर लिया। एक दूसरी टुकड़ी ने चलकर 'औतास' में पड़ाव डाल दिया। उनका पीछा करने के लिए अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने एक रेडिंग दल (सरिया) अबु आमिर अल–अशरी के नेतृत्व में भेजा जिसने उनसे जेहाद किया और उन्हें हराया। हुनैन का माले ग़नीमत (जंग में लूट का माल) और बान्दियां आदि आपके पास लाई गयीं तो आपने उन सबको 'जेराना' (मक्का से उत्तर पूर्व में स्थित एक जगह) भेज दिया और उन्हें वहां हिरासत में रखा गया।

गुलामों और बान्दियों की संख्या 6 हज़ार थी। 24 हज़ार ऊंट और 40 हज़ार से अधिक बकरियां थीं। इसके अलावा 4 हज़ार 'अवकिया' चॉदी थी। यह सबसे बड़ा माले ग़नीमत था जो अब तक मुसलमानों के हाथ लगा था।

अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने हुनैन की जंग में अपने साथियों को हुक्म दिया कि किसी बच्चे, औरत, मर्द या गुलाम जो काम काज के लिए हो, पर हाथ न उठाया जाए। आपने एक औरत के क़त्ल पर जो हुनैन में मारी गई थी, दुःख व्यक्त किया।

अध्याय इक्कीस

तायफ की जंग

हुनैन में हार के बाद 'सक़ीफ़' की एक टुकड़ी भाग कर तायफ़ पहुंची। यहां उन्होंने एक साल का ग़ल्ला जमा कर शहर के दरवाज़े बन्द कर लिए और क़िले के अन्दर जंग की तैयारी करते रहे। अल्लाह के रसूल सल्ल० उन्हें कुचलने के इरादे से तायफ गए और तायफ के पास पहुंच कर पड़ाव किया। चूंकि किले के दरवाज़े बन्द थे, इसलिए मुसलमान उसके अन्दर दाख़िल नहीं हो सके। सक़ीफ के लोग अच्छे तीर अन्दाज़ थे उन्होंने अन्दर से मुसलमानों पर तीरों की बारिश शुरू कर दी।

यह हालत देखकर अल्लाह के रसूल सल्ल० ने अपने लश्कर को तायफ के दूसरी तरफ मोड़ दिया जहां तीरों के हमले से बचा जा सकता था और वहां से कोई 25–30 दिन तक इस्लामी फौज ने उन की घेराबन्दी कर रखी। बीच–बीच में दोनों पक्षों में घोर लड़ाई होती रही और तीरों की बौछार से एक दूसरे पर हावी होने की कोशिश करते रहे। इस घेराबन्दी में हज़रत मुहम्मद सल्ल० ने पहली बार 'मुनजनीक़' (एक तरह की तोप) का प्रयोग किया। मुसलमानों के कई सिपाही दुश्मनों के तीरों से शहीद हुए।

मैदाने जंग में उदारता

जब घेराबन्दी का कोई नतीजा निकलता दिखाई नहीं दिया तो अल्लाह के रसूल सल्ल० ने सकीफ के अंगूर के बाग काट डालने का हुक्म दिया। इन्हीं बाग़ों पर सक़ीफ की अर्थ व्यवस्था पूरी तरह निर्भर थी। पेड़ों की कटान शुरू हो गई तो सकीफ के लोग आपके पास आए और विनती की कि अल्लाह के लिए और रिश्ते का ख़्याल करके इन बाग़ों को छोड़ दें। आपने फरमाया, "बेशक मैं इसको अल्लाह के लिए और रिश्ते की बुनियाद पर छोड़ता हूँ।"

आपने मुनादी करवा दी कि जो गुलाम किले से उतरकर हमारे

पास आ जाएगा वह आज़ाद है। मुनादी सुनकर लगभग 10 आदमी निकले, और आपने उन सबको आज़ाद किया। इन्हीं में अबुबक्रह भी थे जो हदीस के एक बड़े ज्ञाता और विद्वान सहाबी हैं। आपने इनमें से हर आदमी को एक मुसलमान के हवाले किया और उनके खाने पीने की ज़िम्मेदारी उन पर डाल दी। उन लोगों का निकलना तायफ़ वालों को बहुत बुरा लगा।

घेरा बन्दी ख़त्म

तायफ़ की फतह अभी अल्लाह को मंजूर नहीं थी। अतः आपने हज़रत उमर रज़ी0 को हुक्म दिया कि वापसी का एलान कर दें। उन्होंने वापसी का एलान किया तो लोगों में बहुत शोर हुआ और वह कहने लगे कि हम बिन तायफ़ फतह किए कैसे चले जाएं? इस पर आपने फरमाया, " अच्छा! मार काट के लिए चलो।" उन्होंने मार काट शुरू की और उसके नतीजे में उन्हें गम्भीर चोटें आयीं। तब अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने एलान किया, "कल सुबह इन्शा अल्लाह वापस चलेंगे।" मुसलमान यह सुनकर ख़ुश हुए और वापसी की तैयारी करने लगे। आप यह नज़ारा देखकर हंसने लगे।

हुनैन का माले ग़नीमत

अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने अपने साथियों के साथ 'जेराना' में पड़ाव किया और हवाजिन को इस बात का मौका दिया कि दस बीस दिन के अन्दर इस्लाम कुबूल कर लें। इसके बाद आपने लोगों को बुला कर माले ग़नीमत बांटना शुरू किया। आप ने उन्हें पहले हिस्सा दिया जिनकी दिलदारी ज़रूरी थी। अबु सुफियान और उनके दोनों बेटों 'यजीद' और 'मुआविया' को आपने दिल खोल कर हिस्सा दिया। हकीम बिन अल हिजाम, नजर बिन अल हारिस, अला बिन अल हारिसा तथा कुरैश के अन्य सरदारों को आपने खूब हिस्सा दिया, और फिर प्रत्येक को बुला बुला कर उसे हिस्सा दिया।

इस बंटवारे में कुरैश के सरदारों को बड़ा हिस्सा तथा अन्सार को मामूली हिस्सा मिलने पर कुछ अन्सार काना फूसी करने लगे। आपने यह

देखकर अन्सार को एक अहाते में जमा किया और उन्हें ऐसे प्रभावी शब्दों से सम्बोधित किया कि उनके दिल के तार झनझना उठे, और उनकी आँखों में आंसू भर आए। आपने फरमाया," क्या मैं तुम्हारे पास इस हालत में नहीं आया था कि तुम सब गुमराह (पथ भ्रष्ट) थे, फिर मेरे द्वारा अल्लाह ने तुम्हें सीधे रास्ते पर लगाया, तुम ग़रीब थे, अल्लाह ने मेरे द्वारा तुम्हें दौलत मन्द बनाया, तुम सब एक दूसरे के दुश्मन थे, अल्लाह ने तुम्हारे टूटे हुए दिलों को जोड़ा?

अन्सार ने जवाब दिया, "अल्लाह और उसके रसूल सल्ल0 का फज़ल व एहसान सबसे ज़्यादा है।"

आपने आगे फरमाया, " ऐ अन्सार! क्या तुम मुझे इस सवाल का जवाब न दोगे?"

अन्सार ने कहा, " या रसूल अल्लाह! हम इस बात का आपको क्या जवाब दे सकते हैं। सारा फज़ल व एहसान अल्लाह और उसके रसूल का है।"

फिर आपने फरमाया, "नहीं! अल्लाह की क़सम अगर तुम चाहो तो कह सकते हो और तुम जो कहोगे सच होगा और मैं इसका समर्थन करूंगा कि आप हमारे पास इस हालत में आए कि आपको झुठलाया जा चुका था। उस समय हमने आपकी पुष्टि की, और आपको सच्चा माना, सबने आपका साथ छोड़ दिया था हमने आपकी मदद की, आपको लोगों ने निकाल दिया था हमने आपको पनाह दी, आपका हाथ खाली था हमने आपके साथ हमदर्दी की।"

फिर आपने पूरे आत्म विश्वास के साथ बंटवारे के इस फर्क की वजह भी बयान की। आपने फरमाया, "ऐ अन्सार के लोगों! क्या तुम्हें इस बंटवारे पर नाराज़गी है कि मैंने कुरैश को इस्लाम की तरफ आकर्षित करने के लिए इस मिट जाने वाली माया का अधिक अंश दिया है और तुम्हें इस्लाम के भरोसे पर छोड़ दिया है क्या तुम इस पर राज़ी नहीं हो कि लोग अपने साथ भेड़ व बकरियां लेकर जाएं और तुम अपने शिविरों में अल्लाह के रसूल सल्ल0 को साथ लेकर जाओ। क़सम उस ज़ात की जिसके कब्ज़े में मुहम्मद की जान है, तुम जिस चीज़ को अपने

साथ लेकर जाओगे वह उससे कहीं अच्छी है जो वह लेकर जाएंगे। अगर हिजरत न होती तो मैं अन्सार ही का एक व्यक्ति होता। अगर लोग किसी एक घाटी में चलते और अन्सार किसी दूसरी घाटी में तो मैं अन्सार ही की घाटी में चलता। अन्सार तो उस अस्तर के समान हैं जो शरीर को छूता है और दूसरे लोग उन कपड़ों के समान हैं जो ऊपर होते हैं, और शरीर को स्पर्श नहीं करते। (यहां आपने अस्तर के लिए 'शेआर' और ऊपर के कपड़ों के लिए 'देसार' शब्द का प्रयोग किया)। ऐ अल्लाह! अन्सार पर रहम फरमा, अन्सार की औलाद पर रहम फरमा और अन्सार की औलाद की औलाद पर रहम फरमा।"

यह सुनकर सभी अन्सार रो पड़े और उनकी दाढ़िया आंसुओं से भीग गयीं। वह कहने लगे, "हम इस पर राज़ी और खुश हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल० हमारे हिस्से में आएं।"

क़ैदियों की वापसी

हवाजिन का 14 सदस्यीय एक शिष्ट मण्डल अल्लाह के रसूल सल्ल० से आकर मिला और आपसे विनती की कि आप मेहरबानी करके उन कैदियों तथा माल व दौलत को उन्हें वापस कर दें। आपने फरमाया, " तुम देख रहे हो मेरे साथ कौन–कौन हैं सबसे ज़्यादा मुझे वह बात पसन्द है जो सच्ची हो। अब यह बताओ कि तुम्हारी औलाद और तुम्हारी औरतें तुम्हें ज़्यादा प्यारी हैं या तुम्हारा माल व दौलत?"

उन्होंने जवाब दिया कि हम अपनी औलाद और अपनी औरतों के बराबर किसी चीज़ को नहीं समझते। आपने फरमाया, "कल सुबह की नमाज़ के बाद तुम लोग खड़े होकर यह कहना कि हम मुसलमानों के लिए अल्लाह के रसूल सल्ल० को सिफारशी बनाते हैं और आपके सामने मुसलमानों को सिफारशी बनाकर पेश करते हैं कि आप हमारे गुलाम बान्दी वापस कर दें। दूसरे दिन जब आप नमाज़ अदा कर चुके तो उन्होंने खड़े होकर ऐसा ही कहा। इस पर आपने फरमाया, "मेरे हिस्से और बनी अब्दुल मुत्तलिब के हिस्से में जो कुछ है वह तुम्हारे हवाले हैं। दूसरे लोगों से मैं तुम्हारे लिए सिफारिश करता हूँ। यह सुनकर मुहाजरीन

व अन्सार ने कहा, "हमारे हिस्से का जो कुछ है वह सब अल्लाह के रसूल सल्ल0 की सेवा में हाज़िर है।"

बनी तमीम, बनी फज़ारा और बनी सुलैम के तीन आदमी अपना हिस्सा छोड़ने के लिए तैयार नहीं हो रहे थे। आपने उनसे फरमाया, "यह लोग मुसलमान होकर आए हैं। मैंने इनका इन्तेज़ार भी किया और इनको अधिकार दिया लेकिन उन्होंने अपनी औलाद और बीवियों के बराबर किसी चीज़ को नहीं समझा। इस लिए अगर किसी के पास ऐसे क़ैदी हों और वह उनको ख़ुशी-ख़ुशी देना चाहे तो उसका रास्ता खुला हुआ है और अगर अपने हक़ को छोड़ना चाहे तो यह उनको दे दे। ऐसे व्यक्ति को हर हिस्से के बदले में 6 हिस्से उस पहले माले ग़नीमत से दिए जाएंगे जो आगे अल्लाह हमें देगा।"

लोगों ने कहा आपकी ख़ातिर हम ख़ुशी-ख़ुशी तैयार हैं। आपने फरमाया, "हमें मालूम नहीं कि तुमसे से कौन इस पर राज़ी है और कौन राज़ी नहीं है। इस समय तुम लोग वापस जाओ। तुम्हारे सरदार तुम्हारी सही-सही मंशा से मुझे अवगत कराएंगे। उनमें से सबने उनकी औरतों और बच्चों को वापस कर दिया। हर क़ैदी को अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने पोशाक भी प्रदान की।

नर्मी और उदारता

लड़ाई के हंगामें में मुसलमानों ने जिन ग़ुलामों और बान्दियों को बन्दी बनाकर आप के पास भेजा उनमें आपकी रज़ाई बहन ☆ शेमा बिन्त हलीमा सादिया भी थीं। मुसलमान उनसे परिचित न थे, अतः उन्होंने उन्हें ले जाने में कड़ाई से काम लिया। उन्होंने मुसलमानों से कहा कि अल्लाह की क़सम तुमको मालूम होना चाहिए कि मैं तुम्हारे सरदार की दूध शरीक बहन हूं, लेकिन मुसलमानों ने उनकी बात पर यकीन नहीं किया और उनके साथ सख़्ती से पेश आए।

☆ एक ही दाई के दूध पर पले बच्चे। अर्थात दूध शरीक बहन।

जब शेमा अल्लाह के रसूल सल्ल0 के पास पहुंची तो उन्होंने आपसे कहा," या रसूल अल्लाह! मैं आपकी रेज़ाई बहन हूं।" आपने

फरमाया, "इसकी क्या पहचान है?" उन्होंने कहा, "जब मैं आपको गोद में लिए थी, तो आपने मेरी पीठ में दांत से कांट लिया था। उसका निशान मौजूद है।" आपने निशान पहचाना और अपनी चादर उनकी लिए बिछा दी और उन्हें उस पर बिठाया। आपने उनसे कहा, "अगर तुम चाहो तो बड़ी इज़्ज़त और मुहब्बत के साथ मेरे साथ रह सकती हो और अगर चाहो तो मैं तोहफा व सामान के साथ तुमको विदा कर दूं और तुम अपने क़बीले में पहुंच जाओ।" शेमा ने कहा, " आप मुझे जो कुछ देना चाहें दे दें और मुझे मेरे क़बीले में वापस कर दें। आपने उन्हें तीन गुलाम एक बान्दी और कुछ बकरियां देकर विदा किया। वह मुसलमान हो गयीं।

जब अल्लाह के रसूल सल्ल0 को हुनैन की जंग से फुरसत मिली और जेराना में गुलामों और माले ग़नीमत के बंटवारे का काम पूरा हो गया तो आपने उमरह के लिए अहराम बान्ध लिया। जेराना तायफ वासियों की मीकात ☆ था और मक्का से एक मंज़िल की दूरी पर था। उमरह के बाद ज़िकादा सन् 8 हिजरी में आप मदीना वापस आए।

☆ मक्का के चारों तरफ कुछ दूरी पर निश्चित जगह जहां से हाजी लोग अहराम बान्ध लेते हैं।

तायफ से लौटते समय आपने मुसलमानों से कहा, "कहो, हम वह हैं जो तौबा करते हैं, और अपने रब की इबादत करते हैं, और उसकी बड़ाई बयान करते हैं।" आपके साथियों ने कहा आप सकीफ के लिए बददुआ करें, आपने दुआ की, "ऐ अल्लाह! सकीफ को हिदायत दे और उनको यहां ला।"

उरवा बिन मसऊद अल सक़फी मदीना पहुंचने से पहले रास्ते में आपसे मिले और इस्लाम लाए और वहीं से इस्लाम की दावत देने के लिए अपनी क़ौम में वापस गए। उन्हें अपनी कौम में बड़े सम्मान और इज़्ज़त की निगाह से देखा जाता था। बहुत मशहूर थे लेकिन जब उन्होंने अपने मुसलमान होने का एलान किया और लोगों को इस्लाम की दावत दी तो उन्हें लोगों ने तीर से शहीद कर दिया। उनके क़त्ल के बाद सकीफ कुछ दिन ख़ामोश रहे। उसके बाद आपस में विचार करके वह इस नतीजे पर पहुंचे कि वर्तमान हालत में उन सब अरबों से लड़ने

की उनमें ताक़त नहीं जो अल्लाह के रसूल सल्ल0 के हाथ पर शपथ कर चुके हैं, और मुसलमान हो चुके हैं। अतः उन्होंने आप सल्ल0 के पास एक शिष्ट मण्डल भेजने का फैसला किया।

यह शिष्ट मण्डल जब आपके पास पहुंचा तो आप सल्ल0 ने उनके लिए शिविर लगवाया। उसके सदस्य मुसलमान हुए और उन्होंने आपसे प्रार्थना की कि उनके विशेष बुत "लात" को तीन वर्ष तक आप न तोड़ें। आपने ऐसा करने से इन्कार कर दिया। वह लोग समय को एक–एक वर्ष करके कम करते रहे और आप सल्ल0 इन्कार करते रहे। आख़िर में उन्होंने कहा कि उनके आने के एक माह बाद तक "लात" को नुकसान नहीं पहुंचाया जाए। आपने इन्कार कर दिया और अबु सुफियान व मुग़ीरा बिन शेबा को हुक्म दिया कि वह दोनों जाकर 'लात' को टुकड़े–टुकड़े कर डालें। शिष्ट मण्डल ने प्रार्थना की कि नमाज़ में उनको छूट दी जाए। इस पर आपने फरमाया," जिस दीन में नमाज़ न हो उसमें कोई ख़ैर नहीं।"

जब शिष्ट मण्डल जाने लगा तो आपने उनके साथ अबु सुफियान और मुग़ीरा बिन शेबा रज़ी0 को भी भेजा। मुग़ीरा ने 'लात' को तोड़ दिया। इसके बाद सकीफ में इस्लाम फैल गया और तायफ का हर आदमी मुसलमान हो गया।

काब बिन जुहैर इस्लाम लाए

तायफ से वापसी पर आपकी सेवा में काब बिन जुहैर आए। काब एक शायर थे और उन्होंने आपकी बुराई बयान करने वाली अनेक रचनाएं की थीं, लेकिन अन्त में जब उन्हें परेशानी ने घेर लिया तो उनके भाई जुबैर ने उनको सलाह दी कि वह आपके पास जाकर तौबा करें और इस्लाम ले आएं। उनके भाई ने उन्हें डराया कि अगर उन्होंने ऐसा न किया तो उनका बुरा अन्त होगा। इस पर काब ने आपकी प्रशंसा में वह मशहूर क़सीदा (एक तरह की कविता) की रचना की जो 'क़सीदा बानत सुआद' के नाम से मशहूर है। इसके बाद वह मदीना आए और सुबह के समय नमाज़ के बाद आपके पास जाकर बैठ गए और अपना हाथ आपके

हाथ में दे दिया और कहा, "काब बिन जुहैर तायब मुसलमान होकर आपकी सेवा में हाज़िर है, और आपसे अमान का प्रार्थी है। क्या आप इसकी तौबा कुबूल करेंगे?" यह सुनकर एक अन्सारी उसकी तरफ लपके और कहा, " या रसूल अल्लाह! मुझे अल्लाह के दुश्मन से निपट लेने दें, मैं इसी समय इसकी गर्दन उड़ा देता हूं।" आपने फरमाया, "नहीं, रहने दो वह तौबा करके यहां आए हैं।" फिर काब ने मशहूर क़सीदा पढ़ा।

जब काब ने कसीदे का वह शेर पढ़ा जिसका अर्थ है अल्लाह के रसूल सल्ल० निःसन्देह एक नूर (उजाला) हैं, और वह अल्लाह की एक तेज़ व खुली तलवार हैं, तो आप सल्ल० ने अपनी चादर उतार कर उन्हें प्रदान की।☆

☆ यह वही चादर है जिसे हज़रत मुआविया ने दस हज़ार दीनार में ख़रीदना चाहा था लेकिन काब ने जवाब दिया कि मैं इस पर किसी को प्राथमिकता नहीं दे सकता। काब के निधन के बाद मुआविया ने उनके उत्तराधिकारियों से यह चादर 20 हज़ार दीनार देकर हासिल कर ली। (कस्तलानी)

अध्याय बाइस

तबूक की जंग

कुछ लोग अभी भी यह समझ रहे थे कि इस्लाम की उठान और उफान पल दो पल की है और यह अधिक समय तक टिकने वाला नहीं है। दुश्मन के इस भुलावे को दूर करने के लिए ज़रूरी था कि कोई ऐसी घटना हो जिससे उनका यह भ्रम जाता रहे और उसके दिल में इस्लाम की हैबत और उसका रोब व दबदबा बन जाए। मुसलमानों को यह मौक़ा तबूक ☆ की जंग से हासिल हुआ। यह जंग असल में उस वक़्त की सबसे बड़ी ताक़त बाज़नतीनी साम्राज्य से एक टकराव था। इस सलतनत का अरबों पर बड़ा रोब था। इसका एक प्रमाण अबु सुफ़ियान की वह अभिव्यक्ति है जो उन्होंने अल्लाह के रसूल सल्ल0 के ख़त से प्रभावित होकर रोम के बादशाह हरकुल की बात सुनकर कही थी। हरकुल ने कहा था कि मुझे उम्मीद है कि अरब में किसी नबी का अभ्युदय होने वाला है। अबु सुफ़ियान बयान करते हैं कि यह बात सुनकर मैं खड़ा हो गया और अपना हाथ मलते हुए मैंने कहा कि 'इब्न अबी हबशा'☆ का मामला तो ज़ोर पकड़ गया। उनसे यह रोम का बादशाह भी डरने लगा।" वह कहते हैं कि मुझे यह सुनकर यक़ीन हो गया कि आप कामयाब होंगे और इस तरह अल्लाह ने मेरे दिल में इस्लाम डाला।

☆1मदीना और दमिश्क़ के बीच 'एला' के दक्षिण पूर्व में मदीना से 700 किलो मीटर स्थित एक जगह।

☆2 अबु सुफ़ियान ने आपके लिए इन शब्दों का प्रयोग व्यंग करते हुए किया था। अबु हबशा के बारे में दो कथन हैं। एक– यह कि खुज़ाआ का कोई व्यक्ति था जिसने बुत परस्ती छोड़ दी थी। दूसरे–यह कि आप सल्ल0 के पूर्वजों में कोई इस नाम का गुज़रा है।

अरब उस दौर में रूमियों से जंग और उन पर हमला करने की बात सोच भी नहीं सकते थे। बल्कि वह खुद हमले के शंका से डरे रहते थे। मदीना के मुसलमानों पर जब कोई अचानक मुसीबत आती या किसी बड़े ख़तरे का भय होता तो वह अधिक से अधिक ग़स्सान के ईसाई अरब प्रांत के बारे में सोचते। 'एला' की घटना जो सन् 8 हिजरी में हुई।

हज़रत उमर रज़ी0 के शब्दों से इस पर रोशनी पड़ती है। वह कहते हैं, "मेरे एक अन्सारी दोस्त थे। जब में कभी बाहर होता तो वापसी पर वह मुझे ख़ास–ख़ास ख़बरें बताते और जब वह बाहर होते तो मैं। उन दिनों हम लोग ग़स्सान के बादशाह से बहुत डरे हुए थे जिसके बारे में चर्चा थी कि वह हम पर हमला करने का इरादा रखता है। हमारे दिल में हर समय इसी का ख़्याल रहता था। इसी बीच एक दिन मेरे अन्सारी दोस्त आए और उन्होंने दरवाज़ा खटखटाया और कहने लगे, "खोलो! खोलो!" मैंने कहा, "क्या ग़स्सानी ने हमला कर दिया।"

उस समय रोमी साम्राज्य की तूती बोलती थी। उसकी फौजों ने हरकुल के नेतृत्व में ईरानी फौज़ों को तहस–नहस कर दिया था और ईरानी साम्राज्य में अन्दर तक दाख़िल हो गई थी, और इस महान विजय की ख़ुशी में हरकुल ने 'हमस' से 'एला' तक एक विशाल जुलूस में सफर किया। यह हिजरत के सातवें वर्ष की बात है। इस जुलूस में हरकुल उस सलीब को उठाए हुए था जो उसने ईरानियों से हासिल की थी। सारा रास्ता कालीन–गलीचों से सुसज्जित था। चारों तरफ से फूलों की बारिश हो रही थी।

इस शानदार विजय के दो वर्ष भी न गुज़रने पाए थे कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 मदीना से रूमियों के मुक़ाबले के लिए चल पड़े। तबूक की जंग ने शाम (सीरिया) पर हमले का रास्ता बना दिया जो हज़रत अबुबक्र और हज़रत उमर के शासनकाल में फतह हुआ।

यह जंग कैसे शुरू हुई? अलज़रकानी ने लिखा है कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 को सूचना मिली कि रूमी अरब की उत्तरी सीमाओं पर हमले की तैयारी कर रहे हैं। इब्न साद और उनके शेख़ वाकिदी बयन करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 को नबतियों से यह ख़बर मिली कि हरकुल ने अपने सिपाहियों की एक साल की ख़ुराक का बन्दोबस्त कर लिया है, और उनके साथ लख़्म, जुज़ाम, आम्ला और ग़स्सान तथा अरब के अन्य विजय क़बीलों को मिला लिया है, और उनकी टुकड़िया 'बल्क़ा' तक पहुंच चुकी थीं।

इस जंग का मकसद इसके अलावा पड़ोसी हुकूमत को भयभीत

करना भी था जिससे इस्लाम के केन्द्र तथा उसकी उभरती हुई शक्ति को नुकसान पहुंच जाने का डर था। इससे उन्हें होशियार करना था कि वह मुसलमानों पर उनके क्षेत्र में घुसकर हमला करने की हिम्मत न करें। कुर्आन पाक में अल्लाह फरमाता है:–

अनुवाद:– "मुसलमानों! उन काफ़िरों से जंग करो जो तुम्हारे आस–पास फैले हुए हैं और चाहिए कि वह जंग में तुम्हारी सख़्ती महसूस करें और जान रखो कि अल्लाह परहेज़गारों के साथ है।" (सूर: तौबा– 123)

इस जंग से यह मक़सद पूरा हो गया। रूमियों ने इसका जवाब किसी जवाबी हमले से नहीं दिया बल्कि उन्होंने इस खुली चुनौती के बाद एक तरह की हार और ख़ामोशी अपना ली और उन्होंने इस्लाम की पूरी ताक़त को महसूस कर लिया।

इस जंग का दूसरा लाभ यह हुआ कि अरब प्रायद्वीप के जो क़बीले रूमियों के असर में थे उन पर मुसलमानों का असर और दबदबा बन गया और अब वह इस्लाम के बारे में गम्भीरता से सोचने लगे और उन्होंने महसूस किया कि वह कोई पानी का बुलबुला नहीं है जो जलतल पर उभरता है और देखते ही देखते ग़ायब हो जाता है। इस जंग में जो मुसलमान शामिल थे उनकी तरफ इशारा करते हुए कुर्आन पाक में इरशाद होता है।:–

अनुवाद:–"जो क़दम भी वह दुश्मन के ख़िलाफ अल्लाह की राह में उठाते हैं वह काफिरों के लिए ग़ैज़ व ग़ज़ब का कारण और जो नुक्सान भी कुफ़्फ़ार को पहुंचाते हैं वह उनके लिए नेक अमल साबित होता है। (सूर: तौबा–120)

रूमियों को मूता की जंग अभी अच्छी तरह याद थी। जिसमें हर पक्ष ने सही सलामत हो जाने को उचित समझा था और इसकी वजह से बाज़नतीनी साम्राज्य का जो रोब अरबों के दिल पर था वह बहुत कमज़ोर पड़ गया।

संक्षेप में इस जंग का नबी की सीरत (जीवनी) और इस्लाम की दावत के इतिहास में विशेष स्थान है और इससे वह मक़सद पूरे हुए जो

आगे चलकर मुसलमानों और अरबों के हक़ में बहुत लाभकारी साबित हुए और जिन्होंने इस्लाम के इतिहास और उसके बाद की घटनाओं पर बहुत असर डाला।

तबूक के जंग का समय

तबूक की जंग रजब सन् 9 हिजरी में हुई। कड़ाके की गर्मी थी और खजूर मज़ेदार हो गई थी, और पेड़ों की छाया सुहावनी लगती थी।☆ आपने चटियल मैदानों को पार कर के इस जंग के लिए एक लम्बा सफ़र किया। आपने मुसलमानों को पहले होशियार कर दिया था कि वह पूरी तैयारी कर लें क्योंकि मुक़ाबला कड़ा था और सफ़र लम्बा, और लोगों को अकाल का सामना था।

☆ सौर्य कलेण्डर के अनुसार तबूक की जंग का समय निर्धारित करना कठिन है। कुछ विद्वानों ने नवम्बर महीने को रजब सन् 9 हिजरी के अनुसार बताया है। मौलवी हबीबुर्रहमान खां की किताब "जदीद मुफ़ताहुलतक़वीम" से भी इसकी पुष्टि होती है, लेकिन घटना चक्र से प्रमाणिक सुबूत और हदीस से यह साबित होता है कि यह जंग गर्मियों के मौसम में हुई। काब बिन मालिक बयान करते हैं, " अल्लाह के रसूल सल्ल० ने रेगिस्तान की तपती गर्मी में कड़े दुश्मन से मुक़ाबले करने के लिए लम्बा सफ़र किया।" मूसा बिन उक़बा बयान करते हैं कि ख़रीफ़ की रातों और सख़्त गर्मी में जबकि लोग नखलिस्तानों में रहना पसन्द करते हैं (यह जंग हुई)।" सूरः बरॉत में आया है कि "उन्होंने कहा कि इस गर्मी में (घर का आराम छोड़कर) कूच न करो। (ऐ पैग़म्बर! तुम कहो) जहन्नम की आग की गर्मी तो इससे कहीं अधिक गर्म होगी अगर वह समझते हों।"

मुनाफ़िक़ इस मौक़ पर विभिन्न बहाने कर के बैठ रहे। वह कड़े मौसम और कठोर दुश्मन से डर गए। उन्हें जिहाद में विशेष रूचि भी नहीं थी और उनका ईमान भी कमज़ोर था। क़ुर्आन पाक में इसका चित्रण इस तरह किया गया है।

अनुवादः– "जो लोग (तबूक की जंग में) पीछे रह गए वह अल्लाह के पैग़म्बर (की मर्ज़ी) के ख़िलाफ़ बैठे रहने से खुश हुए और इस बात को ना पसन्द किया कि (अल्लाह की राह में) अपने माल व जान से जिहाद करें और (औरों को भी) कहने लगे कि गर्मी में मत निकलना (उनसे) कह दो कि जहन्नम की आग इससे कहीं अधिक गर्म है। काश यह (इस बात को) समझते। (सूरः तौबा–81)

मुसलमानों का जोश

अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने इस जंग के लिए ठोस तैयारी की। आप सल्ल0 ने धनवानों को अल्लाह की राह में खर्च करने की चाह दिलाई। अतः अनेक धनवान आगे आए और उन्होंने सच्चे मन से इसमें हिस्सा लिया। हज़रत उस्मान रज़ी ने पूरे लश्कर को सामान उपलब्ध कराने की ज़िम्मेदारी ली और इस पर एक हज़ार दीनार खर्च किए। उनके लिए अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने दुआ की। बहुत से सहाबी जो सक्षम न थे, आप के पास सवारी की प्रार्थना लेकर आए लेकिन आपने असमर्थता व्यक्त की। इस तरह उन सहाबियों के इस जंग में हिस्सा लेने से वंचित रह जाने पर अल्लाह कुर्आन पाक में फरमाता है।

अनुवादः–"और जो इन (बे–सरो सामान) लोगों पर आरोप है कि तुम्हारे पास आए कि इनको सवारी दो और तुमने कहा कि मेरे पास कोई चीज़ नही जिस पर तुमको सवार करूं तो वह लौट गए और इस ग़म से कि उनके पास खर्च मौजूद न था उनकी आँखों में आंसू बह रहे थे। (सूरः तौबा–92)

कुछ मुसलमान ऐसे थे जिन्हें फैसला करने में देर लगी और वह इस जंग में शामिल नहीं हो सके।

तबूक की तरफ रवानगी

अल्लाह के रसूल सल्ल0 30 हज़ार के लश्कर के साथ मदीना से तबूक के लिए रवाना हुए। इससे पहले आपके नेतृत्व में किसी अन्य जंग में इतनी संख्या में इस्लामी सेना नहीं गई थी। आपने लश्कर को 'सनी अतुलविदा' में पड़ाव डालने का निर्देश दिया, और मुहम्मद बिन मुस्लेमा अल–अन्सारी को मदीना का हाकिम नियुक्त किया। परिवार की देखरेख का काम हज़रत अली को सौंपा। हज़रत अली ने जब आपसे इस बात को लेकर लोगों में फैली तरह–तरह की अफवाह का ज़िक्र किया तो आपने फरमाया, "क्या तुम इस पर राज़ी हो कि तुम मेरे ऐसे हो जैसे मूसा अ0 के साथ हारून थे। हाँ, यह बात ज़रूर है कि मेरे बाद कोई नबी नहीं होगा।"

आप इस लश्कर से साथ समूद क़ौम की धरती 'अलहिज्र' में उतरे। आपने अपने साथियों से कहा, " यह उनकी धरती है जिन पर अज़ाब उतरा। जब उन लोगों के मकानों में जिन्होंने अपने आप पर जुल्म किया दाख़िल हो तो रोते हुए दाख़िल हो। इस डर से कि कहीं तुम पर भी वही मुसीबत न आ जाए जो उन पर आई थी। यहां का पानी न पीना, और न नमाज़ के लिए इस पानी से वजू करना अगर तुमने इस पानी से आटा गून्ध लिया हो तो उसे ऊंटों को खिला दो, और खुद इसमें से ज़रा भी न खाओ।

जब लोगों को पानी की बहुत तंगी हुई तो उन्होंने आपसे इसकी शिकायत की। आपने दुआ की और इस दुआ की बरकत से अल्लाह ने बादल भेजा और इतनी बारिश हुई कि लोगों को सुकून मिल गया और उन्होंने अपनी ज़रूरत का पानी जमा भी कर लिया।

रूमियों का मनोबल गिरा

ज़ब आप तबूक जा रहे थे तो कुछ मुनाफ़िक़ (पाख़ण्डी) आपकी तरफ इशारा करके आपस में कहते थे, "क्या तुम समझते हो कि बनी अल–असग़र अर्थात् रूमियों के साथ जंग में उतना आसान मामला होगा जितना आपने देश के अरब क़बीलों के साथ हुआ। अल्लाह की क़सम हम देख रहे हैं कि कल यह सब रस्सियों से जकड़े पड़े होंगे।

एला के शासक से सुलह

जब आप तबूक पहुंच गए तो एला का शासक 'यूहन्ना बिन रोबा' आपके पास आया और आपसे सुलह कर ली और जज़िया भी अदा कर दिया। 'जरबा और अजरह' के लोग भी आए। आपने उनको अमान का लिखित आश्वासन दिया। जिसमें सीमाओं की रक्षा, पानी तथा जलमार्गों की सुरक्षा और पक्षों के बीच सलामती की ज़मानत दी गई थी। आप सल्ल0 ने यूहन्ना का आदर सत्कार भी किया।

मदीना वापसी

यहां पर रूमियों का सीमा पार करके हमला करने का इरादा छोड़ देने की सूचना आप सल्ल0 को मिली। अब चूंकि इस जंग का मक़सद

हासिल हो चुका था। इस लिए आपने भी उनके देश में घुसकर उन पर चढ़ाई करना उचित नहीं समझा। बाज़नतीनी ख़ामोश थे। सिर्फ उकैदीर बिन अब्दुल मलिक (ईसाई) जो 'दोमतुल–जन्दल' ☆ का शासक था, कि तरफ से हमले की सूचना मिली। आपने उसे कुचलने के लिए ख़ालिद बिन वलीद को 500 सवारों के साथ भेजा। ख़ालिद बिन वलीद उसे गिरफ्तार करके आपके पास लाए। आपने उसका ख़ून माफ़ किया और उसने जज़िया पर सुलह कर ली। आप सल्ल0 ने उसे आज़ाद कर दिया।

☆ दोमतुल जन्दल एक आबाद गाँव था जहां एराबी क्रय विक्रय के लिए जाया करते थे। समय के साथ उजाड़ हो गया। उकैदीर ने आकर उसे पुनः बसाया और वहां जैतून की खेती शुरू की। इस गाँव के चारों तरफ एक प्रचीन चहार दीवारी के अन्दर एक मज़बूत किला है जिसके कारण इस स्थान का सामरिक महत्व भी रहा है। इसके अधिकांश लोगों का सम्बन्ध क्लब क़बीला से है। उकैदीर अपने आपको उस समय के चलन के अनुसार 'मालिक' कहलवाता था। उस समय दोमा वासी ईसाई थे।

एक ग़रीब के जनाज़े में

अब्दुल्लाह जुल बिजादैन रज़ी0 का निधन तबूक में हुआ। यह शुरू में इस्लाम लाने के लिए कोशिश में थे लेकिन उनकी कौम उनको इससे रोके रखती थी और उनको तरह–तरह से सताया जाता था। आख़िर में उनकी क़ौम ने उन्हें सिर्फ एक मोटी खुरदरी चादर में छोड़ दिया। वह भाग कर आप सल्ल0 के पास आए। वह जब आपके करीब पहुंचे तो यह चादर भी फट गई और इसके दो टुकड़े हो गए। उन्होंने एक टुकड़े को बांध लिया और दूसरे टुकड़े को ओढ़ लिआ और इसी हाल में आप सल्ल0 के पास आए। उसी दिन से उनका लक़ब 'जुल बिजादैन' पड़ गया।

जब तबूक में उनका निधन हुआ तो अल्लाह के रसूल सल्ल0 और हज़रत अबुबक्र व हज़रत उमर उनके जनाज़े के साथ अंधेरी रात में गए। इनमें से किसी के हाथ में मशाल थी। कब्र तैयार थी। अल्लाह के रसूल सल्ल0 स्वयं कब्र में उतरे, हज़रत अबुबक्र और हज़रत उमर रज़ी0 ने जनाज़े को कब्र में उतारा। आप फरमाया, " अपने भाई को और नीचे मेरे करीब करो।" जब आपने उनको कब्र में लिटा दिया तो फरमाया, " ऐ

अल्लाह! मैं इससे राज़ी हूं, तू भी इससे राज़ी हो जा।" अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ी० कहते हैं कि मैंने तमन्ना की कि काश इस कब्र में मैं होता!

काब बिन मालिक का इम्तिहान

जो लोग तबूक की जंग में, बिना किसी शंका के अन्य कारणों से शामिल नहीं हो सके उनमें काब बिन मालिक, मुरारा बिन अल रबी और हिलाल बिन उमैया भी थे। यह लोग उनमें थे जिन्होंने पहले दौर में इस्लाम कुबूल किया था और अनेक यातनाएं उठायीं थीं। मुरारा और हिलाल बद्र की जंग में शामिल थे। गज़्वा से दूर रहना उनकी आदत में न था। इस लिए तबूक की जंग में उन्हें वंचित रखकर कुदरत उनका इम्तिहान लेना चाहती थी जो आने वाली नस्ल के लिए निश्चय ही एक नमूना साबित हुआ। इस मौके पर इन लोगों के पीछे रह जाने का कारण ढीलापन, इरादे की कमज़ोरी, साधनों पर ज़रूरत से ज़्यादा निर्भरता और इस मामले पर गम्भीरता से ग़ौर न करना था और वह चीज़ है जिसने अनेक अल्लाह के बन्दों को जो ईमान और अल्लाह व रसूल सल्ल० की मुहब्बत में दूसरे मुसलमानों से किसी तरह कम न थे, बार–बार नुकसान पहुंचाया है। यही वह तत्व है जिसकी तरफ काब बिन मालिक के यह शब्द इशारा करते हैं। वह कहते हैं।

"मैं रोज़ाना इस इरादे से निकलता कि मैं सफर का ज़रूरी सामान ले लूं और उनके साथ रवाना हो जाऊं लेकिन बिन कुछ किए वापस आ जाता। फिर मैं अपने दिल में कहता चिन्ता किस बात की जब चाहूंगा, ले लूंगा, जल्दी क्या है। मैं सोचता रह गया और कूच की घड़ी आ गई और लश्कर रवाना हो गया। मैंने अभी तक कुछ इन्तिज़ाम नहीं किया था। मैंने सोचा हर्ज क्या है, चलो मैं दो दिन बाद रवाना हो जाऊंगा और रास्ते में काफिले से मिल जाऊंगा। उन सबके जाने के बाद मैं सामान जुटाने के लिए निकला लेकिन फिर कुछ किए बिना ही वापस आ गया। दूसरे दिन भी यही हुआ। मैं सुस्त ही पड़ा रहा और लड़ाई का मामला बहुत आगे निकल गया। मैंने एक बार फिर इरादा किया कि अब भी चल

कर उन्हें पा लूं। काश मैंने ऐसा ही किया होता लेकिन इसका की भी मौक़ा नहीं मिला।

यह तीनों लोग ईमान, अल्लाह व रसूल सल्ल0 से मुहब्बत, इस्लाम से वफ़ादारी में ऐसे साबित क़दम और ईमानदार व सच्चे साबित हुए कि इसकी मिसाल हमें किसी अन्य धर्म व समाज में कहीं नहीं मिलती। उन्होंने अल्लाह के रसूल सल्ल0 से सब कुछ साफ़–साफ़ बता दिया और जब लोग बातें बना कर माफी मांग रहे थे, उन्होंने उस वक़्त खुद अपने खिलाफ गवाही दी। काब बिन मालिक अपना किस्सा बयान करते हुए कहते हैं।

" यह सब पीछे रहने वाले आपके पास आए और क़समें खा–खा कर आपसे अपनी–अपनी मजबूरी बयान करने लगे। यह कोई 80 से अधिक लोग थे। आपने उनकी ज़ाहिरी बातों को कुबूल फ़रमा लिया। उनसे बैअत ली और उनके लिए दुआ की। उनके दिल की बात को अल्लाह के सुपुर्द किया। मैं भी आपकी सेवा में हाज़िर हुआ। सलाम पेश किया, आपने नाराज़गी की मुस्कान के साथ मेरा स्वागत किया फिर फरमाया, "आओ!" मैं आगे बढ़ा और आपके बिल्कुल सामने बैठ गया। आपने मुझसे पूछा, " तुम क्यों पीछे रह गए थे? क्या तुमने अपनी सवारी नहीं खरीदी थी।" मैंने कहा, "जी हा! अल्लाह की क़सम! ऐसा ही है। अल्लाह की क़सम अगर मैं आपके बजाए इस दुनिया के अन्य किसी आदमी के सामने होता तो मैं समझता कि मैं कुछ बहाना करके उसकी नाराज़गी से बच जाऊंगा। मेरे अन्दर बात करने और अपनी बात साबित करने का सलीका भी है, लेकिन अल्लाह की क़सम मुझे यकीन है कि मैं अगर आज झूठ बोल कर आपको राज़ी का लूंगा तो करीब है कि अल्लाह आपको मुझसे नाराज़ कर दे और अगर मैं सच बोल कर आपको दुखी कर दूंगा तो इसमें मुझे अल्लाह की तरफ से माफी की उम्मीद है। अल्लाह की क़सम मेरे पास कोई बहाना नहीं हैं और जिस समय मैं पीछे रह गया था उससे ज़्यादा मैं कभी स्वस्थ और सुखी न था।"

आख़िर इम्तिहान की घड़ी आ गई। अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने लोगों को उनसे बात करने को मना कर दिया। मुसलमान तो आपकी

बात सुनना और उस पर अमल करना, यही जानते थे। अतः सबने उनसे किनारा काट लिया और बिल्कुल बदल गए। यहां तक कि उनकी निगाह में ज़मीन आसमान भी बदल गए। मालूम होता था कि यह वह ज़मीन ही नहीं है जो पहले थी। इस हाल में उनकी पचास रातें गुज़रीं। मुरारा तथा हिलाल दोनों थक–हार कर अपने घर बैठ रहे और रोते रहे। काब इन सबसे ज़्यादा जवान और ताक़तवर थे। वह बाहर निकलते थे, मुसलमानों के साथ नमाज़ पढ़ते थे बाज़ारों में आते–जाते थे लेकिन कोई व्यक्ति उनसे बात करने को तैयार न था।

लेकिन इन तमाम बातों ने मुहब्बत और वफादारी के उस रिश्ते पर कोई असर नहीं डाला जो काब और अल्लाह के रसूल सल्ल0 के बीच कायम था। इससे आपकी वह मुहब्बत व शफक़त भी कम न हो सकी जो उनके हाल पर थी। बल्कि इससे उसमें और बढ़ोतरी हो गई। वह कहते हैं ।:–

"मैं अल्लाह के रसूल सल्ल0 के पास हाज़िर होता सलाम करता। उस समय आप नमाज़ के बाद अपनी मजलिस में बैठे होते। मैं अपने दिल में सोचता कि आपने सलाम के जवाब में अपने होंठ को हिलाया या नहीं। फिर मैं आपके करीब नमाज़ के लिए ख़ड़ा हो जाता और कनखियों से आपको देखता रहता। जब मैं नमाज़ में व्यस्त होता उस समय आप मेरी तरफ प्यार से देखते, जब मैं आपकी तरफ देखता तो आप निगाह फेर लेते।"

इतना ही नहीं, उनके करीबी दोस्त अबु कुतादा जिन पर उन्हें बड़ा भरोसा था, ने भी उन से मुँह फेर लिया। वह बयान करते हैं ।:–

"लोगों की जफा मेरे लिए असहनीय हो गई। अन्त में एक दिन दीवार लांघ कर मैं कुतादा के अहाते में पहुंचा। वह मेरे चचेरे भाई थे और मुझे बहुत प्यारे थे। मैंने उनको सलाम किया तो उन्होंने अल्लाह की कसम सलाम का जवाब तक नहीं दिया। मैंने कहा, "अबु कुतादा! मैं तुमको अल्लाह का वास्ता देकर पूछता हूं क्या तुम जानते हो कि मुझे अल्लाह और उसके रसूल सल्ल0 से मुहब्बत है?" इस पर भी वह खामोश रहे। मैंने दोबारा यही बात कही और उनको अल्लाह का वास्ता

दिया। वह ख़ामोश रहे फिर इतना कहा कि "अल्लाह और उसके रसूल सल्ल0 ज्यादा जानते हैं।" इस पर मेरी आँखों से आंसू बहने लगे। मैं उसी समय मुड़ा और दीवार लांघ कर चला गया।

इस पूर्णता बहिष्कार का असर इन तीनों की पत्नियों पर भी पड़ा। इनको हुक्म मिला कि वह अपनी बीवियों को अलग कर दें, और उन्होंने उस पर अमल किया।

वफ़ादारी और सच्चाई पर जमे रहने के इस इम्तिहान की सबसे नाजुक घड़ी उस समय आई जब ग़स्सान के बादशाह ने उनकी इस मुहब्बत व सम्बन्ध को ख़रीदना चाहा। यह वह बादशाह है जिसका दरबारी बनना लोग अपने लिए बड़ी खुशनसीबी समझते थे और इसके लिए बड़ी होड़ लगती थी। बादशाह का सन्देश वाहक उनके पास ऐसे समय पहुंचा जब वह कड़ी मानसिक परेशानी, लोगों की सम्बन्ध विच्छेद और अल्लाह के रसूल सल्ल0 की बेरुखी से घिरे थे। सन्देश वाहक ने उनको ग़स्सान के बादशाह का ख़त दिया जिसमें लिखा था।

"मुझे पता चला है कि तुम्हारे स्वामी ने तुम्हारे साथ जफ़ा की है। अल्लाह ने तुम्हारे नसीब में ज़िल्लत और बेकारी नहीं लिखी है तुम हमारे पास आ जाओ, हम तुम्हारे साथ अच्छा मामला करेंगे।"

इस ख़त से काब बिन मालिक की ग़ैरत भड़क उठी और उनकी मुहब्बत जोश मारने लगी। वह एक तन्दूर के पास गए और ख़त उसमें फेंक दिया।

जब इन तीनों महापुरुषों का इम्तिहान पूरा हो चुका, क़ुर्आन पाक में इनका ज़िक्र करके उन्हें अमर बना दिया और इनकी घटना ने रहती दुनिया तक मुसलमानों के लिए एक पाठ और उदाहरण बना दिया। वह अपने ईमान की परीक्षा में खरे उतरे और अल्लाह ने उनकी क़ुबूलियत का ऐलान किया और सिर्फ उनकी तौबा का ज़िक्र नहीं किया कि वह कहीं इससे तन्हाई और तिरस्कार न महसूस करें और यह कि कहीं लोग उनकी तरफ़ उंगली न उठाएं। बल्कि इनकी तौबा की भूमिका में नबियों के सरदार मुहाजिरों व अन्सार की तौबा की भी ज़िक्र किया। इसका मक़सद उनके सुकून और लोगों की निगाह में उनकी शान को दो गुना

करना था। अल्लाह पाक का इरशाद है।

अनुवाद:–"बेशक अल्लाह ने पैग़म्बर पर मेहरबानी की और मुहाजरीन व अन्सार पर जो बावजूद इसके कि उनमें से कुछ एक के दिल भर जाने को थे मुश्किल की घड़ी में पैग़म्बर के साथ रहे, फिर अल्लाह ने उन पर मेहरबानी फरमाई! बेशक वह उन पर अत्यधिक शफकत करने वाला (और) मेहरबान है और उन तीनों पर जिनका मामला स्थगित किया गया था। यहां तक कि जब ज़मीन अपनी विशालता के बावजूद उन पर तंग हो गई और उनकी जानें भी उन पर दुभर हो गई और उन्होंने जान लिया कि अल्लाह (के हाथ) से खुद उसके सिवा कोई पनाह, नहीं, फिर अल्लाह ने उन पर मेहरबानी की ताकि तौबा करें। बेशक अल्लाह तौबा कुबूल करने वाला मेहरबान है। (सूरः तौबा–117,118)

ग़ज़वों पर एक निगाह

तबूक की जंग के साथ जो हिजरत के 9वें वर्ष रजब के महीने में हुई। ग़ज़वों व सराया (रेडिंग पार्टियों) का सिलसिला ख़त्म हुआ। ☆

☆ ग़ज़वात की कुल संख्या 27 और सराया की संख्या 60 बताई गई है। ईराकी जनरल और विख्यात लेखक महमूद खत्ताब की खोज के अनुसार ग़ज़वात की संख्या 28 है।

इन तमाम ग़ज़वों और सराया में कुल मिलाकर जितना ख़ून बहा। जंगों के पूरे इतिहास में हमें इससे कम कोई मात्रा नज़र नहीं आती। इनमें मारे जाने वालों की संख्या 1018 से अधिक नहीं जिसमें, दोनों पक्ष शामिल हैं, लेकिन इस थोड़ी संख्या ने इन्सानों को जिस ख़ून ख़राबे तथा बेइज़्ज़ती से बचाया उसकी पूरी समीक्षा और सर्वे न सिर्फ कठिन बल्कि असम्भव है। इसके फलस्वरूप अरब प्रायद्वीप में और उसके आस–पास इतना अमन व इत्मिनान स्थापित हो गया कि एक सफर करने वाली औरत हीरः से चलती और काबा से तवाफ करके वापस जाती और उसे अल्लाह के सिवा किसी का डर नहीं होता। एक औरत कादेसिया से अपने ऊंट पर चलती और बैतुल्लाह (काबा) का दर्शन करती और उसको किसी का डर न होता। इससे पहले यह हालत न थी पूरे अरब प्रायद्वीप में मार काट बदले की कार्रवाईयों, घरेलू लड़ाईयों का

एक सिलसिला क़ायम था और बड़ी–बड़ी हुकूमतों के क़ाफ़िले भी सुरक्षा के कड़े बन्दोबस्त और निपुण पथ प्रदर्शकों की मदद से चलते थे।

यह ग़ज़वे क़ुर्आन पाक के दो जतन पूर्ण नियमों पर आधारित हैं। एक यह कि 'फ़ितना फैलाना अंग्रेज़ी क़त्ल (PERSECUTION) से बढ़कर है।' दूसरे यह कि 'ऐ अक़्ल वालों! तुम्हारे लिए बदला और क़सास ही में ज़िन्दगी है।" इनकी वजह से इंसानियत का बहुत वक़्त बचा, और सुधार की उन लम्बी कोशिशों और लगातार मेहनत की ज़रूरत न पड़ी जो प्रायः निष्फल रही है। इसके अलावा इन ग़ज़वात को अल्लाह के रसूल सल्ल0 का नैतिकता और सहानुभूति पूर्ण निर्देशन हासिल था। जिसमें बदले की भावना और गुस्से की आग बुझाने के बजाए सुधार का काम होता था। अल्लाह के रसूल सल्ल0 जब किसी लश्कर को रवाना फरमाते तो उसे निर्देश करते :–

"मैं तुम्हें अल्लाह से डरने और जो मुसलमान तुम्हारे साथ हों उनके साथ अच्छे बर्ताव की नसीहत करता हूं। अल्लाह के नाम पर लड़ना और अल्लाह ही के रास्ते में उससे जंग करना जिसने अल्लाह के साथ कुफ्र अपनाया। गद्दारी न करना। माले ग़नीमत की चोरी न करना। किसी बच्चे, औरत, विकलांग, बूढ़े या किसी इबादत गाह में बैठे हुए व्यक्ति को क़त्ल न करना। किसी खजूर को हाथ न लगाना। किसी पेड़ को न काटना। किसी इमारत को न गिराना।"

यह ग़ज़वे कितने सफल रहे इसका अन्दाज़ा इससे हो सकता है कि दस वर्ष के अन्दर अरब प्रायद्वीप का लगभग 274 वर्ग मील प्रतिदिन इस्लाम के असर में आता गया। मुसलमानों के जानी नुकसान को देखा जाए तो महीने में एक आदमी का औसत पड़ता है। दस वर्ष पूरे नहीं हो पाए थे कि 10 लाख वर्ग मील का इलाक़ा इस्लाम के अधीन आ चुका था। इसकी तुलना दो विश्व युद्धों से कीजिए तो आपको सही हालत का पता चलेगा।

इन्साइक्लोपीडिया ब्रिटानिका में इस प्रकरण पर जो कुछ लिखा है उससे पता चलता है कि प्रथम विश्व युद्ध में मरने वालों की संख्या 64 लाख थी तथा दूसरे विश्व युद्ध में यह संख्या 3.5 करोड़ से 6 करोड़ के

बीच थी। इन दोनों युद्धों ने जैसा कि सब जानते हैं, इंसानियत को कोई लाभ नहीं पहुंचाया न इनसे कोई समस्या हल हुई।

मध्य युग में रोमन कैथोलिक चर्च द्वारा स्थापित जांच अदालतों (INQUISITIONS) का जो नास्तिक निशाना बने उनकी संख्या 1 करोड़ 20 लाख तक पहुंचती है।

इस्लाम में पहला हज

हज सन् 9 हिजरी में फर्ज़ किया गया ☆ और अल्लाह के रसूल सल्ल० ने हज़रत अबुबक्र को हज का अमीर बनाया और मुसलमानों को हज कराने की ज़िम्मेदारी उनको सौंपी। उनके साथ मदीना से तीन सौ मुसलमानों का काफिला हज के लिए रवाना हुआ। मुश्रिक भी अपने हज के मक़ामात में थे।

☆ कुछ विद्वानों के मत है कि हज सन् 6 हिजरी में फ़र्ज़ हुआ। शेख़ मुहम्मद अल–खुदरी का यही मत है।

इस मौके पर अल्लाह के रसूल सल्ल० पर सूरःबरात उतरी। आपने हज़रत अली को बुला भेजा और उनसे फरमाया कि सूरः बरात की प्रारम्भिक आयतें और उनके अहकाम (आदेश) को लेकर वहां जाएं और कुर्बानी के दिन जब सब लोग 'मिना' में जमा हों यह ऐलान कर दें। "जन्नत में कोई काफिर दाख़िल नहीं होगा और इस साल के बाद कोई मुश्रिक हज नहीं कर सकता, और कोई व्यक्ति नंगा हो कर तवाफ नहीं सकता, और अगर अल्लाह के रसूल सल्ल० से किसी का कोई समझौता हो तो निर्धारित समय तक उसकी पाबन्दी की जाएगी।" हज़रत अली आप की ऊंटनी पर सवार होकर रवाना हुए और रास्ते में हज़रत अबुबक्र से जा मिले। उन्होंने पूछा कि 'अमीर हो या मामूर'। हज़रत अली ने कहा, 'मामूर हूं।' इसके बाद वह लोग मक्का गए। हज़रत अबुबक्र हज के बन्दोबस्त में लग गए जब कुर्बानी का दिन आया तो हज़रत अली ने खड़े होकर अल्लाह के रसूल सल्ल० के हुक्म और निर्देश के अनुसार उन सब बातों का एलान किया जो उन्हें आप सल्ल ने बतायी थीं।

अध्याय तेइस

शिष्ट मण्डलों का वर्ष

पहले अल्लाह ने हज़रत मुहम्मद मुस्तफा सल्ल0 के हाथों मक्का फतह फरमाया। फिर तबूक के मोर्चे से कामयाब होकर वापस हुए। इससे पहले आप सल्ल0 विभिन्न राज्याध्यक्षों के नाम ख़त भेज चुके थे जिनमें उन्हें इस्लाम की दावत दी गयी थी। इन ख़तों का कुछ ने श्रद्धा व सम्मान से स्वागत किया, कुछ ने नर्मी के साथ उसका जवाब दिया, कुछ अनिश्चितता की हालत में रहे और कुछ ने उसे गुस्ताख़ी के साथ रद्द कर दिया। यह वह घटना थी जिसकी ख़बर पूरे अरब में थी और जगह जगह उसकी चर्चा होती थी।

मक्का अरब प्रायद्वीप का धार्मिक व अध्यात्मिक केन्द्र था। मक्का की फतह के बाद कुरैश का इस्लाम ले आना अरब के उन लोगों के लिए बड़ा प्रभावशाली साबित हुआ जो अनिश्चितता की हालत में थे या इस्लाम की नाकामी के सपने देख रहे थे। इस घटना ने उनका रास्ता साफ कर दिया। हदीस के मशहूर विद्वान अल्लामा मुहम्मद ताहिर अली पटनी अपनी मशहूर किताब 'मजुमा–बेहारुल–अनवार' में लिखते हैं।

> "यह वर्ष शिष्ट मण्डलों के आगमन का वर्ष था। अरब क़बीलों ने इस्लाम के साथ कुरैश की प्रतिक्रिया की प्रतीक्षा की थी क्योंकि वही लोगों के अगुवा थे और काबा के ज़िम्मेदार भी। जब उन्होंने इस्लाम के सामने घुटने टेक दिए, मक्का फतह हो गया और कबीले सक़ीफ ने भी इस्लाम कुबूल कर लिया तो उन्होंने महसूस किया कि अब उनके अन्दर मुक़ाबले की ताक़त नहीं। इस समय चारों तरफ से शिष्ट मण्डलों का आगमन शुरू हुआ और लोग जत्थे के जत्थे में आकर अल्लाह के रसूल सल्ल0 के हाथ पर इस्लाम में शामिल होने की बैअत करने लगे।" (खण्ड पांच– पृ0272)

इन घटनाओं का अरबों के दिल व दिमाग पर गहरा असर पड़ा और उनके लिए आप सल्ल0 की सेवा में हाज़िर होकर इस्लाम ले आने

के दरवाज़े खुल गए। शिष्ट मण्डल इस तरह इस्लाम की परिधि में आने लगे जैसे कोई मोती की लड़ी टूट जाए और उसके सारे दाने एक तरफ लुढ़क जाएं। यह शिष्ट मण्डल आते और इस्लाम की दावत का नया जज़्बा व ईमान का नया जोश तथा बुत परस्ती व शिर्क के प्रति गहरी नफरत की भावना लेकर वापस जाते।

इन शिष्ट मण्डलों में एक मण्डल बनी तमीम का भी था जिसमें उनकी कौम के मशहूर रईस व सरदार शामिल थे। उनके प्रवक्ता व शायर और मुसलमानों के प्रवक्ता व शायर में मुक़ाबला हुआ और इसमें इस्लाम के प्रवक्ता कामयाब रहे। इस कामयाबी को उनके सरदारों ने स्वीकार किया। अल्लाह के रसूल सल्ल० ने उन्हें खूब इनाम भी दिए।

बनी आमिर का शिष्ट मण्डल भी आया। बनी साद बिन बक्र की तरफ से ज़माम–साल्बा प्रतिनिधि बन कर आए और मुसलमान होकर अपनी सेना में प्रचारक बन कर गए। वहां पहुंच कर उनका पहला वाक्य था, "बुरा हो 'लात' व 'उज्ज़ा' का!" लोगों ने कहा, "अरे क्या कहते हो ज़माम! कोढ़ से डरो, हाथी पाँव से डरो, पागल पन से डरो।" वह कहने लगे, "तुम्हारी ख़राबी हो! अल्लाह की क़सम यह दोनों न नुकसान पहुंचा सकते हैं न फायदा। बेशक अल्लाह ने एक रसूल भेजा है और उन पर एक किताब उतारी है जिसके द्वारा उन्होंने तुमको इससे छुटकारा दिया। जिसमें तुम लोग हो और मैं गवाही देता हूं कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं। वह अकेला है। उसका कोई शरीक नहीं, और मुहम्मद सल्ल० उसके बन्दे और रसूल हैं। मैं, उनके पास से जो कुछ उन्होंने हुक्म दिया और जिस चीज़ से मना किया है वही तुम्हारे लिए लेकर आया हूँ।" उस दिन शाम भी नहीं हुई कि उनके मुहल्ले में कोई औरत –मर्द ऐसा नहीं था जो इस्लाम न ला चुका हो।

बनी हनीफा का शिष्टमण्डल आया जिसमें मुसैल्मा किज़्ज़ाब भी था। यह मुसलमान हुआ लेकिन बाद में उससे फिर गया और खुद नबूवत का दावेदार बन बैठा। मुसलमानों से लड़ाई में मारा गया।

'बनी तय' के शिष्टमण्डल में मशहूर घुड़सवार 'जैदु खैल' भी थे। जिनका नाम अल्लाह के रसूल ने बदलकर 'जैदुलख़ैर' कर दिया। इनकी

गिनती मोमिनों में हुई।

मशहूर उदार हातिम के बेटे अदी बिन हातिम भी आप की सेवा में हाज़िर हुए और आपका सुलूक देखकर इस्लाम ले आए। अदी कहते हैं, "अल्लाह की क़सम यह किसी बादशाह का अन्दाज़ नहीं है।"

'बनी जुबैद' का शिष्टमण्डल भी आपके पास आया। इसमें अरब के मशहूर घुड़सवार अम्र बिन माद यकरब भी थे। 'किन्दा' के शिष्टमण्डल में 'अशअस बिन कैस' शामिल थे। 'अज्द' का शिष्टमण्डल भी आया। बादशाह हुमैर का एक दूत भी और अपने बादशाहों का ख़त लाया जिसमें वहां के लोगों ने इस्लाम कुबूल करने की सूचना दी थी।

मआज़ बिन जबल तथा अबूमूसा रज़ी0 को आपने इस्लाम की दावत देने के लिए यमन भेजा, और उन्हें निर्देश दिया, 'देखो! आसानी पैदा करना, तंगी व सख़्ती न करना, खुश ख़बरी देना, बेज़ार (परेशान) न करना।"

फरवा बिन अम्र अल जुज़ामी ने एक दूत भेजकर आपको अपने इस्लाम कुबूल करने की सूचना दी। फरवा रूमी सल्तनत की तरफ से 'मआन' का गवर्नर था।

'नजरान' बनु अल हारिस बिन काब, ख़ालिद बिन वलीद के हाथ पर इस्लाम लाए। हज़रत ख़ालिद बिन वलीद ने वहां पड़ाव करके उनको इस्लाम की दावत दी। उसके बाद ख़ालिद अपने साथ बुन अल हारिस का एक शिष्ट मण्डल लेकर वापस आए। जब वह लोग अपने इलाके में वापस गए तो उनकी शिक्षा के लिए आपने अम्र बिन हज़्म को भेजा कि वह सुन्नत और इस्लामी तरीक़ों से उनको परिचित कराएं। 'हमदान' का शिष्टमण्डल भी आपकी सेवा में हाज़िर हुआ।

मुग़ीरा बिन शेबा को अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने 'लात' बुत को तोड़ने के लिए भेजा। उन्होंने पहले इस बुत के टुकड़े किए फिर वह बुत खाने की चहार दीवारी पर चढ़ गए और दूसरे लोग जो उनके साथ वह भी चढ़ गए और सबने मिलकर उसके एक-एक पत्थर को गिराना शुरू कर दिया, यहां तक कि वह ज़मीन के बिल्कुल बराबर हो गया। उसी दिन यह शिष्टमण्डल वापस भी आ गया। आपने उस की प्रशंसा की।

अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने अब्द अल क़ैस के शिष्टमण्डल का स्वागत किया और उन्हें उन बर्तनों को प्रयोग करने से मना किया जिन में नशा जल्दी पैदा होता है। आपने ऐसा इसलिए किया कि अब्द अल क़ैस के लोग पीने पिलाने के आदी थे।

'अशरीन' तथा यमन वासियों का शिष्टमण्डल बड़ी मस्ती के साथ वह शेर पढ़ता हुआ आया जिसका अर्थ है– "कल हम प्रिय से मिलेंगे– मुहम्मद सल्ल0 और आप के साथियों से।" आपने इस शिष्टमण्डल को देख कर फरमाया, "तुम्हारे पास यमन वासी आए हैं, जो बहुत नर्म व कोमल दिल वाले हैं। ईमान तो यमन का हिस्सा है, हिकमत तो यमन की हिकमत है।"

ख़ालिद बिन वलीद को अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने एक दल के साथ इस्लाम के प्रचार के लिए यमन वासियों के पास भेजा। उन्होंने वहां 6 महीने गुज़ारे। हज़रत ख़ालिद बराबर उनको इस्लाम की दावत देते और वह कुबूल न करते। फिर आपने हज़रत अली को वहां भेजा। उन्होंने उनको आप सल्ल0 का ख़त पढ़कर सुनाया और पूरा क़बीला हमदान मुसलमान हो गया। हज़रत अली ने आपको उनके इस्लाम लाने की सूचना भेजी। आपने जब उनका ख़त पढ़ा तो सजदे में गिर पड़े फिर सर उठाया और फरमाया,"सलामती हो हमदान पर, सलामती हो हमदान पर।"

मुज़ैयना का शिष्ट मण्डल 400 लोगों के साथ आया। नजरान के ईसाइयों का भी एक शिष्टमण्डल आया जिसमें 60 सवार थे। इसमें उनके 24 सरदार थे। जिनमें उनके बड़े पादरी अबु हारिसा भी थे। रूमी बादशाह उनका बड़ा आदर करते थे और उनकी हर तरह से आर्थिक मदद करते थे और उनके लिए गिरजे बनवाते थे। इन लोगों के बारे में कुर्आन पाक में अनेक स्थानों पर आयते उतरी हैं।

नजरान वासियों के लिए अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने एक ख़त भेजा और उनको इस्लाम की दावत दी। यह ख़त पढ़कर उन्होंने आपके पास एक शिष्टमण्डल भेजा। उसने बहुत से सवाल आपके सामने रखे जिसके जवाब में 'सूरःआले इमरान' की कई आयतें उतरीं। आपने उनको

'मुबाहला' ☆ के लिए बुलाया लेकिन डर के मारे वह इस पर तैयार नहीं हुए। दूसरे दिन यह लोग फिर आपके पास आए। उस समय आपने उनको एक लिखित दी, उन पर टैक्स लगाया और अबु उबैदा बिन अल जर्राह को उनके साथ यह कहकर भेजा। 'यह उम्मत के अमीन हैं।'

☆ अर्थात 'आओ हम और तुम बुला लें अपने बेटों को और तुम्हारे बेटों को अपनी औरतों को और तुम्हारी औरतों को और खुद अपने तनों को और तुम्हारे तनों को। फिर हम सब मिलकर दिल से दुआ करें इस तरह अल्लाह की लानत भेंजे उन पर जो इस बहस में नाहक पर हों।" (सूरः आले इमरान–61)

तुजैब का शिष्टमण्डल आया तो आपको बहुत खुशी हुई। आपने उनकी बहुत इज़्ज़त और सत्कार किया। उन्होंने आपसे अनेक सवाल किए। आपने उनको सवालों के जवाब लिखवा कर दे दिए। फिर वह आप से कुर्आन व सुन्नत के बारे में बहुत सी बातें पूछने लगे। इस कारण आपको उनसे विशेष लगाव पैदा हो गया। आपने हज़रत बिलाल को निर्देश दिया कि उनकी अच्छी तरह मेहमानदारी करें। यह लोग थोड़े दिन आपके पास रहे। जाते समय उनसे पूछा गया कि वह क्यों इतनी जल्दी कर रहे हैं तो वह कहने लगे,"हम अपने लोगों में जाकर बताना चाहते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 के दर्शन हमने कैसे किए, आपके साथ हमारी क्या–क्या बातें हुयीं और आपने क्या जवाब दिए।" इस के बाद वह लोग वापस गए और पुनः सन् 10 हिजरी के हज में 'मिना' में आपकी सेवा में हाज़िर हुए।

इन शिष्टमण्डलों में बनी फज़ारा, बनी असद, बहरा और अज़रा के शिष्टमण्डल भी थे। यह सब लोग इस्लाम लाए। अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने इन्हें शाम (सीरिया) की फतह की खुश ख़बरी सुनाई। उन्हें जादू गरनियों के पास जाकर उनसे किस्मत का हाल पूछने से मना किया। वह जो कुर्बानियां करते थे उन्हें भी मना किया और फरमाया कि सिर्फ ईदुल अज़हा की कुर्बानी जायज़ है। 'बली', 'ज़ी मुर्रा' और खौलान के शिष्ट मण्डल भी आए। उनसे आपने ख़ौलान के बारे में पूछा उन्होंने कहा, "मुबारक हो, आप जो कुछ लेकर आए हैं उससे अल्लाह ने उसको बदल दिया है। कुछ पुराने लोग, कुछ बड़ी–बूढ़ी औरतें अब भी उसको

अपने सीने से लगाए हुए हैं, जब हम वापस जाएंगे तो अल्लाह ने चाहा उस बुत को तोड़ डालेंगे। 'मुहारिब', 'ग़स्सान', 'ग़ामिद' और 'नख़ा' के शिष्ट मण्डल भी आपके पास आए।

यह शिष्ट मण्डल आपकी सेवा में हाज़िर होकर दीन सीखते, दीन की समझ और जानकारी हासिल करते, अल्लाह के रसूल सल्ल0 के उच्च आचरण को देखते और आपके साथियों सहाबा का साथ उन्हें नसीब होता। प्रायः मस्जिदे नबवी में उनके लिए शिविर लगा दिया जाता। वह वहां रहते, कुर्आन पाक सुनते, मुसलमानों को नमाज़ पढ़ते हुए देखते और उनके दिल में जो कुछ आता बड़ी सादगी और सफाई से अल्लाह के रसूल सल्ल0 से पूछ लेते। आप सल्ल0 बड़े अच्छे ढंग से उन्हें समझाते, कुर्आन पाक से उदाहरण देते। इससे उनका ईमान पक्का होता और उनके अन्तः करण को सुकून मिलता।

एक जाहिल से संवाद

किनाना बिन अब्द यालैल एक जाहिल बुत पूजने वाला था। आप सल्ल0 और उसके बीच जो संवाद हुआ वह इस तरह है।

किनानाः जहां तक ज़िना (बलात्कार) का मसला है, हम लोग अक्सर ग़ैर शादी शुदा रहते हैं इसलिए यह हमारे लिए ज़रूरी है।

अल्लाह के रसूल सल्ल0: वह तुम पर हराम है। अल्लाह पाक का इरशाद है 'और ज़िना के पास भी न जाना कि वह बेहयाई और बुरा रास्ता है।''

किनानाः सूद के बारे में जो आप कहते हैं, तो हमरा सारा माल सूद ही सूद है।

अल्लाह के रसूल सल्ल0: मूलधन वापस लेने का तुम्हें हक़ है। अल्लाह पाक का इरशाद है। ''मोमिनों! अल्लाह से डरो और अगर ईमान रखते हो, जितना सूद बाक़ी रह गया है उसको छोड़ दो।''

किनानाः जहां तक शराब की बात है तो वही तो हमारी ज़मीन का निचोड़ है, और हमारे लिए बहुत ज़रूरी है।

अल्लाह के रसूल सल्ल0: अल्लाह ने इसे हराम किया है। उसका

इरशाद है। "ऐ ईमान वालों! शराब और जुआ और बुत व पांसे (यह सब) नापाक काम और शैतान के काम हैं सो इनसे बचते रहना ताकि छुटकारा पाओ।"

किनाना: रब्बा बुत के बारे में आप क्या कहते हैं?

अल्लाह के रसूल सल्ल0: उसको तोड़ डालो।

किनाना और उसके साथी: अगर रब्बा को मालूम हो जाए कि आप उसको तोड़ देना चाहते हैं ते वह अपने सब पुजारियों को ख़त्म कर दें। इस पर हज़रत उमर रज़ी ने हस्तक्षेप करते हुए कहा, "बिन अब्द यालैल! तुम्हारी ख़राबी हो। तुम कितने जाहिल हो। रब्बा एक पत्थर के सिवा क्या है?

किनाना और साथी: इब्ने ख़त्ताब! हम तुम्हारे पास नहीं आए हैं। फिर उन्होंने आप सल्ल0 को सम्बोधित करते हुए कहा, "आप उसको तोड़ डालें। हम उसको कभी नहीं तोड़ सकते हैं।'

अल्लाह के रसूल सल्ल0: मैं किसी आदमी को तुम्हारे यहां भेज दूंगा जो तुम्हारे लिए यह काम कर देगा।

फिर अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने पूरे आदर सत्कार के साथ उन्हें विदा किया। उन्होंने कहा, "या रसूल अल्लाह! आप हमारे लिए हमारी क़ौम का कोई अमीर बना दीजिए। आपने उस्मान बिन अल आस को उनका अमीर नियुक्त किया। यह उन सब में सबसे ज़्यादा युवा थे लेकिन उनकी दीन की शिक्षा से लगाव का आप सल्ल0 को ज्ञान था। उन्होंने वहां जाने से पहले कुर्आन पाक की कुछ सूरतें याद कर ली थीं।

ज़कात कब फर्ज़ हुई ?

हिजरत के पाँचवें वर्ष ज़कात फर्ज़ हुई, और अल्लाह के रसूल सल्ल ने ज़कात वसूल करने के लिए उन सभी इलाकों में अपने आदमी (सहाबा) को भेजा जहां के लोग ईमान ला चुके थे।

अध्याय चौबीस

हज्जतुल विदा

(विदाई हज)

जब सब कुछ ठीक हो गया। उम्मत के लोग बुत पूजने की बुराईयों और जाहिलियत की आदतों से पाक और ईमान की दौलत से माला–माल हो गए। उनके दिल की सर्द अंगेठियों में जोश व उल्लास की चिंगारियाँ लहक उठी काबा भी बुतों की गंदगी से पाक हो गया। मुसलमानों के अन्दर हज का नया शौक पैदा हो गया। जुदाई की घड़ी भी बहुत करीब आ गयी और हालात की मांग हुई कि उम्मत को विदा कहा जाए तो अल्लाह पाक ने अपने नबी को हज की इजाज़त दी। इस्लाम में यह आप सल्ल0 का पहला हज था।

इस हज का महत्व

आप मदीना से इस उद्देश्य से चले थे कि हज करेंगे, मुसलमानों से मिलेंगे, उनको दीन की शिक्षा देंगे और हज के मनासिक (हज सम्बन्धी काम) सिखाएंगे, हक़ की गवाही देंगे। अपना फ़र्ज़ अदा करेंगे, मुसलमानों को आख़िरी नसीहतें और वसीयतें करेंगे। उनसे वचन लेंगें और जाहिलियत (अज्ञानता) के रहे सहे निशानों को मिटाएंगे। यह हज हज़ार प्रवचन तथा हज़ार पाठ के समान था। वास्तव में यह एक चलता फिरता मदरसा, एक सचल मस्जिद और एक गश्ती छावनी थी जहां जाहिल ज्ञान से सुसज्जित होता। ग़ाफ़िल अपनी ग़फ़लत से जागता। सुस्त व काहिल, चुस्त व चालाक, और कमज़ोर बलवान बनता। चलते फिरते हर समय रहमत की घटा उनके साथ होती। यह रहमत की घटा वास्तव में अल्लाह के रसूल सल्ल0 का साथ, आप का प्रेम, आपकी शिक्षा–दीक्षा तथा आपका मार्ग दर्शन था जो आपके साथ जाने वालों तथा आपके सम्पर्क में आने वाले लाखों लोगों को हासिल था और जिसकी छाया में मानव जाति की किस्मत उजागर हो उठी।

एक ऐतिहासिक कीर्तिमान

अल्लाह के रसूल सल्ल0 की इस तीर्थ यात्रा के हर पहलू तथा बहुत ही छोटी–छोटी घटनाओं और बातों का आपके सच्चे साथियों सहाबा और न्यायप्रिय लेखकों व बयान करने वालों ने एक ऐसा रिकार्ड सुरक्षित कर दिया है जिसका उदाहरण हमें बादशाहों के सफरनामों में, सन्तों और विद्वानों की गाथाओं में कहीं नहीं मिलता।

विदाई हज पर एक निगाह

'हज्जतुल विदा' को 'हज्जतुल बलाग़' और 'हज्जतुल तमाम' के नामों से याद किया जाता है। अल्लाह के रसूल सल्ल0 के साथ इस सफर में एक लाख से अधिक सहाबी शामिल थे। ☆

☆ यह संख्या एक लाख 24 हज़ार से एक लाख 30 हज़ार के बीच बताई गई है।

आपने हज का इरादा फरमाया और लोगों को इसकी सूचना कर दी कि आप हज के लिए जाने वाले हैं। सूचना पाकर लोगों ने आपके साथ हज में जाने की तैयारियां शुरू कर दीं। इसकी ख़बर मदीना के आस पास के इलाक़ों में भी पहुंची और लोगों के जत्थे मदीना पहुंचने लगे। रास्ते में इस काफिले में इतनी बड़ी संख्या में लोग शामिल होते गए कि उनकी गिनती कठिन हो गई। लोगों का एक हुजूम था जो आगे पीछे दांए–बांए दूर तक आपको अपने घेरे में लिए था। आप मदीना से दिन में जुहर की नमाज़ के बाद 25 ज़ीक़ादा दिन शनिवार को रवाना हुए। पहले जुहर की चार रकॉत नमाज़ आपने अदा फरमायीं। इससे पहले आपने लोगों को संबोधित किया, और इस सम्बोधन में अहराम के बारे में बयान फरमाया, फिर 'तलबिया' ☆ कहते हुए रवाना हुए। भीड़ कभी इसे कम कर देती और कभी शौक में बढ़ा देती। आप इस पर उन्हें रोकते टोकते न थे। तलबिया का सिलसिला आपने बराबर जारी रखा और 'अरज' पहुंच कर आपने वहां पड़ाव किया। आपकी और हज़रत अबुबक्र की सवारी एक थी। फिर आप आगे चले और 'अलअबवा' पहुंचे, वहां से चलकर 'असफान की घाटी' और 'सरफ' में पहुंचे। फिर वहां से चलकर 'ज़ीतवा' में पड़ाव किया और शनिवार की रात वहां गुज़ारी। यह

ज़िलहिज्जा की 4 तारीख़ थी। फ़ज्र की नमाज़ आपने यहीं अदा की। उसी दिन स्नान भी किया, और मक्का की तरफ रवाना हुए। मक्का में आपने ऊंचाई की तरफ से प्रवेश किया। लगभग 11 बजे दिन का समय था। जब आपकी नज़र काबा पर पड़ी। नज़र पड़ते ही आपने फरमाया," ऐ अल्लाह! अपने इस घर की इज़्ज़त व शरफ और रोब व हैबत में बढ़ोतरी कर।" आप हाथ उठाकर तकबीर कहते और इरशाद फरमाते, " ऐ अल्लाह! आप सलामती हैं, आप ही से सलामती का वजूद है। ऐ हमारे रब! हमको सलामती के साथ ज़िन्दा रख।"

☆"लब्बैक अल्लाहुम्मा लब्बैक, लब्बैक ला शरीक लका लब्बैक, इन्नलहम्द वल नेमत लका वल मुल्क ला शरीक लक" सस्वर पढ़ना। यह हाजियों का तराना है, जिसका अर्थ है, "आपकी सेवा में ऐ अल्लाह, आपकी सेवा में, आपकी सेवा में, तेरा कोई शरीक नहीं, तेरी सेवा में, सभी तारीफें तेरी है तेरा ही मुल्क है, तेरा कोई शरीक नहीं।" तलबिया का अर्थ है 'आदेश की प्रतिक्षा में खड़ा होना।' हाजी लोग हज के समय इन शब्दों को बार–बार सस्वर दुहराते हैं। (अनुवाद)

जब आप हरम शरीफ में दाख़िल हुए तो सबसे पहले आप सल्ल0 ने काबा का रुख किया। हज्र असवद ☆ का सामना हुआ तो आपने बेहिचक इसे चूम लिया। फिर तवाफ के लिए दाहिनी तरफ रुख किया। काबा आपके बायीं तरफ था। इस तवाफ के पहले तीन चक्कर में आप सल्ल0 ने रमल किया। ☆

☆1काबा में जड़ा हुआ एक पवित्र काला पत्थर (अनुवाद)

☆2 तेज़ चलकर काबा का तवाफ करना। विस्तार के लिए 'हज की किताबें देखें।

आप तेज़ चल रहे थे, क़दमों का फासला कम होता था। आपने अपनी चादर एक कन्धे पर डाल ली थी और दूसरा कन्धा खुला हुआ था। जब आप हज्र असवद के पास से गुज़रते तो उसकी तरफ इशारा करके अपनी छड़ी से 'इस्तेलाम' ☆ करते। जब तवाफ पूरा हुआ तो मुक़ामे इब्राहीम के पास आए और यह आयत पढ़ी। "उस जगह नमाज़ पढ़ो, जहां इब्राहीम खड़े थे (नमाज़ के लिए)।" इसके बाद दो रकात नमाज़ पढ़ी। नमाज़ पढ़ चुकने के बाद फिर हज्र असवद के पास गए और उसे चूमा फिर सामने के दरवाज़े से "सफा" और "मरवा" की तरफ चले जब उसके करीब आऐतो फरमाया "सफा" और "मरवा" अल्लाह की

निशानियों में से हैं। मैं शुरू करता हूँ उससे जिसे अल्लाह ने शुरू किया।"

☆ हज्र असवद को चूमना अथवा उस तक न पहुंच सकने की दशा में छू देना। (अनुवाद)

फिर आप "सफा" पर चढे यहां तक कि काबा आपको नज़र आता रहा फिर वहां से किबला रुख होकर अल्लाह की बड़ाई इन शब्दों में बयान की:—

> "अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं, वह यकता (अकेला) है, उसका कोई शरीक नहीं, उसी का सब मुल्क और बादशाही है और उसी के लिए सारी तारीफ है, और वह हर चीज़ पर कुदरत रखने वाला है, अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं उसने अपना वादा पूरा किया। अपने बन्दे की मदद फरमाई और तमाम गिरोहों को अकेले हराया।"

मक्का में आप शनिवार से बुधवार तक चार दिन ठहरे। जुमेरात को दिन निकलते ही आप सभी मुसलमानों के साथ 'मिना' आए। जुहर और अस्र की नमाज़े यहीं अदा कीं और रात भी यहीं गुज़ारी। यह जुमा (शुक्रवार) की रात थी। दूसरे दिन जब सूरज निकल आया तो आप 'अरफा' (अरफात) की तरफ रवाना हुए। आपने देखा कि 'नमरा' में आपके लिए ख़ेमा लगाया जा चुका है। अतएव आप उसी में उतरे। जब दोपहर ढल गयी तो आपने अपनी ऊंटनी 'क़सवा' को तैयार करने का हुक्म दिया और फिर वहां से चलकर अरफात के मैदान के बीच में आपने पड़ाव किया और अपनी सवारी पर से ही एक शानदार ख़ुतबा (सम्बोधन) दिया जिसमें इस्लाम की बुनियादों को आपने साफ किया। इसमें आप सल्ल0 ने उन सभी चीज़ों को हराम बताया जिनके हराम होने पर सभी धर्म एक मत हैं। जैसे ना हक़ ख़ून करना, माल हड़प लेना। बलात्कार, अवैध शारीरिक संबंध बनाना आदि। जाहिलियत की सभी बातों से आपने मना फरमाया। ब्याज कुल का कुल आपने ख़त्म कर दिया और उसे बिल्कुल गलत ठहराया। औरतों के साथ अच्छा बर्ताव करने की आपने नसीहत की और बताया कि दस्तूर के अनुसार खाना—कपड़ा उनका हक़ है।

आपने उम्मत को अल्लाह की किताब के साथ मज़बूती से जुड़े रहने की वसीयत की। आपने फरमाया," जब तक तुम इसको अपने साथ जुड़ा हुआ रखोगे, गुमराह न होगे। आपने उन्हें आगाह किया कि क़यामत के दिन उनसे आपके बारे में सवाल होगा और वह इसके जवाब देह होंगे। यहां आपने मौजूद लोगों से पूछा कि वह आपके बारे में क्या कहेंगे और क्या गवाही देंगे। सबने एक आवाज़ होकर कहा, "हम गवाही देंगे कि आपने हक़ का पैग़ाम बिना किसी कांट छाँट के पहुंचा दिया। अपना फर्ज़ पूरा किया और उपकार का हक़ अदा कर दिया।" यह सुनकर आपने आसमान की तरफ उंगली उठाई और तीन बार अल्लाह पाक को उन पर गवाह बनाया और उनको हुक्म दिया कि जो यहां मौजूद हैं वह ग़ैर हाज़िर लोगों तक यह बात पहुंचा दें। जब आप ख़ुत्बा ख़त्म कर चुके तो आपने बिलाल रज़ी0 को अज़ान का हुक्म दिया। उन्होंने अज़ान दी फिर आपने ज़ुहर की नमाज़ दो रकात पढ़ी। उसी तरह अस्र की भी दो ही रकात पढ़ीं। यह जुमा का दिन था।

नमाज़ अदा करके, आप अपनी सवारी पर बैठे और 'मौक़िफ' ☆ पर आए। यहा आकर आप अपने ऊंट पर बैठ गए और सूरज बैठने तक बहुत ही विनम्रता से अल्लाह से दुआ करते रहे। दुआ में आप अपना हाथ सीने से उठाते थे जैसा कि कोई मांगने वाला और ग़रीब रोटी का सवाल कर रहा हो।

☆ अरफात में वह जगह जहां आपने दुआ फरमाई थी।

दुआ यह थी।

" ऐ अल्लाह! तू मेरी बात सुनता है और मेरी जगह को देखता है और मेरे ढके छिपे को जानता है। तुझसे मेरी कोई बात छिपी नहीं रह सकती। मैं मुसीबत का मारा हूँ, पनाह चाहता हूँ, परेशान हूँ, निराश हूँ, अपने गुनाहों को कुबूल करने वाला हूँ तेरे आगे सवाल करता हूँ, जैसे बेकस सवाल करते हैं, तेरे आगे गिड़गिड़ाता हूँ, और तुझसे मांगता हूँ, जैसे भयभीत मांगते हैं और जैसे वह व्यक्ति मांगा करता है जिसकी गर्दन तेरे सामने झुकी हो और उसके आंसू बह रहे हों और तन बदन से वह तेरे आगे झुका हो, और अपनी नाक तेरे आगे रगड़ रहा हो। ऐ रब! तू

मुझे अपने दुआ मांगने में ना काम न रख और मेरे हक़ में बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला हो जा! सब मांगे जाने वालों से बेहतर और सब देने वालों से अच्छे" इस मौक़े पर सूरःमायदा की निम्न आयतें उतरीं जिसका अनुवाद इस तरह है।

अनुवादः– "आज के दिन तुम्हारे लिए दीन को मैं ने पूरा कर दिया और मैं ने इस्लाम को तुम्हारा दीन बनने के लिए पसन्द कर लिया।" (सूरः मायदा–3)

जब सूरज डूब गया तो आपने उसामा बिन ज़ैद को अपने पीछे बिठाया और पूरे सुकून और वकार से अरफात से रवाना हुए। ऊंटनी की महार आप ने इस तरह समेट ली कि करीब था कि उसका सर आप की काठी से लग जाए। आप कहते जाते थे। "लोगों! सुकून और इत्मिनान के साथ चलो।" रास्ते भर आप 'तलबिया' पढ़ते जाते और जब तक 'मुज़दलिफा' न पहुंच गए यह सिलसिला जारी रहा। वहां पहुंचते ही आप ने हज़रत बिलाल को अज़ान का हुक्म दिया। अज़ान दी गई। आप खड़े हो गए और ऊंटों को बिठाने व सामान उतारने से पहले मग़रिब की नमाज़ अदा की। जब लोगों ने सामान उतार लिया तो आप ने ईशा की नमाज़ अदा की। फिर आप आराम करने के लिए लेट गए और फज्र ☆ तक सोए।

☆ प्रतिदिन पाँच वक़्त पढ़ी जाने वाली नमाज़ के नाम है। फज्र, ज़ुहर, अस्र, मग़रिब और ईशा। अनुवाद

फज्र की नामज़ पहले वक़्त में अदा की फिर सवारी पर बैठे और 'मशअरुल हराम' आए और क़िबला रुख होकर दुआ और ज़िक्र में लग गए और सूरज निकलने तक वयस्त रहे। सूरज निकलने के बाद आप 'मुज़दलिफा' से रवाना हुए। फज़ल बिन अब्बास से कहा कि 'रमी जेमार'☆के लिए सात कंकरियां चुन लें। जब आप 'मुहस्सर' घाटी के बीच में पहुंचे तो आपने ऊंटनी को तेज़ कर दिया क्योंकि यही वह जगह है जहां हाथी वालों पर अज़ाब (अभिशाप) नाज़िल हुआ था। आप 'मिना' पहुंचे और वहां से 'जमरतुल अक़बा' आए। वहां सूरज निकलने के बाद आपने रमी की और तलबिया पढ़ना बन्द किया।

☆ मिना में 'जमरा' (स्तम्भ) पर कंकरियां फेंकना। यही वह जगह है जहां शैतान ने हज़रत इब्राहीम अ0 और हज़रत इस्माईल अ0

☆ वहां तीन स्तम्भ हैं ऊला, वस्त और अक़बा।

फिर मिना वापसी हुई। यहां पहुंचकर आपने एक सारगर्भित भाषण दिया। जिसमें आपने 'यो मुत्रहर' ☆की पवित्रता पर रोशनी डाली और इस दिन का महत्व बयान किया। दूसरे सभी शहरों पर मक्का की बरतरी का ज़िक्र किया, और लोगों से कहा कि अल्लाह की किताब के अनुसार जो भी उनका मार्ग दर्शन करे वह उसका अनुसरण करें। फिर आपने लोगों से कहा कि वह आप सल्ल0 से हज के मनासिक (काम) मालूम कर लें। आपने लोगों को समझाया कि देखो मेरे बाद काफ़िरों की तरह न हो जाना जो एक दूसरे की गर्दन मारते रहते हैं। आपने यह भी कहा कि यह सब बातें दूसरों तक पहुंचा दी जाएं। इस बयान में आपने यह भी फरमाया," अपने रब की इबादत करो, पाँच वक़्त की नमाज़ पढ़ो। एक महीने (रमज़ान) के रोज़े रखो, और उन लोगों की बात मानो जो अधिकारी (अधिकृत) हैं, और तुम अपने रब की जन्नत में दाख़िल हो जाओगे।"

☆ कुर्बानी का दिन अर्थात ज़िल हिज्जा की 10 तारीख़।

इस समय आपने लोगों के सामने विदाई वाक्य भी कहे और इस कारण इस हज का नाम 'हज्जतुल विदा' पड़ा।

फिर आप मिना में कुर्बानी की जगह गए और 63 ऊंट अपने हाथ से ज़िबाह किए। जितने ऊंट आपने कुर्बान किए उतने ही वर्ष आपकी उम्र के भी हैं। इसके बाद आप रुक गए और हज़रत अली से कहा कि 100 में जितने बाक़ी हैं वह पूरा करें। जब आप कुर्बानी कर चुके तो नाई को बुलवाया और हल्क़ करवाया (सर मुँडवाया)। आपने अपने बालों को करीब के लोगों में बांट दिया। उसके बाद सवारी पर मक्का रवाना हुए। वहां तवाफ इज़ाफा किया जिसे तवाफे ज़ियारत भी कहते हैं। फिर आप ज़मज़म के कुँए पर आए और खड़े होकर पानी पिया फिर उसी दिन मिना वापसी हुई और रात वहां गुज़ारी। दूसरे दिन जब दोपहर ढल गयी तो आप अपनी सवारी से उतरकर 'रमी जेमार' के लिए गए। जमरए

ऊला से शुरू किया। इसके बाद जमरए वस्ता और जमरए अक़बा के पास जाकर रमी की। मिना में आपने दो ख़ुत्बे दिए एक कुर्बानी के दिन जिसका वर्णन ऊपर आ चुका है। दूसरा कुर्बानी के दूसरे दिन। मिना में आप ठहरे और 'अय्यामे तशरीक़' ☆ के तीनों दिन की रमी पूरी की। फिर मक्का की तरफ रवाना हुए और प्रातःकाल विदाई का तवाफ किया और लोगों को तैयारी का हुक्म दिया और मदीना रवाना हो गए। ☆

☆ ज़िल हिज्जा की 9 से 13 तारीख़ तक।

☆ विस्तार के लिए देखें 'जाद–अल–मआद' (खण्ड एक पृ० 180–249)

जब आप 'ग़दीरे ख़ुम' ☆ पहुंचे तो वहां आपने एक ख़ुत्बा दिया और हज़रत अली रज़ी० की फज़ीलत बयान फरमाई। आपने फरमाया, "जिसको मैं महबूब (प्यारे) हूँ, अली भी उसको महबूब होना चाहिए। ऐ अल्लाह! जो अली से मुहब्बत रखे तू भी उससे मुहब्बत रख और जो उनसे दुश्मनी रखे उससे तू भी दुश्मनी रख। ☆

☆ मक्का और मदीना के बीच जहफा से 3 किलोमीटर दूर एक जगह।

☆ अहमद और नसई के अनुसार इस ख़ुत्बे की एक विशेष वजह थी। कुछ लोगों ने हज़रत अली की आपसे शिकायत की थी। यह लोग यमन में अली के साथ थे और उन्हें अली के कुछ फैसले न्याययोचित प्रतीत नहीं हुए। यद्यपि उनका यह भ्रम ग़लत था कि फैसलों में पक्षपात किया गया है।

जब आप 'जुल हुलैफा' आए तो रात यहीं गुज़ारी। दूर से मदीना की बाहरी बस्तियों पर आप की नज़र पड़ी तो आपने तीन बार तकबीर कही और फरमाया, "अल्लाह बुज़ुर्ग व बरतर है, उसके सिवा कोई माबूद नहीं, उसका कोई शरीक नहीं। बस उसी की सल्तनत है, उसी के लिए तारीफ है। वह हर बात पर कुदरत रखने वाला है, लौटे आ रहे हैं तौबा करते हुए फरमां बरदाराना (आज्ञा पालन) ज़मीन पर पेशानी (माथा) रख कर आपने परवरदिगार की तारीफ करते हुए। अल्लाह ने अपना वादा सच्चा किया अपने बन्दे की मदद की और तमाम क़बीलों को अकेले हराया। आप मदीना में दिन के समय दाख़िल हुए।

दो अहम ख़ुत्बे

इस हज के दौरान अल्लाह के रसूल सल्ल० ने जो ख़ुत्बे दिए

उनमें दो का अनुवाद यहां पेश किया जा रहा है। इनमें एक वह ख़ुत्बा है जो आप ने अरफा के दिन दिया था। दूसरा वह है जो आपने अय्यामे तशरीक़ के बीच दिया था। यह दोनों ख़ुत्बे (ADDRESSES) बहुत ही लाभदायक, प्रभावशाली और नसीहत पूर्ण हैं।

अरफा का ख़ुत्बा

अनुवाद:– "तुम्हारा ख़ून और तुम्हारा माल इसी तरह हराम है जिस तरह यह दिन इस महीने में और इस शहर में हराम है। यह भी याद रखो कि हर जाहिल अम्र (बात) बातिल (झूठ) है, और जाहिलियत के सभी ख़ून (अर्थात बदले के ख़ून) बातिल (माफ) कर दिए गए, और सबसे पहले वह मैं (अपने ख़ानदान का ख़ून) इब्न रबिया बिन अल हारिस का खून बातिल (माफ) करता हूँ जिसने बनी साद में परवरिश पाई और उसको हुज़ैल ने क़त्ल कर डाला। जाहिलियत के सभी ब्याज़ भी बातिल कर दिए गए और सबसे पहले (अपने ख़ानदान का ब्याज़) अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब का ब्याज़ बातिल करता हूँ। यह सबका का ब्याज़ बातिल है। औरतों के मामलें में अल्लाह से डरो। तुमने उनको अल्लाह की अमानत के तौर पर हासिल किया है, और उनकी शर्मगाहों (गुप्तांगों) को अल्लाह की बात के साथ हलाल समझा है, और तुम्हारी तरफ से उन पर ज़िम्मेदारी है कि वह तुम्हारे बिस्तर पर किसी गै़र को जिसका आना जाना तुमको गवारा (पसन्द) नहीं है न आने दें। अगर वह ऐसा करें तो तुम उनको ऐसी मार मारो जो ज़ाहिर (उपर आना) न हो, और उनका हक़ तुम्हारे ऊपर यह है कि उनके लिए उचित रूप से ख़ाने और कपड़े का बन्दोबस्त करो। मैं तुममें एक चीज़ छोड़ जाता हूँ, अगर तुमने इसको मज़बूती से पकड़ लिया तो गुमराह न होगे। वह चीज़ क्या है? अल्लाह की किताब। तुम से अल्लाह के यहां मेरे बारे में पूछा जाएगा, तुम क्या जवाब दोगे? सहाबा ने कहा, " हम कहेंगे कि आप ने अल्लाह का पैग़ाम पहुंचा दिया। अपना फर्ज़ अदा कर दिया। आपने शहादत की उंगुली (तर्जनी) आसमान की तरफ उठाई और तीन बार फरमाया, ऐ अल्लाह तू गवाह रहना।"

दूसरा खुत्बा

अनुवादः– "ऐ लोगो! क्या तुम यह जानते हो कि तुम किस शहर में हो और यह कौन से महीना और दिन हैं, लोगों ने जवाब दिया, 'यह दिन बड़ा पाक और यह महीना बड़ी श्रद्धा (अक़ीदत) का है और यह शहर पाक शहर है।' आपने फरमाया, तुम्हारा ख़ून तुम्हारा माल और तुम्हारी इज़्ज़त इसी तरह क़यामत तक पाक है जिस तरह यह दिन, यह महीना और यह पाक शहर है। फिर फरमाया, सुनो, मुझसे वह बातें सुनो जिससे तुम सही ज़िन्दगी गुज़ार सकोगे। ख़बरदार ज़ुल्म न करना। किसी मुसलमान के माल में से कुछ लेना जायज़ नहीं, हाँ अगर वह राज़ी हो (तो कोई हर्ज नहीं), हर ख़ून, हर माल जो जाहिलियत से चला आता था क़यामत तक वह बातिल है, और सबसे पहला ख़ून जो बातिल (माफ) किया जाता है वह रबिया बिन अल हारिस बिन अब्दुल मुत्तलिब का ख़ून है, उसने बनी लैस में परवरिश पाई थी और हुज़ैल ने उसको क़त्ल कर दिया था। जाहिलियत के सभी ब्याज़ भी बातिल (माफ) कर दिए गए और अल्लाह ने यह फैसला फरमा दिया कि जो सबसे पहला ब्याज़ बातिल (माफ) किया जाए वह अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब का ब्याज़ है। तुम्हारा मूल धन तुम्हारे लिए सुरक्षित है इसमें न तुम किसी पर ज़ुल्म करोगे न तुम्हारे ऊपर ज़ुल्म किया जाएगा। शुरू में अल्लाह ने जब आसमान व ज़मीन को पैदा किया था, ज़माना घूम फिर कर फिर उसी बिन्दु पर आ गया, फिर आपने सूरः तौबा की आयत नम्बर 36 पढ़ी जिसका अनुवाद यह है।

अनुवादः–"अल्लाह के नज़दीक महीने गिनती में (12 हैं) उस रोज़ (से) कि उसने आसमानों और ज़मीनों को पैदा किया। अल्लाह की किताब में (वर्ष के) 12 महीने (लिखे हुए) हैं। उनमें से चार महीने अदब के हैं। यही दीन (का) सीधा रास्ता है तो इन (महीनों) में (ना हक़ मार काट से) अपने आप पर ज़ुल्म न करना।" हां! मेरे बाद काफिर न हो जाना कि ख़ुद एक दूसरे की गर्दन मारने

लगो और हाँ! शैतान भी इससे निराश हो चुका है कि नमाज़ पढ़ने वाले उसकी पूजा करें, लेकिन वह तुम्हारे बीच फूट डालेगा। औरतों के मामले में अल्लाह से डरो क्योंकि वह तुम्हारे ऊपर निर्भर हैं वह अपने लिए ख़ुद कोई अधिकार नहीं रखतीं और उनका तुम पर हक़ है,और तुम्हारा उन पर कि वह तुम्हारे अलावा तुम्हारे बिस्तर पर किसी को न आनें दें और न ऐसे व्यक्ति को तुम्हारे घर आने दें जिसे तुम ना पसन्द करते हो और अगर तुम उनकी ना फरमानी (अवज्ञा)से भय महसूस करो तो उन्हें नसीहत करो और उनको उनके शयन कक्ष (ख़्वाब गाहों) में छोड़ दो और हल्की मार मारो और उन्हें खाने कपड़े का हक़ उचित तरीके पर हासिल है। तुमने उन्हें अल्लाह की अमानत के तौर पर हासिल किया है, और उनकी इज़्ज़त को अल्लाह के नाम से हलाल किया है। आगाह (सचेत) हो जाओ जिसके पास कोई अमानत हो, वह जिसकी अमानत (धरोहर) है उसे वापस कर दे। इतना फरमाने के बाद आपने अपने दोनों हाथ फैलाए और फरमाया कि क्या मैंने पैग़ाम पहुंचा दिया, क्या मैंने पैग़ाम पहुंचा दिया? फिर फरमाया, जो हाज़िर हैं वह ग़ैर हाज़िर लोगों तक यह बात पहुंचा दें क्योंकि बहुत से गैर हाज़िर सुनने वालों से ज्यादा ख़ुश बख़्त होते हैं।"

अध्याय पच्चीस

वफ़ात (निधन)

जब इस्लाम अपनी तरक्की की चरम सीमा पर पहुंच गया तो कुर्आन की यह आयत उतरी जिसका अनुवाद निम्न है।

अनुवादः–"(और) आज हमने तुम्हारे लिए तुम्हारा दीन कामिल (पूरा) कर दिया और अपनी नेअमतें तुम पर पूरी कर दीं और तुम्हारे लिए इस्लाम को दीन पसन्द किया।" (सूरः मायदा–3)

अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने हिदायत (पथ प्रदर्शन) का पैग़ाम लोगों को पहुंचा दिया, अल्लाह की अमानत बिनी किसी कांट छाँट के पहुंचा दी, और हक़ (अल्लाह, सच्चाई) के रास्ते में कुर्बानी व बलिदान का हक़ अदा कर दिया, और एक ऐसी उम्मत तैयार कर दी जो नुबूवत की ज़िम्मदारियों को (नुबूवत के मंसब पर आरूढ़ हुए बिना) पूरा कर सकती थी, और इस उम्मत को उस दावत का अलम बरदार (ज़िम्मेदार) और इस दीन को तहरीफ (परिवर्तन व परिवर्द्धन) से बचाए रखने का ज़िम्मेदार बनाया गया। कुर्आन पाक में अल्लाह पाक का इरशाद है।

अनुवादः– "(मोमिनों! जितनी उम्मतें (कौमें) लोगों में पैदा हुयीं) तुम उन सबसे बेहतर हो कि नेक काम करने को कहते हो और बुरे कामों से मना करते हो और अल्लाह पर ईमान रखते हो।" (सूर आले इमरान–110)

इसी के साथ अल्लाह ने कुर्आन पाक की हिफाज़त की ज़िम्मेदारी भी ले ली और फरमाया :–

अनुवादः– "बेशक़ यह नसीहत (किताब) हमीं ने उतारी है और हमीं इसके निगहबान (रक्षक) हैं।" (सूरः हज–9)

दूसरी तरफ अल्लाह ने अपने नबी की आँखों की ठंडक के लिए जन मानस में इस्लाम कुबूल करने की एक लहर फूंकी और पूरी दुनिया में इस्लाम के प्रचार व प्रसार की निशानियां दिखने लगी और साफ दिखाई देने लगा कि देखते ही देखते यह दीन दुनिया के सभी धर्मों पर

छा जाएगा।

कुर्आन पाक में अल्लाह इरशाद फरमाता है।

अनुवादः– "जब अल्लाह की मदद आ पहुंची और फतह (हासिल हो गई) और तुमने देख लिया कि लोग झुंड के झुंड अल्लाह के दीन में दाख़िल हो रहे हैं, तो अपने परवरदिगार की तारीफ के साथ तसबीह (माला जपना) करो और उससे मग़फिरत (माफी) मांगो, बेशक वह माफ करने वाला है। (सूरः नस्र)

तिलावत ☆ और एतिकाफ ☆ में बढ़ोतरी

अल्लाह के रसूल सल्ल० ने ऐतकाफ में बढ़ोतरी कर दी। आप हर वर्ष रमज़ान माह की आख़िरी दहाई में एतिकाफ करते थे लेकिन जिस वर्ष आप सल्ल० की वफात हुई उस वर्ष आपने बीस दिन का एतिकाफ फरमाया।

☆1 कुर्आन का पाठ।

☆2 रमज़ान के महीने में आख़िरी दहाई (20 रमज़ान की शाम से ईद का चाँद होने तक) में मस्जिद में अल्लाह के दर पर पड़ा रहना। विस्तार के लिए लेखक की किताब 'अरकाने अरबा' देखें।

हज़रत जिब्रईल रमज़ान की हर रात में आपसे आकर मिलते और आप उनके साथ कुर्आन पाक का दौर (पाठ) फरमाते थे, लेकिन उस वर्ष आपने फरमाया कि इस बार वह एक के बजाए दो बार आए हैं। इससे मुझे अन्दाज़ा होता है कि मेरा वक़्त करीब आ गया है।

इस वक़्त अल्लाह ने अपने नबी को अपने से मिलने की इजाज़त अता फरमाई। जिनसे ज़्यादा उसकी मुलाक़ात का शौक और किसी को नहीं हो सकता था। अल्लाह को भी इस लेक़ा (मुलाकात) का इन्तिज़ार था और आपको भी इसका बड़ा शौक था।

अल्लाह ने सहाबा को, जिनसे बढ़कर आपका चाहने वाला इस ज़मीन पर कोई और न था, आपकी वफात की ख़बर सुनने और इस बड़े दुख को बर्दाश्त करने के लिए पहले से तैयार कर दिया था। इससे पहले ग़ज़वा–ए–उहद में उनको आप सल्ल० की अचानक शहादत की ख़बर मिली थी, फिर बाद में मालूम हुआ कि यह शैतान की साज़िश और

फैलाई हुई अफवाह थी, और अल्लाह ने उनको अपने नबी के साथ का फायदा उठाने का एक मौका दिया है। हालांकि यह बात किसी न किसी दिन होने वाली है। इस लिए कुर्आन पाक में अल्लाह का इरशाद हुआ।

अनुवादः– "और मुहम्मद (सल्ल0) तो सिर्फ (अल्लाह के) पैग़म्बर हैं, उनसे पहले भी बहुत से पैग़म्बर हो गुज़रे हैं, भला अगर इनकी वफात हो जाए या शहीदकर दिए जाएं तो तुम उलटे पाँव फिर जाओगे? (अर्थात दीन से फिर जाओगे) और जो उल्टे फिर जाएगा तो अल्लाह का कुछ नुकसान नहीं कर सकेगा और अल्लाह शुक्र अदा करने वालों को बड़ा सवाब देगा।" (सूरः आले इमरान–144)

यह मुसलमान जिनको अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने बेहतरीन शिक्षा दीक्षा दी थी, और उनके दिलों में अल्लाह की भक्ति भर दी थी, और दुनिया के दूर स्थित जगहों तक इस्लाम का पैग़ाम पहुंचाने के लिए उन्हें तैयार कर दिया था, इस बात का पूरा यक़ीन रखते थे कि आप किसी न किसी दिन इस पल भर की दुनिया को छोड़कर उनसे जुदा हो जाएंगे। जब सूरः नस्र की पहली आयत उतरी तो सहाबा ने समझ लिया कि यह आयत जुदाई की घड़ी का ऐलान है। जिस समय सूरः मायदा की तीसरी आयत उतरी तो अनेक महान सहाबियों ने महसूस किया कि आपकी वफात का वक़्त करीब है।

☆ इब्न अब्बास के अनुसार इसमें इशारा आप सल्ल0 की वफात की तरफ है। इमाम अहमद, इब्न अब्बास के हवाले से कहते हैं कि जब यह आयत उतरी तो अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने फरमाया," मुझे (इस सूरः में) अपनी वफात की ख़बर दी गयी है।

अल्लाह से मुलाकात का शौक

हज्जतुल विदा से वापसी के बाद अल्लाह के रसूल सल्ल0 से ऐसी बातें ज़ाहिर हुयीं जिनसे इशारा मिलता था कि आपकी वफात के दिन करीब हैं ☆ और आप इस सफर के लिए तैयार और अल्लाह से मिलने के लिए आतुर हैं। आप ने उहद के शहीदों के लिए 8 वर्ष बाद इस तरह दुआ की कि जैसे आप जल्द ही अपने साथियों से जुदा होने वाले हैं। फिर आप मिम्बर (आसन) पर गए और फरमाया, " मैं तुम्हारे आगे जाने

वाला हूँ, और तुम पर गवाह हूँ। अब तुम से मुलाक़ात हौज़ (कौसर) पर होगी। मैं अपने को उस जगह खड़ा हुआ देख रहा हूँ। मुझे ज़मीन के ख़ज़ानों की कुंजियां दे दी गई हैं। मुझे यह डर नहीं कि तुम मेरे बाद शिर्क करने लगोगे, मगर मैं इससे डरता हूँ कि तुम माया जाल में एक दूसरे से आगे बढ़ने की कोशिश करने लगो, और जैसे पिछली क़ौमें ख़त्म हुई थीं तुम भी ख़त्म हो जाओ।"

☆ सही मुस्लिम शरीफ में जाबिर रज़ी0 के हवाले से आया है कि आपने 'जुमरतुल अक़बा' के करीब रुक कर हम लोगों से फरमाया, " मुझसे हज के मनासिक सीख लो इसलिए कि शायद इस साल के बाद मुझे हज का मौक़ा न मिले।"

बीमारी की शुरुआत

अल्लाह के रसूल सल्ल0 को शिकायत इस्लामी कलैण्डर के दूसरे महीने सफर के आख़िर में पैदा हुई। इसकी शुरुआत इस तरह हुई कि आप आधी रात को 'जन्नतुल बक़ी'☆ गए और मुर्दों के लिए दुआ की। फिर अपने घर आए। दूसरे दिन सुबह से बीमारी शुरू हो गयी।

☆मदीना का कब्रिस्तान

हज़रत आयशा रज़ी0 बयान करती हैं कि आप बक़ी से वापस आए तो आपने मुझे इस हालत में पाया कि मेरे सर में सख़्त दर्द था। मैं कह रही थी कि मेरे सर में कितनी तकलीफ है। आपने फरमाया, "नहीं मेरे सर में कितना दर्द है। आयशा! मेरे सर में कितनी तकलीफ है।" बीमारी बढ़ गई। उस समय आप हज़रत मैमूना रज़ी0 के घर में थे। आपने अपनी सभी पवित्र बीवियों को बुलाया और उनसे इजाज़त चाही कि आप बीमारी का ज़माना आयशा रज़ी0 के यहां गुज़ारें। उन्होंने इसे खुशी से मान लिया। आप घर दो लोगों 'फज़ल बिन अब्बास और हज़रत अली' के सहारे वहां से तशरीफ ले चले। आप सल्ल0 के सर पर पट्टी बन्धी हुई थी। आपके क़दम ज़मीन पर रगड़ रहे थे।" इस तरह आप हज़रत आयशा रज़ी के घर आए।

हज़रत आयशा रज़ी0 बयान करती हैं कि आप बीमारी के दौरान फरमाते थे कि 'आयशा'! मैं उस खाने की तकलीफ अब तक महसूस करता हूँ जो मैंने ख़ैबर में खाया था। इस वक़्त उस ज़हर से मेरी रग

(अबहर ☆) कट रही है।

☆ वह रग जो पीठ से निकल दिल में जाती है। अगर वह कट जाए तो आदमी मर जाता है।

आख़िरी लश्कर

अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने उसामा बिन ज़ैद को एक लश्कर का अमीर बनाकर शाम (सीरिया) भेजा और उनको हुक्म दिया कि उनके घोड़े 'बलका' और 'दरोम' तक ज़रूर जाएं जो फ़िलस्तीन का हिस्सा है। इस लश्कर में आपने मुहाजरीन व अन्सार के चुने हुए लोगों को शामिल किया। जिनमें सबसे प्रमुख हज़रत उमर रज़ी0 थे। आपने उनको उसामा के लश्कर में जो उस समय 'जरूफ' में पड़ाव किए था, जा मिलने का हुक्म दिया, हालांकि आप गम्भीर रूप से बीमार थे। आपकी वफ़ात के बाद हज़रत अबुबक्र रज़ी0 ने आप सल्ल0 की इस इच्छा को पूरा करने के लिए उसामा के लश्कर का आगे बढ़ना जारी रखा, और उसे स्थागित नहीं किया।

उसामा की टुकड़ी से आपका गहरा लगाव

अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने महसूस किया कि लोग उसामा की टुकड़ी में शामिल होने में आगे पीछे हो रहे हैं और उनकी, एक नव उम्र लड़के को बुज़ुर्ग, अनुभव वाले मुहाजरीन व अन्सार का सरदार बनाए जाने पर, चर्चाओं को आप समझ गए। उसी सख़्त दर्द की हालत में सर पर पट्टी बांधे हुए आप बाहर आए और मिम्बर पर बैठ गए। पहले आपने अल्लाह की तारीफ़ बयान की फिर फ़रमाया, " लोगो उसामा के लश्कर को रवाना करो, अगर आज तुम इनके नेतृत्व के बारे में चर्चा करते हो तो कल तुमने इनके पिता के नेतृत्व पर भी आपत्ति की थी। बेशक वह नेतृत्व करने मे सक्षम और उसके हक़दार हैं जैसे उनके पिता उसके हक़दार थे।" इतना कहकर आप मिम्बर से नीचे उतर गए और लोग तेज़ी के साथ तैयारी में लग गए। इधर आपकी बीमारी पहले से बहुत बढ़ गई। उधर उसामा लश्कर को लेकर रवाना हो गए और मदीना से तीन मील दूरी पर 'जुरूफ' में पड़ाव किया ताकि बाक़ी लोग जो आना चाहें वह सब यहां जमा हो जाएं। इस समय आपकी तबीयत ज़्यादा

ख़राब थी। उसामा और उनके साथी वहां रुके हुए थे कि देखिए अल्लाह को क्या मंज़ूर है।

आपने बीमारी की हालत में मुसलमानों को वसीयत की कि वह इस लश्कर को उसी तरह रवाना करें जैसे आप उनको रवाना किया करते थे, और फरमाया कि अरब प्रायद्वीप में दो मज़हब बाक़ी न छोड़ें और मुश्रिकीन को यहां से निकाल दिया जाए।

मुसलमानों के लिए दुआ

बीमारी के दौरान कुछ सहाबा हज़रत आयशा रज़ी० के घर में जमा हुए आपने उनका स्वागत किया और उनके लिए दुआ की और फरमाया, "मैं तुमको अल्लाह से डरने की वसीयत करता हूँ और अपने बाद अल्लाह को तुम्हारा रक्षक बनाता हूँ, मैं उसकी तरफ़ से तुमको खुला हुआ डराने वाला और आगाही देने वाला हूँ। देखना, अल्लाह की बस्तियों और उसके बन्दों में घमण्ड और बरतरी को न अपनाना। अल्लाह ने मेरे लिए और तुम्हारे लिए पहले ही फरमाया दिया है।

अनुवादः– "वह (जो) आख़िरत का घर (है) हमने उसे उन लोगों के लिए (तैयार)कर रखा है जो मुल्क में बरतरी और फसाद का इरादा नहीं करते और अंजाम (नेक) तो परहेज़गारों ही का है।" (सूरः क़सस–83)

फिर आपने सूरः ज़ुमर की 60वीं आयत पढ़ी जिसका अनुवाद है।

अनुवादः– "क्या घमण्ड करने वालों का ठिकाना जहन्नम में नहीं है ?"

दुनिया से दूरी

हज़रत आयशा रज़ी० बयान करती हैं कि आपने बीमारी के दौरान एक बार पूछा, "आयशा! उस सोने का क्या किया? वह पाँच से सात या नौ के बीच अशरफियां लायीं। आप उनको लेकर अपने हाथ से उलटते पलटते रहे फिर फरमाया, "मैं इनके साथ अल्लाह को क्या मुँह दिखाऊंगा। जाओ इन सबको अल्लाह की राह में ख़ैरात कर दो।"

नमाज़ की फ़िक्र

आपकी तबीयत ज़्यादा भारी हो गई तो आपने पूछा, "क्या लोगों ने नमाज़ पढ़ ली ?" हमने जवाब दिया, "नहीं" या रसूल अल्लाह सल्ल० सब लोग आपका इन्तिज़ार कर रहे हैं। आपने फरमाया, "मेरे लिए लगन (बर्तन) में पानी रख दो।" लोगों ने पानी रख दिया। आप नहाए, फिर आपने उठने की कोशिश की लेकिन आप बेहोश हो गए। जब आपको होश आया तो फरमाया, "क्या सबने नमाज़ पढ़ ली ?" लोगों ने जवाब दिया, "नहीं, या रसूल अल्लाह सल्ल० सब लोग आपका इन्तिज़ार कर रहे हैं। उस वक्त सभी लोग मस्जिद नबवी में खामोश बैठे ईशा की नमाज़ के लिए इन्तिज़ार कर रहे थे। आपने हज़रत अबुबक्र को पैग़ाम कहलवाया कि वह नमाज़ पढ़ाएं। हज़रत अबुबक्र बड़े सुकोमल दिल वाले व्यक्ति थे, उन्होंने कहा, 'उमर तुम नमाज़ पढ़ाओ' हज़रत उमर ने कहा आप इसके ज़्यादा अधिकारी हैं। अतएव उन दिनों हज़रत अबुबक्र ही नमाज़ पढ़ाते रहे।

फिर अल्लाह के रसूल सल्ल० ने तबीयत में कुछ हल्कापन महसूस किया और दो आदमियों अब्बास और अली रज़ी० के सहारे से जुहर की नमाज़ के लिए बाहर आए। जब हज़रत अबुबक्र ने आपको देखा तो वह पीछे हटने लगे। आपने इशारे से उनको हिदायत की कि वह पीछे न हटें और आप सल्ल० ने उन लोगों से फरमाया कि वह आपको अबुबक्र के पहलू में बिठा दें। हज़रत अबुबक्र खड़े होकर नमाज़ पढ़ाते रहे और अपने बैठकर नमाज़ अदा फरमाई।

उम्मुल फज़ल बिन्त अल हारिस बयान करती हैं," मैं ने अल्लाह के रसूल सल्ल० को मग़रिब की नमाज़ में सूरः 'वलमुर्सलात' पढ़ते हुए सुना। इसके बाद आपको किसी नमाज़ की इमामत करने का मौक़ा नहीं आया, यहां तक कि अल्लाह ने आप सल्ल० को अपने पास बुला लिया।"

अल–विदाई खुत्बा

अल्लाह के रसूल सल्ल० ने बीमारी के दौरान मिम्बर पर बैठकर जो बातें कहीं उनमें एक मौके पर आपने फरमाया, "अल्लाह के बन्दों में

से एक बन्दे को अल्लाह ने दुनिया और अल्लाह के पास जो चीज़ें हैं, में से किसी एक चीज़ को अपनाने का अधिकार दिया तो उसने जो चीज़ अल्लाह के पास है उसे अपनाया।" हज़रत अबुबक्र इन शब्दों का मतलब समझ गए और उन्होंने महसूस किया कि यह असल में आपने अपने लिए कहा है। यह सोचकर वह रो पड़े और कहा, 'नहीं, हमारी जानें और औलाद सब आप पर कुर्बान हैं।" आपने फरमाया, "अबुबक्र! ठहरो! जल्दी न करो। बेशक कोई आदमी ऐसा नहीं जिसने अपनी जान और माल से मुझ पर इतना अहसान किया है जितना अबुबक्र ने किया है और अगर मैं लोगों में किसी को अपना ख़लील (ख़ास दोस्त) बनाता, तो अबुबक्र को अपना ख़लील बनाता, लेकिन इस्लाम का सम्बन्ध और इस्लाम से मुहब्बत सबसे अफज़ल (उत्तम) है।" ☆ आपने यह भी फरमाया, "मस्जिद का हर दरीचा ☆ जिससे मेरा समाना होता है बन्द कर दो सिर्फ अबुबक्र का ख़ोखा (छोटा दरवाज़ा) को बाक़ी छोड़ दो।"

☆1 सही बुख़ारी किताब उस सलात। ☆2 दरवाज़ा

अन्सार के साथ अच्छे बर्ताव की वसीयत

हज़रत अबुबक्र और हज़रत अब्बास रज़ी0 एक बार अन्सार की एक महफिल से गुज़रे उन्होंने देखा कि वह लोग रो रहे हैं। उन्होंने पूछा, "तुम लोग क्यों रो रहे हो?" अन्सार ने कहा, "हमें अल्लाह के रसूल सल्ल0 का साथ और आपकी मजलिस याद आ रही है।" अल्लाह के रसूल सल्ल0 को इसकी सूचना मिली तो आप बाहर आए। आपने सर को अपनी चादर के किनारे से ढक लिया था फिर आप मेम्बर पर आए ☆ उस दिन के बाद फिर आपको मिम्बर पर आने का मौक़ा नहीं आया, फिर आपने अल्लाह की तारीफ़ बयान की जो उसकी शान के लायक है।

☆सामान्यतः इसी को आपका आख़िरी ख़ुत्बा माना गया है, जो गुरुवार को ज़ुहर की नमाज़ के बाद आपने दिया था। अनस बिन मालिक के हवाले से।

उसके बाद इरशाद हुआ।

"मैं तुमको अन्सार के साथ (अच्छे बर्ताव की) वसीयत करता हूँ। वह जिस्म व जान की तरह और मेरे विश्वसनीय व राज़दार हैं। उन पर जो ज़िम्मेदारी थी उसको उन्होंने पूरा किया, उनका जो दूसरों पर हक़ है

वह बाकी है, इसलिए उनके अच्छे और नेक लोगों की बातें मान लेना और उनमें से जो लोग कुसूरवार हैं उनसे दरगुज़र (माफ) करना।"

मुसलमानों की जमाअत पर आख़िरी निगाह

हज़रत अबुबक्र रज़ी0 उसी तरह नमाज़ पढ़ाते रहे। सोमवार का दिन था मुसलमान फर्ज़ नमाज़ के सफ में (पंक्तिबद्ध) खड़े थे कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने अपने हुजरे (कक्ष) का पर्दा उठाया और कुछ देर तक आप यह मंज़र देखते रहे कि मुसलमान अपने रब के हुज़ूर किस तरह हाज़िर हैं। आपकी दावत और आपकी कोशिश क्या रंग लायी है और यह उम्मत किस तरह तैयार हुई है जो नमाज़ से इतना लगाव रखती है, और अपने नबी की मौजूदगी व गैर मौजूदगी दोनों हाल में उसी जोश व खुशी के साथ अल्लाह के हुज़ूर हाज़िर है। यह खुशगवार मंज़र देखकर आपकी आँखें ठंडी हुई और आपको इत्मिनान हुआ कि इस दीन और अल्लाह से इसका संबंध स्थाई है जो आपकी वफात के बाद भी ख़त्म न होगा। यह मंज़र देखकर आपका चेहरा ख़ुशी से दमकने लगा। सहाबा बयान करते हैं कि:—

" अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने हज़रत आयशा रज़ी0 के हुजरे का पर्दा खोला और हमें खड़े हुए बराबर देखते रहे। ऐसा मालूम होता था कि आपका चेहरा एक खुली हुई किताब का पन्ना है। फिर आप मुस्कराए और हंस पड़े। हमें यह ख्याल हुआ कि कहीं हम लोग भी खुशी की वजह से आज़माइश में न पड़ जाएं और बेक़ाबू हो जाएं। हमें यह भी गुमान हुआ कि शायद आप नमाज़ के लिए बाहर आने वाले हैं। आपने इशारा फरमाया कि नमाज़ पूरी कर लो। इसके बाद आपने पर्दा गिरा दिया और उसी दिन आप की वफात हुई।"

कब्रों की पूजा से रोक

अल्लाह के रसूल सल्ल0 के आख़िरी शब्द यह थे, "अल्लाह यहूद व नसारा (ईसाई) को तबाह करे, उन्होंने अपने नबियों की क़ब्रों को पूजाघर बना लिया। अरब की धरती पर एक समय दो मज़हब न रहें।"

हज़रत आयशा रज़ी0 व इब्न अब्बास बयान करते हैं कि जब

वफात का समय करीब आया तो एक काली धारीदार चादर आप पर पड़ी हुई थी। आप उसको कभी चेहरे पर डालते, कभी हटा देते। इसी हाल में आपने इरशाद फरमाया, "यहूद व नसारा पर अल्लाह की लानत (श्राप) हो, उन्होंने अपने नबियों की कब्रों को पूजा घर बना लिया।" आप मुसलमानों को इससे ख़बरदार फरमा रहे थे।

आख़िरी वसीयत

वफात के करीब आपकी ज़्यादतर वसीयत यह थी, देखो, नमाज़ का ख्याल रखना, अपने मातहतों और गुलामों का। यह आप बराबर फरमाते रहे, यहां तक कि ज़बाने मुबारक से इन शब्दों का अदा करना कठिन हो गया। ऐसा लगाकि आप अन्दर से इन शब्दों को अदा करने की कोशिश कर रहे हैं। हज़रत अली रज़ी० बयान करते हैं, " आप ने इस मौक़े पर नमाज़ और जमात तथा मातहतों और गुलामों के साथ अच्छा बर्ताव करने की वसीयत फरमाई।"

हज़रत आयशा रज़ी० बयान करती हैं, "मैं क़ुर्आन पाक की आख़िरी दो सूरः पढ़कर दम करने लगी कि आपने आसमानों की तरफ निगाह उठाई और फरमाया, "सबसे आला (सर्वोत्तम) रफीक़ (दोस्त) के पास, सबसे आला रफीक़ के पास।"

इसी समय अब्दुर्रहमान बिन अबी बक्र दाख़िल हुए, उनके हाथ में मिस्वाक (पीलू की) की ताज़ी टहनी थी, आपने उसको एक नज़र से देखा। मैं ने सोचा कि शायद आपको इसकी ज़रूरत है। अतएव मैंने अब्दुल रहमान से टहनी लेकर दातून तैयार की, और आपको दी, आपने उससे बहुत अच्छी तरह दांत साफ किए की, फिर मुझे वापस करने लगे लेकिन वह आप के हाथ से छूट गई।"

वह फरमाती हैं, "आपके सामने पानी का कटोरा था। आप अपने हाथ पानी के अन्दर डालते और चेहरे पर फेरे लेते और फरमाते, " अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं। सुकरात मौत बरहक है।" फिर आपने बायीं उंगली ऊपर उठाई और फरमाने लगे, "सबसे आला रफीक़ के पास, सबसे आला रफीक़ के पास। यहां तक कि रूह (आत्मा) परवाज़

(निकल) कर गई और आपका हाथ पानी में एक तरफ झुक गया।"

हज़रत आयशा रज़ी0 फरमाती हैं, "जिस समय जुदाई की घड़ी करीब आई उस समय आपका सर मेरी रान (जांघ) पर था, एक घड़ी के लिए आप पर बेहोशी तारी हुई, फिर आपको होश आ गया और आपने घर की छत की तरफ अपनी नज़र उठाई और फरमाया," बेशक सबसे आला व बरतर रफीक़ के पास।" यह वह आख़िरी शब्द थे जो वफात के वक़्त आप सल्ल0 की ज़बान से अदा हुए।"

आप दुनिया से किस हाल में गए

अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने जब इस दुनिया से पर्दा फरमाया, उस समय पूरा अरब प्रायद्वीप आपके अधीन था। दुनिया के बादशाह आपका रोब मानते थे, और आपके साथ आप पर अपना सब कुछ कुर्बान करने को तैयार रहते थे। इन सबके बावजूद आप दुनिया से इस हाल में गए कि एक दीनार या एक गुलाम या एक बान्दी कोई चीज़ भी अपने पीछे नहीं छोड़ी। सिर्फ आपका एक सफेद खच्चर था, आपके हथियार थे और एक ज़मीन का टुकड़ा जिसे आपने सदक़ा (दान) कर दिया था।

आप की वफात के समय आपकी ज़िरह (कवच) एक यहूदी के पास 30 'साअ' (तौल का पैमाना) जौ पर रहन रखी हुई थी, और आपके पास कोई चीज़ ऐसी न थी कि आप उसे देकर ज़िरह को छुड़ा सकते यहां तक कि आप दुनिया से तशरीफ ले गए। आपने अपनी वफात के मर्ज़ यानी बीमारी की हालत में 40 गुलामों को आज़ाद फरमाया। आपके पास 6 या 7 दीनार थे। हज़रत आयशा को हुक्म हुआ कि उनको भी सदक़ा कर दें।

हज़रत आयशा रज़ी0 बयान करती हैं, "अल्लाह के रसूल सल्ल0 की वफात इस हालत में हुई कि मेरे घर में कोई चीज़ न थी जिसको कोई जानवर खा सकता। थोड़ा से जौ मेरी अल्मारी पर रखा हुआ था मैं ने इसी में से कुछ खाया वह बहुत दिन चला, यहां तक कि मैं ने एक दिन उसकी नाप तौल की, बस उसी दिन के बाद वह ख़त्म हो गया।"

आपकी वफात सोमवार को 12 रबीउल अव्वल सन् 11 हिजरी को

दोपहर ढलने के बाद हुई। ☆ उस समय आपकी उम्र 63 वर्ष की थी। मुसलमानों के लिए यह बहुत ही दुख का दिन था। हज़रत अनस रज़ी0 व अबु सईद ख़ुदरी बयान करते हैं, "जिस दिन अल्लाह के रसूल सल्ल0 मदीना आए थे तो मदीना की हर चीज़ चमक उठी थी और जिस दिन आपकी वफात हुई उसी दिन उसकी हर चीज़ अंधेरे में आ गई। उम्मे ऐमन भी रो रही थीं। लोगों ने वजह पूछी तो उन्होंने जवाब किदया कि बेशक् मुझे मालूम था कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 इस दुनिया से चले जाएंगे, लेकिन मैं इस बात पर रो रही हूँ कि 'वही' (अल्लाह का पैगाम आना) का सिलसिला हम से हमेशा के लिए टूट गया।

☆ कुछ जगहों पर 'जुहा' का शब्द आया है जिसका अर्थ है दोपहर से पहले।

सहाबा ने वफात की ख़बर कैसे सुनी

आपकी वफात की ख़बर सहाबा पर बिजली बन कर गिरी। इसकी वजह उनका वह आशिक़ाना सम्बन्ध था जिसका उदाहरण नहीं मिलता, वह आपकी छत्र–छाया में इस तरह रहने के आदी हो गए थे जैसे माँ–बाप की छत्र–छाया में बच्चे रहते हैं। क़ुर्आन पाक में आता है।

अनुवादः– "(लोगों!) तुम्हारे पास तुम ही में से एक पैग़म्बर आए हैं। तुम्हारी तकलीफ उनको भारी मालूम होती है और तुम्हारी भलाई के बहुत इच्छुक हैं (और) मोमिनों पर बहुत ही शफक़त (प्रेम) करने वाले (और) मेहरबान हैं।" (सूरः तौबा–128)

इनमें से प्रत्येक व्यक्ति समझता था कि वह आपकी निगाह में सबसे अधिक प्रिय है। कुछ सहाबा को यक़ीन ही नहीं होता था कि आपकी वफात हो गई। हज़रत उमर रज़ी0 मस्जिदे नबवी में आए। उन्होंने लोगों को सम्बोधित करते हुए कहा, " अल्लाह के रसूल सल्ल0 की वफात उस समय तक न होगी जब तक अल्लाह मुनाफिकों को ख़त्म नहीं कर देगा।"

हज़रत अबुबक्र का साहसी क़दम

हज़रत अबुबक्र जो मदीना के पास किसी बस्ती में थे, को जब आपकी वफात की ख़बर मिली तो उसी समय वह आए और मस्जिदे

नबवी के दरवाज़े पर पल भर के लिए रुके। उस समय हज़रत उमर लोगों को सम्बोधित कर रहे थे। हज़रत अबुबक्र सीधे हज़रत आयशा के घर पहुंचे। अल्लाह के रसूल सल्ल0 पर एक चादर पड़ी हुई थी। उन्होंने ज़रा सी चादर सरकाई और झुक कर आप सल्ल0 के चेहरे को चूमा और कहा,"मेरे माँ–बाप आप पर कुर्बान! मौत का मज़ा तो अल्लाह ने आपकी तक़दीर में लिखा था, आपने चख लिया। अब आपको कभी भी मौत की तकलीफ न होगी।" इसके बाद उन्होंने चादर से आपका चेहरा ढक दिया और मस्जिदे नबवी आए। हज़रत उमर रज़ी0 लोगों से बात कर रहे थे। हज़रत अबुबक्र ने कहा, "उमर! ज़रा ठहरो।" लेकिन जोश में हज़रत उमर ने उनकी बात नहीं सुनी। जब हज़रत अबुबक्र ने देखा कि वह ख़ामोश नहीं हो रहे हैं तो मजमा की तरफ मुड़कर अपनी बात शुरू की। लोगों ने उनकी बात सुननी शुरू कर दी। हज़रत अबुबक्र ने अल्लाह की तारीफ बयान करने के बाद फरमाया, "लोगों! अगर कोई मुहम्मद सल्ल0 की इबादत करता था तो (उसको मालूम हो जाए) निःसन्देह उनकी वफात हो गई और अगर कोई अल्लाह की इबादत करता था तो (इत्मिनान रखे कि) अल्लाह ज़िन्दा है, उसके लिए मौत नहीं है। फिर उन्होंने सूरः आले इमरान की आयत नम्बर 144 पढ़ी जिसका अनुवाद इस तरह है।

अनुवादः– "और मुहम्मद (सल्ल0) तो सिर्फ (अल्लाह के) पैग़म्बर हैं। उनसे पहले भी बहुत से पैग़म्बर हो गुज़रे हैं, भला अगर उनकी वफात हो जाए या शहीद कर दिए जाएं तो (क्या) तुम उलटे पैर फिर जाओगे, और (अगर कोई) उलटे पैर फिर जाएगा, तो अल्लाह का कुछ नुकसान नहीं कर सकेगा और अल्लाह शुक्र अदा करने वालों को (बड़ा) सवाब देगा।"

जो लोग इस मौक़े पर हाज़िर थे उनका बयान है, " अल्लाह की क़सम जब हज़रत अबुबक्र ने यह आयत पढ़ी तो ऐसा महसूस हुआ कि आयत अभी अभी उतरी है, और हज़रत अबुबक्र ने उनके मुंह की बात कह दी। हज़रत उमर बयान करते हैं, " मैं ने जब अबुबक्र को यह आयत पढ़ते सुना तो हैरान होकर मैं ज़मीन पर गिर गया, मेरे पैरों की ताक़त

ख़त्म हो चुकी थी। उस समय मानो मुझे पता चला कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 की वफात हो गई।"

हज़रत अबुबक्र के हाथ पर ख़िलाफत की शपथ

इसके बाद सभी मुसलमानों ने बनू साअदा ☆ के सभागार में हज़रत अबुबक्र के हाथ पर ख़िलाफत की बैअत की। जल्दी इस लिए की गई कि शैतान को उनके दिलों में फूट डालने का मौका न मिले और मुनाफिक सर न उठा सकें तथा अल्लाह के रसूल सल्ल0 अपने आख़िरी सफर पर इस हाल में रवाना हों कि मुसलमान एक धागे से जुड़े हों, उनका अमीर (नेतृत्व करने वाला) मौजूद हो और उनके सारे मामलों की देख-भाल कर रहा हो। यहां तक कि ख़ुद अल्लाह के रसूल सल्ल0 का कफन-दफन मुसलमानों के ख़लीफा के हाथ अंजाम पाए।

☆ सकीफा बनु साअदा का चबूतरा जिस पर छप्पर पड़ा था और मदीना वासी सार्वजनिक मामलों को हल करने के लिए वहां जमा थे।

मुसलमानों ने अपने रसूल सल्ल0 को कैसे विदा किया

इसके बाद हालात सामान्य हो गए और सहाबा उन काम को पूरा करने में लग गए जो आप सल्ल0 ने उनको सिखाए थे।

अल्लाह के रसूल सल्ल0 को नहलाने और कफनाने का काम आपके परिवार के सदस्यों ने किया। इसके बाद आपके जनाज़े को घर ही में रख दिया गया। इस मौके पर हज़रत अबुबक्र ने कहा कि उन्होंने अल्लाह के रसूल सल्ल0 को यह कहते हुए सुना है कि जिस नबी का भी निधन हुआ उसको उसी जगह दफन किया गया जहां उसकी वफात हुई। अतएव आपका बिस्तर जिस पर आपकी वफात हुई थी उठा दिया गया और ठीक उसके नीचे कब्र खोदी गयी। यह काम अबु तलहा अन्सारी ने किया।

इसके बाद लोगों ने जमाअतों की शक्ल में आना शुरू किया। एक जमाअत आती और जनाज़ा की नमाज़ अदा करती। उसके बाद दूसरी जमाअत आकर नमाज़ पढ़ती। पहले मर्द दाख़िल होते रहे उसके बाद औरतों को दाख़िले की इजाज़त दी गई। उनके बाद बच्चों को इजाज़त

हुई और उन्होंने भी आपके जनाज़ा की नमाज़ पढ़ी। लोगों ने किसी को इन नमाज़ों का इमाम नहीं बनाया। यह बात मंगलवार की है।

यह मदीना का एक दुखदायी दिन था जब हज़रत बिलाल ने फज्र की अज़ान दी तो अल्लाह के रसूल सल्ल० को याद करके रोने लगे और उनकी हिचकियां बंध गयीं। यह देखकर दुखी मुसलमान और गहरे दुख में डूब गए। उनके कान इस अज़ान को इस हाल में सुनते थे कि अल्लाह के रसूल सल्ल० उनके बीच होते थे। आज हालत बिल्कुल उलटी हुई थी।

उम्मे सलमा रज़ी० कहती थी, "यह कितनी सख़्त मुसीबत थी, जब हमको यह मुसीबत याद आती है तो हर मुसीबत हेच और आसान मालूम होती है।

अल्लाह के रसूल सल्ल० ने ख़ुद अपने बारे में फरमाया," ऐ लोगों! तुम में से किसी को भी कोई मुसीबत पहुंचे तो वह उस मुसीबत के लिए जो उसको दूसरे के निधन से पेश आ रही है, उस मुसीबत से तसल्ली हासिल करे जो मेरी वफात से इसको पेश आई है इस लिए कि मेरी उम्मत में किसी व्यक्ति को मेरी वफात के दुख से बढ़कर कोई मुसीबत पेश न आएगी।"

जब लोग आपको दफना चुके तो हज़रत फातिमा रज़ी० ने हज़रत अनस रज़ी० से कहा, " अनस! क्या तुम्हारे दिलों ने यह गवारा (सहन) कर लिया कि आप सल्ल० के पवित्र बदन पर मिट्टी डालो।"

अध्याय छब्बीस
आपकी बीवियां और बच्चे

आपकी पवित्र बीवियों में सबसे पहला नाम हज़रत ख़दीजा बिन्त ख़ुवैलिद का हैं। आपकी नुबूवत से पहले जब उनकी उम्र 40 वर्ष थी, आपने उनसे शादी की। हज़रत ख़दीजा रज़ी0 ने आपकी नुबूवत के बाद पेश आने वाली मुश्किलों में आपकी बड़ी मदद की और आपका बड़ा साथ दिया तथा उनकी मुहब्बत व माल व दौलत हर तरह से आपकी तसल्ली व सुकून का सामान किया। उनकी वफात हिजरत से तीन साल पहले हुई। अल्लाह के रसूल सल्ल0 की तमाम औलादें, सैय्यदना इब्राहीम को छोड़कर हज़रत ख़दीजा से हैं, आप उनका ज़िक्र हमेशा तारीफ और अभार की भावना के साथ करते। कभी ऐसा होता कि कोई बकरी ज़िबह की जाती तो आप उसके विभिन्न अंग अलग करके हज़रत ख़दीजा की सहेलियों के पास भिजवाते। ☆

☆ हज़रत आयशा रज़ी0 बयान करती हैं कि "मुझे अल्लाह के रसूल सल्ल0 की बीवियों में से किसी पर इतना प्यार नहीं आया जितना ख़दीजा पर, हालांकि मैंने उनको देखा भी नहीं।"

उनके निधन के कुछ दिन बाद आप ने "सौदा बिन्त जमआ" रज़ी0 से शादी की। इसके बाद आपने हज़रत आयशा रज़ी0 से निकाह किया जो आपकी बहुत ही प्यारी बीवी थीं। उम्मत की महिलाओं में फ़िक़ह ☆ व दीनी ज्ञान में कोई उनके बराबर न था। बड़े–बड़े सहाबा पेचीदा धार्मिक समस्याओं को सुलझाने में उनसे सलाह मशवरा करते थे और उनका फतवा ☆ चाहते। इसके बाद आपने हज़रत उमर रज़ी0 की बेटी 'हफसा' रज़ी0 से निकाह किया। उसके बाद 'ज़ैनब' बिन्त खुजमा से शादी हुई जिनका शादी के दो माह बाद निधन हो गया। फिर आपने उम्म सलमा रज़ी0 से शादी की। आपकी बीवियो में उनकी वफात सबके बाद हुई। फिर आपने ज़ैनब बिन्त जहश से शादी की। यह आपकी फूफी उमेमा की बेटी थीं। इसके बाद आपने जुवेरिया बिन्त अल हारिस से शादी की जो क़बीला बनु अल मुस्तलिक़ की थीं। फिर अबु सुफियान की

बेटी उम्मे हबीबा रज़ी0 से शादी हुई और उसके बाद क़बीला बनी अन–नज़ीर के सरदार 'हुय्य बिन अख़तब' की बेटी हज़रत सफ़िया रज़ी0 से निकाह किया। 'हुय्य बिन अख़तब' हज़रत मूसा अ0 के भाई हारून बिन इमरान की औलाद में से थे। इसके बाद सबसे आख़िर में मेमूना बिन्त अल हारिस अल हिलालिया से आपका निकाह हुआ।

☆ इस्लामी आचार संहिता । ☆ इस्लामी आचार संहिता के अनुसार राय ।

इसमें कोई मतभेद नहीं है कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 की वफ़ात के वक़्त आपकी पवित्र बीवियों में से 9 मौजूद थीं। हज़रत ख़दीजा और ज़ैनब बिन्त खुज़ेमा का आपकी ज़िंदगी में ही निधन हो गया था। हज़रत आयशा को छोड़कर यह सब शादी शुदा थीं।

आपकी वफ़ात के समय आपकी दो बांदियां मौजूद थीं। एक मारिया बिन्त शमऊन जो मिस्र के क़ब्ती ख़ानदान की थीं और जिन्हें मिस्र के हाकिम मुक़ौक़िस ने आपकी ख़िदमत में पेश किया था और जो आपके बेटे सैय्यदना इब्राहीम की माँ थीं। दूसरी क़बीला बनू–अन नज़ीर की ख़ातून रेहना बिन्त ज़ैद थीं। इस्लाम क़ुबूल करने के बाद आपने उनको आज़ाद कर दिया और फिर उनसे निकाह किया।

अल्लाह ने आपकी वफ़ात के बाद इन बीवियों से शादी मुसलमानों पर हराम क़रार दे दी इसलिए कि वह मोमिनों की माँ (उम्महातुल मोमनीन) का दर्जा रखती थीं। अल्लाह पाक का इरशाद है।:–

अनुवादः–" और तुमको यह शायान नहीं कि अल्लाह के पैग़म्बर को तकलीफ़ दो और न यह कि उनकी बीवियों से कभी उनके बाद निकाह करो। बेशक यह अल्लाह के नज़दीक बड़ा गुनाह है।" (सूरः अहज़ाब–53)

इब्न कसीर इस आयत की तफ़सीर (विवेचना) में लिखते हैं।

"विद्वानों का इस बात पर पूरी तरह एक मत है कि आपकी वफ़ात के बाद किसी दूसरे के लिए आपकी बीवियों से निकाह करना हराम है, इसलिए कि दुनिया व आख़िरत दोनों जगह वह आपकी बीवियां और ईमान वालों की माँएं है।"

आपके बहुविवाह पर एक निगाह

अल्लाह के रसूल सल्ल0 25 वर्ष की उम्र तक कुंवारे रहे। आप हर तरह से परिपूर्ण इन्सानी व अरबी जवांमर्दी तथा गठे शरीर के मालिक थे। घुड़ सवारी और मर्दानगी के उच्च गुणों में आप पक्के थे। संस्कृति व सभ्यता व माहौल की बुराईयों से अल्लाह ने आपको बचाए रखा था। इन गुणों का चरित्र निर्माण में बड़ा महत्व है और अरब इन गुणों को विशेष महत्व देते हैं।

आपके कट्टर दुश्मनों को भी इन 25 वर्षों में आप पर उंगली उठाने का मौका न मिला, न आपकी नुबूवत के बाद आज तक किसी ने इस सिलसिले में आपकी तरफ कोई उंगली उठाई की। आप सच्चाई व पाकीज़गी, पवित्रता व मासूमियत के उच्च नमूने थे और हर उस कमजोरी से बहुत दूर थे जो आपकी शान के ख़िलाफ थी।

25 वर्ष की उम्र में आपने सबसे पहले हज़रत ख़दीजा रज़ी0 से निकाह किया जो उस वक्त विधवा थीं, उनकी उम्र उस समय 40 वर्ष थी ओर उनकी पहले ही दो बार शादियां हो चुकी थीं, और वह बाल–बच्चे वाली थीं और आप सल्ल0 की तथा हज़रत ख़दीजा की उम्र में मशहूर कथन के अनुसार 15 वर्ष का फर्क था। इसके बाद आपने दूसरी शादी हज़रत सौदा रज़ी0 से उस वक़्त की जब आपकी उम्र 50 वर्ष से ज़्यादा हो चुकी थी। उनके पति का हब्शा में एक मुहाजिर मुसलमान के रूप में निधन हो गया था। आपने हज़रत आयशा रज़ी0 के अलावा किसी कुंआरी और गैर शादी शुदा महिला से निकाह नहीं किया। आपने जितनी शादियां कीं उनमें दीन और दीन के प्रचार का कोई राज़, रहम दिली, मुसलमानों का कोई सार्वजनिक हित, या किसी बड़े ख़तरे से बचाव की कोई न कोई बात ज़रूर शामिल थी। रिश्तों और वैवाहिक सम्बन्धों का अरब क़बीलों के सामाजिक जीवन में जितना महत्व है उतना किसी और समाज में नहीं हे। इस लिए यह शादियां और नए रिश्ते इस्लामी दावत, ख़ून बहाने से सुरक्षा और अरब क़बीलों के नुकसान से बचाने का एक बड़ा माध्यम थे। इन पाक बीवियों के साथ आप सल्ल0 की ज़िंदगी कोई

भोग विलास का ज़िंदगी नहीं थी, जो बहुविवाह में बहुत से लोगों के सामने होता है। वह भक्ति, कुर्बानी और तृष्टि से मुक्त एक ऐसी ज़िंदगी थी जिसकी क्षमता पुराने और नए युग के बड़े बड़े हौसला मन्द और उत्साही व्यक्ति और भक्तों में भी नहीं है इसकी कुछ झलकियां अगले अध्याय में पेश की जाएंगी। फिर भी एक न्यायप्रिय व्यक्ति के लिए कुर्आन पाक की यह आयत काफी है।:–

अनुवादः– "ऐ पैग़म्बर! अपनी बीवियों से कह दो कि अगर तुम दुनिया की ज़िन्दगी और उसकी सुन्दरता व आकर्षण की इच्छुक हो तो आओ मैं तुम्हें कुछ माल दूं और अच्छी तरह से रुख़सत कर दूँ और अगर तुम अल्लाह और उसके पैग़म्बर और आक़बत का घर (अर्थात जन्नत) की तलबगार हो तो तुममें जो नेक काम करने वाली हैं उनके लिए अल्लाह ने बड़ा बदला तैयार कर रखा है।" (सूरः अहज़ाब–28,29)

इस उच्च एवं पवित्र विचार, पाक व साफ जेहन का नतीजा यह था कि इन सब बीवियों ने बिना किसी हिचकिचाहट के अल्लाह, उसके रसूल सल्ल0 तथा आख़िरत के घर को दुनिया की ज़िंदगी पर प्राथमिकता दी। नमूने के तौर पर हज़रत आयशा रज़ी0 का यह जवाब काफी है जो इस सिलसिले में उन्होंने दिया। आपने उनके सामने यह आयत तिलावत करने के बाद फरमाया," देखो जल्दी न करना, अपने माता–पिता से राय ज़रूर कर लेना।" उन्होंने जवाब दिया, "भला इस मामले में भी माँ बाप से सलाह की ज़रूरत है ? मुझे तो अल्लाह, उसके रसूल सल्ल0 और अख़िरत का घर चाहिए।" वह कहती हैं कि आप सल्ल0 की सब बीवियों ने ऐसा ही किया।

बहु विवाह तथा उसके मनोवैज्ञानिक, आर्थिक एवं सामूहिक असर व तक़ाज़ों ने अल्लाह के रसूल सल्ल0 को प्रचार की महान ज़िम्मेदारी, संघर्षमय जीवन तथा मुसलमानों के अहम कामों से पल भर के लिए ग़ाफिल (दूर) नहीं किया। बल्कि इससे आपकी सक्रियता, जोश और ताक़त व सुख में कुछ और बढ़ोतरी हुई। आप सल्ल0 की बीवियां इस्लाम के प्रचार और दीन के संगठन में आपकी मदद करती थीं। वह ग़ज़वों

(जंगों) में आप के साथ रहती थीं। घायलों का इलाज व मरीज़ों की सेवा करती थीं। आपकी घरेलू और सामाजिक ज़िन्दगी का एक तिहाई हिस्सा तथा उसके अलावा और बहुत से हुक्म व शिक्षा असल में आप की पाक बीवियों ही की वजह से पूरे हुए जिनसे मुसलमानों ने इनको विधिवत सीखा, याद किया और दूसरों को बताया व सिखाया है। ☆

☆ विस्तार के लिए देंखे, लेखक मौलाना काज़ी शाह मुहम्मद सुलेमान मन्सूरपूरी की किताब "रहमतुलल्लि आलमीन" का दूसरा भाग पृ0 141–144

इस सिलसिले में सिर्फ हज़रत आयशा रज़ी0 का नाम ले लेना काफी है जिनके बारे में मशहूर विद्वान इमाम ज़हबी ने अपनी मशहूर किताब "तज़किरतुल हुफ्फाज़" में लिखा है कि:–

"आपके जो साथी इस्लामी आचार संहिता के माहिर (विशेषज्ञ) थे उनमें हज़रत आयशा रज़ी0 सबसे आगे थीं। सहाबा उनसे पेचीदा (कठिन) मामलों पर राय लेते थे। क़बसिया बिन्त ज़ुवेब बयान करती हैं कि हज़रत आयशा समस्यओं की सबसे अधिक जानकारी रखती थीं। बड़े–बड़े सहाबा उनसे पूछते थे। अबू मूसा कहते हैं कि हम सहाबियों को किसी हदीस के समझने में कठिनाई होती तो आयशा रज़ी0 से पूछते और वह इसका ज्ञान रखती थीं। हस्सान रज़ी0 कहते हैं कि मैंने कुर्आन पाक, हलाल व हराम, फर्ज़, हुक्म, कविता, अरब का इतिहास तथा वंशजों के इतिहास का उनसे अधिक जानकार किसी को नहीं पाया।"

जहां तक नैतिक मूल्यों, जोश, रहम दिली, हमदर्दी और मुहब्बत व दिलदारी की बात है, उसके बारे में जितना भी कहा जाए कम ही होगा। इस सिलसिले में वह बयान काफी होगा जो हिशाम ने अपने पिता से नक़ल किया है, "एक बार मुआविया रज़ी0 ने हज़रत आयशा रज़ी0 को एक लाख दरहम भेजे। एक महीना भी नहीं गुज़रा था कि हज़रत आयशा ने उसे ज़रूरतमंदों में बांट दिया। उनकी बान्दी ने कहा, अगर आप इनमें से एक दरहम का गोश्त ख़रीद लेतीं तो अच्छा था। कहने लगीं कि तुमने उस वक्त याद न दिला दिया। उस वक़्त हज़रत आयशा रोज़ें से थीं।"

बहु विवाह के मामले ने पश्चिम के अनेक विचारकों तथा विद्वानों (

ORIENTALISTS) के दिल व दिमाग को उलझा रखा है। इसका एक मात्र कारण यह है कि उन्होंने अरब में और इस्लामी शरिअत में वैवाहिक जीवन की विशिष्ट व्यवस्था को पश्चिम की परिस्थितियों, आदतों तथा रस्म व रिवाज का पाबन्द बनाना चाहा है। उन्होंने पश्चिम के मापदण्डों को यहां की वस्तुस्थिति पर मढ़ने की कोशिश की है। अरब में और इस्लामी शरीअत में वैवाहिक व्यवस्था प्रकृति के सर्वथा अनुकूल तथा अरबी माहौल के अनुसार थी और इसके पीछे विभिन्न नैतिक और सामाजिक उद्देश्य छुपे थे। असल में यह पश्चिमी लेखकों का एक बहुत कमज़ोर पहलू है कि वह पहले पश्चिम को मापदण्ड बनाते हैं फिर उस कसौटी पर हर चीज़ को कसते हैं और उस पर जो खरी न उतरे उस हर चीज़ के ख़िलाफ फैसला करते हैं। वह खुद एक समस्या खड़ी करते हैं जिसकी कोई जड़ बुनियाद नहीं होती और फिर उसे हल करने की कोशिश करते हैं। यह उनकी अपनी हर चीज़ के प्रति ज़रूरत से अधिक लगाव और स्वाभिमान का नतीजा है।

अंग्रेज़ लेखक आर0वी0सी0 बोडले ने अपनी किताब (The Messenger- The life of Muhammad. London 1946-pp 202-203) में इस मामले पर साफ विचार पेश किए हैं। वह लिखते हैं:–

"मुहम्मद (सल्ल0) के वैवाहिक जीवन को न तो पश्चिम के मापदण्ड से जांचने की ज़रूरत है और न उन रस्मों और नियमों के निगाह से जिन्हें इन्सानियत ने जन्म दिया है। यह लोग न पश्चिम के थे, और न ईसाई। बल्कि वह एक ऐसे देश में और ऐसे दौर में पैदा हुए थे, जबकि उनके अपने नैतिक मूल्यों का ही चलन था। इसके बावजूद अमरीका और यूरोप के नैतिक मूल्यों को अरबों के नैतिक मूल्यों से अच्छा समझने की कोई वजह नहीं है। पश्चिम के पास पूरब के लोगों को देने के लिए बहुत कुछ है। उन्हें अभी बहुत कुछ जो पीछे छुटा हुआ है उसे बटोरना है और जब तक वह यह न साबित कर दें कि उनका रहन–सहन किसी अन्य से ऊंचे स्तर का है, उन्हें दूसरे धर्म, जाति और देश के लोगों पर अपना फैसला नहीं सुनाना चाहिए।"

पश्चिम में बहु विवाह को बिना विचार किए एक बुराई मान लिया है और वह इसे कोई महत्व दिए बिना नकारता रहा है। यह वास्तव में भावावेश में लिया गया फैसला है जो ज़ोरदार प्रचार के सहारे टिका है। यह न तो सिद्धान्ततः सही है और न ही स्वाभाविक है। इस बात की पूरी सम्भावना है कि समय के साथ और आर्थिक, सामाजिक तथा नैतिक ढांचे में बदलाव के साथ न सिर्फ भ्रमात्मक प्रचार का ज़ोर कम हो जाए बल्कि यह हमेशा के लिए ख़त्म हो जाए। पश्चिम के एक लेखक (Alwin Toffler) ने अपनी मशहूर किताब (Future Shock (Pan Books Ltd.1975)) में इस बात की सम्भावना व्यक्त की है कि पश्चिम के कामुक दृष्टिकोण में ढील के साथ और धन–दौलत में बढ़ोतरी के फलस्वरूप सम्पत्ति सम्बन्धी अधिकारो के महत्व में कमी की वजह से बहु विवाह के प्रति पश्चिम के दृष्टिकोण को लोग विवेकहीन एवं तर्क रहित समझने लगे।

आपकी औलादें

हज़रत मुहम्मद सल्ल0 के बेटे 'अल–क़ासिम' हज़रत ख़दीजा की कोख से पैदा हुए। उन्हीं के नाम पर आप सल्ल0 को 'अबुल क़ासिम' कहा जाता है। अल–क़ासिम का निधन बचपन में ही हो गया। इसके बाद क्रमशः हज़रत ज़ैनब, हज़रत रुकैय्या, हज़रत उम्मे कुलसूम और हज़रत फातिमा रज़ी0 पैदा हुयीं। हज़रत ख़दीजा से एक और बेटा पैदा हुआ जिनका नाम 'अब्दुल्ला' था और इब्न अल कैय्यम के शोध के अनुसार 'तैय्यब' व 'ताहिर' 'अब्दुल्लाह' के लक़ब थे जबकि कुछ विद्वान इन तीनों को अलग–अलग लड़के बताते हैं। यह सब औलादें हज़रत ख़दीजा से थीं।

हज़रत फातिमा रज़ी आपकी सबसे प्यारी व छोटी बेटी थीं। आपने उन्हीं के लिए इरशाद फरमाया, "वह जन्नत मे औरतों की सरदार होंगीं।" आपने यह भी फरमाया, "फातिमा मेरे जिस्म का एक हिस्सा है जिस बात से उसे तकलीफ होती है, उससे मुझे होती है।" अल्लाह के रसूल सल्ल0 की वफात के बाद परिवार के सदस्यों में सबसे पहले

हज़रत फातिमा इस दुनिया से रुख़सत हुईं और आप सल्ल0 से जा मिलीं।

मारिया क़िब्तिया से आपके लड़के इब्राहीम पैदा हुए। उनकी वफात भी बचपन में उस वक्त हुई जब वह अपने पालने में थे। उनकी वफात पर आपने फरमाया," आंखों से आंसू निकल रहे हैं और दिल दुःखी है, लेकिन हम कोई ऐसी बात नहीं कहते जो रब को नाराज़ करने वाली हो। ऐ इब्राहीम! हम तुम पर दुखी हैं।"

हज़रत इब्राहीम के निधन पर सूरज ग्रहण हो गया तो सहाबा ने कहा कि इब्राहीम के निधन की वजह से सूरज ग्रहण हो गया है। आप सल्ल0 ने सुना तो सहाबा को जमा करके उनसे कहा, "सूरज और चाँद अल्लाह की निशानियों में से दो निशानियां हैं जिनको किसी की मौत से ग्रहण नहीं होता।"

हज़रत ज़ैनब रज़ी, जो कि हज़रत ख़दीजा के भांजे अबुल आस बिन रबीअ को ब्याही थीं, के एक लड़का हुआ जिनका नाम 'अली' था और एक लड़की हुई जिसका नाम 'उमामा' था। हज़रत रुकैय्या रज़ी0 का निकाह हज़रत उस्मान रज़ी0 से हुआ और उनसे एक लड़का हुआ जिनका नाम "अब्दुल्लाह" था। हज़रत रुकैय्या का निधन उस समय हुआ जब आप बद्र के मैदान में थे। उनके बाद हज़रत उस्मान की शादी हज़रत रुकैय्या की बहन हज़रत उम्मे कुलसूम रज़ी0 से हुई इसलिए उनका लक़ब "जुन-नूरैन" पड़ा। हज़रत उम्मे कुलसूम का निधन भी आप सल्ल0 की ज़िन्दगी में ही हुआ।

हज़रत फातिमा की शादी अबुतालिब के बेटे और आप सल्ल0 के चचेरे भाई हज़रत अली से हुई। उनके बड़े लड़के हज़रत हसन रज़ी थे जिनके नाम पर हज़रत अली को 'अबुल हसन' कहा जाता है और छोटे लड़के का नाम हज़रत हुसैन था। इनके लिए आपने फरमाया, "वह इस दुनिया में मेरे दो फूल हैं।" इन दोनों के बारे में आपने यह भी फरमाया," यह दोनों जन्नत वालों में नौजवानों के सरदार होंगे।"

अल्लाह ने इन दोनों की औलाद में ख़ूब बरकत अता फरमाई और इस्लाम तथा मुसलमानों को इनसे बहुत फायदा हुआ। इनमें बड़े सरदार

और लीडर, तथा विद्वान एवं सन्त प्रवृति के इमाम पैदा हुए और उन्होंने इस्लाम के इतिहास के विभिन्न युगों में बड़े नाजुक वक्तों में मुसलमानों का मार्ग दर्शन किया और जेहाद का झण्डा बुलंद किया। हज़रत फातिमा की हज़रत अली से दो लड़कियां ज़ैनब और उम्मे कुलसूम भी थीं। ज़ैनब की शादी उनके चचेरे भाई अब्दुल्लाह बिन जाफर से हुई जिनकी गिनती अरब के बहुत रहमदिल, दानी लोगों में की जाती थी। उनसे अली और औन दो लड़के पैदा हुए। उम्मे कुलसूम की शादी हज़रत उमर बिन अल–ख़त्ताब से हुई और उनसे एक लड़का हुआ जिनका नाम ज़ैद था।

हज़रत फातिमा को छोड़कर अल्लाह के रसूल सल्ल0 की सब औलादों का आप सल्ल0 की ज़िन्दगी में ही निधन हो गया। जब कि हज़रत फातिमा का निधन आप सल्ल0 की वफात के 6 माह बाद हुआ।

अध्याय सत्ताइस

चरित्र–विवरण

हज़रत मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु अलैहि वस्सल्म के किरदार का नक्शा 'हिन्द–बिन–अबी–हाला' (जो मुसलमानों की माँ हज़रत ख़दीजा के बेटे और हज़रत हसन व हज़रत हुसैन रज़ी0 के मामू हैं) ने बहुत ही पुख्ता अंदाज़ में में इस तरह पेश किया है:–

"अल्लाह के रसूल सल्ल0 हर समय आख़िरत की सोच में रहते और इससे हमेशा चिन्तित रहते। अक्सर देर तक ख़ामोश रहते, बिना ज़रूरत न बोलते। बातचीत शुरू करते तो शब्दों का पूरा–पूरा और साफ उच्चारण करते। (अर्थात घमण्डियों की तरह आधे कटे शब्द प्रयोग नहीं करते) और इसी तरह बात–चीत ख़त्म करते। आप सल्ल0 की बात–चीत और बयान बहुत साफ व दो टूक होती, न वह गैर ज़रूरी तौर से न बहुत लम्बी होती न बहुत छोटी। आप नर्म मिजाज (कोमल प्रवृत्ति) थे और नर्म बात करते थे। कटुवादी और बेमुरव्वत न थे। न किसी को अपमानित करते और न अपने लिए अपमान पसन्द करते। ☆ अल्लाह की दी हुए नेअमत (वरदान) की बड़ी कद्र करते और उसको बहुत अधिक जानते चाहे वह थोड़ी ही क्यों न हो, और उसकी बुराई न फरमाते। खाने–पीने की चीज़ों की न बुराई करते न तारीफ़। दुनिया और दुनिया से सम्बंधित जो भी चीज़ हो तो उस पर आपको गुस्सा न आता, लेकिन जब अल्लाह के किसी हक़ को दबाया जाता तो उस वक़्त आप सल्ल0 के जलाल (शौर्य) के सामने कोई चीज़ न ठहर सकती थी। यहां तक कि आप उसका बदला ले लेते। आपको अपनी ज़ात (व्यक्तित्व) के लिए न गुस्सा आता न उसके लिए बदला लेते। जब इशारा फरमाते तो पूरे हाथ के साथ इराशा फरमाते। जब किसी बात पर हैरत (आश्चर्य) फरमाते तो उसको पलट देते। बात करते समय दाहिने हाथ की उंगली को बाएं हाथ के अंगूठे से मिलाते। गुस्सा या न पसंद बात होती तो मुँह उस तरफ से बिल्कुल फेर लेते। ख़ुश होते तो नज़रें झुका लेते। आपका हंसना

ज़्यादातर तबस्सुम (मुस्कराहट) था जिससे सिर्फ आपके दाँत जो बारिश के ओलों की तरह पाक, साफ व निर्मल थे, दिखाई देते।"

☆यहां अरबी का 'अलमुहीन' शब्द आया है। 'मुहीन' का अर्थ है किसी का अपमान न करते थे और 'महीन' का अर्थ है आप अपने लिए ज़िल्लत (अपमान) पसन्द न करते थे।

हज़रत अली जो ख़ानदान के ही एक व्यक्ति थे ने आपको बहुत करीब से देखा था। उन्हें आपके बारे में पूरी जानकारी के बेहतरीन संसाधन उपलब्ध थे। उनकी मानव प्रवृत्ति तथा आचरण की बारीकियों पर गहरी निगाह थी, साथ ही चरित्र चित्रण पर उनका अच्छा अधिकार था। वह आपके 'महान चरित्र' के बारे में कहते हैं:–

"आप स्वभाव से बदकलामी (अपशब्द) और बेहयाई व बेशर्मी से दूर थे और अनजाने में भी ऐसी कोई बात आपसे नहीं होती थी, बाज़ारों में आप कभी आवाज़ तेज़ न फरमाते, बुराई का बदला बुराई से न देते बल्कि माफ कर देते। आपने किसी पर कभी हाथ न उठाया, सिवाय इसके कि अल्लाह के रास्ते में जिहाद का मौक़ा हो। किसी सेवक या औरत पर आपने कभी हाथ नहीं उठाया। मैंने आपको किसी ज़ुल्म व ज़्यादती का बदला लेते हुए भी नहीं देखा। जब तक कि अल्लाह की निर्धारित सीमाओं की ख़िलाफवर्ज़ी (उल्लंघन) न हो और उसकी हुरमत (इज़्ज़त) पर आँच न आए। हां, अगर अल्लाह के किसी हुक्म को कुचलने की कोशिश की जाती और उसके गौरव पर आँच आती तो आप उसके लिए हर व्यक्ति से अधिक गुस्सा होते। दो चीज़ें सामने होतीं तो हमेशा आसान चीज़ का चयन करते। जब अपने घर आते तो आम इंसानों की तरह नज़र आते। अपने कपड़ों को साफ करते, बकरी का दूध दुहते और अपनी सब ज़रूरतें ख़ुद पूरी करते।

अपनी मुबारक ज़बान की सुरक्षा करते और सिर्फ उसी चीज़ के लिए खोलते जिससे आपको कुछ सरोकार होता। लोगों की दिलदारी फरमाते और उनका दिल न दुखाते। किसी कौम या बिरादरी का इज़्ज़त दार सरदार आदि आता तो उसका आदर–सत्कार करते और उसे अच्छे और उच्च पद पर बैठाते। लोगों के बारे में कुछ कहते तो बहुत सोच समझकर कहते और उन्हें अपनी सरसता व मीठे वचन से

वंचित न रखते। अपने साथियों के हालात की बराबर ख़बर रखते। लोगों से लोगों के मामलों के बारे में पूछते रहते।

अच्छी बात की अच्छाई बयान करते और उसे बल प्रदान करते। बुरी बात की बुराई करते और उसे कमज़ोर करते। आपका व्यवहार समान तथा एक सा होता। आप किसी बात से गफ़लत न करते। इस डर से कि कहीं दूसरे लोग भी ग़ाफ़िल न होने लगें। हर हाल और हर मौक़ा के लिए आपके पास उस हाल के मुताबिक ज़रूरी सामान था। हक़ में मामले में न कोताही करते न हद से आगे बढ़ते। आपके करीब जो लोग रहते थे वह सबसे अच्छे और चुने हुए होते थे। आपकी निगाह में सबसे ज़्यादा अफज़ल (उत्कृष्ट) वह था जिसकी ख़ैरख़्वाही (उपकार) और अख़लाक़ (आचरण) आम हो अर्थात सबके लिए हो। सबसे अधिक उसकी क़द्र करते जो दूसरों का दुःख बंटाने और उनकी मदद करने में सबसे आगे होता। अल्लाह का ज़िक्र करते हुए खड़े होते और अल्लाह का ज़िक्र हुए बैठते। जब कहीं जाते तो जहां मजलिस ख़त्म होती उस जगह बैठते और दूसरों से ऐसा ही करने के लिए कहते। अपनी मजलिस में मौजूद लोगों में हर व्यक्ति को (अपने ध्यान व दया दृष्टि में) पूरा हिस्सा देते। आपकी मजलिस में शामिल हर व्यक्ति यह समझता कि उससे बढ़कर आपकी निगाह में कोई और नहीं है। अगर कोई व्यक्ति आपको किसी मक़सद से बिठा लेता या किसी ज़रूरत में आपसे बात करता तो बड़े सब्र के साथ उसकी पूरी बात सुनते, यहां तक कि वह ख़ुद ही अपनी बात पूरी करके रुख़सत होता। अगर कोई व्यक्ति आपसे कोई सवाल करता या कुछ मदद चाहता तो बिना उसकी ज़रूरत पूरी किए उसे लौटाते नहीं, या कम से कम नर्म नरम अन्दाज़ में जवाब देते। आपका यह सुलूक तमाम लोगों के लिए आम था। आप उनके हक़ में बाप हो गए थे। हक़ के मामले में सभी लोग आपकी निगाह में बराबर थे। आपकी मजलिस ज्ञान व भक्ति, हया व शर्म, सब्र व अमानतदारी, की मजलिस थी। न उसमें आवाज़ें बुलन्द होती थीं न किसी के अवगुण बयान किए जाते थे। न किसी की इज़्ज़त पर हमला होता न कमज़ोरियों का ढिंडोरा पीटा जाता। सब एक-दूसरे के बराबर थे और सिर्फ तक़वा

(अल्लाह के डर) की बुनियाद पर उनको एक दूसरे पर उत्कृष्टता हासिल होती थी। इसमें लोग बड़ों का सम्मान और छोटों पर रहम दिली व शफ़क़त का मामला करते थे। ज़रूरतमंदों को अपने पर प्राथमिकता देते थे। मुसाफ़िर तथा नए आने वालों की सुरक्षा करते और उसका ख़्याल रखते थे।

आप हमेशा ख़ुश रहते थे। बहुत नर्म पहलू थे ☆। न सख़्त तबीयत के थे न सख़्त बात कहने के आदी, न चिल्ला कर बोलने वाले, न घमण्ड की बात करने वाले, न किसी को ऐब लगाने वाले, न तंगदिल। जो बात आपको पसन्द न होती उसकी तरफ़ ध्यान न देते। (अर्थात उसे नज़र अन्दाज़ कर देते) और इन्कार करने के बजाय ख़ामोश रहते। तीन बातों से आपने अपने को बिल्कुल बचा रखा था। एक झगड़ा, दूसरे घमण्ड और तीसरे ग़ैर ज़रूरी काम। लोगों को भी आपने तीन बातों से बचा रखा था। न किसी की कमज़ोरियों तथा गोपनीय बातों के पीछे पड़ते थे। सिर्फ़ वह बात करते थे जिस पर सवाब की उम्मीद होती थी। आप जब बात करते तो मौजूद लोग इस तरह सर झुका लेते थे मानो उनके सरों पर चिड़िया बैठी हुई हो। जब आप ख़ामोश होते तब यह लोग बात करते। आपके सामने कभी बहस न करते। आपकी मजलिए में अगर कोई आदमी बात करता तो बाक़ी लोग ख़ामोशी से सुनते, यहां तक कि वह अपनी बात ख़त्म कर लेता। आपके सामने हर व्यक्ति की बात का वही दर्जा होता जो उसके पहले वाले व्यक्ति का होता। जिस बात पर सब लोग हंसते उस पर आप भी हंसते। जिस पर सब हैरत व्यक्त करते आप भी उस पर हैरत करते। मुसाफिर और परदेशी की बद तमीज़ी (अशिष्ट व्यवहार) और हर तरह के सवाल को सब्र के साथ सुनते, यहां तक कि आपके साथी ऐसे लोगों का ध्यान आपकी तरफ आकर्षित कर लेते। आप फरमाते थे, "तुम किसी ज़रूरतमंद को पाओ तो उसकी मदद करो।" आप तारीफ उसी व्यक्ति की कुबूल फरमाते जो व्यक्ति औसत सीमा के अन्दर रहता। किसी की बात के दौरान बात न करते और उसकी बात कभी न काटते हाँ, अगर वह हद से बढ़ने लगता तो उसको रोक देते या मजलिस से उठकर उसकी बात ख़त्म कर देते।

आप सबसे अधिक उदार, रहम दिल, सच्चे, नर्म तबीयत और व्यवहारिक जीवन में बहुत ही दयालु थे। जो आपको पहली बार देखता उस पर आपका रोब छा जाता लेकिन जब आपके सत्संग में रहता और जान पहचान हासिल होती तो वह आपका दिल दादा (गुणगान करना) हो जाता आप का यश वर्णन करने वाला कहता है कि न आपसे पहले मैंने आप जैसा कोई व्यक्ति देखा न आप के बाद।" ☆

☆ अर्थात जल्द मेहरबान हो जाने वाले। बड़े करम वाले, बहुत आसानी से माफ करने वाले। किसी से झगड़ा न करने वाले। शन्ति प्रिय। ☆ शमायल तिर्मिज़ी के हवाले से

अल्लाह ने अपने नबी सल्ल0 को बहुत ही मनमोहक व्यक्तित्व प्रदान किया था। हिन्द बिन अबी हाला बयान करते हैं, " आप बहुत ख़ुद्दार (स्वाभिमानी) और शान व शौकत वाले थे और दूसरों की निगाह में बहुत ही रोबीले। आपका मुखड़ा चौदहवीं के चाँद की तरह दमकता था।"

बरआ बिन आज़िब बयान फरमाते हैं:–

"अल्लाह के रसूल सल्ल0 मियाना क़द थे। मैंने आपको एक बार लाल लबादा पहने हुए देखा, उससे अच्छी कोई चीज़ मैंने कभी नहीं देखी।"

हज़रत अबु हुरैरा रज़ी0 बयान करते हैं।

" आप मियान क़द थे, कुछ लम्बाई लिए हुए। रंग बहुत गोरा, दाढ़ी के बाल काले, मुँह बहुत सुडौल और सुन्दर, आँखों की पलकें लम्बी, चौड़ा कन्धा। मैंने आप जैसा आप सल्ल0 के पहले या आप सल्ल0 के बाद कभी नहीं देखा।"

हज़रत अनस रज़ी0 बयान करते हैं कि

" मैंने हरीर व दीबाज (मख़मल) को भी आपके हाथ से अधिक नर्म नहीं पाया, न आपकी ख़ुशबू से बढ़कर कोई ख़ुशबू सूँघी।"

अल्लाह से लगाव

यद्यपि अल्लाह ने आपको अपना बहुत ही प्यारा रसूल बनाकर भेजा था और आपके अगले पिछले सब गुनाह माफ कर दिए थे, फिर भी आप इबादत में सबसे ज़्यादा लगे रहते और उसके सबसे अधिक इच्छुक

थे।

मुग़ीरा बिन शोबा कहते हैं, "एक बार अल्लाह के रसूल सल्ल0 नमाज़ (नफल) में इतनी देर तक खड़े रहे कि आपके पैरों में सूजन आ गयी। लोगों ने कहा कि आपके तो पिछले गुनाह माफ हो चुके हैं। यह सुनकर आपने फरमाया, " क्या मैं अल्लाह का शुक्रगुज़ार (कृतज्ञ) बन्दा न बनूँ।"

हज़रत आयशा रज़ी0 फरमाती हैं, "अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने कुर्आन पाक की एक आयत (पढ़ने में) में पूरी रात गुज़ार दी।" हज़रत अबुज़र बयान करते हैं, "अल्लाह के रसूल सल्ल0 नमाज़ के लिए खड़े हुए और एक आयत में सुबह कर दी।" यह सूरः मायदा की 118 वीं आयत थी जिसका अनुवाद इस तरह है।

अनुवादः– "अगर तू उनको अज़ाब दे तो बेशक वह तेरे बन्दे हैं और अगर माफ फरमा दे तो तू ग़ालिब और हिकमत वाला है।"

हज़रत आयशा बयान करती हैं, "आप जब रोज़े रखते थे, उसकी अधिकता देखकर हम लोग कहते कि अब शायद आप हमेशा रोज़ा ही से रहेंगे, जब रोज़ा से न होते तो हम सोचते कि शायद अब आप रोज़ा न रखेंगे।"

हज़रत अनस बयान करते हैं, "अगर कोई आपको रात के क़याम (नमाज़) की एक स्थिति में व्यस्त देखना चाहता तो देख सकता था, और इसी तरह नींद की हालत में देखना चाहता तो भी देख सकता था।"

अब्दुल्लाह बिन अश्शख़ीर कहते हैं, "मैं आपके पास गया, मैंने देखा कि आप नमाज़ में व्यस्त हैं, और आह भरने से आपके सीने से ऐसी आवाज़ निकल रही है जैसे डेगची उबल रही हो।" आपको नमाज़ के सिवा किसी और चीज़ से तसल्ली न होती थी, और मालूम होता था कि नमाज़ के बाद भी आप नमाज़ के इन्तिज़ार में हैं। आप फरमाते थे, "मेरी आँखों की ठंडक नमाज़ में रखी गई है।"

आपके साथियों, सहाबा का बयान है," जब कभी रात को तेज़ हवाएं चलतीं तो आप मस्जिद में पनाह लेते यहां तक कि हवा थम जाती। अगर आसमान में कोई बदलाव होता जैसे सूरज ग्रहण, चाँद

ग्रहण, तो आप नमाज़ पढ़ते और उससे पनाह हासिल करते यहां तक कि ग्रहण ख़त्म हो जाता।" आप नमाज़ के लिए हर वक्त इन्तिज़ार में रहते और इसके बिना आपको चैन नहीं मिलता, और जब तक नमाज़ पढ़ न लेते आपकी बेचैनी बनी रहती। कभी आप हज़रत बिलाल से फरमाते," बिलाल नमाज़ का बंदोबस्त करो, हमारे सुकून का सामान करो।"

मायाजाल से दूर

जहाँ तक दरहम, दीनार और धन दौलत का सवाल है, शब्दों के बड़े से बड़ा कोष और उच्चकोटि की वर्णन शैली भी आपकी निगाह में उस की सही हैसियत को पूरी तरह बयान नहीं कर सकती। क्योंकि आपके ईमानी मदरसे के बोरियां नशीं (बोरी पर बैठने वाले) अरब तथा अरब के बाहर उनके शार्गिदों के शार्गिद भी दरहम व दीनार को मिट्टी के ठीकरों से अधिक नहीं समझते थे। उनकी भक्ति, मायाजाल से उनकी दूरी, दूसरों पर अपना माल खर्च करने का उनका शौक़ और आत्म सन्तोष की जो बातें इतिहास के पन्नों में सुरक्षित हैं उनसे इन्सानी अक़्ल हैरान रह जाती है। जब आपके सेवकों का यह हाल है तो ख़ुद आप सल्ल0 का इस बारे में क्या हाल होगा, जो उनके शिक्षक और पथ प्रदर्शक थे।

इसलिए हम उन कुछ बातों का उल्लेख यहां करते हैं जो आपके साथियों की ज़बान से हम तक पहुंची हैं।

आप सल्ल0 के दो मशहूर कथन, जिन्हें आप की पूरी ज़िंदगी का केन्द्र बिन्दु व धुरी कहा जा सकता है और जिस पर आप सल्ल0 हमेशा अमल करते थे, का अनुवाद इस तरह है।

(1) ऐ अल्लाह! असल ज़िन्दगी तो आख़िरत (परलोक) की ज़िन्दगी है।

(2) मुझे दुनिया से क्या सरोकार। मेरा दुनिया से वास्ता (सम्बन्ध) इतना ही है जैसे कोई मुसाफिर राह में थोड़ी देर के लिए किसी पेड़ की छाया में दम ले ले फिर अपनी राह ले और उसको छोड़कर चल दे।

हज़रत उमर रज़ी0 ने आपको एक बार चटाई पर इस हालत में

लेटे हुए देखा कि आपके पहलू में उसके निशान पड़ गए थे यह देखकर उनकी आँखों में आंसू भर आए। आपने पूछा, "क्या बात है ?" हज़रत उमर ने कहा, "या रसूल अल्लाह! आप अल्लाह की कुदरत में सबसे प्यारे हैं, और ऐश व आराम कैसर व किस्रा कर रहे हैं।" यह सुनकर आप सल्ल० का चेहरा लाल हो गया और आपने फरमाया, "इब्ने अल – खत्ताब! क्या तुम्हें कुछ शक है।" फिर फरमाया, "यह वह लोग हैं जिनको दुनिया की ज़िन्दगी में सारे मज़े दे दिए गए हैं।" आराम की ज़िन्दगी न सिर्फ आप अपने लिए ना पसन्द फरमाते थे बल्कि अपने परिवार के लिए भी इसे पसन्द न करते थे। आपकी दुआ थी, "ऐ अल्लाह! मुहम्मद के परिवार का रिज़्क़ (खाना–पीना) बस ज़रूरत भर हो।" हज़रत अबु हुरैरा रज़ी० बयान करते हैं, "क़सम उसकी जिसके क़ब्ज़े में अबु हुरैरा की जान है, अल्लाह के नबी और उनके घर वाले कभी लगातार तीन दिन गेहूँ की रोटी पेट भर कर न खा सके, यहाँ तक कि इस दुनिया से पर्दा फरमा लिया।"

हज़रत आयशा रज़ी० बयान करती हैं, "हम मुहम्मद सल्ल० के घर वालों को एक चाँद गुज़र कर दूसरा चाँद नज़र आ जाता और हमारे घर में चूल्हा न जलता, सिर्फ खजूर और पानी पर हमारी गुज़र बसर होती थी।"

आपकी ज़िरह एक यहूदी के पास गिरवी रखी थी और आपके पास इतना धन न था कि आप उसको छुड़ा सकते, यहां तक इसी हाल में आपकी वफात हो गई।

आपने हज्जतुल विदा इस हाल में किया कि जहाँ तक नज़र पहुंचती मुसलमान नज़र आ रहे थे। पूरा अरब प्रायद्वीप आपके अधीन था, और हालत यह थी कि आप एक ख़स्ता हाल कुजावा (फटी पुरानी गद्दी) पर थे, आप सल्ल० पर सिर्फ एक चादर पड़ी हुई थी जिसकी मालियत चार दरहम से अधिक न थी, उस समय आपने फरमाया, "ऐ अल्लाह! इसको ऐसा हज बना जिसमें कोई रिया दिखावा और शोहरत तलबी (ख्याती की इच्छा) न हो।"

हज़रत अबुज़र से आपने एक मौके पर फरमाया, "मुझे यह पसंद

नहीं कि मेरे पास उहद पहाड़ के बराबर सोना हो और तीन दिन गुज़र जाएं और उसमें से एक दीनार भी मेरे पास बाकी रहे, सिवाय इसके कि किसी दीनी काम के लिए मैं उसमें से कुछ बचा रखूँ वरना, अल्लाह के बन्दों में मैं उसको इस तरह दाएं बाएं और पीछे लुटा दूँ।"

जाबिर बिन अब्दुल्लाह बयान करते हैं, "कभी ऐसा नहीं हुआ कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 से किसी चीज़ का सवाल किया गया हो और आप सल्ल0 ने उसके जवाब में नहीं कहा हो।" इब्न अब्बास कहते हैं, "अल्लाह के रसूल सल्ल0 फैय्याज़ी (उदारता) और दान देने में तेज़ हवा से अधिक तेज़ थे।"

हज़रत अनस रज़ी बयान करते हैं, "एक व्यक्ति ने आपसे कुछ सवाल किया तो आपने उसे बकरियों–भेड़ों का पूरा झुंड जो दो पहाड़ों के बीच था दे दिया। वह यह सब बकरियां लेकर अपनी कौम में वापस गया और कहने लगा, "(लोगों) इस्लाम ले आओ। मुहम्मद (सल्ल) इस तरह बांट रहे हैं कि जैसे उनको भुखमरी का डर ही न हो।" एक बार आपकी सेवा में 90 हज़ार दरहम पेश किए गए। यह धन एक चटाई पर डाल दिया गया और आप सल्ल0 ने खड़े होकर बांटना शुरू किया, और किसी सवाल करने वाले को आप सल्ल0 ने वापस न किया यहां तक कि सारा ढ़ेर ख़त्म हो गया।"

सामान्य जीवन

लेकिन भक्ति की इस गूढ़ भावना, दुनिया के मायाजाल से दूरी तथा अल्लाह की हर वक्त याद की वजह, आपके सरस स्वभाव सदाचरण शफकत व दिलदारी और हर आदमी को उसका हक़ देने और उसके पद व हैसियत के अनुसार बर्ताव करने में कोई फर्क न आया था और यह दोनों बातें ऐसी हैं कि इनको इस तरह जमा करना किसी दूसरे के लिए नमुमकिन है। आप फरमाते थे, "जो मैं जानता हूँ वह अगर तुम जान लेते तो बहुत कम हँसते और बहुत ज़्यादा रोते।"

आप तमाम लोगों में सबसे अधिक उदार नर्म तबियत और ख़ानदानी तौर पर सबसे अधिक श्रद्धा के लायक थे। आप अपने साथियों

से अलग थलग न रहते बल्कि उनसे पूरा मेल जोल रखते थे, उनसे बातें करते, उनके बच्चों के साथ खुशी–खुशी मिलते–जुलते, उनको गोद में बिठाते, गुलाम और आज़ाद बान्दी, ग़रीब और कंगाल सबकी दावत कुबूल फरमाते। बीमारों की ख़ैरियत पूछने जाते चाहे वह शहर के आख़िर किनारे पर ही क्यों न हो, मजबूरी बताने वालो की मजबूरी समझते उसे मानते। आप सल्ल0 को अपने साथियों की मजलिस में कभी पैर फैलाए हुए नहीं देखा गया। ताकि उसकी वजह से किसी को परेशानी हो।

अब्दुल्लाह बिन अल–हारिस बयान करते है, " मैंने अल्लाह के रसूल सल्ल0 से अधिक हँसमुख किसी को नहीं देखा।" जाबिर बिन समुराह कहते हैं, "मुझे अल्लाह के रसूल सल्ल0 की मजलिस में सौ बार से अधिक बैठने का मौक़ा मिला, मैंने देखा कि आपके साथी एक दूसरे से शेर सुन रहे हैं और सुना रहे हैं, और अज्ञानता के दौर की कुछ बातों तथा घटनाओं का ज़िक्र कर रहे हैं और अल्लाह के रसूल सल्ल0 चुप हैं। या कभी कोई हँसी की बात होती तो उनके साथ आप सल्ल0 भी मुस्कराते।"

शरीद रज़ी0 बयान करते हैं, " अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने मुझसे उमैय्या बिन अस सलत के शेर सुनने की फरमाइश की, इस लिए मैंने आप सल्ल0 को उसके शेर सुनाएं।"

आप बहुत ही नर्म दिल, मुहब्बत करने वाले और रहम करने वाले थे। इंसानी दिलचस्पी तथा भावनाओं का आपके चरित्र में बहुत सुन्दर समावेश था। अनस बिन मालिक बयान करते हैं, "अल्लाह के रसूल सल्ल अपनी बेटी हज़रत फातिमा से फरमातें, 'मेरे दोनों बेटों (हसन–हुसैन) को बुलाओ। वह दौड़े हुए आते आप उन दोनों से मुँह मिलाते और उनको अपने सीने से लगा लेते।" आप सल्ल0 ने एक बार अपने (बड़े) नवासे हज़रत हसन रज़ी0 को बुलाया, वह दौड़ते हुए आए और आप सल्ल0 की गोद में गिर पड़े, फिर आपकी दाढ़ी में अपनी उंगलियां डालने लगे इसके बाद आपने अपना मुँह खोल दिया और वह अपना मुँह आपके मुँह में डालने लगे।

हज़रत आयशा रज़ी0 फरमाती हैं, "ज़ैद बिन हारिसा (जो आपके

गुलाम थे) मदीना आए, उस समय आप घर पर थे। वह घर पर आए और कुण्डी खटखटाई। आप उसी समय उठ खड़े हुए। आप उस समय पूरे कपड़े न पहने थे चादर बदन से गिरी जा रही थी। ज़ैद को देखते ही आपने गले से लगा लिया और उन्हें चूम लिया।"

उसामा बिन ज़ैद बयान करते है, " अल्लाह के रसूल सल्ल0 की एक बेटी ने आपको यह पैग़ाम कहलवाया कि मेरे बच्चे की आख़िरी साँसें चल रही हैं, आप जल्दी आएं। आपने उनको सलाम कहलवाया और फरमाया कि अल्लाह ही के लिए है, जो उसने लिया, और उसी के लिए है जो उसने दिया। हर चीज़ उसके यहां नामज़द और मुकर्रर है। बस चाहिए कि सब्र से काम लें और अज्र (बदले) व सवाब की नियत और उम्मीद रखें। उन्होंने आपको क़सम दिलाई कि आप ज़रूर आएं। आप खड़े हुए और हम आपके साथ थे। आप वहाँ पहुंचे तो बच्चा गोद में आप सल्ल0 के पास लाया गया आपने उसे अपनी गोद में लिया। उस वक़्त उसकी साँस उखड़ चुकी थी। आप की आँखों से आंसू जारी हो गए। साद ने कहा, 'या रसूल अल्लाह! यह क्या है ?' आपने फरमाया, "यह रहम है, जो अल्लाह अपने बन्दों में से जिसके दिल में चाहता है डाल देता है, और बेशक अल्लाह अपने रहम दिल बन्दों ही पर रहम फरमाता है।" जब बद्र के क़ैदियों के साथ हज़रत अब्बास को बान्धा गया तो उनकी कराह सुनकर आपको नींद नहीं आई। जब अन्सार को यह बात मालूम हुई तो उन्होंने उनका बन्धन खोल दिया, लेकिन अन्सार की यह बात आपको इस बात पर राज़ी न कर सकी कि उनके कहने पर हज़रत अब्बास का फिदिया (एक तरह का टैक्स) छोड़ दिया जाए।

एक एराबी (बद्दू) अल्लाह के रसूल सल्ल0 के पास आया और कहने लगा, "क्या आप लोग अपने बच्चों को प्यार करते हैं, हम तो उनको प्यार नहीं करते।" आपने फरमाया," अगर अल्लाह ने तुम्हारे दिल से रहम निकाल लिया हो तो मैं तुम्हारे लिए क्या कर सकता हूँ।"

आप बच्चों को बहुत प्यार करते थे, और उनसे बड़ी नर्मी का बर्ताव करते थे। हज़रत अनस बयान करते है, "आपका गुज़र कुछ खेलते हुए बच्चों के पास से हुआ, आपने उनको सलाम किया।" वह कहते है, "आप

हममें घुले मिले रहते थे, मेरे एक छोटे भाई से आप फरमाते, अबु उमैर! तुम्हारी छोटी चिड़िया क्या हुई ?"

मुसलमानों पर आप बहुत मेहरबान थे और उनके हाल पर बहुत मुरव्वत फरमाते थे। इंसान के स्वभाव में जो उक्ताहट और पल दो पल का ठहराव पैदा होता रहता है उसका बराबर ख्याल रखते थे।

हज़रत अब्दुल्ला बिन मसऊद बयान करते हैं," अल्लाह के रसूल सल्ल0 हमको जो नसीहत फरमाते थे, वह ठहराव के साथ होती थी, इस ख्याल से कि कहीं हमारे अन्दर उकताहट न पैदा होने लगे। नमाज़ से इतना ज़्यादा लगाव होने के बावजूद आप सल्ल0 अगर किसी बच्चे का रोना सुन लेते तो नमाज़ छोटी कर देते। आपने खुद इरशाद फरमाया, " मैं नमाज़ के लिए खड़ा होता हूँ और चाहता हूँ कि लम्बी नमाज़ पढ़ूँ, मगर किसी बच्चे के रोने की आवाज़ सुनता हूँ तो इस ख़्याल से नमाज़ छोटी कर देता हूँ कि उसकी माँ को दुश्वारी और तकलीफ न हो।" वह कहते हैं, 'एक व्यक्ति ने निवेदन किया-'या रसूल अल्लाह! अल्लाह की क़सम मैं सुबह की नमाज़ में इस लिए नहीं पहुँचता कि अमुक साहब बहुत लम्बी नमाज़ पढ़ाते हैं।' इसके बाद आप सल्ल0 ने जो नसीहत फरमाई, उससे ज़्यादा गुस्से की हालत में मैंने किसी और नसीहत के वक़्त नहीं देखा।" आपने फरमाया," तुममें वह लोग हैं जो लोगों में आतंक और डर व बेज़ारी पैदा करते हैं। तुम में से जो नमाज़ पढ़ाए उसको चाहिए कि छोटी पढ़े, इसलिए कि नमाज़ियों में कमज़ोर भी होते हैं, बूढ़े भी और ज़रूरत वाले भी।"

ॲंजशा जो औरतों के काफ़िले के हुदीख़्वां (गायक) थे, की आवाज़ बड़ी सुरीली थी। उनकी आवाज़ से ऊंट बहुत तेज़ी के साथ चलते थे औरतों को इससे परेशानी होती थी। यह देखकर आप सल्ल0 ने फ़रमाया, "ॲंजशा! ज़रा आहिस्ता! इस तेज़ रफ़्तारी से आबगीनों (कमज़ोर व नाज़ुक लोग) को कहीं तकलीफ न पहुंच जाए।?"

आप सल्ल0 मुसलमानों के हक़ में शफीक़ (प्यारे) पिता की तरह थे और सभी मुसलमान आपके सामने इस तरह थे जैसे आपके परिवार के सदस्य। आप सल्ल0 को उनसे ऐसा लगाव था जैसे माँ को अपने गोद

के बच्चे से होता है। मुसलमानों के माल व दौलत से तो आपको कोई सरोकार न था, लेकिन उनके कर्ज़ों को हल्का करना आपने अपने ज़िम्मे लिया था। आप फरमाते, "जिसने (अपने पीछे) उत्तराधिकार में माल छोड़ा वह उसके वारिसों का और कुछ कर्ज़ा आदि बाकी है तो वह हमारे ज़िम्मे।" एक और जगह आप सल्ल0 ने फरमाया, "कोई मोमिन ऐसा नहीं, जिसका मुझसे ज़्यादा दुनिया व आख़िरत में कोई वली (ज़िम्मेदार) हो, अगर चाहो तो यह आयत पढ़ो।"

अनुवादः– "नबी मुसलमानों के लिए उनकी जानों से ज़्यादा दोस्त और शफीक़ हैं।" (सूरःअहज़ाब–6)

इसलिए जिस मुसलमान का इन्तिक़ाल हो और वह कुछ माल छोड़े तो वह उसके करीबी रिश्तेदारों का हक़ है, वह जो भी हों, अगर उसके ज़िम्मे कुछ कर्ज़ और ज़मीन जायदाद रह जाए तो मेरे पास आए उसका ज़िम्मेदार मैं हूँ।"

सम तथा सुरुचि स्वभाव

आपके आला किरदार (उच्च आचरण) में पैदाईशी व स्वाभाविक गुणों का जो समावेश था वह मौजूदा और भविष्य की पीढ़ियों के लिए एक नमूना है। आप सल्ल0 का स्वभाव सम तथा सुरुचिपूर्ण, सन्तुलित तथा हर तरह से मुकम्मल था और उसमें गैर ज़रूरी दिखावा और भराव न था। हज़रत आयशा रज़ी0 बयान करती हैं, "अल्लाह के रसूल सल्ल0 को जब दो कामों में किसी एक को प्राथमिकता देनी होती तो हमेशा उसे प्राथमिकता देते जो ज़्यादा आसान होता। लेकिन शर्त यह कि इसमें गुनाह शक न हो, अगर ऐसा करने में गुनाह होता तो आप उस काम से सबसे ज़्यादा दूर होते।"

हज़रत अबु हुरैरा रज़ी0 बयान करते हैं, कि आपने फरमाया, " दीन आसान है, और जो भी दीन से ज़ोर आज़माई करेगा, दीन उसे दबोच लेगा। इसलिए बीच का रास्ता अपनाओ, करीब के पहलुओं की मुरव्वत करो, खुश रहो और सबुह–शाम तथा किसी कद्र रात की इबादत से बल हासिल करो।"

आपने फरमाया, "ठहरो, इतना ही करो जितना करने की तुम्हारे अन्दर ताक़त हो, क्योंकि अल्लाह की क़सम अल्लाह पाक तो नहीं थकेगा, तुम ही थक जाओगे।" इब्न अब्बास बयान करते हैं, " अल्लाह के रसूल सल्ल0 से पूछा गया कि अल्लाह को कौन सा दीन सबसे अधिक प्यारा है?" आपने फरमाया, "सहूलत व ख़ुलूस (सत्य निष्ठा) वाला दीने इब्राहीमी।"

अब्दुल्लाह बिन मसऊद बयान करते हैं, " अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने फरमया, 'बढ़ा–चढ़ा कर और सख़्ती से काम लेने वाले और बाल की खाल निकालने वाले बर्बाद हुए।"

आप अपने साथियों को किसी जगह शिक्षा या नसीहत के लिए भेजते तो फरमाते, "आसानी पैदा करना, तंगी न करना, ख़ुशख़बरी देना, परेशान न करना। अब्दुल्ला बिन अम्र बिन अलआस बयान करते हैं, " अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने फरमाया, ' अल्लाह इस बात को पसन्द करता है कि अपनी नेमत (वरदान) का निशान अपने बन्दे पर देखे।' ☆

☆ अर्थात अल्लाह ने उसको जो नेमतें अता की हैं उसके रहन सहन से उसकी अभिव्यक्ति हो।

बाल बच्चों के साथ

हज़रत मुहम्मद सल्ल0 अपने घर में आम इन्सानों की तरह रहते थे। हज़रत आयशा रज़ी0 बयान करती हैं, "आप अपने कपड़ों को भी साफ फरमाते थे। बकरी का दूध भी ख़ुद दुह लेते थे, और अपना काम ख़ुद करते थे। अपने कपड़ों में पैवन्द लगा लेते थे, जूता गान्ठ लेते थे और इस तरह के अन्य काम करते थे।" हज़रत आयशा रज़ी0 से पूछा गया, कि आप सल्ल0 अपने घर में किस तरह रहते थे?" उन्होंने जवाब दिया, "आप सल्ल0 घर के काम काज में रहते थे, जब नमाज़ का वक्त आता तो नमाज़ के लिए बाहर चले जाते।"

एक बयान में आया है, "आप सल्ल0 अपनी जूती टांक लेते थे, कपड़ा सी लेते थे, जैसा तुम में से कोई अपने घर में करता है।"

हज़रत आयशा रज़ी0 बयान करती हैं, "आप तमाम लोगों में सबसे ज़्यादा नर्म थे और सबसे अधिक दया करने वाले थे, और प्रसन्नचित्त

रहते थे।"

हज़रत अनस रज़ी0 बयान करते हैं, "मैंने किसी आदमी को नहीं देखा जो अल्लाह के रसूल सल्ल0 से ज़्यादा अपने बाल बच्चों पर शफ़ीक़ व रहीम हो।" हज़रत आयशा रज़ी0 बयान करती हैं, "अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने फ़रमाया, 'तुमसे से सबसे बेहतर वह है जो अपने बाल बच्चों के लिए सबसे बेहतर हो, और मैं अपने बाल–बच्चों के मामले में तुम सबसे बेहतर हूँ।" हज़रत अबु हुरैरा रज़ी0 कहते हैं, "अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने किसी ख़ाने में कभी कोई ऐब नहीं निकाला, अगर इच्छा हुई तो खाते थे, नापसन्द हुआ तो छोड़ दिया।"

बिना लालच काम

अपने घर वालों तथा सगे सम्बन्धियों के साथ जो आपसे जितना करीब होता, आप सल्ल0 हमेशा उस से वैसा बर्ताव करते। आप सल्ल0 ख़तरों और इम्तिहान में उसे उतना ही आगे रखते और इनाम व माले ग़नीमत बॉटते वक्त उतना ही पीछे रखते। जब उत्बा, शैबा और वलीद ने एक मौक़े पर कुरैश को ललकारा तो आप सल्ल0 ने हमज़ा, अली और उबैदा को आवाज़ दी और उनके मुकाबले पर भेजा, हालांकि मुहाजिरों में अनेक ऐसे वीर बहादुर घुड़सवार मौजूद थे जो उनसे दो–दो हाथ कर सकते थे। बनी हाशिम के यह तीनों लोग ख़ून और रिश्तें में आप सल्ल0 से सबसे करीब थे और आपको सबसे प्यारे भी थे, लेकिन आप सल्ल0 ने उनको इस ख़तरे से बचाने के लिए दूसरों को ख़तरे में नहीं डाला और उन्हीं को मुक़ाबले के लिए भेजा। अल्लाह ने उनको अपने दुश्मनों पर कामयाबी प्रदान की। हज़रत हमज़ा और अली कामयाब होकर वापस हुए हज़रत उबैदा को ज़ख़्मी हालत में वापस लाया गया।

आपने जब सूद को हराम और जाहिलियत के ख़ून को ख़त्म करने का ऐलान किया तो शुरूआत अपने चचा अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब और अपने भाँजे रबिया बिन अल हारिस बिन अब्दुल मुत्तलिब से की। हज्जतुल विदा के मौक़े पर आपने फ़रमाया, " अज्ञानता के युग का ब्याज़ आज से ख़त्म है और पहला ब्याज़ जो मैं ख़त्म करता हूँ वह हमारे यहां

अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब का ब्याज़ है। अज्ञानता के युग का ख़ून भी ख़त्म है और सबसे पहला हमारे यहां का ही रबिया बिन अल हारिस का ख़ून है।"

राहत व आराम इनाम व सम्मान के समय आप आम बादशाहों, प्रशासकों या राजनीतिज्ञियों के रवैय्ये व आदत के विपरीत इन लोगों को हमेशा पीछे रखते थे और दूसरों को प्राथमिकता देते थे, हज़रत अली बयान करते हैं, "फातिमा को चक्की पीसने में कठिनाई होती थी। उन्हीं दिनों उनको पता चला कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 के पास कुछ बान्दियां आई हैं। फातिमा आप सल्ल0 के पास गई और निवेदन किया कि उनको भी उनमें से सेवा और मदद के लिए कोई बान्दी मिल जाए, लेकिन आपने उनका निवेदन स्वीकार नहीं किया। हज़रत फातिमा ने हज़रत आयशा रज़ी0 से इसका ज़िक्र किया। उन्होंने आप सल्ल0 से कहा, इस लिए अल्लाह के रसूल सल्ल0 हमारे घर आए, उस वक्त हम सोने के लिए लेट चुके थे, आप सल्ल0 को देखकर हम ख़ड़े होने लगे। आपने फरमाया, "रूके रहो, क्या मैं तुमको इससे बेहतर बात न बताऊँ जिसका तुमने सवाल किया था, जब तुम सोने के लिए लेटो तो 34 बार "अल्लाहु–अकबर" कहो, 33 बार "अलहम्दुल्लिाह" और 33 बार "सुबहान अल्लाह" कहो। यह तुम्हारे लिए उससे बेहतर है जिसका सवाल तुम लोगों ने मुझसे किया है।"

एक दूसरी जगह की बात है कि आपने फरमाया," अल्लाह की क़सम इस हालत में कि सुफ्फा वासियों के पेट भूख की वजह से पीठ से लग गए हैं, मैं तुम्हें कुछ नहीं दे सकता, मेरे पास उन पर खर्च करने के लिए कुछ नहीं है, इनको बेचकर मैं इस आमदनी को उन पर खर्च करूंगा।"

उच्च एवं पवित्र अनुभूतियां

आपकी सीरत में नुबूवत और हक़ की दावत के काम, इंसानियत की पीड़ा और उन लगातार चिन्ताओं के भारी बोझ के साथ जिनको बर्दाश्त करना पहाड़ों के लिए भी आसान न था, पाक इंसानी जज़्बे और

पाक विचार पूरी चमक–दमक के साथ हमेशा बहादुरी की किरनें बिखेरते थे। उस असाधारण मनोबल, अडिग मक़सद के साथ जो नबियों की सदा ख़ास पहचान व विशेषता होती है, और जो लोगों को अल्लाह की तरफ़ बुलाने तथा अल्लाह का नाम ऊंचा रखने की राह और उसके आदेशों के पूरा करने में किसी चीज़ को रुकावट नहीं बनने देती और किसी बात को ख़ातिर में नहीं लाती, आप सल्ल० ने अपने उन वफ़ादार साथियों को अपनी ज़िन्दगी के आख़िरी पलों तक नहीं भुलाया जिन्होंने आपके बुलावे पर आप सल्ल० का साथ दिया था और सच्चाई की राह में अपना सब कुछ लुटा दिया था। आप उनको बराबर याद करते रहे, उनके लिए दुआएं करते रहे और उनके यहां जाते रहे।

आपका यह प्यार व लगाव लोगों से परे उन बेजान पत्थरों, पहाड़ों और घाटियों से भी था जहां कुर्बानी और बलिदान की यह बातें हुई थीं। आप सल्ल० के साथी बयान करते है कि आपने उहद पहाड़ को देखकर कहा, "यह वह पहाड़ है जो हमसे मुहब्बत करता है और हम इससे मुहब्बत करते हैं।" अबी हुमैद कहते हैं, "हम रसूल अल्लाह सल्ल० के साथ तबूक की जंग से वापस आ रहे थे, जब मदीना करीब आया तो आपने फ़रमाया, 'यह ताबा (मदीना तैय्यबा) है और हम इससे मुहब्बत करते हैं। " अनस बिन मालिक बयान करते हैं कि आपकी निगाह जब उहद पहाड़ पर पड़ी तो आपने फ़रमाया, " यह वह पहाड़ है जो हमसे मुहब्बत करता और हम इससे मुहब्बत करते हैं।"

अक़बा का बयान हैं,"अल्लाह के रसूल सल्ल० एक दिन उहद के उस स्थान पर गए जहां अनेक लोग शहीद हुए थे और आपने उनकी मग़फ़िरत (मोक्ष) के लिए दुआ की।" जाबिर बिन अब्दुल्लाह कहते हैं कि मैंने देखा कि जब अल्लाह के रसूल सल्ल० के सामने उहद में शहीद होने वालों का ज़िक्र किया गया तो आपने फ़रमाया, "अल्लाह के क़सम मेरी इच्छा थी कि मैं भी उहद के शहीदों के साथ उहद पहाड़ के दामन में रह जाता।" आप सल्ल० ने अपने प्यारे चचा और दूध शरीक भाई की शहादत का सदमा बर्दाश्त किया, लेकिन जब आप उहद से वापस होते हुए मदीना आए और बनी अब्दुल अशहल के घर के सामने से गुज़रे और

उनके शहीदों पर रोने की आवाज़ आपके कानों में आई तो इस घटना ने आपके अन्तःकरण को झिझोड़ दिया और आप सल्ल0 की ऑखों से आंसू गिरने लगे। आपने फरमाया, "लेकिन हमज़ा के लिए रोने वालियां नहीं हैं।"

लेकिन यह अनुराग और जज़्बात कभी भी नुबूवत और इस्लाम की दावत देने की ज़िम्मेदारियों की राह में रुकावट नहीं बनें और न ही आप सल्ल0 ने उन्हें हुदूदे इलाही (Divine injunctions) पर उनका असर पड़ने दिया। आप सल्ल0 की सीरत (जीवनी) लिखने वालों और इतिहासकारों के अनुसार, "जब साद बिन मआज़ और उसैद बिन हुज़ैर बनी अब्दुल अशहल के घर वापस आए तो उन्होंने अपने घर की औरतों को हुक्म दिया कि तैयार हो कर जाएं और अल्लाह के रसूल सल्ल0 के चचा सैय्यदना हज़रत हमज़ा का मातम करें। उन औरतों ने ऐसा ही किया। अल्लाह के रसूल सल्ल0 जब आए तो आप सल्ल0 ने उन्हें मस्जिदें नबवी के दरवाज़े पर रोते हुए पाया। आपने फरमाया,"अल्लाह तुम पर रहम फरमाए, वापस जाओ, तुम्हारे यहां आने से ही मेरी तसल्ली हो गई।" एक जगह यह भी आता है, "आप ने पूछा कि यह सब क्या है? आपको बताया गया कि अन्सार ने अपनी औरतों को किस मक़सद से यहां भेजा है। आपने अल्लाह से मग़फिरत मांगी, अच्छे शब्दों से उनको सम्बोधित किया और फरमाया," मेरा मतलब यह नहीं था, मैं मैय्यत (शव) पर रोना पसन्द नहीं करता।" फिर आपने इसे मना फरमाया।

इससे नाज़ुक मौक़ा सैय्यदना हमज़ा के कातिल वहशी के साथ पेश आया। जब मुसलमानों ने मक्का पर कामयाबी हासिल की तो वहशी के लिए स्वाभाविक रूप से कठिनाइयां पैदा हो गयी। वहशी ने वहां से निकल जाने का इरादा किया, उन्हें लोगों ने समझाया, 'भले आदमी! अल्लाह के रसूल सल्ल0 किसी ऐसे आदमी को क़त्ल नहीं करते जो उनके दीन में दाख़िल हो जाए। वहशी की समझ में यह बात आ गई और वह मुसलमान हो गए। मुसलमान होने के बाद जब वह पहली बार आपके पास आए तो आपने उनका सलाम स्वीकार किया और कोई ऐसी बात नहीं कही जिससे उनके दिल में डर हो। आपने उनसे हज़रत हमज़ा

के क़त्ल की घटना सुनी। इसे सुनकर आपके अन्दर सैय्यदना हज़रत हमज़ा के के लिए अनुराग की भावना ज़रूर जाग गई, लेकिन यह हालत आपके नुबवूत के पद और ज़िम्मेदारी के अहसास पर छाने नहीं पायी, कि आप उनका सलाम कुबूल नहीं करते या गुस्से में उनको क़त्ल करवा देते। आप सल्ल0 ने इसके अलावा कुछ न फरमाया," अल्लाह के बन्दे! मेरे सामने न आना। मैं चाहता हूँ कि मेरी नज़र तुम पर न पड़े।" वहशी कहते हैं कि उसके बाद मैं बराबर आपके सामने आने से कतराता रहा कि कहीं आप मुझे देख न लें। यहां तक कि आपका आख़िरी वक़्त आ गया। बुख़ारी शरीफ में है कि "आपकी नज़र जब मुझ पर पड़ी तो आपने फरमाया," क्या तुम वहशी हो? मैंने कहा, 'हाँ'। पूछा 'क्या तुम्ही ने हमज़ा का क़त्ल किया था?" मैंने कहा, 'आपने जो सुना वह सही है।' आपने कहा, ' क्या तुम यह कर सकते हो कि मेरे सामने न आया करो।"

आप एक बार एक मिटी हुई कब्र पर गए आपका दिल भर आया और आप रो दिए। फिर आपने फरमाया, "यह आमिना की कब्र है।"

दया और सहिष्णुता (तहम्मुल)

अल्लाह के रसूल सल्ल0 सद्व्यवहार, दया, स्वागत, सत्कार, सहिष्णुता और रहमदिली में पूरी इंसानियत के इमाम हैं। अल्लाह पाक कुर्आन पाक में इरशाद फरमाता है।:–

अनुवादः–"बेशक आप बहुत उच्च आचरण वाले हैं।"

(सूरः क़लम–4)

अल्लाह के रसूल सल्ल0 का इरशाद है।:– "मेरी तरबियत (पालन–पोषण) अल्लाह पाक ने फरमाई है, और बेहतरीन फरमाई है।"

हज़रत जाबिर बयान करते हैं कि आपने फरमाया, "अल्लाह ने मुझे सद् आचरण तथा नैतिक मूल्यों को पूरा करने के लिए पैदा किया है।"

हज़रत आयशा रज़ी0 से आपके चरित्र के बारे में पूछा गया। उन्होंने कहा, "आप अख़लाक़ में कुर्आन का मुजस्सम (साक्षात) नमूना थे।" माफी, सहिष्णुता, सब्र व रहमदिली में आपका जो स्थान था वहां तक कल्पना की उड़ान भी मुमकिन नहीं है, अगर इन घटनाओं को इस

विशेष तरीके से बयान न किया गया होता जिसमें किसी शक व शंका की गुंजाइश नहीं, तो लोग आज इसको कुबूल न करते, लेकिन यह बातें इतने सही, प्रमाणिक और एक सच्चे बयान कर्ता से दूसरे सच्चे व न्याय प्रिय बयानकर्ता तक इस सिलसिले के साथ बयान की गयी हैं और इनमें इतना तवातुर (परिपुष्टि) पाया जाता है कि इस वजह से वह बहुत ही विश्वसनीय ऐतिहासिक दस्तावेज़ों से कहीं ज़्यादा यकीन के काबिल है।

आपकी दया दृष्टि और बड़े से बड़े दुश्मन के साथ एहसान का एक नूमना वह था जब मुनाफिकों के सरदार अब्दुल्लाह बिन उबई को कब्र में उतारा गया। आप वहां आए। हुक्म दिया कि उसको कब्र से निकाला जाए। इसके बाद आपने उसको अपने घुटनों पर रखा और अपना थूक उस पर डाला और अपनी कमीज़ उसको पहनाई।

अनस बिन मालिक बयान करते हैं," मैं अल्लाह के रसूल सल्ल0 के साथ चल रहा था। उस समय आप एक नजरानी चादर पहने हुए थे जिसके किनारे मोटे थे। रास्ते में एक एराबी (बद्दू) आपको मिला और आपकी चादर पकड़ कर ज़ोर से खींची। मैंने नज़र उठाई तो देखा कि आपकी गर्दन पर उसके खींचने से निशान पड़ गए हैं। फिर उस एराबी ने कहा, 'ऐ मुहम्मद (सल्ल0)! अल्लाह का जो माल आपके पास है वह मुझे देने का हुक्म दीजिए।' आपने उसकी तरफ मुड़ कर देखा और हँसे फिर निर्देश दिया कि उसको दिया जाए।'

ज़ैद बिन साना आपके पास आया और कर्ज़ का तक़ाज़ा किया। फिर उसके बाद उसने आपके कन्धे से कपड़ा जोर से खींचा और अपनी मुट्ठी में कपड़ा ले लिया और कड़े अन्दाज़ में बात की। उसने कहा, 'तुम अब्दुल मुत्तलिब की औलाद! बड़े टाल मटोल करने वाले हो।" हज़रत उमर रज़ी0 ने उसको झिड़का और कड़े अन्दाज़ में बात की। लेकिन आप सल्ल0 का रवैय्या मुस्कराहट का रहा। आपने हज़रत उमर से फरमाया, " उमर! हम दूसरे रवैय्ये के हकदार थे। मुझे तुम कर्ज़ जल्दी अदा करने को और इसको नर्म लहजे से तकाज़ा करने को कहते। "अभी इसका कर्ज़ अदा करने की समय सीमा तीन दिन बाक़ी है।" आपने हज़रत उमर को उसका कर्ज़ अदा करने का हुक्म दिया और बीस

'साअ' उसे ज़्यादा देने को फरमाया, कि यह उसका मुआवज़ा है जो हज़रत उमर ने उसको झिड़क दिया था। आपका यही सुलूक ज़ैद के मुसलमान होने की वजह बन गया।

हज़रत अनस बयान करते हैं, "एक बार मक्का से 80 हथियार बन्द आदमी 'तनमई' पहाड़ी से अचानक निकले और धोखा देकर आपको चोट पहुंचाना चाहा। आपने इन सबको कैदी बना लिया और उनको ज़िन्दा रहने दिया।"

हज़रत जाबिर बयान करते हैं, "हम आपके साथ लश्कर में नज्द की तरफ़ गए। रास्ते में दोपहर के समय आप एक बबूल के पेड़ के नीचे आराम करने लगे और अपनी तलवार पेड़ पर टांग दी। हम लोग भी इधर–उधर पेड़ों के नीचे लेट गए। अचानक आपने हमें आवाज़ दी। हम आए तो देखा कि एक एराबी आपके सामने बैठा हुआ है। आपने फरमाया, " मैं सो गया था कि वह व्यक्ति आया और मेरी तलवार खींच ली। मैं जागा तो वह तलवार खींचे हुए मेरे सर पर खड़ा था। इसने कहा, ' तुम्हें मुझसे कौन बचा सकता है।' मैंने कहा, "अल्लाह" इसने तलवार मियान में रख ली।☆ इसके बाद बैठ गया और यह है वह व्यक्ति जो तुम्हारे सामने बैठा हुआ है।" आपने उसे कोई सज़ा नहीं दी।

☆ यहां 'शामा' का शब्द आया है जिसके दो अर्थ आए हैं। 1– तलवार मियान में कर ली। 2– तलवार खींची और उसे देखा।

आपकी रहम दिली व नरमी आपके सभी साथियों की नरमी के मुकाबले कहीं ज़्यादा थी। हालांकि वह बड़े सब्र वाले थे। आप सबके लिए एक शफ़ीक़ उस्ताद, एक दयालु सुधारक की तरह थे। हज़रत अबु हुरैरा रज़ि0 बयान करते हैं, "एक बार एक एराबी ने मस्जिद में पेशाब कर दिया। लोग यह देखकर उस पर दौड़ पड़े। आपने फरमाया, "इसको छोड़ दो" और जहां उसने पेशाब किया है उस पर एक डोल पानी या कुछ पानी के डोल बहा दो, और ख़्याल रखो कि तुम आसानी पैदा करने वाले बनाकर भेजे गए हो, तंगी व परेशानी पैदा करने वाले बना कर नहीं।"

मुआविया बिन अल हकम बयान करते हैं, "मैं अल्लाह के रसूल

सल्ल0 के साथ नमाज़ पढ़ता था कि एक व्यक्ति को छींक आई। मैंने कहा, 'यर हमकुल्लाह'। लोग यह सुनकर मुझे घूरने लगे। मैंने कहा, 'तुम्हारी माँ तुम पर रोए, आख़िर क्या हुआ है कि तुम लोग मुझे इस तरह कड़ी निगाहों से घूर रहे हो।" यह सुनकर लोग अपनी रानों पर हाथ मारने लगे। जब मैंने महसूस किया कि वह मुझे ख़ामोश करना चाहते हैं तो मैं चुप हो गया। जब अल्लाह के रसूल सल्ल0 नमाज़ पढ़ चुके तो, मेरे माँ--बाप आप सल्ल0 पर कुर्बान, मैंने न आपसे पहले आप की तरह कोई शिक्षक देखा और न आप के बाद। अल्लाह की क़सम न आपने मुझे डांटा, न मारा न बुरा भला कहा। बस यह फरमाया, कि नमाज़ में आम इन्सानी बात–चीत उचित नहीं होती। नमाज़ सिर्फ तसबीह, तकबीर और कुर्आन की तिलावत के लिए है।"

अनस बिन मालिक बयान करते हैं, "अल्लाह के रसूल सल्ल0 बहुत रहम दिल थे। आपके पास कोई ज़रूरत मन्द आता तो आप उससे वादा ज़रूर करते और अगर कुछ होता तो उसी समय उसकी ज़रूरत पूरी करते। एक बार नमाज़ खड़ी हो चुकी थी कि एक एराबी आगे बढ़ा और आपका कपड़ा पकड़ कर कहने लगा कि मेरी एक छोटी सी ज़रूरत बाक़ी रह गई है, मुझे डर है कि कहीं भूल न जाऊं। आप उसके साथ गए जब उसने अपनी ज़रूरत पूरी कर ली तो आप वापस आए और नमाज़ अदा की।"

आपके सेवक हज़रत अनस कहते हैं, "मैंने अल्लाह के रसूल सल्ल0 की 10 वर्ष सेवा की, आपने कभी 'हूँह' भी नहीं कहा और न यह कहा कि फलाँ काम तुमने क्यों न किया।"

सुआद इब्न उमर कहते हैं, "मैं अल्लाह के रसूल सल्ल0 के पास गया। मेरे कपड़े पर ज़ाफरान से मली हुई खुशबू का निशान था। आपने देखा तो फरमाया, 'ज़ाफरान! ज़ाफरान! फेंको! फेंको।" और मेरे पेट में एक छड़ी मारी जिससे मुझको तकलीफ हुई। मैंने कहा, "या रसूल अल्लाह मेरा क़सास (बदला) का हक़ हो गया है, ☆ तो आपने अपने पेट से कपड़ा हटा दिया और कहा क़सास ले लो।"

☆ सुआद ने यह मुहब्बत में कहा था क़सास लेने के लिए नहीं।

आप सल्ल0 की नरमी

आप बहुत ही विनम्र थे और किसी चीज़ में मुमताज़ व ख़ास होना पसन्द नहीं फरमाते थे। आप इसको अच्छा नहीं समझते थे कि लोग आपके लिए खड़े हों और आपकी बढ़ा–चढ़ा कर तारीफ करें जैसे पिछली उम्मतों ने अपने नबियों के साथ किया था। हज़रत अनस बयान करते हैं,"हमको अल्लाह के रसूल सल्ल0 से ज़्यादा कोई आदमी प्यारा न था, लेकिन हम आपको देखते और इस ख्याल से खड़े नहीं होते थे कि आप इसको पसन्द नहीं फरमाते।"

आप सल्ल0 से कहा गया, 'या ख़ैरूल बरीयह"(ऐ प्राणियों में सबसे अफज़ल) आपने फरमाया, "यह इब्राहीम अलैहिस्सलाम का मकाम है।" हज़रत उमर कहते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने इरशाद फरमाया, "मेरी इस तरह आगे बढ़कर तारीफ न करो जिस तरह नसारा (ईसाई) ने ईसा इब्न मरियम (अ0) के साथ किया था। मैं तो सिर्फ एक बन्दा हूं। तुम मुझे अल्लाह का बन्दा और उसका रसूल कहो।"

अब्दुल्लाह बिन अबी औफ बयान करते हैं, " अल्लाह के रसूल सल्ल0 को इसमें कोई तकलीफ और संकोच न होता था कि आप किसी गुलाम या किसी विधवा के साथ उसके काम से चलें।"

हज़रत अनस कहते हैं, "मदीना की लौंडियों और बांदियों में से कोई आपका हाथ पकड़ लेती और कुछ कहना होता कहती और जितनी दूर चाहती ले जाती।"

अदी बिन हातिम ताई जब आपकी सेवा में हाज़िर हुए तो आपने उनको घर के अन्दर बुलाया। बान्दी ने तकिया टेक लगाने के लिए पेश किया। आपने उसको अपने और अदी के बीच रख दिया और ख़ुद ज़मीन पर बैठ गए। अदी कहते हैं, "इससे मैं समझ गया कि वह बादशाह नहीं हैं।"

हज़रत अनस रज़ी बयान करते हैं, "अल्लाह के रसूल सल्ल0 बीमार की ख़ैरियत मालूम करने जाते थे, जनाज़े में शामिल होते थे, गधे पर भी सवारी फरमाते थे और गुलाम की दावत कुबूल फरमाते थे।"

जाबिर बयान करते हैं, "अल्लाह के रसूल सल्ल0 कमज़ोर के ख़्याल से अपनी रफ़्तार सुस्त कर देते थे और उसके लिए दुआ करते थे।"

हज़रत अनस बयान करते हैं, "अल्लाह के रसूल सल्ल0 जौ की रोटी और ऐसे सालन पर जिस का मज़ा बदल चुका हो, आमंत्रित होते तो भी आप कुबूल फरमाते।" वही आगे बयान करते हैं, "आपने फरमाया, 'मैं बन्दा हूँ। बन्दे की तरह खाता हूँ और बन्दे की तरह बैठता हूँ।"

अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस कहते हैं, "अल्लाह के रसूल सल्ल0 मेरे यहां आए, मैंने चमड़े का तकिया जिसमें छाल भरी हुई थी आपको पेश किया। आप ज़मीन पर बैठ गए और तकिया मेरे और अपने बीच रख दिया।"

आप स्वयं घर की सफाई कर लेते, ऊंट को बान्ध लेते और अपने जानवर को चारा भी देते। अपने सेवक के साथ खाना खाते और आटा गून्धने में उसका हाथ बटाते, और बाज़ार से सौदा भी ले आते।

बहादुर लेकिन सुशील

अल्लाह के रसूल सल्ल0 की सीरत (चरित्र) में बहादुरी व शर्म व हया (जिसको बहुत से लोग विरोधी गुण समझते हैं) समान रूप से मौजूद थीं। आपकी हया का उल्लेख करते हुए अबु सईद खुदरी बयान करते हैं, "आप पर्दा में रहने वाली कुंआरी लड़की से ज़्यादा हयादार थे। जब आपको कोई चीज़ न पसन्द होती तो उसका असर आपके चेहरे पर दिखाई देने लगता था। शर्म व हया की वजह से किसी के सामने ऐसी बात न कह सकते थे जो उसको नापसन्द हो, अतः यह काम किसी के माध्यम से करते थे। हज़रत अनस रज़ी0 बयान करते हैं, "अल्लाह के रसूल सल्ल0 की मजलिस में एक व्यक्ति था जिसके कपड़ों पर पीला रंग लगा हुआ था। चूंकि आप किसी के सामने ऐसी बात कहना पसन्द न करते थे जो उसको न पसन्द हो। इस लिए जब वह चलने के लिए खड़ा हो गया तो आपने लोगों से कहा,"अच्छा होता अगर तुम उससे कहते कि वह पीले रंग का इस्तेमाल छोड़ दे।"

हज़रत आयशा बयान करती हैं, "जब आपको किसी के बारे में किसी बुराई की सूचना मिलती तो आप उसका नाम लेकर यह न कहते कि उसने ऐसा क्यों किया। आप यूं कहते कि लोगों को क्या हो गया है कि वह ऐसा कहते हैं या ऐसा करते हैं। आप उसका विरोध तो करते मगर नाम ज़ाहिर न करते।"

आपकी बहादुरी का उल्लेख करते हुए हज़रत अली रज़ी० बयान करते है।, "जब घमासान जंग होती थी और मालूम होता था कि आँखें हलकों से बाहर आ जांएंगी तो उस समय हम अल्लाह के रसूल सल्ल० को, उनकी पनाह लेने के लिए ढूंढते और यह देखते थे कि मुक़ाबले में दुश्मन के सामने आपसे अधिक कोई करीब नहीं है। बद्र की जंग में हमारा यही हाल था। हम आपकी पनाह ले रहे थे और आप दुश्मन से सबसे ज़्यादा (मुकाबले में सामने) करीब थे।"

हज़रत अनस रज़ी० बयान करते हैं," अल्लाह के रसूल सल्ल० सबसे ज़्यादा हसीन व जमील, ख़ूबसूरत, सबसे अधिक उदार और सबसे ज़्यादा बहादुर थे। एक रात मदीनावासी डर गए और जिधर से आवाज़ आई थी उधर लोग निकल पड़े। रास्ते में आप आते हुए मिले। डरावनी आवाज़ सुन कर उसकी वजह पता करने के लिए आप सल्ल० उन सबके आगे हो लिए थे। आप कहते जाते थे, "डरो नहीं, डरो नहीं।" आप उस वक्त अबु तलहा के घोड़े पर सवार थे जिस पर ज़ीन भी नहीं थी। तलवार आपके कन्धे पर लटक रही थी। आप सल्ल० ने घोड़े की तारीफ करते हुए फरमाया, "मैंने इसको समुन्द्र की तरह तेज़ रफ़्तार पाया।"

उहद और हुनैन की जंग में जब बड़े–बड़े बहादुर और शूरवीर तितर–बितर हो गए थे और मैदान से हट गए थे उस समय भी आप अपने खच्चर पर उसी इत्मिनान से साबित क़दमी (पुख़्ता इरादे) के साथ अपनी जगह पर डटे हुए थे और ऐसा मालूम होता था कि कोई बात ही नहीं हुई। आप एक शेर बार–बार पढ़ते थे जिसका अर्थ है।

अनुवादः– "मैं नबी हूँ, यह कोई झूठ बात नहीं है, मैं अब्दुल मुत्तलिब का बेटा हूँ।"

रहम, प्यार और परोपकार

इस बहादुरी के साथ आप बहुत ही नर्म दिल थे। आपकी आँखों में बहुत जल्दी आंसू आ जाते थे। कमज़ोर लोगों और बेज़बान जानवरों तक के साथ नर्मी का हुक्म फरमाते थे। शद्दाद बिन औस कहते हैं, "अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने फरमाया कि अल्लाह ने हर चीज़ के साथ अच्छा और नर्म बर्ताव करने का हुक्म दिया है। इसलिए अगर क़त्ल भी करो तो अच्छी तरह करो, तुम में से जो ज़िबह करना चाहे वह अपनी छुरी पहले तेज़ करे और अपने ज़बीहा (ज़िबह किया जाने वाला जानवर) को आराम दे।"

इब्न अब्बास बयान करते हैं, "एक व्यक्ति ने एक बकरी ज़िबह करने के लिए ज़मीन पर लिटाई। इसके बाद छुरी लिए ज़मीन में तेज़ करना शुरू किया। आपने यह देखकर फरमाया, " क्या तुम उसको दो बार मारना चाहते हो। इसको लिटाने से पहले तुमने छुरी तेज़ क्यों न कर ली।"

आपने सहाबा को जानवरों को चारा पानी देने के निर्देश दिए और उनको सताने तथा उन पर उनकी ताक़त से ज़्यादा बोझ लादने को मना किया, और जानवरों की तकलीफ दूर करने व उन्हें आराम पहुंचाने को सवाब का काम और अल्लाह के क़रीब होने का रास्ता बताया। हज़रत अबु हुरैरा बयान करते हैं, "एक व्यक्ति कहीं सफर पर था, रास्ते में उसको प्यास लगी। सामने एक कुँआ नज़र आया। वह उसमें उतर गया। जब बाहर आया तो देखा कि एक कुत्ता प्यास के मारे कीचड़ चाट रहा है। उसने अपने दिल में कहा कि प्यास से जो मेरा हाल हो रहा था, यही हाल इसका भी है। वह फिर कुँए में उतरा। अपने चमड़े के मोज़े पानी से भरे। फिर अपने दांतों से उसे दबाया और ऊपर आकर कुत्ते को पिलाया। अल्लाह ने उसके इस काम को पसन्द किया और उसकी मग़फिरत (मोक्ष) फरमा दी। लोगों ने पूछा, "या रसूल अल्लाह! पशुओं और जानवरों के मामले में भी सवाब है?" आपने फरमाया, "हर उस जानदार पर जो तरो ताज़ा जिगर रखता है, सवाब है।"

अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ी0 कहतें हैं, "अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने बयान फरमाया, कि एक औरत को सिर्फ इस बात पर अज़ाब दिया गया कि उसने अपनी बिल्ली को खाना पानी नहीं दिया और न उसको छोड़ा कि वह कीड़े मकोड़ों से ही अपना पेट भर ले।"

सुहैल बयान करते हैं, "अल्लाह के रसूल सल्ल0 का गुज़र एक ऐसे ऊंट पर हुआ जिसकी पीठ दुबले पन की वजह से उसके पेट से लग गई थी। आपने उसे देखकर फरमाया, इन बेज़बान जानवरों के मामले में अल्लाह से डरो। ज़िबह करके इनका गोश्त खाओ तो इस हालत में कि यह अच्छी हालत में हों।

अब्दुल्लाह बिन जाफर बयान करते हैं,"अल्लाह के रसूल सल्ल0 एक अन्सारी के हाते में दाख़िल हुए। उसमें एक ऊँट था। जब उसने आपको देखा तो बिल बिलाने लगा और उसकी आँखों से आंसू बहने लगे। आप उसके पास गए और उसके कोहान तथा कनपटियों पर अपना हाथ फेरा। इससे उसको सुकून हो गया। फिर आपने पूछा कि इस ऊँट का मालिक कौन है ? एक नौजवान अन्सारी आया और उसने कहा, "या रसूल अल्लाह! यह मेरा है। आपने फरमाया, "क्या तुम इस जानवर के मामले में जिसका मालिक अल्लाह ने तुमको बनाया है, अल्लाह से नहीं डरते। वह मुझसे शिकायत कर रहा था कि तुम उसको तकलीफ देते हो, और हर वक़्त काम में लगाए रखते हो।"

हज़रत अबु हुरैरा बयान करते हैं, "अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने फरमाया कि अगर तुम किसी हरी भरी जगह जाओ तो ऊंटों को ज़मीन पर उनके हक़ में वंचित न करो और अगर सूखें हिस्से में जाओ तो वहां तेज़ चलो रात को पड़ाव डालना हो तो रास्ते पर न डालो इस लिए की वहां जानवरों का आना जाना रहता है और कीड़े मकोड़े वहां पनाह लेते हैं।"

इब्ने मसऊद बयान करते हैं," हम लोग अल्लाह के रसूल सल्ल0 के साथ एक सफर में थे। आप एक ज़रूरत से थोड़ी देर के लिए गए। इस बीच हमने एक छोटी चिड़िया देखी उसके साथ दो बच्चे थे। हमने दोनों बच्चे ले लिए। चिड़िया यह देखकर अपने परों को फड़फड़ाने लगी।

आप आए और पूछा कि किसने इसके बच्चे छीनकर इसको तकलीफ पहुंचाई है फिर आपने हुक्म दिया कि इसके बच्चे वापस करो। यहां हमने चूटिंयों का एक ठिकाना देखा और उसको जला दिया। आपने फरमाया इसको किसने जलाया है हमने निवेदन किया कि हम लोगों ने। आपने फरमाया, "आग से अज़ाब देने का हक़ सिर्फ आग के रब (अल्लाह) को है।"

ख़ादिम (सेवक) नौकर और मज़दूर के साथ, जो और इन्सानों की तरह इन्सान हैं और जिनका अपने मालिक और आक़ा पर अहसान है से आप सल्ल0 ने अच्छा बर्ताव करने की शिक्षा दी है। जाबिर बिन अब्दुल्ला कहते हैं, "अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने फरमाया कि जो तुम खाते हो वही उनको खिलाओ, जो तुम पहनते हो वही उनको पहनाओ और अल्लाह की मख़लूक को अज़ाब (तकलीफ) न दो। जिनको अल्लाह ने तुम्हारे अधीन किया है वह तुम्हारे भाई, तुम्हारे ख़ादिम और मददगार हैं। जिसका भाई उसके अधीन हो उसको चाहिए कि जो खुद खाता है वही उसको खिलाए जो खुद पहनता है वही उसको पहनाए। उनके सुपुर्द ऐसा काम न करो जो उनकी ताक़त से बाहर हो। अगर ऐसा करना पड़े ही तो फिर उनका हाथ बटाओ।"

अब्दुल्लाह बिन उमर कहते हैं, एक एराबी अल्लाह के रसूल सल्ल0 के पास आया और पूछा कि मैं अपने नौकर को एक दिन में कितनी बार माफ करूं? आपने फरमाया, "70 बार।" वही बयान करते हैं कि आप ने फरमाया, "मज़दूर को उसकी मज़दूरी उसका पसीना सूखने से पहले दे दो।"

एक मुकम्मल, विश्व्यापी और न ख़त्म होने वाला नमूना

इस अध्याय को उस्ताद मौलाना सैय्यद सुलेमान नदवी की मशहूर किताब "खुतबात मद्रास" के एक वाक्य पर ख़त्म कर रहा हूँ जिसमें उन्होंने अल्लाह के रसूल सल्ल0 की ज़िंदगी की परिपूर्णता का बहुत असर ढंग से वर्णन किया है। वह लिखते हैं:–

"एक ऐसी शख़सी ज़िन्दगी जो हर वर्ग के लोगों और हर इंसानी

मुद्रा की विभिन्न अभिव्यक्तियों तथा हर तरह की सही भावनाओं एवं परिपूर्ण आचरण का संकलन (मजमुआ) हो, सिर्फ अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सीरत है। अगर तुम दौलतमंद हो तो मक्का के व्यापारियों और बहरीन के ख़ज़ीनादार (Trustee) की पैरवी करो, अगर तुम ग़रीब हो तो शैब अबी तालिब के कैदी और मदीना के मेहमान का हाल सुनो, अगर तुम बादशाह हो तो अरब के सुल्तान का हाल पढ़ो, अगर तुम जनता हो तो कुरैश के महकूम ☆ को एक नज़र देखो, अगर तुमने विजय हासिल की हो तो बद्र व हुनैन के सेनापति पर निगाह दौड़ाओ, अगर तुमने हार खाई हो तो उहद की लड़ाई से सबक हासिल करो, अगर तुम अध्यापक हो तो सुफ्फा की पाठ शाला के गुरू को देखो, अगर शिष्य हो तो जिब्रील के सामने बैठने वाले पर नज़र जमाओ। अगर तुम उपदेशक हो तो मदीना की मस्जिद के मिम्बर पर खड़े होने वाले की बातें सुनो। अगर तुम अकेले और बेकस होकर भी सच्चाई का ढिंढोरा पीटना चाहते हो तो मक्का के बेयार व मददगार नबी की ज़िंदगी तुम्हारे सामने हैं। अगर तुम सच्चाई की विजय के बाद अपने दुश्मनों को नीचा दिखा चुके हो और अपने विरोधियों को कमज़ोर बना चुके हो तो मक्का के विजेता को देखो, अगर तुम अपने कारोबार तथा दुनायावी सम्पति का बंदोबस्त ठीक करना चाहते हो तो बनी नज़ीर ख़ैबर और फदक की ज़मीनों के मालिक के कारोबार और बंदोबस्त को देखो अगर यतीम (अनाथ) हो तो अब्दुल्लाह और आमिना के लाडले को न भूलो, अगर बच्चे हो तो हलीमा सादिया के लाडले को देखो, अगर तुम जवान हो तो मक्का के एक चरवाहे की सीरत पढ़ो, अगर तुम सफर में कारोबार कर रहे हो तो बुस्रा के काफिले के सरदार के उदाहरण ढूँढो, अगर तुम अदालत के काज़ी (न्यायमूर्ति) हो और पंचायत के सरपंच हो तो काबा में पौ फटने से पहले दाख़िल होने वाले निर्णायक को देखो, जो 'हज्रे असवद' को काबा के एक कोने में खड़ा कर रहा है। मदीने की कच्ची मस्जिद के आँगन में बैठने वाले मुंसिफ को देखो जिसकी निगाह में रंक व कुबेर, अमीर व ग़रीब सब बराबर थे, अगर तुम बीवियों के शौहर (पति) हो तो ख़दीजा और आयशा के पति

की पाक जीवनी का अध्ययन करो, अगर तुम औलाद वाले हो तो फातिमा के बाप और हसन व हुसैन के नाना का हाल पूछो, संक्षेप में तुम जो कुछ भी हो और जिस हाल में भी हो तुम्हारी ज़िन्दगी के लिए नमूना। तुम्हारे आचरण के सुधार के लिए सामान, तुम्हारे मार्गदर्शन के लिए हिदायत का चिराग़ हज़रत मुहम्मद सल्ल० की सीरत के ख़ज़ाने में हर वक्त और हर पल मिल सकता है। जिसकी निगाह के सामने अल्लाह के रसूल सल्ल० की सीरत है उसके सामने नूह अ०, इब्राहिम अ०, अय्यबू अ०, यूनुस अ०, मूसा अ० और ईसा अ० सब की सीरतें (जीवनियां) मौजूद हैं। मानो दूसरे तमाम नबियों की सीरतें एक ही जिन्स (सामग्री) की चीज़ों की दुकानें हैं और अल्लाह के रसूल सल्ल० की सीरत, आचार व्यवहार दुनिया का सबसे बड़ा बाज़ार है जहां हर जिन्स के ख़रीदार और चीज़ के ज़रूरतमंद के लिए बेहतरीन सामान मौजूद है।"

अध्याय अट्ठाइस

जग के मोहसिन ☆

छठी शताब्दी ई0 में पूरी मानवता आत्महत्या करने पर तुली ही नहीं बल्कि कमर बस्ता नज़र आती है। जैसे उसने आत्महत्या करने की क़सम खाई हो। अल्लाह ने इस हालत को क़ुर्आन पाक में इस तरह बयान किया है।

> अनुवादः— "और अल्लाह की उस मेहरबानी को याद करो जब तुम एक दूसरे के दुश्मन थे तो उसने तुम्हारे दिलों में उल्फत डाल दी और तुम उसकी मेहरबानी से भाई भाई हो गए और तुम आग के गढ़े के किनारे तक पहुंच चुके थे तो अल्लाह ने तुमको उससे बचा लिया।" (सूरः आले इमरान 103)

इतिहासकार और सीरत लिखने वाले अज्ञानता के उस दौर की सही तस्वीर पेश करने में असमर्थ रहे हैं क्योंकि साहित्य व शब्द कोष उनका साथ नहीं देते। हालत इतनी संगीन और भयानक थी कि लेखनी उस का असल नक्शा पेश करने का सामर्थ्य नहीं रखती। इतिहासकार इसका हक़ कैसे अदा कर सकते हैं। अज्ञानत के दौर में जिसमें अल्लाह के रसूल सल्ल0 आए, क्या एक या दो क़ौमों के बिगाड़ और पतन की समस्या थी ?, ख़ाली बुतपरस्ती का मामला था, नैतिक अपराधों की समस्या थी?, मदिरापान, जुआ बाज़ी, भोग विलास, अधिकारों के हनन, अत्याचार व अन्याय, आर्थिक शोषण, जाबिर हुकूमतों, जुल्म वाली व्यवस्था और अन्याय पूर्ण क़ानून का मामला था? क्या समस्या यह थी कि किसी देश में बाप अपनी नवज़ात बच्ची को ज़िन्दा गाड़ देता था? समस्या यह नहीं थी कि अरब के कुछ पत्थर दिल इन्सान अपनी मासूम बच्चियों को झूठी शर्म, और काल्पनिक अपमान से बचने के लिए एक अपने बनाए हुए डर और जुल्म के चलन की वजह से अपने हाथों ज़मीन में ज़िन्दा दफन कर देना चाहते थे। समस्या यह थी कि यह दुनिया अपनी पूरी नस्ल को ज़िन्दा दफन करना चाहती थी।

समस्या किसी एक देश या क़ौम की भी नहीं थी। समस्या इंसानियत की क़ीमत की थी, मानव जाति के भविष्य की थी। अगर कोई कलाकार ऐसी तस्वीर पेश करे जिसमें दिखाया गया हो कि मानव जाति का नेतृत्व एक इन्सान कर रहा है, एक सुन्दर प्रतिभा, एक स्वस्थ व बलवान शरीर जो ईश्वर की रचना का बेहतरीन नमूना है, जिससे आदम का नाम ज़िन्दा और उसका सिलसिला क़ायम है। जिसे फरिश्ते हसद व जलन की निगाह से देखते हैं, जिसके लिए सृष्टि की रचना की गई। जिसके सर पर अल्लाह ने बादशाहत का ताज रखा और जिसकी वजह से यह ज़मीन वीरान होने के बजाए गुलज़ार व हरी–भरी है। इस इन्सान के सामने आग का एक समुन्दर है, एक बहुत ही भयानक ख़नदक़ (खाई) है जिसकी कोई थाह नहीं, वह इन्सान इसमें छलांग लगाने के लिए तैयार खड़ा है, उसके पैर उठ चुके हैं और कूदने ही वाला है, एक पल की देर है कि वह उसके अंधेरों में गायब हो जाएगा। अगर उस युग की ऐसी तस्वीर खींची जाए तो कुछ हद तक उस हालत का अन्दाज़ा लगाया जा सकता है जो आप सल्ल0 के अभ्युदय के समय छठी शताब्दी ई0 में पायी जाती थी, और इसी सच्चाई को बयान करने के लिए फरमाया गया है।:–

अनुवादः– " और तुम आग के गढ़े के किनारे तक पहुंच चुके थे, अल्लाह ने तुमको उस से बचा लिया।"

अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने इसी बात का एक उदाहरण देकर बयान किया है। आपने फरमाया, "मेरी इस दावत व हिदायत का उदाहरण जिसके साथ मुझे दुनिया में भेजा गया है, ऐसा है जैसे एक व्यक्ति ने आग जलायी, जब उसकी रोशनी आस–पास फैली तो वह परवाने और कीड़े जो आग पर गिरा करते हैं, हर तरफ़ से उमड़ कर उसमें कूदने लगे, इसी तरह से तुम आग में गिरना और कूदना चाहते हो, और मैं तुम्हारी कमर पकड़ कर तुमको उससे बचाता और अलग करता हूँ।"

असल में समस्या यही थी कि इन्सानियत की नौका को सलामती के साथ पार लगाया जाए। जब इन्सान अपने सही मूड में आ जाएगा,

जब ज़िन्दगी में सन्तुलन पैदा हो जाएगा तो उन सब रचनात्मक, कल्याणकारी, ज्ञानात्मक, साहित्यक तथा विकास की कोशिशों का दौर आएगा जिनकी क्षमता विभिन्न लोगों और मानवता के हितैषियों में पाई जाती है। असल में पूरी दुनिया पैग़म्बरों की एहसानमन्द है कि उन्होंने मानव जाति को उन ख़तरों से बचा लिया जो उसके सर पर नंगी तलवार की तरह लटक रहे थे। दुनिया का अस्तित्व व विकास पैग़म्बरों की ही कोशिशों का नतीजा है। इन्सानों ने अपने हाव–भाव से कई बार यह एलान किया कि अब उनकी उपयोगिता ख़त्म हो गई और अब वह दुनिया के लिए कोई उपायोगिता नहीं रखते। उन्होंने अपने ख़िलाफ़ अल्लाह की अदालत में खुद नालिश की और गवाही दी, उनकी मिसिल तैयार थी और वह अपने को बड़ी से बड़ी सज़ा बल्कि मौत की सज़ा का भागीदार साबित कर चुके थे।

जब सभ्यता अपनी सीमा से परे निकल जाती है, जब नैतिक मूल्यों का पतन हो जाता है, जब इन्सान अपनी लालच और लोलुपता को पूरा करने के सिवा हर मक़सद और हर सच्चाई को भुला देता है, जब उसके पहलू में इन्सान के दिल के बजाए चीते भेड़िये का दिल पैदा हो जाता है, जब उसके शरीर में एक फ़र्ज़ी आमाशय और एक तोड़–फोड़ करने वाली प्रवृत्ति पैदा होती है, जब दुनिया पर जुनून का दौरा पड़ता है, तो कुदरत उसको सज़ा देने और उसके जुनून का नशा उतारने के लिए नए नए नश्तर (Ferule) पैदा करती है।

करती है म्लूकियत अन्दाज़े जुनू पैदा,
अल्लाह के नश्तर हैं तैमूर हो या चंगेज़।

आप 'म्लूकियत' के शब्द को 'सभ्यता' से बदल दीजिए क्योंकि सभ्यता का बिगाड़ 'म्लूकियत' (सत्ता) के जुनून से अधिक ख़तरनाक व व्यापक होता है। एक कमज़ोर सा मरीज़ अगर पागल हो जाता है तो मुहल्ले की नींद हराम कर देता है। आप जरा सोचिए कि जब इंसानियत पागल हो जाए, जब इन्सानियत का मिज़ाज खराब हो जाए, तो इसका क्या इलाज है ?

अज्ञानता के दौर में सभ्यता सिर्फ बिगड़ी ही नहीं थी उसमें सड़न

पैदा हो गयी थी, उसमें कीड़े पड़ गए थे। इन्सान–इन्सान का शिकारी बन गया था। उसे किसी इन्सान की तड़प, उसकी कराह में वह मज़ा आने लगा था जो बहुत ही मज़ेदार खानों और मन मोहक दृश्यों में नहीं आता था। आप रोम का इतिहास पढ़ें जिसकी विजय, सुव्यवस्था, संविधान और सभ्यता के दुनिया में डंके बजे। यूरोप के इतिहासकार 'लेकी' ने अपनी किताब 'हिस्ट्री ऑफ दी यूरोपियन मॉरल्स' में लिखा है।

"रोम वासियों के लिए सबसे ज़्यादा दिलचस्प, रोचक और मस्त कर देने वाला नज़ारा वह होता था जब आपस में तलवार की लड़ाई या खूँख्वार जानवरों की लड़ाई में हारे हुए और घायल ग्लेडीयेटर (तलवार से लड़ने वाला योद्धा) की जान निकल रही होती और उसकी आख़िरी हिचकी आ रही होती। उस समय रोम के खुश बाश और ज़िन्दा दिल तमाशाई इस रोचक दृश्य को देखने के लिए एक दूसरे पर गिर पड़ते और पुलिस के लिए भी इनको कंट्रोल में रखना संभव न होता।"

रोम में उन दिनों एक खेल प्रचलित था जिसमें मनुष्य के पत्थर दिल होने का इससे ख़राब उदाहरण नहीं मिलता। इस खेल का सम्बन्ध समाज के उच्च वर्ग के लोगों से था। इतिहासकार लेकी ने इन खेलों की लोक प्रियता पर रोशनी डालते हुए लिखा है।

"इस खेल की लोक प्रियता कदापि हैरतनाक नहीं है क्योंकि आकर्षण के जितने पक्ष इसमें जमा हो गए थे उतने किसी अन्य खेल में न थे। चमचमाता अखाड़ा, गोटे फटटे के कपड़े पहने धनवान लोग, तमाशाईयों की अपार भीड़, उनका जोश, आशाओं बन्धी पूर्ण शान्ति। 80 हज़ार मुखों से एक साथ प्रशंसा की गूँज। शहर क्या शहर के बाहर तक की बस्तियाँ गूंज उठतीं। लड़ाई का पल–पल रंग बदलते रहना आद्वितीय हिम्मत का प्रदर्शन, इनमें से हर बात की कल्पना शक्ति को झिंझोड़ने के लिए काफी है।"

इस ज़ुल्म वाले मनोरंजन को रोकने के लिए आदेश जारी किए गए लेकिन यह बाढ़ इतनी शक्तिशाली थी कि कोई बान्ध इसे रोक नहीं सकता था।

अस्तु असल समस्या थी कि ज़िन्दगी की चूल अपनी जगह से हट

गई थी। इन्सान इन्सान नहीं रह गया था। इन्सानियत का मुक़दमा अपने अंतिम चरण में अल्लाह की अदालत में पेश था। इन्सान अपने ख़िलाफ गवाही दे चुका था। इस हालत में अल्लाह ने मुहम्दम रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को दुनिया में भेजा, और फरमायाः–

अनुवादः– "और (ऐ मुहम्मद!) हमने तुमको तमाम जहान के लिए रहमत बना कर भेजा है।" (सूरः अंबिया–107)

सच्चाई यह कि क़यामत तक का हर दौर अल्लाह के रसूल सल्ल० की पैगम्बरी, आह्वाहन और कामयाब कोशिश के हिसाब में है। आपका पहला काम यह था कि आपने उस तलवार को जो मानव जाति के सर पर लटक रही थी और किसी भी पल उसके सर पर गिर कर उसका काम तमाम कर सकती, उस तलवार को हटा लिया और उसे वह उपहार दिए जिन्होंने उसे नयी ज़िन्दगी, नया हौसला, नई ताक़त, नई इज़्ज़त व नई दिशा प्रदान की, और इनकी बरकत से मानवता, मानव सभ्यता, ज्ञान विज्ञान, सच्चाई और प्रेम तथा मानवता के नव निर्माण का एक युग शुरू हुआ। हम यहां पर आपके उन कुछ एक उपकारों का वर्णन करते हैं जिन्होंने मानव जाति का मार्ग दर्शन करने तथा मानवता के उत्थान में बुनियादी और नेतृत्व पूर्ण भूमिका निभाई है और जिनकी बदौलत एक नई दुनिया ने जन्म लिया।

आपका सबसे बड़ा एहसान (उपकार) यह है कि आपने दुनिया को तौहीद ☆ का तोहफा दिया। इससे ज़्यादा क्रांतिकारी जीवनदायक और युग प्रवर्तक विश्वास दुनिया को न पहले कभी मिला है और न क़यामत तक कभी मिल सकता है। यह मानव जिसको साहित्य, दर्शन शास्त्र और राजनीति में बड़े बड़े दावे हैं और जिसने कौमों व देशों को अनेक बार गुलाम बनाया, जल, थल और हवा पर हुकूमत की, पत्थर में फूल खिलाए, पहाड़ों, को काट कर दरिया बहाए और जिसने कभी कभी खुदाई का दावा भी किया, यह अपने से कहीं अधिक असहाय, निकृष्ट, अचल और अटल, बेजान व मुर्दा और कभी–कभी अपनी बनायी चीज़ों के सामने झुकता था। उनसे डरता और उनकी खुशामद करता था। यह पहाड़ों, दरियाओं, पेड़–पौधों, जानवरों, भूतप्रेत व शैतानों, चाँद व सूरज

के सामने नहीं बल्कि कीड़े मकोड़ों के सामने नतमस्तक होता था।

उसकी आशाएं इन्हीं से बन्धी होती थीं। वह इन्हीं से डरता था। इसके फलस्वरूप वह कायरता मानिसक उलझनों, अविश्वास तथा काल्पनिक डर से ग्रसित रहता था। आपने उसको ऐसे शुद्ध एवं सरल तथा जीवन दायक तौहीद की आस्था की शिक्षा दी जिस से वह अल्लाह के अलावा जो पूरी दुनिया का बनाने वाला है, हर एक से आज़ाद निडर और निश्चिन्त हो गया। उसमें एक नई शक्ति, नया जोश, नया साहस और नई एकता पैदा हुई। उसने सिर्फ अल्लाह को सर्वशक्तिमान, हमारी सभी ज़रूरतों को पूरा करने वाला, लाभ–हानि पहुंचाने वाला समझना शुरू किया। इस नई खोज से उसकी दुनिया बदल गयी। वह हर तरह की गुलामी, बन्दगी, बेजा डर तथा हर तरह की खींच–तान से सुरक्षित हो गया। उसे अनेकता में एकता नज़र आने लगी। वह अपने को सबसे अच्छा प्राणी, पूरी दुनिया का सरदार, कर्ता–धर्ता और सिर्फ अल्लाह का शासित व आज्ञा पालक समझने लगा। इस तरह मानवता की गरिमा व महिमा जिससे पूरी दुनिया वंचित हो चुकी थी दोबारा स्थापित हुई।

मुहम्मद सल्ल0 के अभ्युदय के बाद चारों तरफ से तौहीद की गूँज आने लगी। दुनिया की सारी विचार धाराओं पर उसका कुछ न कुछ असर पड़ा। वह बड़े बड़े धर्म जिनकी नस–नस में शिर्क व द्वैतवाद की आस्था रच बस गयी थी किसी न किसी रूप में यह एलान करने पर मजबूर हो गए कि अल्लाह एक है। वह शिर्क की ऐसी विवेचना करने लगे जिससे उन पर शिर्क का इल्ज़ाम न आए और वह इस्लाम के तौहीद के अक़ीदे (आस्था) ये कुछ न कुछ मिलता हुए नज़र आए। उनको शिर्क का इक़रार करने में शर्म व झिझक महसूस होने लगी और शिर्क की सारी व्यवस्था हीनता की भावना से ग्रसित हो गयी।

आपका दूसरा क्रान्तिकारी और महान उपकार मानव जाति की एकता की परिकल्पना है जो आपने दुनिया को दी। मानव, जाति बिरादरी तथा ऊंचे नीचे वर्गों में बंटा हुआ था और उनके बीच इन्सानों व जानवरों, आक़ाओं व गुलामों तथा भक्त–भगवान का सा अन्तर था। एकता व समता की कोई परिकल्पना न थी। आपने सदियों बाद पहली

बार यह चकित कर देने वाला क्रान्तिकारी ऐलान किया।

अनुवादः—" लोगों! तुम्हारा परवर दिगार एक है, और तुम्हारा बाप भी एक है, तुम सब आदम की औलाद हो और आदम मिट्टी से बने थे। अल्लाह के नज़दीक तुम में से सबसे अधिक सम्मान का पात्र वह है जो तुममे सबसे ज़्यादा पाक बाज़ है। किसी अरबी को अजमी (गैर अरब) पर फज़ीलत नहीं मगर तक़वा (अल्लाह से डरना) की बिना पर।"

यह वह शब्द हैं जिन्हें अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने अपने आख़िरी हज में एक लाख 24 हज़ार की विशाल सभा में कहे थे। इनमें दो एकताओं का ऐलान किया गया है और यही वह दो बुनियादें हैं जिन पर इंसानियत की असल एकता का महल खड़ा किया जा सकता है। यह दो एकताएं क्या हैं? एक मानव जाति के सृष्टा एवं निर्माता की एकता, दूसरे उसके पितामह की एकता। इस तरह हर मनुष्य एक दूसरे से दोहरा रिश्ता रखता है। एक अध्यात्मिक और प्रत्यक्ष, वह यह कि सब इन्सानों और जहानों का रब (पालनहार) एक है, दूसरा शारीरिक और अप्रत्यक्ष वह यह है कि सब इन्सान एक बाप (हज़रत आदम) की औलाद हैं।

जिस समय यह ऐलान किया गया था उस समय दुनिया इसे सुनने के मूड में नहीं थीं। यह ऐलान उस समय की दुनिया के लिए एक भूचाल से कम न था। कुछ चीज़ें ऐसी होती हैं जो प्रत्यक्ष नहीं अप्रत्यक्ष रूप से सहन की जा सकती हैं। बिजली का यही हाल है कि किसी कुचालक की मदद से छू लेते हैं लेकिन बिजली के खुले तार को कोई छू ले तो छूते ही उसका काम तमाम हो जाता है। आज ज्ञान विज्ञान तथा मानव चिन्तन के विकास की उन सीढ़ियों ने जो इस्लाम की दावत, इस्लामी समाज की स्थापना और उसके सुधारकों के प्रयासों से तय हुई है इस क्रान्तिकारी ऐलान को अत्यंत व्यापक बना दिया है। संयुक्त राष्ट्र संघ के स्टेज से लेकर जिस ने मानव अधिकार चार्टर प्रकाशित किया, प्रत्येक लोकतंत्र और प्रत्येक संस्था की तरफ से समान मानव अधिकारों का ऐलान किया जा रहा है और कोई इस को सुनकर आश्चर्य चकित नहीं होता लेकिन एक समय था जब विभिन्न वर्गों और वंशजों के दिलों

में सर्वोपरि होने की भावना घर कर गयी थी और अनेक पीढ़ियों और वंशजों का सम्बन्ध अल्लाह और सूरज–चाँद आदि से जोड़ा जाता था। कुर्आन पाक में आया है कि यहूदी व ईसाई कहते हैं कि हम अल्लाह की लाडली व चहेती औलाद की तरह हैं। मिस्र के फ़िरऔन अपने को सूरज देवता का अवतार कहते थे, हिन्दुस्तान में सूर्यवंशी और चन्द्रवंशी ख़ानदान मौजूद थे। ईरान का बादशाह जिन्हें किस्रा या खुसरो कहा जाता था कहते थे कि उनकी शिराओं में अल्लाह का ख़ून है। ईरान वासी उन्हें इसी नज़र से देखते थे। उनका यकीन था कि इन जन्म जात बादशाहों की घुट्टी में कोई पाक आसमानी चीज़ शामिल है। कयानी सिलसिले के आख़िरी बादशाह 'यज़्द गर्द' का नाम बताता है कि वह और ईरानी उसको अल्लाह के कितने करीब और दोस्त समझते थे।

चीन के लोग अपने बादशाह 'ख़ता प्रथम' को आसमान का बेटा समझते थे। उनका विश्वास था कि आसमान नर और धरती मादा है, और इन दोनों के मेल से सृष्टि की रचना हुई है, और बादशाह 'ख़ता प्रथम' इस जोड़े का पिलौठा का बेटा है। अरब अपने अलावा पूरी दुनिया को अजमी अर्थात गूँगा और बेज़बान कहते थे। उनका सर्वोच्य क़बीला क़ुरैश आम अरबों से अपने को ऊंचा समझता था, और इसी कारण हज के मौक़े पर भी अपना विशेष अधिकार क़ायम रखता था। ऐसे माहौल में कुर्आन पाक ने ऐलान किया।

अनुवादः– "लोगों! हमने तुमको एक मर्द और औरत से पैदा किया और तुम्हारी क़ौमों और क़बीले बनाए ताकि एक दूसरे को पहचानो (और) अल्लाह के नज़दीक तुम में इज़्ज़त वाला वह है जो ज़्यादा परहेज़ करने वाला है।" (सूरः अल हजरात–13)

और कुर्आन पाक की एक ऐसी सूरः जो कुर्आन का आमुख है और सबसे ज़्यादा पढ़ी जाने वाली सूरः है में कहा गया है।

अनुवादः– "सब तारीफ़ अल्लाह की है जो सारे जहानों का पालनहार है। (सूरः फ़ातिहा)

मानव जाति पर आपका तीसरा एहसान इंसानियत की इज़्ज़त और मनुष्य के प्रति आदर की वह भावना है जो आपने मानव जगत को

भेंट की। जिस समय इस्लाम का अभ्युदय हुआ उस समय मनुष्य से अधिक निकृष्ट कोई नहीं था। मानव का अस्तित्व एक दम बेकीमत और निरर्थक हो कर रह गया था। कभी–कभी पालतू जानवर, कुछ पवित्र 'प्राणी' कुछ पेड़ जिनके साथ आस्थाएं जुड़ गयीं थी, मानव से कहीं अधिक कीमती समझे जाते थे। उनके लिए निःसंकोच इन्सानों की जानें ली जा सकती थी, और उनके ख़ून व गोश्त के चढ़ावे चढ़ाए जा सकते थे। आज भी बड़े–बड़े विकासशील देशों में इसके नूमने देखे जा सकते हैं। अल्लाह के रसूल सल्ल० ने मानव के दिल व दिमाग में यह बात बिठा दी कि इन्सान इस सृष्टि का क़ीमती, प्रेम व श्रद्धा का पात्र और सुरक्षा का अधिकार प्राप्त 'प्राणी' है। आपने इन्सान को इतना उठाया कि उससे ऊपर सिर्फ सृष्टि का निर्माता ही रह जाता है। कुर्आन पाक ने ऐलान किया कि वह अल्लाह का नायब है। सारी दुनिया और यह सब कुछ उसी के लिए पैदा किया गया है। अल्लाह फरमाता है:–

अनुवादः– "वही है जिसने तुम्हारे लिए वह सब कुछ पैदा किया जो इस ज़मीन पर है।" (सूरः बक़ 29)

वह सर्वोत्कृष्ट प्राणी और जग का मुखिया है।

अनुवादः–" और हमने बनी आदम को इ़ज्ज़त दी और उन को जंगल और दरिया में सवारी और पाकीज़ा रोज़ी दी, और अपनी बहुत से मख़लूक () पर फज़ीलत (प्राथमिकता) दी। (सूरः बनी इस्राईल 70)

इससे अधिक उसके महत्व को और क्या सराहा जा सकता है कि साफ कह दिया गया कि दुनिया (ख़ल्क़) अल्लाह का कुटुम्ब (परिवार) है। 'वसुधैव कुटुम्बकम्' और अल्लाह को अपने भक्तों में सबसे ज़्यादा प्यारा वह है जो उसके कुटुम्ब के साथ अच्छा बर्ताव करे और उसको आराम पहुंचाए।

एक पाक हदीस में फरमाया गया, "अल्लाह पाक क़यामत के दिन कहेगा, ऐ आदम की औलाद! मैं बीमार हुआ था तू मुझे देखने नहीं आया। बन्दा कहेगा या परवर दिगार मैं तेरी आयादत क्या कर सकता हूँ, तू तो सारे जहानों का पालनहार है।' अल्लाह कहेगा, 'क्या तुझे मालूम

नहीं हुआ , मेरा अमुक भक्त (बन्दा) बीमार था तू उसकी अयादत को नहीं गया। तू अगर उसकी अयादत को जाता तो मुझे उसके पास पाता।" फिर फरमाया जाएगा, "ऐ आदम की औलाद! मैं ने तुझसे खाना माँगा था तूने मुझे खाना नहीं दिया।" बन्दा कहेगा, "परवर दिगार! मैं तुझे कैसे खाना खिला सकता हूँ तू तो सारे जहान का पालनहार है।" इरशाद होगा, "क्या तुझे मालूम नहीं कि मेरे अमुक बन्दे ने तुझ से खाना माँगा तूने उसे नहीं खिलाया तू अगर उसे खाना खिलाता तो तू मुझे उसके पास पाता।" फिर इरशाद होगा, " ऐ आदम की औलाद! मैंने तुझसे पानी माँगा तो तूने मुझे पानी नहीं पिलाया।" बन्दा कहेगा, "ऐ रब! मैं तुझे कैसे पानी पिला सकता हूँ तू तो सारे जहान का पालनहार है।" इरशाद होगा, " तुझसे मेरे अमुक बन्दे ने पानी माँगा था तूने उसे पानी नहीं दिया, क्या तू नहीं जानता था कि अगर तू उसको पानी पिलाता तो तू मुझे उसके पास पाता।" एक ऐसे मज़हब में जो साक्षात तौहीद हो क्या मानवता की बुलन्दी और मुनष्य के प्रति प्रेम का इससे बढ़कर एतराफ (स्वीकृति) व ऐलान पाया जा सकता है और क्या दुनिया के किसी अन्य मज़हब में इन्सान को यह स्थान दिया गया है? आपने अल्लाह की रहमत के लिए इन्सानों पर रहम (दया) को शर्त और उसका सबसे बड़ा माध्यम बताया और फरमाया, "रहम करने वालों पर रहमान की रहमत होती है और अगर तुम धरती के वासियों पर रहम खाओगे तो वह जो आसमान पर है (अल्लाह) वह तुम पर रहम करेगा।" मौलाना हाली ने इसी हदीस के भाव को इस तरह शेर में पेश किया है।

"करो मेहरबानी तुम अहले ज़मीं पर
खुदा मेहरबाँ होगा अर्शे बरीं पर।

आप ग़ौर करें कि मानव एकता की बात दिलों में बिठाने तथा मानव जाति के प्रति आदर की भावना जगाने के लिए जब यह कोशिश नहीं की गयी थी उस समय इन्सान का क्या हाल रहा होगा? एक व्यक्ति की तुच्छ कामना का मूल्य हज़ारों इन्सानों से अधिक था। बादशाह उठते थे और देशों का सफाया कर देते थे। सिकन्दर उठा और जैसे कोई कबड्डी खेलता है, हिन्दुस्तान तक चला आया और कौमों व

सभ्यताओं के दिये बुझा डाले। सीज़र उठा और इन्सानों का इस तरह शिकार खेलना शुरू किया जैसे जंगली जानवरों का शिकार खेला जाता है हमारे समय में भी दो विश्वव्यापी जंगें हुयीं जिसमें लाखों इन्सानों को मौत की घाट उतार दिया गया, और यह सिर्फ राष्ट्रीयता के अहंकार, राजनीतिक चौधराहट, सत्ता का लालच और व्यापारिक मण्डियों पर अधिकार करने की भावना की वजह से हुआ।

आपका चौथा वरदान यह है कि आप के अभ्युदय के समय मानव जाति के अधिकांश लोग अल्लाह की रहमत से निराश हो चुके थे। यह हालत पैदा करने में एशिया के कुछ प्राचीन धर्म तथा मध्य पूर्व व यूरोप के परिवर्तित ईसाई धर्म ने समान भूमिका निभाई। हिन्दुस्तान के प्राचीन धर्मों ने 'आवागमन' के विश्वास द्वारा जिसमें इन्सान के इरादा व इख़्तियार को कदापि दख़ल नहीं है और जिसके अनुसार हर इन्सान को अपने पहले के जन्म के कामों और ग़लतियों की सज़ा भुगतनी ज़रूरी है, और ईसाइयत ने इन्सान को पैदाइशी गुनहगार होने और उसके लिए हज़रत मसीह के सामने कफ़्फ़ारा (प्रायश्चित) बनने की ज़रूरत के अक़ीदा के नतीजे में उस समय के सभ्य संसार के लाखों करोड़ों लोगों को जो इन धर्मों के अनुयायी थे, अपने आप से बदगुमान और अपने भविष्य व अल्लाह की रहमत से निराश कर दिया था।

अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद मुस्तफा सल्ल० ने पूरी ताक़त व सफाई से ऐलान किया कि मानव प्रवृत्ति एक कोरी तख़्ती के समान है जिस पर पहले से कुछ नहीं लिखा है उस पर अच्छे से अच्छा सुलेख लिखा जा सकता है। इन्सान अपने अच्छे और बुरे काम के लिए ख़ुद ज़िम्मेदार है, अपनी दुनिया और आख़िरत वह अपने कर्मों से ख़ुद बनाता या बिगाड़ता है। वह किसी दूसरे के कर्म का ज़िम्मेदार या उत्तरदायी नहीं है। क़ुर्आन पाक ने बार-बार ऐलान किया कि आख़िरत (परलोक) में कोई किसी का बोझ नहीं उठा सकेगा, और यह कि उसके हिस्से में उसी की कोशिश और उसके प्रतिफल आने वाले हैं। इन्सान की कोशिश का नतीजा ज़रूर ज़ाहिर होगा और उसको उसका भरपूर बदला मिलेगा।

अनुवादः—" यह कि कोई व्यक्ति दूसरे का बोझ नहीं

उठाएगा और यह कि इन्सान को वही मिलता है जिस की वह कोशिश करता है और यह कि उसकी कोशिश देखी जाएगी फिर उसको उसका पूरा-पूरा बदला दिया जाएगा। (सूरः नज्म 38-41)

इस ऐलान से मनुष्य का अपने आप पर और अपनी निहित शक्तियों पर वह आत्म विश्वास बहाल हो गया जो एकदम डगमगा गया था, और नए संकल्प के साथ अपनी और मानवता की किस्मत चमकाने के लिए कार्यरत हो गया।

अपने गुनाहों और ग़लतियों को एक अस्थायी हालत क़रार दिया जिसमें इन्सान कभी-कभी अपनी नादानी, संकुचित दृष्टिकोण तथा शैतान के बहकावे में आकर ग्रसित हो जाता है। अच्छे कामों को पसन्द करना और अपना क़सूर स्वीकार करना व पश्चाताप मानव स्वभाव का असल तक़ाज़ा और इन्सानियत का जौहर है, अपनी ग़लती स्वीकार करना, उस पर पश्चाताप करना, अल्लाह के समाने रो धोकर अपने कुसूर को माफ़ करा लेना और भविष्य में ऐसी ग़लती न करने का संकल्प करना इन्सान की शराफ़त और आदम की मीरास (पूंजी जो उत्तराधिकारी को मिलती हो) है। आपने दुनियां के निराश और गुनाहों के दलदल में गले तक डूबे हुए इन्सानों पर तौबा (प्रायश्चित) का दरवाज़ा खोला और इसका ऐसा प्रचार किया कि आपका एक नाम "नबी उत्तौबा" (तौबा का पैग़म्बर) पड़ गया। आपने तौबा को एक मजबूरी की बात के रूप में पेश नहीं किया बल्कि आपने उसका ऐसा गुणगान किया और उसे इतना ऊंचा उठाया कि वह उच्च कोटि की इबादत और अल्लाह के सानिध्य का ऐसा माध्यम बन गया कि बड़े-बड़े मासूम व निष्पाप भक्तों को रश्क आने लगा। कुर्आन पाक में अल्लाह पाक इरशाद फरमाता है:-

अनुवादः-"कह दीजिए ऐ मेरे बन्दों जिन्होंने अपने हक़ में ज़्यादती की है अल्लाह की रहमत से मायूस (निराश) न हो। बेशक़ अल्लाह तमाम गुनाह माफ कर देता है बेशक़ वह बड़ा बख़्शने वाला और बड़ा रहम करने वाला है। (सूरः ज़ुमर-53)

एक दूसरी जगह गुनाहों से तौबा करने वालों का उल्लेख करते हुए फरमाया गया:-

अनुवादः–" और अपने परवर दिगार की बख़शिश और बहिश्त (जन्नत) की तरफ लपको जिसकी लम्बाई आसमान व ज़मीन के बराबर है और जो (अल्लाह से) डरने वालों के लिए तैयार की गई है। जो खुशहाली और तंगी में (अपना माल अल्लाह की राह में) खर्च करते हैं और गुस्से को रोकते हैं और लोगों के कुसूर माफ करते हैं और अल्लाह के नेक लोगों को दोस्त रखता है, और वह जब कोई खुला गुनाह या अपने हक़ में कोई और बुराई कर बैठते हैं तो अल्लाह को याद करते और अपने गुनाहों की माफी मांगते हैं, और अल्लाह के सिवा गुनाह बख़्श भी कौन सकता है, और जान बूझ कर अपने किए पर अड़े नहीं रहते। ऐसे लोगों को बदला परवर दिगार की तरफ से माफी और बाग़ है जिनके नीचे नहरें बह रही हैं (और) वह इसमें हमेशा बसते रहेंगे और (अच्छे) काम करने वालों का बदला बहुत अच्छा है। (सूरः आले इमरान– 133–136)

इससे भी आगे बढ़कर कुर्आन पाक की सूरः तौबा की शुरूआत ही 'तायबों' (तौबा करने वालों) से की गई और फरमाया गया।:–

अनुवादः–" तौबा करने वाले, इबादत करने वाले, हम्द करने वाले, रुकू करने वाले, सजदा करने वाले, नेक कामों का अम्र करने वाले और बुरी बातों से मना करने वाले, अल्लाह के हुदूद की रक्षा करने वाले (यही मोमिन लोग हैं) और (ऐ पैग़म्बर! मोमिनों को जन्नत की) खुश ख़बरी सुना दो। (सूरः तौबा–112)

इस सम्मान और विश्वास का एक ज्वलन्त उदाहरण यह है कि जब कुर्आन पाक में तीन सहाबा की तौबा के कुबूल होने का ऐलान किया गया जो तबूक की जंग के मौक़े पर बिना किसी उचित वजह के मदीना में रह गए थे तो उनका उल्लेख करने से पहले खुद पैग़म्बर और उन मुहाजिरों व अन्सार का उल्लेख किया गया जिनसे इस मौके पर कोई कोताही (चूक) नहीं हुई थी। ताकि उन तीन के पीछे रह जाने वालों को अपनी तनहाई और पिछड़ेपन का एहसास न हो और वह हीनता की भावना तथा लोगों की टोक से बरी हो जाएं। तौबा करने वालों की मक़बूलियत और उन्हें ढारस दिलाने का ऐसा उदाहरण कहीं और मिलना

कठिन है। सूरः तौबा में है।–

अनुवादः–"बेशक अल्लाह ने पैग़म्बर पर मेहरबानी की और मुहाजिरों और अन्सार पर जो बावजूद इसके कि इनमें कुछ के दिल फिर जाने को थे मुश्किल की घड़ी में पैग़म्बर के साथ रहे, फिर अल्लाह ने उन पर मेहरबानी फरमाई, बेशक वह इन पर बहुत ही शफ़क़त करने वाला (और) मेहरबान है और तीनों पर भी जिनका मामला स्थागित किया गया था। यहां तक कि जब ज़मीन बावजूद विशालता के उन पर तंग हो गई और उनकी जानें भी उन पर दूभर हो गयीं और उन्होंने जान लिया कि अल्लाह (के हाथ) से खुद उसके सिवा कोई पनाह नहीं है। फिर अल्लाह ने उन पर मेहरबानी की ताकि तौबा करें। बेशक अल्लाह तौबा कुबूल करने वाला मेहरबान है।" (सूरः तौबा–117–118)

इसके अलावा एक सिद्धान्त के रूप में इसका एलान किया कि अल्लाह की रहमत हर चीज़ पर हावी है। कुर्आन में हैः–

अनुवादः–"मेरी रहमत हर चीज़ पर हावी है।" (सूरः अल एराफ़–156)

और हदीस पाक में है।–

अनुवादः–"मेरी रहमत मेरे ग़ज़ब पर ग़ालिब है।"

कुर्आन निराशा को कुफ्र, जिहालत व गुमराही का पर्यायवाची ठहराता है। एक जगह एक पैग़म्बर की ज़बान से कहलवाया गया है।–

अनुवादः–" अल्लाह की रहमत से वही लोग निराश हो सकते हैं जो अल्लाह के मुनकिर (नास्तिक) और उसकी ज़ात व सिफात से ना आश्ना (अनभिज्ञ) है।" (सूरः यूसुफ–87)

दूसरी जगह एक दूसरे पैग़म्बर का कथन नक़ल किया गया है।

अनुवादः–"अपने रब की रहमत से गुमराहों के सिवा कौन निराश हो सकता है।" (सूरः अलहजर–56)

इस तरह अल्लाह के रसूल सल्ल० ने तौबा के महत्व और अल्लाह की रहमत की व्यापकता का एलान व प्रचार करके निराश और अल्लाह के ग़ज़ब से सहमी और डरी इंसानियत को नई ज़िंदगी का पैग़ाम दिया।

उसके मुर्दा होते शरीर में नई रोशनी जगायी उसके घाव पर मरहम रखा और उसे ज़मीन की धूल से उठाकर सम्मान, आत्म विश्वास तथा ईश्वर में आस्था की चरम सीमा पर पहुंचा दिया।

आपका पाँचवां महान और अविस्मरणीय उपकार दीन व दुनिया के सामंजस्य की परिकल्पना है। मनुष्य के कर्म और व्यवहार तथा उसके प्रतिफल मूलतः मानव की मनः स्थिति, कर्म के प्रेरक तत्वों एवं उसके मक़सदों पर निर्भर है। इस्लाम में इसे एक छोटे से सरल लेकिन सारगर्भित शब्द 'नियत' से व्यक्त किया गया है। इस्लाम में न कोई चीज़ दुनिया है न कोई चीज़ दीन। इसके नज़दीक स्वच्छ मन से अल्लाह की मर्ज़ी की चाह और उसके आदेशों के अनुपालन की भावना एवं संकल्प से बड़े से बड़ा सांसारिक कर्म यहां तक की शासन, जंग, दुनिया के मज़े, रोटी–रोज़ी कमाने की कोशिश, मनोरंजन के साधन, दाम्पत्ति–जीवन सब उच्च कोटि की इबादत और अल्लाह के सानिध्य का माध्यम, बड़े से बड़ा ऋषि–मुनि बनने का माध्यम और ख़ालिस दीन बन जाता है। इसके विपरीत बड़ी से बड़ी इबादत और दीन का काम जो अल्लाह की मर्ज़ी और भक्ति–भावना से ख़ाली हो, विशुद्ध सांसारिक और ऐसा कर्म कहा जाएगा जिस पर कोई सवाब और बदला नहीं है।

प्राचीन धर्मों ने ज़िन्दगी को दो खानों में और दुनिया को दो कैम्पों में बांट दिया था। दीन व दुनिया तथा धार्मिक लोग सांसारिक लोग। यह दो न सिर्फ एक दूसरे से अलग–थलग थे बल्कि एक दूसरे से लड़ने मरने को तैयार रहते थे। उनके नज़दीक दीन व दुनिया एक दूसरे के विरोधी थे और जिसको इनमें से किसी एक को अपनाना हो उसके लिए दूसरे से सम्बन्ध विच्छेद करना ज़रूरी था। कोई इन्सान एक समय में इन दोनों के साथ नहीं चल सकता था। अल्लाह को भुलाए बिना आर्थिक संघर्ष, धार्मिक एवं नैतिक शिक्षा का परित्याग किए बिना शासन, सन्यास धारण किए बिना धार्मिक (दीनदार) बनने की परिकल्पना ही नहीं थी। मानव आम तौर पर सहूलत और लज़्ज़त को पसन्द करता है। दीन की ऐसी परिकल्पना जिसमें दुनिया को किसी जायज़ सहूलत, तरक्की व ताक़त की प्राप्ति की गुजांइश न हो, बहुधा लोगों के लिए अग्राह्य थी।

फलतः दुनिया के सभ्य, विद्वत सक्षम एवं व्यवहारिक लोगों की बड़ी संख्या ने अपने लिए 'दीन' के बजाए दुनिया का चयन किया। वह हर तरह के धार्मिक उन्नयत से निराश होकर दुनिया का चयन किया। वह हर तरह धार्मिक उन्नयन से निराश होकर दुनिया की प्राप्ति और उसकी तरक्की में व्यस्त हो गया। दीन व दुनिया के इस विरोधाभास को एक धार्मिक और अकाट्य सत्य समझकर मनुष्यों के विभिन्न वर्गों ने आमतौर पर मज़हब को ख़ैरबाद (त्याग देना) कहा। 'राजनीति' और 'राज्य' ने कलीसा (गिरजाघर) से बग़ावत की और अपने को उसकी हर पाबन्दी से आज़ाद कर लिया। मानव बे नकेल और समाज निरंकुश होकर रह गया। दीन व दुनिया के इस बटवारे ने न सिर्फ यह कि धर्म व आचरण के प्रभाव को सीमित व कमज़ोर और मानव जीवन को उसकी बरकत व रहमत से वंचित कर दिया बल्कि दुनियादारी व अधर्म का दरवाज़ा खोला जिसका सबसे पहले यूरोप शिकार हुआ। फिर दुनिया के दूसरे राष्ट्र जो यूरोप के प्रभाव में आए इससे कुछ न कुछ प्रभावित हुए। वर्तमान दुनिया की स्थिति जिसमें धर्म व आचरण का पतन अपनी चर्मसीमा पर पहुंच गया है दीन व दुनिया के इसी फर्क का नतीजा है।

अल्लाह के रसूल सल्ल० का यह महानतम काम और इंसानियत के लिए महान भेंट है कि आप पूरी तरह एकता के रसूल (रसूल वहदत) हैं और एक ही समय 'बशीर' (इस बात से आगाह करने वाला कि अच्छे काम का अच्छा नतीजा प्राप्त होगा) और 'नज़ीर' (इस बात से आगाह करने वाला कि बुरे काम का बुरा नतीजा हासिल होगा) है। आपने दीन व दुनिया के भेद को ख़त्म करके पूरी ज़िन्दगी को इबादत में और पूरी वसुन्धरा को एक विशाल इबादतगाह में बदल दिया। दुनिया के लोगों को सद्व्यवहार, परोपकार और अल्लाह की रज़ा के एक ही मोर्चे पर लाकर खड़ा कर दिया। यहां दुनिया के भेष में सन्त राजाओं के भेष में ऋषि–मुनि तलवार व तसबीह (माला) धारी, रात के इबादत गुज़ार और दिन के शहसवार नज़र आएंगे।

आपका छठा अहसान यह है कि आपके अभ्युदय काल से पहले इंसान अपने लक्ष्य से बेख़बर था। उसको याद नहीं रहा था कि उसे

कहां जाना है? उसकी क्षमताओं का असल मैदान और उसकी कोशिशों का असल निशाना क्या है? उसने कुछ तुच्छ लक्ष्य बना लिए थे जिनकी प्राप्ति में उसकी क्षमता ख़र्च हो रही थी। कामयाब और बड़ा इन्सान बनने का मतलब सिर्फ यह था कि मैं दौलतमन्द बन जाऊं, ताक़तवर और हाकिम बन जाऊं, बड़े से बड़े क्षेत्र और अधिक से अधिक इन्सानों पर मेरा शासन हो। लाखों लोग ऐसे थे जो बेल–बूटों, रंगरेलियों, स्वादिष्ट खानों और पशु–पक्षियों की नकल से आगे नहीं सोच पाते थे। हज़ारों लोग ऐसे थे जिनकी सारी शक्ति अपने समय के धनवानों और राजा महाराजाओं की ख़ुशामद करने में ख़र्च हो रही थी। अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने मानव जाति के सामने उसकी वास्तविक मंज़िल लाकर खड़ी कर दी। आप ने बताया कि मनुष्य का वास्तविक लक्ष्य ईमान व यक़ीन के साथ अल्लाह को राज़ी करना और उससे राज़ी हो जाना है। अपनी निहित शक्तियों का विश्वास करना, इन्सानों की ख़िदमत करना, त्याग व तपस्या के माध्यम अल्लाह की ख़ुशनूदी हासिल करना और तरक्क़ी की उस चरम सीमा तक पहुंच जाना, जहां फरिश्ते भी नहीं पहुंच सकते, इन्सान की कोशिशों का असल मैदान है।

आपके अभ्युदय के बाद दुनिया की ऋतु बदल गई। इन्सनों के मिज़ाज बदल गए। दिलों में ईश प्रेम की चिंगारी भड़की। उनके अन्दर ईश प्राप्ति की भावना जागी। उनको अल्लाह को राज़ी करने की एक धुन लग गई। जिस तरह बरसात के मौसम में ज़मीन में फसल पैदा करने की ताकत, सूखी टहनियों में हरियाली पैदा हो जाती है, नई–नई कोपलें निकलने लगती हैं और चारों तरफ हरियाली दिखाई देने लगती है। उसी तरह आपके अभ्युदय के बाद दिलों में नया जोश, मन में नई उमंग, भावना और तन में नई लगन समा गयी। करोड़ों लोग अपने असली लक्ष्य की खोज और उस तक पहुंचने के लिए निकल खड़े हुए। अरब व अजम, मिस्र व सीरिया, तुर्किस्तान, ईरान, इराक व ख़ुरासान, उत्तरी अफ्रीका, स्पेन और हमारा देश हिन्दुस्तान, तथा पूर्वी द्वीप समूह सब जगह मालूम होता है कि मानवता, सदियों की नींद सोते–सोते जाग उठी। आप इतिहास की किताबों का अध्ययन करेंगे तो आप देखेंगे कि लोगों

लोगों के पास ईश्वर को पाने और उसे पहचाने के सिवा कोई काम ही न था। बस्ती–बस्ती गाँव–गाँव बड़ी संख्या में ऐसे अल्लाह की याद में मस्त, त्यागी तपस्वी लोग दिखाई देते हैं जिन पर फरिश्ते भी गर्व करें। उन्होंने दिलों की सर्द अंगेठियां गरमा दीं। ईश–प्रेम की तान छेड़ दी। ज्ञान–विज्ञान के दरिया बहा दिए। ईश शक्ति की ज्योति जगा दी। अज्ञानता और अत्याचार से नफरत पैदा कर दी। समता का पाठ पढ़ाया, दुखों के मारे और समाज के सताए हुए लोगों को गले लगाया। वह बारिश की बूंदों की तरह ज़मीन के कोने–कोने में बरसे।

आप उनकी बाहुल्यता के साथ उनके गुणों को देखें। उनका विवेक उनकी आत्मा की सरसता, उनकी सुरूचि का हाल पढ़िए इन्सानों के लिए किस तरह उनका दिल रोता। उन्हें मुसीबत से छुटकारा दिलाने के लिए किस तरह अपने को ख़तरे में डालते और अपने बच्चों व सगे सम्बन्धियों को आज़माइश में डालते। उनके शासकों को अपनी ज़िम्मेदारी का कितना अहसास रहता और प्रजा में आज्ञापालन व सहयोग की कैसी भावना होती। उनकी इबादत, उनकी दुआ, उनकी भक्ति, उनके सेवा भाव, शिष्टाचार के हालात पढ़िए। ज्ञान इन्द्रियों पर नियंत्रण के साथ स्वयं के लेखा–जोखा, दीन दुखियों व कमज़ोरों से प्यार, दोस्त–दुश्मन के साथ उनके समान व्यवहार और रहमदिली व सहानुभूति के नमूने देखिए। सच तो यह है कि अगर इतिहास के प्रमाणिक तथ्य और लगातार सबूत न होता तो यह बातें किस्से कहानियां और अफसाने मालूम पड़ते। यह महान परिवर्तन अल्लाह के रसूल मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का एक चमत्कार है और इस बात की पुष्टि करता है कि आप सारे जहानों के लिए रहमत बनाकर भेजे गए।

अल्लाह पाक कुर्आन मजीद में फरमाता है:–

अनुवाद:–" और (ऐ मुहम्मद!) हमने तुमको तमाम जहान के लिए रहमत बनाकर भेजा है।" (सूर: अंबिया–107)

—:समाप्त:—